।। ॐ परमात्मने नमः ।।

दादूराम ।। श्री दादूदयालवे नमः ।। सत्यराम

श्री दादूवाणी

(मूल पाठ)

प्रस्तुति

श्री दादूलीला राम नाम परिक्रमा शोध संस्थान

www:dadooram.org

कृतज्ञताज्ञापन

प्रात: स्मरणीय अनन्त श्रीविभूषित श्रीमद् दादूदयालु भगवान की अनोखी अहैतुकी कृपा से 'श्री दादूवाणी' ग्रंथ मानव जीवन को शाश्वत शान्ति प्रदान करने हेतु वरदान रूप में प्राप्त हुआ है ।

श्रीमद्दादूपीठाधीश्वर अनंतश्री 1008 आचार्यश्री गोपालदास जी महाराज एवं गुरुवर्य महन्त महामण्डलेश्वर संत श्री 108 स्वामी क्षमारामजी महाराज की अदृश्य कृपावश ही 'श्री दादूवाणी' ग्रंथ का विद्युत संस्करण संभव हुआ है ।

इस संस्करण के निर्माण में, हम हृदय से आभारी हैं, श्री प्रीतम स्वामी (दौसा-राजस्थान) एवं 'बाईसा' वर्षा पंवार (जोधपुर-राजस्थान) के, जिनका सक्रीय सहयोग तथा मार्गदर्शन निरंतर प्राप्त होता रहा है ...

वाणी महिमा अपार है, मानुष क्या भला बतावेंगे ।
ज्ञानी ध्यानी ऋषि मुनी, गुण गावत शेष थकावेंगे ।।
धन्य धन्य प्रभु करके ख्याल, श्रीदादू ने अवतार लिया ।
वाणी पांच हजार सुना, सब जीवों का उपकार किया ।।
ॐ शान्ति शान्ति शान्ति
सेवक - सदस्य
'श्री दादूलीला राम नाम परिक्रमा शोध संस्थान'

अनुक्रमणिका

विषय **पृष्ठ**

साखीभाग

शब्द भाग

परिशिष्ठ

श्री दादूलीला विहंगावलोकन

भगवदाज्ञा - सागर के मध्य में एक टापू पर तीन दिव्य सिद्ध महापुरुष तपस्या कर रहे थे । भारतीय संस्कृति में तप की बहुत बड़ी महिमा बताई गई है । दिव्य शक्ति तथा मुक्ति प्राप्त करने के लिए तप सदैव एक प्रमुख साधन रहा है । सुर - नर - मुनि के तप की बात तो सर्वविदित ही है, महाप्रतापी तथा शक्तिशाली दैत्य - दानव - राक्षस भी तप के द्वारा दुर्लभ वरदान पाकर त्रिलोक विजयी हुए हैं । यहां तक कि ब्रह्मा - विष्णु - महेश को भी सृजन - पालन और संहार की शक्ति तप के द्वारा ही प्राप्त हुई है । यथा -

तप बल रचई प्रपंचु विधाता । तप बल विष्णु सकल जग त्राता ।।
तप बल संभु करहिं संहारा । तप बल सेषु धरहिं महि भारा ।। (रा. च. मा.)

अब अपने विषय पर आइये । सागर के एक टापू पर तीन सिद्ध तप कर रहे थे कि आकाशवाणी हुई - "आप में से एक संसारी जीवों का उद्धार करने के लिए संसार में जाए ।" इस वाणी को परमात्मा की आज्ञा मानकर तीनों ने विचार किया, फिर एक सिद्ध पुरुष सागर से भवसागर में जाने के उद्देश्य से अदृश्य हो गए । इस प्रसंग में श्री दादूदयालजी महाराज के परम शिष्य श्री राघवदासजी ने (भक्तमाल में) इस प्रकार लिखा है -

सागर में टापू ता में तीन सिद्ध ध्यान करें ।
एक को जु आज्ञा भई जीव निस्तारिए ।।
निजानंद निज ब्रह्म अपारा । तिनकी आज्ञा सौं तन धारा ।।
सब जीवन की पूरी आसा । भक्ति हेतु हरि कियो बिलासा ।।

इस आध्यात्मिक स्थिति तक अभी वर्तमान विज्ञान नहीं पहुंचा है । जिस दिन ईश्वर की दिव्य लीलाओं का विज्ञान स्वीकार कर लेगा, उसी दिन से वह विशुद्ध विज्ञान के पथ का पथिक हो जाएगा ।

लोधीरामजी को वर प्राप्ति - बात वि. सं. 1600 में गुजरात के अहमदाबाद शहर की है । वहां श्री लोधीराम नागर ब्राह्मण रहते थे, जो बड़े सम्पन्न, यशस्वी एवं साधु - संतों के परम भक्त थे । सब सुख होते हुए भी वे दुःखी रहा करते थे क्यों कि 40 - 50 वर्ष की अवस्था हो जाने पर भी वे निस्संतान थे । एक दिन साबरमती नदी में स्नान करके नागरजी घर पर आ रहे थे तभी मार्ग में उन्हें एक परम दिव्यस्वरुप वाले संत के दर्शन हुए । ये महात्मा टापू पर तपस्या करने वाले उन तीन सिद्धों में से एक थे, जो भगवान के आदेशानुसार संसार का उद्धार करने के लिए वहां से चले थे । उन्हों ने नागरजी से कहा - "विप्रवर ! कल प्रातःकाल जब तुम स्नान करने के लिए जाओगे तब एक विशद कमल पुष्प तैरता हुआ तुम्हारे निकट आयेगा, उसमें एक दिव्य शिशु लेटा होगा । उसे उठा लेना, वही तुम्हारा पुत्र कहलाएगा ।" इतना कह कर वे संत अदृश्य होगए । लोधीरामजी संत का प्रकट होना, आदेश देना, और अदृश्य होना खड़े - खड़े देखते ही रह गए । कुछ क्षणों में प्रकृतिस्थ हुए, मानो सोकर जागे हों । फिर अत्यंत हर्षित हो जल्दी - जल्दी पैर बढाते हुए नागरजी घर को आए और धर्म - पत्नि को अपना अलौकिक अनुभव सुनाया । ऐसी विलक्षण घटना सुनकर वह भी भाव विभोर होगई और बोली - "दयासागर प्रभु ने हम पर बहुत बड़ी कृपा की । प्रभु ने हमारी कामना पूरी करदी ।"

हर्षातिरेक के कारण लोधीरामजी को उस रात नींद नहीं आई । भावी संतान के सुख की कल्पना तरंगों में वे रात भर हिचकोले खाते रहे । प्रातःकाल होने के बहुत पहले ही वे उठ गए और दैनिक कार्यों से निपट कर स्नान करने के लिए साबरमती नदी की ओर चल पड़े । अभी पौ नहीं फटी थी । वातावरण में अंधेरा था, किन्तु नागरजी को सर्वत्र आशा प्रकाश छिटका हुआ दिखाई दे रहा था । उनकी चाल में पहले की तरह चिन्ता और उदासी नहीं थी, वरन पद - पद पर आनंद, उमंग तथा स्फूर्ति की झलक थी ।

अवतरण - नदी तट पर पहुंच कर नागरजी ने बहुत दूर तक दृष्टि दौड़ाई किन्तु उन्हें कुछ न दिखाई पड़ा । तब उन्हों ने जल में प्रवेश किया और कमर तक पानी में खड़े होकर उत्सुक नेत्रों से वे जल - प्रवाह को देखते रहे कि कमल पुष्प आ रहा है या नहीं । फिर भी कमल का कहीं पता न था । अधीर मन में शंका की एक क्षीण रेखा उभरी, किन्तु उनके आस्तिक भाव ने तत्काल उस रेखा को मिटा कर विश्वास जगाया कि एक दिव्य संत के वचन असत्य नहीं हो सकते । वास्तव में, पुत्र पाने की आतुरता में नागरजी यह भूल ही गए कि एक दिव्य शिशु को स्पर्श करने के पहले उनका स्नान करके पवित्र हो जाना बहुत आवश्यक है । भक्त की भूल को भगवान सुधार देते हैं । दैवी प्रेरणा हुई । लोधीरामजी ने श्री हरि कह कर जल में डुबकी लगाई और जैसे ही उन्हों ने अपना सिर बाहर निकाला कि उन्हें एक विशाल कमल पुष्प जल में तैरता हुआ दिखाई पड़ा । उनका चित्त प्रफुल्लित होगया । जब उन्हों ने कमल को अपनी ओर आते देखा तो उनका हर्ष सीमा पार करने लगा । निकट आने पर उन्हों ने देखा कि कमल पर लेटा हुआ शिशु उनकी ओर देखकर मन्द - मन्द मुस्कुरा रहा है । फिर तो नागरजी सुध - बुध भूलकर आनंदमग्न हो गए । नागरजी ने देखा कि वह दिव्य तेजस्वी शिशु अपनी मुस्कान चतुर्दिश बिखेर रहा है । फिर क्या था, लोधीरामजी ने बड़े प्यार से शिशु को उठा लिया । नागरजी के हाथों में शिशु के पहुँचते ही आकाश में देव - गंधर्व - किन्नर प्रकट होकर जय - जयकार करने लगे । साथ ही में दिव्य पुष्प एवं केशर की वर्षा करने लगे । अप्सराएं नृत्य करती हुई यशोगान करने लगीं । दिव्य वाद्य यंत्रों की झंकार से सारा वातावरण गुंजारित हो उठा । आसपास में स्नान करते हुए सभी लोगों ने इस अलौकिक दिव्य दृश्य को देखा और उनके मुख से यह उच्चारण हुआ ‘‘नागर के भाग्य धन्य हैं, नागर के भाग्य धन्य हैं ।’’ लोधीरामजी समझ गए कि कोई दिव्य विभूति उनको कृतार्थ करने उनके यहां पधारी है । वे

भाव - विभोर होकर भीगे वस्त्रों से ही घर की ओर चले । घर में नागरजी की पत्नी स्नान कर शिशु सहित पति के आने की बाट जोह रही थी । नागरजी ने आकर शिशु को उसकी गोद में दिया । ऐसे तेजस्वी, मनोहर शिशु को देखकर वह हर्ष से भर गई । उसके ह्रदय में वात्सल्य भाव इतने वेग से उमड़ा कि दैवी कृपा से उसके स्तनों में दूध उतर आया । वे उस बालस्वरूप को देखते - देखते भाव विभोर हो गईं । उस शुभ दिन वि. सं. 1601 की फाल्गुन शुक्ल अष्टमी थी ।

कई दादू जीवनियों में उस दिन चैत्र शुक्ल अष्टमी भी बताते हैं ।

तत्पश्चात् अत्यंत लाड़ प्यार से बालक का पालन - पोषण होने लगा । बचपन से ही यह बालक तीव्र बुद्धि का तथा भगवद्भावों वाला था । असाधारण दयालुता उसका विशेष गुण था । उसकी इच्छा सदा दूसरों को देने की ही रहती थी, इसलिए उसका नाम दादू रख दिया गया । इस अवतरण प्रसंग को संतदासजी द्वारा रचित जन्मलीला में इस प्रकार वर्णित किया है -

संवत सोलह सौ लागत ही, गुजरात धरा मधि अहमदाबादू,
ब्रह्म प्रकाश उदय भयो भानु जू, आय दुनि मध्य अवतरे दादू ।
हर्ष उछाह भयो तिहूँ लोक में, गावत यश्श मुनि - सिद्ध - साधू,
शेष, महेश, ब्रह्मा, ध्रुव में, सूर सुयश्श करें संत आदू ।।
गैब को बालक आयो गगन थैं, नदी प्रवाह में खेलत पायो,
पिछले प्रहर नहान गयो विप्र, बालक देखि उठाकर लायो ।
आपनी नारि को आन दियो घर, गैब को दूध प्रवाह बहायो,
गावत मंगल नारि दसों दिश, बांट बधाई उछाह करायो ।।

सदगुरु की प्राप्ति -बालक दादू की आयु सात वर्ष की हुई । एक दिन वे अन्य बालककों के साथ कांकरिया तालाब के कि नारे खेल रहे थे । तभी एक परमतेजस्वी संत सहसा वहां प्रगट हो गए । इस आकस्मिक घटना को

देख कर दूसरे बालक तो डर के मारे भाग खड़े हुए, किन्तु दादूजी बड़ी प्रसन्नतापूर्वक संत के समीप गए और उन्हों ने श्रद्धा से संत को प्रणाम किया । प्रभु प्रेरणा से आए हुए गुरु रूप संत दादूजी का श्रद्धा, विनय देखकर हर्षित हो गए और अविलम्ब भक्ति - ज्ञान - वैराग्य का शुभ आशीर्वाद देकर अंतर्ध्यान होगए -

बालपने दर्शन दियो, भगवत् बूढ़न होय ।
नगर अहमदाबाद में, दादू भज तूं मोय ।।

दादूजी को तो भक्ति - ज्ञान - वैराग्य मूलतः प्राप्त था, इसलिए उन्हें गुरु की खोज नहीं करनी पड़ी । सदगुरु ने उनके पास आने की कृपा की और गुरु की कमी पूरी कर दी, क्योंकि सदगुरु की प्राप्ति भी बहुत आवश्यक है । एकादश वर्ष की अवस्था में गुरुदेव ने पुनः दादूजी को दर्शन दिए । यह इस बात का संकेत था कि शिक्षा पूर्ण हो गई और अब दादूजी को चाहिये कि वे दूसरों को शिक्षा - उपदेश दें । यह सब दो सिद्धों का मौन वार्तालाप था । ज्ञानपुंज दादूजी ने गुरुदेव के संकेतानुसार श्रद्धालु जनता के समक्ष प्रवचन करना आरम्भ कर दिया । वे निर्गुण ब्रह्म तथा योग की गूढ़ साधना की व्याख्या अत्यंत सरल एवं सर्वग्राह्य भाषा में प्रस्तुत करने लगे । ''तत्वमसि'', ''सोहं'', ''एको हम् द्वितीयो नास्ति'' आदि वेद के महावाक्यों का सारगर्भित अर्थ बड़ी सहजता से कर देते थे । उनके अकाट्य तर्क को सुनकर बड़े - बड़े महापंडित विस्मित हो जाते थे । सारा नागर समाज उनपर गर्वान्वित था । प्रवचन के अतिरिक्त दादूजी साखी एवं पदों का प्रयोग भी करते थे । उनकी काव्य रचना शक्ति स्वयं-स्फूर्त थी । इसलिए उनके साखी एवं पदों को समझने में साधारण जनता को किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नहीं होता था ।

स्वतंत्र विचरण - एक दिन श्री दादूजी ने सदगुरु की प्रेरणा का अन्तर्मन में अनुभव किया - 'तुम अपने नगर में ही सीमित न रहो, बाहर निकलो । असंख्य जीवों का निस्तार करने के लिए तुम संसार में आए हो ।' ऐसी दिव्य प्रेरणा से प्रेरित होकर वे भक्ति का प्रचार करने के लिए अहमदाबाद से निकल पड़े । श्री दादूदयालजी महाराज पेटलाद, आबू पर्वत होते हुए राजस्थान में पहुँचे । वहाँ से करडाला, अजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़, करौली, सांभर, आमेर, नारायणा, भैराणा तथा सीकरी आदि स्थानों पर श्री महाराजजी ने अपनी दिव्य अमृतमयी वाणी की वर्षा करी । सीकरी में 40 दिनों तक अकबर ने भी इनके सत्संग का लाभ प्राप्त किया ।
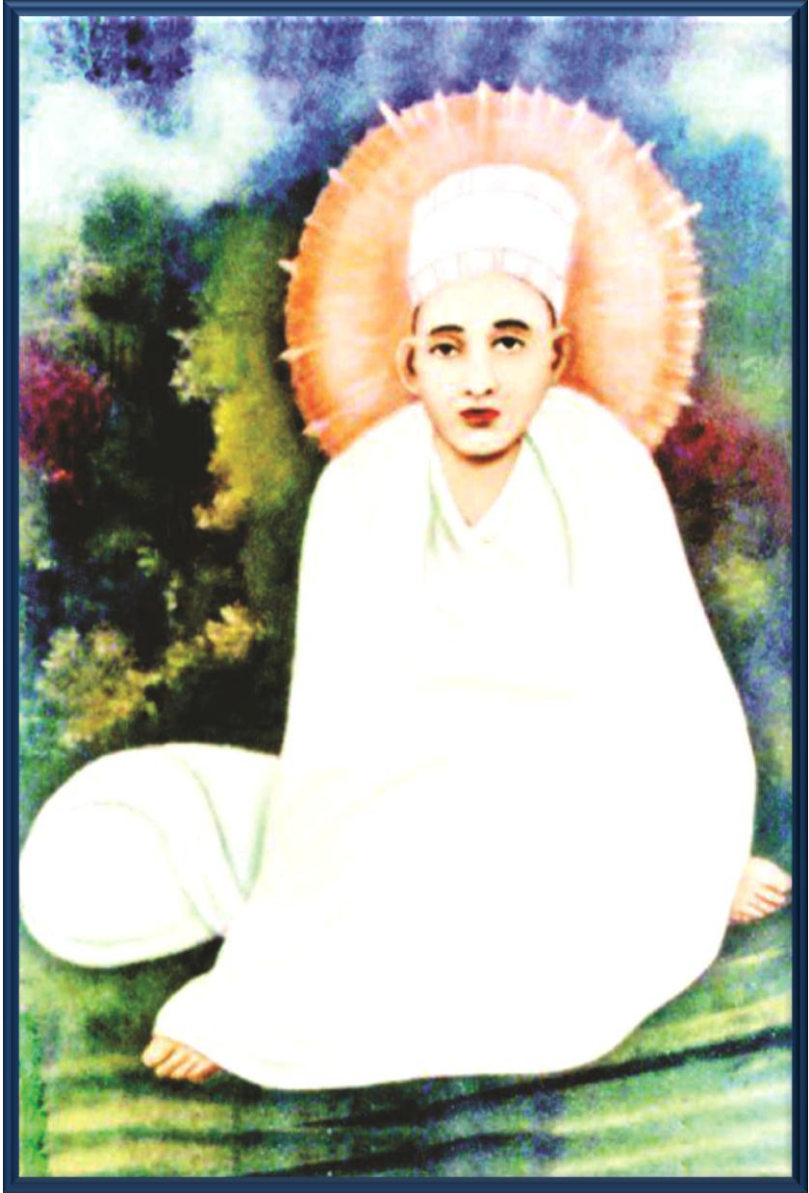
श्री दादूदयालजी महाराज के उपदेशों से हिन्दू एवं मुसलमान दोनों ही सम्प्रदायों में आपसी प्रेम, मैत्री एवं भाईचारे की भावनाओं में वृद्धि हुई। अनेक वर्षों तक आपने ज्ञान तथा भक्ति पूर्ण मधुर प्रवचनों द्वारा श्री दादूजी ने जनसमुदाय को प्रभावित किया तथा लोगों को कल्याण – पथ पर आगे

बढ़ाया । साथ ही वे स्वयं अपनी साधना में भी रत रहते थे । कभी - कभी आत्म - रमण के उद्देश्य से श्री महाराजजी दीर्घकाल तक एकान्तवास किया करते थे ।

महामंत्र सत्यराम द्वारा अनंत प्राणीमात्र व भूत प्रेतों का उद्धार श्री दादूजी महाराज ने किया । सत्यराम महामंत्र इसलिए है कि यह सभी मंत्रों का सार है, तात्विक ज्ञानरूप चारों वेदों (ऋगवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद, सामवेद) के रहस्यों सदैव अकीलित है, अक्षुण्ण है, प्रज्वलित एवं नित्य चैतन्य रहनेवाला है । इसमें ''राम नाम सत्य है'' का रहस्य भी अंतर्निहित है । श्री दादूजी महाराज हठयोग, नाड़ीयोग, सामान्य योग तथा साधन योग इन सब तंत्रों में पारंगत थे और इनके रहस्य को वे सरल सुबोध भाषा में जनता के समक्ष प्रस्तुत भी करते थे । वे जानते थे कि सारे वायुमंडल सहित समस्त प्राणी एक ऐसे अनोखे तंत्र में बंधे हुए हैं जिसमें प्रत्येक कामना की सिद्धि तथा सम्पूर्ति के लिए लाखों मंत्र तंत्र रचे हुए हैं । सभी मंत्रों का रहस्य अनावृत करने वाले श्री दादूदयालजी महाराज ने सर्वसाधारण को ''सत्यराम'' का ऐसा महामंत्र दिया जिसका महत्व अनिर्वचनीय है और जो निरन्तर दैदिप्यमान रहता है ।

संत शिरोमणि श्री दादूदयालजी महाराज आनंद की वर्षा करते हुए नारायणा पहुँचे । वहां तत्कालीन राजा नारायणदासजी के विशेष आग्रह पर श्री महाराजजी रघुनाथजी के मंदिर में ठहर गए, जहां तीन दिन तक सत्संग का दुर्लभ लाभ राजा तथा प्रजाजनों को प्राप्त हुआ । बाद में श्री महाराजजी ने सात दिन तक त्रिपोलिया के ऊपर एकांत वास किया । आठवें दिन श्री महाराजजी के आसन के निकट एक नाग प्रकट हुआ और फण के द्वारा उन्हें अपने पीछे चलने का संकेत दिया । श्री दादूजी महाराज इसे भगवदाज्ञा समझ कर नाग के पीछे चल पड़े । नाग जल से परिपूर्ण तालाब के ऊपर चला एवं महाराज श्री भी उसके पीछे पधारे । तालाब से होकर नाग एक

घने खेजड़ा (राजस्थानी शमी वृक्ष) के नीचे रुक गया और उन्हें बैठने का संकेत कर लुप्त होगया । श्री दादूदयालजी महाराज तत्काल इस घटना का आशय समझ गए और पद्मासन लगाकर आत्मचिंतन में लीन होगए । ऐसी आत्म - लीनावस्था में श्री महाराजजी के अंगों से दिव्य तेज विकीर्ण होकर समस्त क्षेत्र को आलोकित करने लगा । दैव प्रेरित होकर राजा नारायणदासजी भी प्रजा वर्ग के साथ उसी स्थान पर आ पहुँचे । सबने महाराज श्री के अंगों से निकलता दिव्य तेज देखा और यह भी देखा कि महाराजजी के आस - पास नाना प्रकार के प्राणी घूम रहे हैं जिनमें कुछ के मुख मनुष्य जैसे तथा शरीर का शेष भाग विभिन्न पशुओं जैसा तथा कुछ के मुख पशुओं जैसे तथा शरीर का शेष भाग मनुष्य जैसा था । ऐसा अनोखा दृश्य देख सभी लोग आश्चर्यचकित होगए और कुछ लोग भयभीत भी हुए । तीसरे दिन सारे विचित्र प्राणी लुप्त होगए तथा स्थिति सामान्य होगई । उसी समय श्री दादूदयालजी महाराज के नेत्र खुले और उन्होंने वरदमुद्रा में''सत्यराम'' आशीर्वाद दिया ।

वाणीजी की रचना - वाणीजी का रचना काल आजसे लगभग 450 वर्ष पूर्व का है । महाप्रभु दादूदयालजी महाराज ने रचना की दृष्टि से कोई स्वतन्त्र काव्य नहीं रचा है; प्रत्युत समय समय पर शरणागत मुमुक्षुजनों को महाराज पध्यमय वाणी में आत्मोपदेश करते, उन्हीं को उनके शिष्यादि ने संग्रहित कर लिए ।

मोहनदासजी(दफ्तरी), जगन्नाथजी, संतदासजी दादूजी महाराज के अनन्य शिष्य भक्त थे; जो सदा उनकी शरण में रहते थे । शरणागत मुमुक्षुओं को महाप्रभु जो आत्मोपदेश करते, उनको अक्षरशः ये तीनों महात्मा संग्रहित कर लेते थे । उन पद्यों के 'लिपि-संग्रह' का कार्य शिष्य मोहनजी दफ्तरी करते थे, मोहनजी की 'दफ्तरी' संज्ञा इसी कारण पडी थी । दादूजी महाराज अपनी साधना में प्रार्थना का स्थान भी रखते थे । समस्त 'वाणी' संग्रह को

शिष्यवर पंडित जगजीवन जी(दौसा) और रज्जब जी ने क्रमानुसार संकलित किया था ।
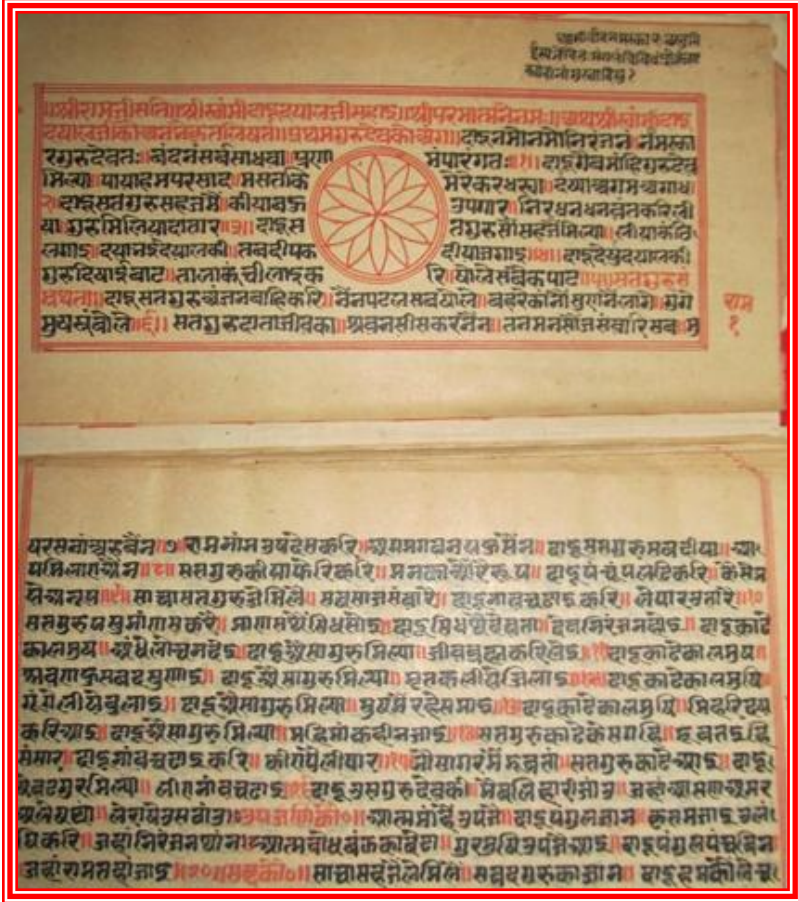
हस्तलिखित वाणी जी
चित्र सौजन्य-महंत रामगोपालदास तपस्वी बाबाजी

इसी तरह उपदेश, साधना, प्रार्थना के साथ-साथ 'श्री दादूवाणी' की रचना होने लगी, जिसको प्रसंगानुसार बाद में रज्जब जी ने प्रकरणों (अंगों-उपांगों) में विभाजित कर क्रमबद्ध किया गया । 'वाणीजी' में दादूजी महाराज के भावों, विचारो तथा निश्चयों का संग्रह है । मुख्यतया इसकी रचना उस

समय की बोलचाल की भाषा में की गई है । स्थल विशेषों में अरबी, फ़ारसी, गुजराती, मराठी, सिंधी व् पंजाबी भाषा का प्रयोग हुआ है । इससे सिद्ध होता है कि दादूजी महाराज कई भाषाओँ पर अधिकार रखते थे । 'वाणीजी' में सभी तरह के शास्त्रीय, वेदांत, योग, सांख्य, उपनिषद व गीता के सिद्धांतों का प्रकरण-विशेष में अच्छा समन्वय है । इससे प्रतीत होता है कि - जिज्ञासुओं ने महाराज से सभी विषयों पर प्रश्न किये थे, उनका उत्तर आपने बड़ी सुगम व प्रांजल भाषा में दिया है । दादूवाणी में माधुर्य की तो अजस्र धारा ही बह चली है ।

अन्त समय में उनके पट्टशिष्य गरीबदासजी ने प्रश्न किया - ''स्वामिन् ! आपने ऐसा मार्ग दिखाया है जो हिन्दू मुसलमानों की सीमित सीमा से आगे का है । किन्तु इसका आगे कैसे निर्वाह होगा ?'' महाराज ने कहा - ''तुम ऐसा विचार मत करो, जो अपने धर्म में रहेंगे उनकी रक्षा राम करेंगे, और तुम विशेष चाहो तो हमारा शरीर रखलो, जो भी पूछना चाहोगे उसी का उत्तर इससे मिलता रहेगा, तथा ऐसा भी न समझो कि वह शरीर खराब हो जायगा, यह पंच तत्व से बना हुआ नहीं है, यह तो दर्पण में प्रतिबिंबित शरीर के समान है । यदि तुम्हें संशय हो तो हाथ फेर कर देखलो ।''

गरीबदासजी ने हाथ फेरा तो शरीर दीपक ज्योति सा प्रतीत हुआ, दीखता तो था किन्तु पकड़ने में नहीं आता था । फिर गरीबदासजी ने कहा - ''जब आपने ऐसा देह बना लिया तो कुछ दिन इसे और रखने से तो हम शवपूजक कहलाएंगे जो आपके उपदेश के अनुसार उचित नहीं ।'' महाराज बोले - ''तो फिर यहां एक बिना तेल - घृत और बत्ती के अखंड ज्योति रहेगी उससे तुम्हारे सभी कार्य सिद्ध होते रहेंगे ।'' गरीबदासजी ने कहा - ''उस ज्योति के महान् चमत्कार को देखकर यहां जनता का आना जाना अधिक रहेगा जो हमारे साधन में पूर्ण विघ्न बनेगा, हम पंडे बन जाएंगे, अतः यह भी ठीक नहीं है ।'' गरीबदासजी की निष्कामता देखकर महाराज प्रसन्न हुए

और बोले - ''जो हमारी वाणी का आश्रय लेकर निर्गुण भक्ति करेंगे, उनकी परब्रह्म रक्षा करेंगे और जो इष्ट - भ्रष्ट होगा, उसे परम - पद नहीं मिलेगा।'' इसी कारण श्री महाराजजी के महाप्रयाण के बाद उनकी वाणी ही सबसे अधिक पूज्यनीय सिद्ध हुई । आज भी दादू - सम्प्रदाय के सभी पूजन स्थलोंमें श्रीवाणीजी का प्रमुख पूजन होता है । कहीं कहीं भक्तजनों ने अपनी भावनानुसार चित्र भी प्रतिष्ठित किए हैं ।

निजस्वरूप में प्रवेश शनैः शनैः तपोमूर्ति श्री दादूदयालजी महाराज के लीला संवरण का समय आ पहुँचा । परमज्योति से ज्योति का मिलन तो अवश्यंभावी है । उस समय श्री महाराजजी नारायणा में विराजमान थे । संत माधोदासजी के अनुसार -

बासुर होय समीप रहे दिन, आवत पालकी पंथ आकाशा ।
के शर चन्दन छाय सुगन्धित, ल्याय धरे सुर मंदिर पासा ।।

ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी वि. सं. 1660, उस दिन चार दिव्य पार्षद पुरुष पालकी लिए हुए आकाश मार्ग से धरा पर उतरे । सभी शिष्यों ने, राजा नारायणदासजी ने तथा उनकी प्रजा ने इस अदभुत दृश्य को देखा । सबने महाराजजी से पालकी के आने का कारण पूछा तब उन्हों ने कहा

''कल करिहूँ निज लोक प्रवेशा ''

दूसरे दिन परम पावन पुण्य तिथि अष्टमी को तीन बार आकाशवाणी द्वारा महाराज श्री को पालकी में बिराजमान होने का निर्देश मिला । श्री महाराजजी शांतभाव से पालकी में बिराजमान हुए । दिव्य पालकी के आने एवं महाराज श्री के निजस्वरूप में प्रवेश का समाचार तो पहले दिन ही पूरे क्षेत्र में फैल चुका था । हजारों, हजारों की संख्या में दूर - दूर से आए भक्त गण नारायणा में श्री महाराजजी के दर्शनार्थ एकत्र होगए । एकत्र विशाल जनसमुदाय के सामने ही श्री महाराजजी ने शांत भाव से पालकी में प्रवेश किया । तब दिव्य पार्षद - पुरुषों द्वारा संचालित वह पालकी ऊपर

उठ कर आकाश मार्ग से होती हुई धीरे धीरे भैराणा पर्वत के एक खोल (वर्तमान दादूखोल) में पहुँची । सारा शिष्यवृंद तथा विशाल जनसमुदाय भी पालकी के पीछे - पीछे वहां पहुँच गया । दादू खोल में पालकी के स्थित होते ही एक अद्भुत दिव्य दृश्य नभ मंडल में दिखाई पड़ा । देव, गंधर्व, किन्नर आदि प्रकट होकर जय जयकार करते हुए पुष्प केशिरकी वर्षा करने लगे, अप्सराएं यशोगान करती हुई नृत्य करने लगीं । ठीक यही दृश्य श्री महाराजजी के प्राकट्य के दिन भी उपस्थित हुआ था और संयोग से उस दिन भी अष्टमी तिथि थी । सारे भक्तजन इस अनोखे दृश्य को देखकर आश्चर्य, आनंद एवं श्रद्धा से प्लावित हो गए । तत्पश्चात् अचानक पालकी फिर ऊपर उठी और उड़ती हुई भैराणा पर्वत की एक गुफा (यहां वर्तमान गुफा मंदिर है) के द्वार तक गई । पालकी के गुफा में प्रविष्ट होने के पूर्व श्री महाराज जी ने दाहिना कर - कमल वरद मुद्रा में उठाकर उच्च स्वर से ''संतों ! भक्तों ! सत्यराम'' का उद्घोष किया और पालकी गुफा में अंतर्ध्यान होगई । तभी से दादू सम्प्रदाय में ''सत्यराम'' महामंत्र का प्रयोग आशीर्वादात्मक तथा अभिवादनात्मक दोनों भावों में किया जाता है । जब भी दादू भक्तों को परस्पर अभिवादन करना होता है या आशीर्वाद देना होता है तब अपने सद्गुरुदेव का स्मरण करते हुए ''सत्यराम'' का उच्चारण करते हैं, अतः यह श्रेष्ठ अभिवादन है ।

(परम श्रद्धेय श्री दादूदयालजी महाराज की यह संक्षिप्त जीवनी है)

श्री स्वामी दादूदयालजी महाराज की वाणी

।। महिमा - महात्म्य ।।

।। दोहा ।। प्रगट कल्प तरु अवनि परि, उदय भयो इक आय ।
कृतसु दादूदास को मनवांछित फल दाय ।। 1 ।।
।। कवित्त ।। अवनि कल्प तरु प्रगट, भई दादू की वाणी ।
साखी शब्द दोई ग्रन्थ, सुतो बड़ स्कन्द पिछाणीं ।।
साखी स्कन्द में डारि, अंग सैंतीस सुनाऊँ ।
पद स्कन्द में डारि, सप्त अरु बीस बताऊँ ।।
पच्चीससै पैंसठि साखि, सोउ पुनि साखा ।
चार सैं चंव्वालीस, पद सोउ उपदाखा ।।
पत्र अक्षर लक्ष कहै साठि, सहज पुनि और गनि ।
भक्ति पहुप वैराग्य फल, ब्रह्म बीज जगन्नाथ भनिं ।। 2 ।।
प्रथम सत्ताईस राग पोई, अब मोटी डारा ।
तामैं छोटी और अंग, सैंतीस बिचारा ।।
पद जू चंव्वालीस चारि, सत ऊपर डलियाँ ।
उभय सहस शत पंच, साखी इकतीस दुकलियाँ ।।
अब पात सो अक्षर एक लख, साठ सहस पुनि और गन ।
भक्ति पहुप अरु दर्श फल, ब्रह्म बीज कहै लालजन ।। 3 ।।
ज्ञान भक्ति वैराग्य भाग, बहु भेद बतायो ।
कोटि ग्रंथ को मन्त, पन्थ संक्षेप लखायो ।।
विशुद्धि बुद्धि अविरुद्धि, शुद्धि सर्वज्ञ उजागर ।
परमानंद प्रकाश नाश, बिगडंद महाधर ।।
वर्णबूँद साखी सलिल, पद ललिता सागर हरि ।
दादूदयालु दिनकर दुती, जिन विमल वृष्टि वाणी करी ।। 4 ।।

भये सम्पूर्ण पद अरु साखी, भक्ति मुक्ति तिनमें सो भाखी ।
मनसा वाचा बाचै कोई, ताकूँ आवागमन न होई ।।5।।
वाणी दादू दयालु की, सब शास्त्रन को सार ।
पढे विचारे प्रीती सूं, जे जन उतरे पार ।। 6 ।।
दादू दीन दयालु की, वाणी विस्वावीस ।
तिनकूं खोजि विचार करि, अंग धरे सैंतीस ।। 7 ।।
तिन माहीं जो हारडे, तिनके तिते स्वरुप ।
कोई विवेकी केलवे, काढै अर्थ अनूप ।। 8 ।।
वाणी दादू दयालु की, वाणी कंचन रूप ।
कोई इक सोनी संत जन, घड़ि हैं घाट अनूप ।। 9 ।।
वाणी दादू दयालु की, वाणी अनुभव सार ।
जो जन या हृदय धरै, सो जन उतरे पार ।। 10 ।।
जे जन पढ़े जु प्रीति सूं, उपजे आत्मज्ञान ।
तिनकूं आनन भास ही, एक निरंजन ध्यान ।। 11 ।।
जिनके या हृदय बसी, याही में मन दीं ।
तिनकूं अति मीठी लगी, आठ पहर लैलीन ।। 12 ।।
वेद पुराण सब शास्त्र, और जीते जो ग्रन्थ ।
तिनको बोध बिलोइकै, यह काढ्या निज मंथ ।। 13 ।।
बोले दादू दासजी, साचै शब्द रसाल ।
तिनकी उपमा को कहै, मानो उगले लाल ।। 14 ।।
या वाणी सुनि ज्ञान ह्वे, याही तै वैराग्य ।
या सुन भजन भक्ति बढ़े, या सुन माया त्याग ।। 15 ।।
या वाणी पढ़ि प्रेम ह्वे, या पढ़ि प्रीति अपार ।
या पढ़ि निश्चय नाम की, या पढ़ि प्राण अधार ।। 16 ।।

या पढ़ि कूँ खोजतां, क्षमा शील संतोष ।
याही विचारत बुद्धि ह्वे, या धारत जिव मोक्ष ।। 17 ।।
आदि निरंजन अन्त निरंजन, मध्य निरंजन आदू ।
कहि जगजीवन अलख निरंजन, तहाँ बसे गुरु दादू ।। 18 ।।
बषना वाणी बरसणी, बरसो गहर गंभीर ।
सूकानैं हरिया करे, गुरु वाणी का नीर ।। 19 ।।
अविचल मंत्र जपे निशि वासुर, अविचल आरती गावै ।
अविचल इष्ट रहै शिर ऊपरि, अविचल ही पद पावै ।। 20 ।।
जिनकी वाणी अमृत बखानी, सन्तन मानी सुखदानी ।
जो सुनकर प्राणी हिरदै आनी, बुद्धि थिरानी उन जानी ।।
यह अकथ कहानी प्रगट प्रवानी, नाहिं न छानी गंगा सी ।
गुरु दादू आया शब्द सुनाया, ब्रह्म बताया अविनाशी ।।

दादूवाणी के अंग नाम

गुरु मिल सुमिरण सों लागा, बिरहा जब आया ।
परचा पिवजी सों भया, जरना ठहराया ।। 1 ।।
हैरान देख लय लग रही, निहकर्मी पतिवन्ता ।
चिंतामणि मन को भई, सूक्ष्म-जन्म अनन्ता ।। 2 ।।
माया त्यागी, साँच गहि, भेख रु पंथ निराले ।
साध अंग सब सोध कर, मध मारग चालै ।। 3 ।।
सारगृही जू विचार कर, विश्वास हरि दीया ।
पीव पिछाना आपना, समरथ सब कीया ।। 4 ।।
सब्द सुना श्रवणों धरा, जीवत मिरतक हूवा ।
सूरातन साहस किया, अरु इन्द्रिय मूवा ।। 5 ।।

कालहि मेट सजीवनी, पारस घर आया ।
उपजन, दया, निर्वैरता, सुंदरि पिव पाया ।। 6 ।।
कस्तूरी की बॉस ले, निन्दा परिहरिये ।
निगुणा नेह निवार कर, हरी बिनती करिये ।। 7 ।।
साखीभूत बेली बधी, अबिहड़ अंग लागा ।
अमर भये अरु थिर हुवै, हरि-संगति पागा ।। 8 ।।
दादू दीनदयाल की, बानी बिस्वाबीस ।
सकल अंक सो सोध कर, अंग धरे सैंतीस ।। 9 ।।
इन सैंतीसों अंग में, परमारथ गाया ।
'महानन्द' मुक्ता भया, गुरु दादू पाया ।। 10 ।।

दादूवाणी के राग नाम

राग विविध बहु शोध कर, हरि का गुण गाया ।
साध महामुनि जे भये, परमेश्वर पाया ।। 1 ।।
प्रथम गौड़ी मालवा, कीया कल्याना ।
कनड़ा अड़ाणा आण कर, केदार ठाना ।। 2 ।।
मारू रामकली भली, आशावरि सिन्धूडा ।
देवगन्धार कलिंगडा, परजिया पाया ।। 3 ।।
भाणमली गायन रली, सारँग सार तोडी ।
हुसैनी बंगाली गावताँ, ऐसे मन होडी ।। 4 ।।
नटनारायण सोरठी, गुंड प्रेम अपारा ।
बिलावल सोहे सदा, सोहे रस सारा ।। 5 ।।
बसंत भैरूं ललिता भनी, जैतश्री सवाई ।
धनाश्री और अनन्त की, मिल आरति गाई ।। 6 ।।

आदि अंत हरि सेवही, मिल सबही साधू ।
इन रागन में पद किये, श्री सतगुरु-दादू ।। 7 ।।
अंग-रागन का जोड़ यह, महानन्द गाया ।
गुरु-दादू परसाद तैं, हरि हिरदै पाया ।। 8 ।।

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरञ्जनं, नमस्कार गुरु देवत: ।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगत: ।। 1 ।।
परब्रह्म परापरं, सो मम् देव निरंजनम् ।
निराकारं निर्मलं, तस्य दादू वन्दनम् ।। 2 ।।
गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वर: ।
गुरु: साक्षात् परंब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नम:।। 3 ।।
अखण्डमण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरं ।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नम:।। 4 ।।
केशराम्बरधरं स्वामी, नूर तेज सुधामयम् ।
दादू दयालु दया कृत्यं, सर्व विघ्न विनाशन् ।। 5 ।।
काश्मीर रंजितं वस्त्रं, गौरवर्णं शशीप्रभम् ।
दधानं श्रीगुरुंदादूं, वंदे कारण विग्रहम् ।। 6 ।।
जो प्रभु जग में ज्योतिर्मय, कारण करण अभेव ।
विघ्न हरण मंगलकरण, श्री नमो निरंजन देव ।। 7 ।।
स्वामी दादू सुमिरिये, गहिये निर्मल ज्ञान ।
मनसा वाचा कर्मणा, सुन्दर धरिये ध्यान ।। 8 ।।
स्वामी दादू ब्रह्म है, फेर सार नहिं कोय ।
सुन्दर ताकों सुमिरतां, सब सिध कारज होय ।। 9 ।।

स्वामीजी सिर ऊपरे, स्वामीजी उर मांहि ।
स्वामी दादू सारिसा, सुन्दर दूजा नाहिं ।। 10 ।।
स्वामी दादू दीनदयाल सा, नजर न आया कोय ।
घडसी सारी मांड में, कर्ता करे सो होय ।। 11 ।।
सब संतन सौं बीनती, जे सुमिरें जगदीस ।
हरि गुरु हिरदै में, बसो और हमारे शीश ।। 12 ।।
हरि वन्दन गुरु रीझहीं, गुरु वन्दन सुख राम ।
जगन्नाथ हरि गुरु खुशी, करियो जन परनाम ।। 13 ।।
सदा हमारे रामजी, गुरु गोविंदजी सहाय ।
जन रज्जब जोख्यों नहीं, विघ्न विलय होय जाय ।। 14 ।।
नाम लेत नव ग्रह टरें, भजन करत भय जाय ।
जगजीवन अजपा जपें, सबही विघ्न विलाय ।। 15 ।।
विघ्न बचें हरि नाम सौं, व्याधि विकार विलाय ।
ऐसा शरणा नाम का, सब दुख सहजैं जाय ।। 16 ।।
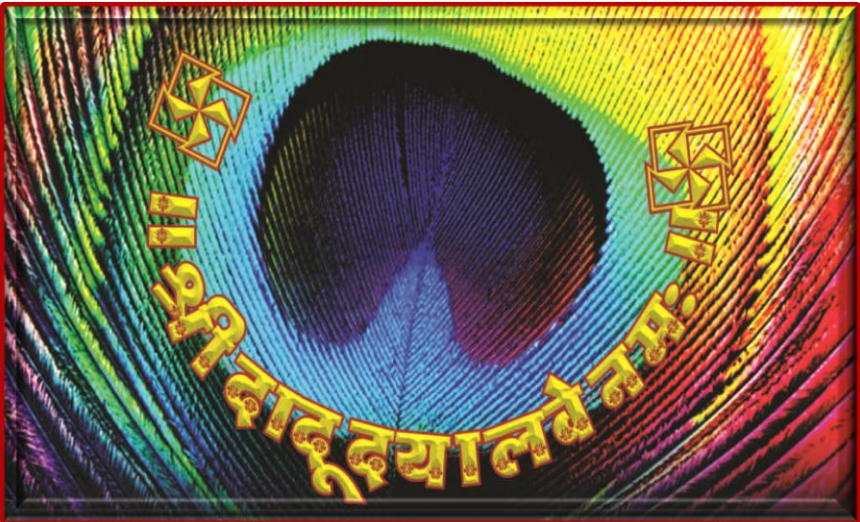
दादूराम ।। ॐ परमात्मने नमः ।। सत्यराम

।। श्री दादूदयालवे नमः ।।

अथ श्री स्वामी दादूदयाल जी की अनुभव वाणी

अथ गुरुदेव का अंग – १

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः ।। 1 ।।

परब्रह्म परापरं, सो मम देव निरंजनम्।
निराकारं निर्मलं, तस्य दादू वन्दनम् ।। 2 ।।

गुरु प्राप्ति और फल

दादू गैब मांहिं गुरुदेव मिल्या, पाया हम परसाद।
मस्तक मेरे कर धर्‌या,दिक्ष्या अगम अगाध ।। 3 ।।
दादू सतगुरु सहज में, किया बहु उपकार।
निर्धन धनवंत करि लिया, गुरु मिलिया दातार ।। 4 ।।
दादू सतगुरु सूं सहजैं मिल्या, लिया कंठ लगाइ।
दया भई दयाल की, तब दीपक दिया जगाइ ।। 5 ।।
दादू देखु दयाल की, गुरु दिखाई बाट।
ताला कूंची लाइ कर, खोले सबै कपाट ।। 6 ।।

सद्‌गुरु सामर्थ्य के अंग

दादू सतगुरु अंजन बाहिकर, नैन पटल सब खोले।
बहरे कानों सुणने लागे, गूंगे मुख सौं बोले ।। 7 ।।
सतगुरु दाता जीव का, श्रवण सीस कर नैन।
तन मन सौंज संवारि सब, मुख रसना अरु बैन ।। 8 ।।
राम नाम उपदेश कर, अगम गवन यहु सैन।
दादू सतगुरु सब दिया, आप मिलाये अैन ।। 9 ।।
सत गुरु किया फेरि कर, मन का औरै रूप।
दादू पंचों पलटि कर, कैसे भये अनूप ।। 10 ।।
साचा सतगुरु जे मिलै, सब साज संवारै।
दादू नाव चढ़ाय कर, ले पार उतारै ।। 11 ।।
सतगुरु पसु मानस करै, मानस थैं सिध सोइ।
दादू सिध थैं देवता, देव निरंजन होइ ।। 12 ।।

दादू काढे काल मुखि, अंधे लोचन देइ।
दादू अैसा गुरु मिल्या, जीव ब्रह्म कर लेइ ।। 13 ।।
दादू काढे काल मुखि, श्रवणहुँ सबद सुनाइ।
दादू ऐसा गुरु मिल्या, मृतक लिये जिलाइ ।। 14 ।।
दादू काढे काल मुखि, गूंगे लिये बुलाइ।
दादू अैसा गुरु मिल्या, सुख में रहे समाइ ।। 15 ।।
दादू काढे काल मुख, मिहर दया करि आइ।
दादू अैसा गुरु मिल्या, महिमा कही न जाइ ।। 16 ।।
सतगुरु काढे केस गहि, डूबत इहि संसार।
दादू नाव चढाइ करि, कीये पैली पार ।। 17 ।।
भौ सागर में डूबतां, सतगुरु काढे आय।
दादू खेवट गुरु मिल्या, लीये नाव चढाइ ।। 18 ।।
दादू उस गुरुदेव की, मैं बलिहारी जाऊँ।
जहाँ आसण अमर अलेख था, ले राखे उस ठाऊँ ।। 19 ।।

ज्ञानोत्पत्ति

आत्म मांहै ऊपजै, दादू पंगुल ज्ञान।
कृतम् जाइ उलंघि करि, जहां निरंजन थान ।। 20 ।।
आत्म बोध बँझ का बेटा, गुरु मुखि उपजै आइ।
दादू पंगुल पंच बिन, जहाँ राम तहँ जाइ ।। 21 ।।

गुरु शब्द

साचा सहजैं ले मिलै, शब्द गुरु का ज्ञान।
दादू हमको ले चल्या, जहँ प्रीतम का स्थान ।। 22 ।।
दादू शब्द विचार करि, लागि रहे मन लाइ।
ज्ञान गहै गुरुदेव का, दादू सहज समाइ ।। 23 ।।

दया विनती

दादू कहै सतगुरु शब्द सुनाइ करि, भावै जीव जगाइ।
भावै अन्तरि आप कहि, अपने अंग लगाइ ।। 24 ।।

सतगुरु शब्द बाण

दादू बाहरि सारा देखिये, भीतरि किया चूर।
सतगुरु शब्दों मारिया, जाण न पावै दूर ।। 25 ।।
दादू सतगुरु मारे शब्द सौं, निरखि निरखि निज ठौर।
राम अकेला रह गया, चित्त न आवै और ।। 26 ।।
दादू हमको सुख भया, साध शब्द गुरु ज्ञान।
सुधि बुधि सोधी समझकर, पाया पद निर्वाण ।। 27 ।।

सतगुरु शब्द बाण

दादू शब्द बाण गुरु साध के, दूर दिसन्तरि जाइ।
जिहि लागे सो ऊबरे, सूते लिये जगाइ ।। 28 ।।
सतगुरु शब्द मुख सौं कह्या, क्या नेड़े क्या दूर।
दादू सिष श्रवणहुँ सुण्या, सुमिरण लागा सूर ।। 29 ।।

करनी बिना कथनी

शब्द दूध घृत राम रस, मथि करि काढ़ै कोइ।
दादू गुरु गोविन्द बिन, घट घट समझि न होइ ।। 30 ।।
शब्द दूध घृत राम रस, कोई साध बिलोवणहार।
दादू अमृत काढ़ि ले, गुरुमुखि गहै विचार ।। 31 ।।
घीव दूध में रमि रह्या, व्यापक सब ही ठौर।
दादू वक्ता बहुत हैं, मथि काढैं ते और ।। 32 ।।
कामधेनु घट घीव है, दिन दिन दुर्बल होइ।
गौरू ज्ञान न ऊपजै, मथि नहिं खाया सोइ ।। 33 ।।

साचा समर्थ गुरु मिल्या, तिन तत्त दिया बताइ।
दादू मोटा महाबली, घट घृत मथि कर खाइ ॥ 34 ॥
मथि करि दीपक कीजिये, सब घट भया प्रकाश।
दादू दीवा हाथि करि, गया निरंजन पास ॥ 35 ॥

परमार्थी

दीवै दीवा कीजिये, गुरुमुख मार्ग जाइ।
दादू अपने पीव का, दर्शन देखै आइ ॥ 36 ॥
दादू दीया है भला, दीया करौ सब कोइ।
घर में धर्‍या न पाइये, जे कर दीया न होइ ॥ 37 ॥
दादू दीये का गुण तेल है, दीया मोटी बात।
दीया जग में चाँदणां, दीया चालै साथ ॥ 38 ॥

सत्य गुरु

निर्मल गुरु का ज्ञान गहि, निर्मल भक्ति विचार।
निर्मल पाया प्रेम रस, छूटे सकल विकार ॥ 39 ॥
निर्मल तन मन आत्मा, निर्मल मनसा सार।
निर्मल प्राणी पंच कर, दादू लंघे पार ॥ 40 ॥
परापरी पासै रहै, कोइ न जाणै ताहि।
सतगुरु दिया दिखाइ करि, दादू रह्या ल्यौ लाइ ॥ 41 ॥

शिष्य जिज्ञासा

जिन हम सिरजे सो कहाँ, सतगुरु देहु दिखाइ।
दादू दिल अरवाह का, तहँ मालिक ल्यौ लाइ ॥ 42 ॥
मुझ ही मैं मेरा धणी, पड़दा खोलि दिखाइ।
आत्म सौं परमात्मा, प्रकट आण मिलाइ ॥ 43 ॥
भरि भरि प्याला, प्रेम रस, अपणे हाथ पिलाइ।
सतगुरु के सदिकै किया, दादू बलिबलि जाइ ॥ 44 ॥

सरवर भरिया दह दिसा, पंखी प्यासा जाइ।
दादू गुरु प्रसाद बिन, क्यों जल पीवै आइ ।। 45 ।।

सतगुरु बेपरवाही

मान सरोवर मांहिं जल, प्यासा पीवै आइ।
दादू दोष न दीजिये, घर घर कहण न जाइ ।। 46 ।।

गुरु लक्षण

दादू गुरु गरवा मिल्या, ताथैं सब गमि होइ।
लोहा पारस परसतां, सहज समाना सोइ ।। 47 ।।
दीन गरीबी गहि रह्या, गरवा गुरु गम्भीर।
सूक्ष्म शीतल सुरति मति, सहज दया गुरु धीर ।। 48 ।।
सो धी दाता पलक में, तिरे तिरावण जोग।
दादू अैसा परम गुरु, पाया किहीं संजोग ।। 49 ।।
दादू सतगुरु अैसा कीजिये, राम रस माता।
पार उतारे पलक में, दर्शन का दाता ।। 50 ।।
देवै किरका दरद का, टूटा जोड़ै तार।
दादू सांधै सुरति को, सो गुरु पीर हमार ।। 51 ।।
दादू घाइल ह्वै रहे, सतगुरु के मारे।
दादू अंग लगाय कर, भौसागर तारे ।। 52।
दादू साचा गुरु मिल्या, साचा दिया दिखाइ।
साचे को साचा मिल्या, साचा रह्या समाइ ।। 53 ।।
साचा सतगुरु सोधि ले, साचे लीजे साध।
साचा साहिब सोधि करि, दादू भक्ति अगाध ।। 54 ।।
सन्मुख सतगुरु साधु सौं, साई सौं राता।
दादू प्याला प्रेम का, महारस माता ।। 55 ।।

सांई सौं साचा रहै, सतगुरु सौं सूरा।
साधू सौं सनमुख रहै, सो दादू पूरा ।। 56 ।।
सतगुरु मिलै तो पाइये, भक्ति मुक्ति भंडार।
दादू सहजैं देखिए, साहिब का दीदार ।। 57 ।।
दादू सांई सतगुरु सेविये, भक्ति मुक्ति फल होइ।
अमर अभय पद पाइये, काल न लागै कोइ ।। 58 ।।

सतगुरु विमुख ज्ञान

इक लख चन्दा आण घर, सूरज कोटि मिलाय।
दादू गुरु गोविन्द बिन, तो भी तिमिर न जाय ।। 59 ।।
अनेक चंद उदय करै, असंख्य सूर प्रकास।
एक निरंजन नांव बिन, दादू नहीं उजास ।। 60 ।।
दादू कद यहु आपा जाइगा, कद यहु बिसरै और।
कद यह सूक्ष्म होइगा, कद यहु पावै ठौर ।। 61 ।।
दादू विषम दुहेला जीव को, सतगुरु तैं आसान।
जब दरवै तब पाइए, नेड़ा ही अस्थान ।। 62 ।।

गुरु ज्ञान

दादू नैन न देखे नैन को, अन्तर भी कुछ नाहिं।
सतगुरु दर्पण कर दिया, अरस परस मिलि माहिं ।। 63 ।।
घट घट रात रतन है, दादू लखै न कोइ।
सतगुरु सब्दौं पाइये, सहजैं ही गम होइ ।। 64 ।।
जब ही कर दीपक दिया, तब सब सूझन लाग।
यों दादू गुरु ज्ञान थैं, राम कहत जन जाग ।। 65 ।।

आत्मार्थी भेष

दादू मन माला तहँ फेरिये, जहँ दिवस न परसै रात।
तहाँ गुरु बाना दिया, सहजैं जपिये तात ।। 66 ।।

दादू मन माला तहँ फेरिये, जहँ प्रीतम बैठे पास।
आगम गुरु थैं गम भया, पाया नूर निवास ।। 67 ।।
दादू मन माला तह फेरिये जहँ आपै एक अनन्त।
सहजैं सो सतगुरु मिल्या, जुग-जुग फाग बसन्त ।। 68 ।।
दादू सतगुरु माला मन दिया, पवन सुरति सूँ पोइ।
बिन हाथों निश दिन जपै, परम जाप यूँ होय ।। 69 ।।
दादू मन फकीर मांही हुवा, भीतर लिया भेख।
शब्द गहै गुरुदेव का, मांगै भीख अलेख ।। 70 ।।
दादू मन फकीर सतगुरु किया, कहि समझाया ज्ञान।
निश्चल आसन बैस कर, अकल पुरुष का ध्यान ।। 71 ।।
दादू मन फकीर जग तैं रह्या, सतगुरु लीया लाइ।
अहनिश लागा एक सौं, सहज शून्य रस खाइ ।। 72 ।।
दादू मन फकीर अैसैं, भया, सतगुरु के प्रसाद।
जहाँ का था लागा तहाँ, छूटे वाद विवाद ।। 73 ।।
ना घर रह्या न वन गया, ना कुछ किया कलेश।
दादू मन ही मन मिल्या, सतगुरु के उपदेश ।। 74 ।।

भ्रम विध्वंस

दादू यहु मसीति यहु देहुरा, सतगुरु दिया दिखाइ।
भीतर सेवा बंदगी, बाहर काहे जाइ ।। 75 ।।

कस्तूरिया मृग

दादू मंझे चेला मंझि गुरु, मंझे ही उपदेश।
बाहर ढूढैं बावरे, जटा बधाये केश ।। 76 ।।

मन का दमन

मन का मस्तक मूंडिये, काम क्रोध के केश।
दादू विषय विकार सब, सतगुरु के उपदेश ।। 77 ।।

भ्रम विध्वंश

दादू पड़दा भ्रम का, रह्या सकल घट छाइ।
गुरु गोविन्द कृपा करैं, तो सहजैं ही मिट जाइ ।। 78 ।।

सूक्ष्म मार्ग

दादू जिहिं मत साधू उद्धरैं, सो मत लिया सोध।
मन लै मारग मूल गहि, यह सतगुरु का परमोध ।। 79 ।।

विचार

दादू सोइ मार्ग मन गह्या, जिहिं मारग मिलिए जाइ।
वेद कुरानों ना कह्या, सो गुरु दिया दिखाइ ।। 80 ।।
दादू मन भुजंग यहु विष भर्‍या, निर्विष क्योंही न होइ।
दादू मिल्या गुरु गारड़ी, निर्विष कीया सोइ ।। 81 ।।
एता कीजे, आप थैं, तन मन उनमन लाइ।
पंच समाधी राखिये, दूजा सहज सुभाइ ।। 82 ।।
दादू जीव जंजालों पड़ गया, उलझ्या नौ मण सूत।
कोई इक सुलझे सावधान, गुरु बाइक अवधूत ।। 83 ।।

मन का निग्रह करना

चंचल चहुँ दिसि जात है, गुरु बाइक सूँ बंधि।
दादू संगति साध की, पारब्रह्म सौं संधि ।। 84 ।।
गुरु अंकुश मानैं नहीं, उदमद माता अंध।
दादू मन चेतै नहीं, काल न देखे फंध ।। 85 ।।
दादू मार्‍यां बिन मानै नहीं, यहु मन हरि की आन।
ज्ञान खड़ग गुरुदेव का, ता संगि सदा सुजान ।। 86 ।।
जहाँ मन उठि चलै, फेरि तहां ही राखि।
तहाँ दादू लैलीन करि, साध कहैं गुरु साखि ।। 87 ।।
दादू मनहीं सौं मल उपजै, मन हीं सौं मल धोइ।
सीख चली गुरु साध की, तौ तूं निर्मल होइ ।। 88 ।।

दादू कछब अपने करि लिये, मन इन्द्रिय निज ठौर।
नाम निरंजन लागि रहु, प्राणी परिहर और ।। 89 ।।

अधिकारी अनधिकारी के लक्षण

मन के मतै सब कोई खेलै, गुरु मुख बिरला कोई।
दादू मन की मानैं नहीं, सतगुरु का सिष सोइ ।। 90 ।।
सब जीवों को मन ठगै, मन को बिरला कोइ।
दादू गुरु के ज्ञान सौं, सांई सन्मुख होइ ।। 91 ।।
दादू एक सौं लैलीन होना, सबै सयानप येह।
सतगुरु साधु कहत हैं, परम तत्त जपि लेह ।। 92 ।।
सतगुरु शब्द विवेक बिन, संयम रह्या न जाइ ।
दादू ज्ञान विचार बिन, विषय हलाहल खाइ ।। 93 ।।
घर घर घट कोल्हू चलै, अमी महारस जाइ।
दादू गुरु के ज्ञान बिन, विषै हलाहल खाइ ।। 94 ।।

गुरु शिष्य परमोध

सतगुरु शब्द उलंघि करि, जनि कोई सिष जाइ।
दादू पग पग काल है, जहाँ जाइ तहँ खाइ ।। 95 ।।
सतगुरु बरजै सिष करै, क्यूँ कर बंचै काल।
दहदिश देखत बह गया, पाणी फोड़ी पाल ।। 96 ।।
दादू सतगुरु कहै सो सिष करै, सब सिधि कारज होइ।
अमर अभय पद पाइये, काल न लागै कोई ।। 97 ।।
दादू जे साहिब को भावै नहीं, सो हम थैं जनि होइ।
सतगुरु लाजै आपना, साध न मानै कोइ ।। 98 ।।
दादू हूं की ठाहर है कहो, तन की ठाहर तूं।
री की ठाहर जी कहो, ज्ञान गुरु का यूं ।। 99 ।।

दादू पंच स्वादी पंच दिशि, पंचे पंचों बाट।
तब लग कह्या न कीजिये, गहि गुरु दिखाया घाट ।। 100 ।।
दादू पंचों एक मत, पंचों पूऱ्या साथ।
पंचों मिल सन्मुख भये, तब पंचों गुरु की बाट ।। 101 ।।

सतगुरु विमुख ज्ञान

दादू ताता लोहा तिणें सौं, क्यूं कर पकड़या जाइ।
गहन गति सूझै नहीं, गुरु नहीं बूझै आइ ।। 102 ।।

गुरुमुख कसौटी

दादू औगुण गुण कर माने गुरु के, सोई शिष्य सुजाण।
सतगुरु औगुण क्यों करै, समझै सोई सयाण ।। 103 ।।
सोने सेती बैर क्या, मारे घण के घाइ।
दादू काटि कलंक सब, राखै कंठ लगाइ ।। 104 ।।
पाणी माहैं राखिये, कनक कलंक न जाहि।
दादू गुरु के ज्ञान सों, ताइ अगनि में बाहि ।। 105 ।।
दादू माहैं मीठा हेत करि, ऊपर कड़वा राख।
सतगुरु सिष कौं सीख दे, सब साधों की साख ।। 106 ।।
दादू कहै, सिष भरोसे आपणै, ह्वै बोली हुसियार।
कहेगा सो बहेगा, हम पहली करैं पुकार ।। 107 ।।
दादू सतगुरु कहै सो कीजिये, जे तूं सिष सुजाण।
जहाँ लाया तहँ लागि रहु, बुझे कहा अजाण ।। 108 ।।
गुरु पहली मन सौं कहै, पीछे नैन की सैन।
दादू सिष समझै नहीं, कहि समझावै बैन ।। 109 ।।
कहै लखै सो मानवी, सैन लखै सो साध।
मन लखै सो देवता, दादू अगम अगाध ।। 110 ।।

कठोरता

दादू कहि कहि मेरी जीभ रही, सुनि सुनि तेरे कान।
सतगुरु बपुरा क्या करै, जो चेला मूढ़ अजान ।। 111 ।।

गुरु शिष्य प्रबोध

एक शब्द सब कुछ कह्या, सतगुरु सिष समझाइ।
जहाँ लाया तहँ लागै नहीं, फिर फिर बूझै आइ ।। 112 ।।

अज्ञ स्वभाव अपलट

ज्ञान लिया सब सीख सुणि, मन का मैल न जाइ।
गुरु बिचारा क्या करै, सिष विषै हलाहल खाइ ।। 113 ।।
सतगुरु की समझै नहीं, अपणै उपजै नांहि।
तो दादू क्या कीजिए, बुरी बिथा मन मांहि ।। 114 ।।

सत्यासत्य गुरु पारख

गरु अपंग पग पंष बिन, शिष शाखा का भार।
दादू खेवट नाव बिन, क्यूं उतरेंगे पार ।। 115 ।।
दादू शंसा जीव का, शिष शाखा का साल।
दोनों को भारी पड़ी, होगा कौण हवाल ।। 116 ।।

झूठे गुरु और झूठे शिष्यों की गति

अंधे अंधा मिल चले, दादू बंध कतार।
कूप पड़े हम देखतां, अंधे अंधा लार ।। 117 ।।
सोधी नहीं शरीर की, औरों को उपदेश ।
दादू अचरज देखिया, ये जाहिंगे किस देस ।। 118 ।।
दादू सोधी नहीं शरीर की, कहैं अगम की बात।
जान कहावैं बापुड़े, आवध लिए हाथ ।। 119 ।।

सत्यासत्य गुरु पारख लक्षण

दादू माया माहै काढि करि, फिर माया में दीन्ह।
दोऊ जन समझैं नहीं, एको काज न कीन्ह ।। 120 ।।

दादू कहै, सो गुरु किस काम का, गहि भ्रमावै आन।
तत्त बतावै निर्मला, सो गुरु साध सुजान ।। 121 ।।
तूं मेरा, हूं तेरा, गुरु सिष किया मंत।
दोन्यों भूले जात हैं, दादू बिसर्‍या कंत ।। 122 ।।
दुहि दुहि पीवै ग्वाल गुरु, सिष है छेली गाइ।
यह औसर योंही गया, दादू कहि समझाइ ।। 123 ।।
शिष गोरु, गुरु ग्वाल है, रक्षा कर कर लेइ ।
दादू राखै जतन कर, आनि धणी को देय ।। 124 ।।
झूठे अंधे गुरु घणे, भरम दिढावैं आइ।
दादू साचा गुरु मिलै, जीव ब्रह्म ह्वै जाइ ।। 125 ।।
झूठे अंधे गुरु घणे, बँधे विषय विकार ।
दादू साचा गुरु मिल्या, सन्मुख सिरजनहार ।। 126 ।।
झूठे अंधे गुरु घणे, भरम दिढ़ावैं काम।
बँधे माया मोह सौं, दादू मुख सौं राम ।। 127 ।।
झूठे अँधे गुरु घणे, भटकैं घर घर बार।
कारज को सीझै नहीं, दादू माथै मार ।। 128 ।।

बेखर्च व्यवसनी

दादू भक्त कहावैं आपको, भक्ति न जानैं भेव।
सुपनै ही समझैं नहीं, कहाँ बसै गुरुदेव ।। 129 ।।

भ्रम विध्वंस

भ्रम कर्म जग बंधिया, पंडित दिया भुलाइ।
दादू सतगुरु ना मिले, मारग देइ दिखाइ ।। 130 ।।
दादू पंथ बतावैं पाप का, भ्रम कर्म विश्वास।
निकट निरंजन जे रहै, क्यों न बतावैं तास ।। 131 ।।

विचार

दादू आपा उरझे उरझिया, दीसे सब संसार।
आपा सुरझे सुरझिया, यह गुरु ज्ञान विचार ।। 132 ।।

गुरुमुख कसौटी

साधु अंग का निर्मला, तामें मल न समाइ।
परम गुरु प्रकट कहै, ताथैं दादू ताइ ।। 133 ।।

सुमिरण नाम चितावणी

राम नाम गुरु सबद सौं, रे मन पेलि भरम।
निहकर्मी सौं मन मिल्या, दादू काटि करम ।। 134 ।।

सूक्ष्म मार्ग

दादू बिन पाइन का पंथ, क्यों करि पहुँचै प्राण।
विकट घाट औघट खरे, मांहि शिखर असमान ।। 135 ।।
मन ताजी चेतन चढै, ल्यौ की करै लगाम।
शब्द गुरु का ताजणां, कोइ पहुंचै साधु सुजाण ।। 136 ।।

पारख लक्षण

साधौं सुमिरण सो कह्या, जिहि सुमिरण आपा भूल।
दादू गहि गंभीर गुरु, चेतन आनन्द मूल ।। 137 ।।

स्वार्थी परमार्थी

दादू आप स्वारथ सब सगे, प्राण सनेही नांहि।
प्राण सनेही राम है, कै साधु कलि मांहि ।। 138 ।।
सुख का साथी जगत सब, दुख का नाहीं कोइ।
दुख का साथी सांइयाँ, दादू सतगुरु होइ ।। 139 ।।
सगे हमारे साध हैं, सिर पर सिरजनहार।
दादू सतगुरु सो सगा, दूजा धंध विकार ।। 140 ।।

दया निर्वैरता

दादू के दूजा नहीं, एकै आत्मराम।
सतगुर सिर पर साध सब, प्रेम भक्ति विश्राम ।। 141 ।।

दादू सुध बुध आत्मा, सतगुरु परसे आइ।
दादू भृंगी कीट ज्यों, देखत ही ह्वै जाइ ।। 142 ।।

दादू भृंगी कीट ज्यूं, सतगुरु सेती होइ।
आप सरीखे कर लिये, दूजा नाहीं कोइ ।। 143 ।।

दादू कच्छब राखै दृष्टि में, कुँजों के मन माहिं।
सतगुरु राखै आपणां, दूजा कोई नाहिं ।। 144 ।।

बच्चों के माता पिता, दूजा नाहीं कोइ ।
दादू निपजै भाव सूं, सतगुरु के घट होइ ।। 145 ।।

सतगुरु बेपरवाही

एकै शब्द अनन्त शिष, जब सतगुरु बोले।
दादू जड़े कपाट सब, दे कूँची खोले ।। 146 ।।

बिन ही किया होइ सब, सन्मुख सिरजनहार।
दादू करि करि को मरै, शिष शाखां शिर भार ।। 147 ।।

सूरज सन्मुख आरसी, पावक किया प्रकास।
दादू सांई साधु बिच, सहजैं निपजै दास ।। 148 ।।

मन इन्द्रिय निग्रह

दादू पंचों ये परमोधि ले, इन्हीं को उपदेश।
यहु मन अपणा हाथ कर, तो चेला सब देश ।। 149 ।।

अमर भये गुरु ज्ञान सौं, केते इहि कलि माहिं।
दादू गुरु के ज्ञान बिन, केते मरि मरि जाहिं ।। 150 ।।

औषध खाइ न पथ्य रहै, विषम व्याधि क्यों जाइ ।
दादू रोगी बावरा, दोष बैद को लाइ ।। 151 ।।

बैद बिथा कहै देखि करि, रोगी रहै रिसाइ।
मन मांहै लीये रहै, दादू व्याधि न जाइ ।। 152 ।।
दादू बैद बिचारा क्या करै, रोगी रहै न साच।
खाटा मीठा चरपरा, मांगै मेरा वाच ।। 153 ।।

गुरु उपदेश

दुर्लभ दर्शन साध का, दुर्लभ गुरु उपदेश ।
दुर्लभ करबा कठिन है, दुर्लभ परस अलेख ।। 154 ।।

गुरु मन्त्र (गायत्री मन्त्र)

दादू अविचल मंत्र, अमर मंत्र, अखै मंत्र,
अभै मंत्र, राम मंत्र, निजसार।
संजीवन मंत्र, सवीरज मंत्र, सुन्दर मंत्र,
शिरोमणि मंत्र, निर्मल मंत्र, निराकार ।।
अलख मंत्र, अकल मंत्र, अगाध मंत्र, अपार मंत्र, अनन्त मंत्र राया।
नूर मंत्र, तेज मंत्र, ज्योति मंत्र, प्रकाश मंत्र, परम मंत्र, पाया ।।
उपदेश दीक्षा दादू गुरु राया ।। 155 ।।
दादू सब ही गुरु किए, पशु पंखी बनराइ।
तीन लोक गुण पंच सौं, सबही मांहिं खुद आइ ।। 156 ।।
जे पहली सतगुरु कह्या, सो नैनहुँ देख्या आइ।
अरस परस मिलि एक रस, दादू रहे समाइ ।। 157 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
प्रथमो श्री गुरुदेव काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 1 ।। साखी 157 ।।
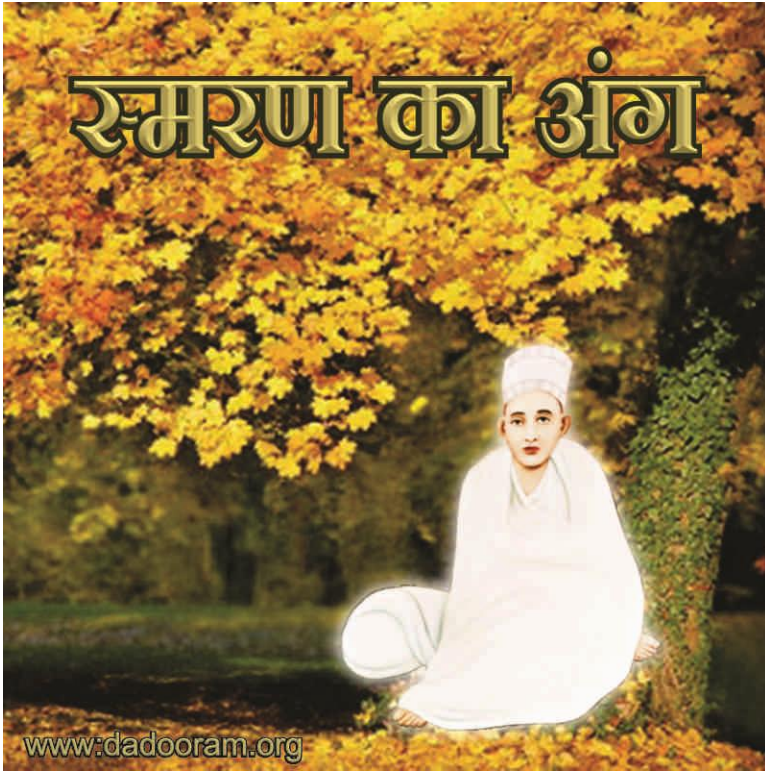
अथ स्मरण का अंग-२

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवत:।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगत: ।। 1 ।।

एकै अक्षर पीव का, सोई सत्य करि जाण।
राम नाम सतगुरु कह्या, दादू सो परवाण ।। 2 ।।

पहली श्रवण द्वितीय रसना, तृतीय हिरदै गाइ।
चतुर्दशी चेतन भया, तब रोम रोम ल्यौ लाइ ।। 3 ।।

मन प्रबोध

दादू नीका नांव है, तीन लोक तत सार।
रात दिवस रटबो करो, रे मन इहै विचार ।। 4 ।।

दादू नीका नांव है, हरि हिरदै न बिसारि।
मूरति मन मांहैं बसै, सांसैं सांस संभारि ।। 5 ।।
सांसैं सांस संभालतां, इक दिन मिलि है आइ।
सुमिरण पैंडा सहज का, सतगुरु दिया बताइ ।। 6 ।।
दादू नीका नांव है, सौ तू हिरदय राखि।
पाखंड प्रपंच दूर करि, सुन साधुजन की साखि ।। 7 ।।
दादू नीका नांव है, आप कहै समझाइ ।
और आरम्भ सब छाड़ दे, राम नाम ल्यौ लाइ ।। 8 ।।
राम भजन का सोच क्या, करता होइ सो होइ।
दादू राम संभालिये, फिर बुझिये न कोइ ।। 9 ।।

नाम चेतावनी

राम तुम्हारे नांव बिन, जे मुख निकसै और।
तो इस अपराधी जीव को, तीन लोक कित ठौर ।। 10 ।।
छिन-छिन राम संभालतां, जे जीव जाइ तो जाय।
आतम के आधार को, नाहीं आन उपाय ।। 11 ।।

स्मरण माहात्म्य

एक मुहूर्त मन रहै, नांव निरंजन पास।
दादू तब ही देखतां, सकल कर्म का नास ।। 12 ।।
सहजैं ही सब होइगा, गुण इन्द्रिय का नास।
दादू राम संभालतां, कटैं कर्म के पास ।। 13 ।।

स्मरण नाम चितावणी

राम नाम गुरु शब्द सों, रे मन पेलि भरम।
निहकर्मी सौं मन मिल्या, दादू काट करम ।। 14 ।।
एक राम के नाम बिन, जीव की जलन न जाइ।
दादू केते पचि मुए, करि-करि बहुत उपाइ ।। 15 ।।

दादू एक राम ही टेक गहि, दूजा सहज सुभाइ।
राम नाम छाडै नहीं, दूजा आवै जाइ ।। 16 ।।
दादू राम अगाध है, परिमित नाहीं पार।
अवर्ण वर्ण न जाणिये, दादू नाम अधार ।। 17 ।।
दादू राम अगाध है, अविगत लखै न कोइ।
निर्गुण सगुण का कहै, नाम विलम्ब न होइ ।। 18 ।।
दादू राम अगाध है, बेहद लख्या न जाइ।
आदि अंत नहि जाणिये, नाम निरन्तर गाइ ।। 19 ।।

अद्वैत ब्रह्म

दादू राम अगाध है, अकल अगोचर एक।
दादू राम विलम्बिए, साधू कहैं अनेक ।। 20 ।।
दादू एकै अलह राम है, समर्थ सांई सोइ।
मैदे के पकवान सब, खातां होइ सु होइ ।। 21 ।।

निर्गुण सगुण विवाद की निवृत्ति

सगुण निर्गुण ह्वै रहै, जैसा है तैसा लीन।
हरि सुमिरण ल्यौ लाइए, का जाणों का कीन ।। 22 ।।

नाम चित्त आवै सो लेय

दादू सिरजनहार के, केते नाम अनन्त।
चित आवै सो लीजिये, यों साधु सुमरैं संत ।। 23 ।।
दादू जिन प्राण पिण्ड हमकौ दिया, अंतर सेवैं ताहि।
जे आवै ओसण सिर, सोई नांव संवाहि ।। 24 ।।

चितावणी

दादू ऐसा कौण अभागिया, कछु दिढावै और।
नाम बिना पग धरन को, कहो कहाँ है ठौर ।। 25 ।।

सुमिरण नाम महिमा

दादू निमिष न न्यारा कीजिये, अंतर थैं उर नाम।
कोटि पतित पावन भये, केवल कहतां राम ।। 26 ।।

मन प्रबोध

दादू जे तैं अब जाण्या नहीं, राम नाम निज सार।
फिर पीछै पछिताहिगा, रे मन मूढ गँवार ।। 27 ।।

दादू राम संभाल ले, जब लग सुखी सरीर।
फिरि पीछै पछिताहिगा, जब तन मन धरै न धीर ।। 28 ।।

दुख दरिया संसार है, सुख का सागर राम।
सुख सागर चलि जाइए, दादू तज बेकाम ।। 29 ।।

दादू दरिया यहु संसार है, तामें राम नाम निज नाव।
दादू ढील न कीजिये, यहु औसर यहु डाव ।। 30 ।।

स्मरण नाम निःसंशय

मेरा संसा को नहीं, जीवण मरण का राम।
सुपिनैं ही जनि बीसरै, मुख हिरदै हरि नाम ।। 31 ।।

स्मरण नाम विरह

दादू दुखिया तब लगै, जब लग नाम न लेहि।
तब ही पावन परम सुख, मेरी जीवनि येहि ।। 32 ।।

स्मरण नाम पारख लक्षण

कछु न कहावे आप को, सांई को सेवे।
दादू दूजा छाड़ि सब, नाम निज लेवे ।। 33 ।।

नाम स्मरण से जीवों के संशय की निवृत्ति

जे चित्त चहुँटै राम सौं, सुमिरण मन लागै।
दादू आत्मा जीव का, संसा सब भागै ।। 34 ।।

स्मरण नाम चितावणी

दादू पीव का नाम ले, तो मिटै सिर साल।
घड़ी मुहूरत चालनां, कैसी आवै काल ।। 35 ।।

स्मरण बिना सांस न ले

दादू औसर जीव तैं, कह्या न केवल राम ।
अंत काल हम कहेंगे, जम बैरी सौं काम ।। 36 ।।

दादू ऐसे महँगे मोल का, एक सांस जे जाइ ।
चौदह लोक समान सो, काहे रेत मिलाइ ।। 37 ।।

अमूल्य श्वास

सोई सांस सुजाण नर, सांई सेती लाइ ।
कर साटा सिरजनहार सौं, महँगे मोल बिकाइ ।। 38 ।।

व्यर्थ जीवन

जतन करै नहीं जीव का, तन मन पवना फेर।
दादू महँगे मोल का, द्वै दोवटी इक सेर ।। 39 ।।

सफल जीवन

दादू रावत राजा राम का, कदे न बिसारै नांव ।
आत्मराम संभालिये, तो सुबस काया गांव ।। 40 ।।

स्मरण चितावणी

दादू अहनिशि सदा शरीर में, हरि चिंतत दिन जाइ ।
प्रेम मगनलै लीन मन, अन्तरगति ल्यौ लाइ ।। 41 ।।

निमिष एक न्यारा नहीं, तन मन मंझि समाइ।
एक अंगि लागा रहै, ताको काल न खाइ ।। 42 ।।

दादू पिंजर पिंड शरीर का, सुवटा सहज समाइ।
रमता सेती रमि रहै, विमल विमल जस गाइ ।। 43 ।।

अविनाशी सौं एक ह्वै, निमिष न इत उत जाइ।
बहुत बिलाई क्या करै, जे हरि हरि शब्द सुणाइ ।। 44 ।।

दादू जहाँ रहूँ तहँ राम सौं, भावै कंदलि जाइ।
भावै गिरि परवत रहूँ, भावै गृह बसाइ ।। 45 ।।

मन परमोध

दादू राम कहे सब रहत है, नखसिख सकल सरीर।
राम कहे बिन जात है, समझि मनवां वीर ॥ 47 ॥
दादू राम कहै सब रहत है, लाहा मूल सहेत ।
राम कहे बिन जात है, मूरख मनवां चेत ॥ 48 ॥
दादू राम कहे सब रहत है, आदि अंति लौं सोइ।
राम कहे बिन जात है, यहु मन बहुरि न होइ ॥ 49 ॥
दादू राम कहे सब रहत है, जीव ब्रह्म की लार ।
राम कहे बिन जात है, रे मन हो होशियार ॥ 50 ॥

परमार्थी

हरि भज साफिल जीवना, पर उपकार समाइ।
दादू मरणा तहाँ भला, जहाँ पशु पंखी खाइ ॥ 51 ॥

स्मरण

दादू राम शब्द मुख ले रहै, पीछे लगा जाइ।
मनसा वाचा कर्मना, तिहि तत सहज समाइ ॥ 52 ॥
अब 'तिही तत्त' में समाने की विधि का वर्णन
दादू रचि मचि लागे नाम सौं, राते माते होइ।
देखेंगे दीदार को, सुख पावेंगे सोइ ॥ 53 ॥

चेतावनी

दादू सांई सेवैं सब भले, बुरा न कहिये कोइ।
सारों मांही सो बुरा, जिस घटि नाम न होइ ॥ 54 ॥

ईश्वर विमुख प्राणी की दुर्गति

दादू जियरा राम बिन, दुखिया इहि संसार।
उपजै विनसै खप मरै, सुख दुख बारम्बार ॥ 55 ॥

स्मरण नाम महिमा माहात्मय

राम नाम रुचि उपजै, लेवे हित चित लाइ।
दादू सोई जीयरा, काहे जमपुरि जाइ ॥ 56 ॥

दादू नीकी बरियां आय कर, राम जप लीन्हां।
आत्म साधन सोधि कर, कारज भल कीन्हां ।। 57 ।।
दादू अगम वस्तु पानैं पड़ी, राखि मंझि छिपाइ।
छिन छिन सोई संभालिए, मत वै बीसर जाइ ।। 58 ।।

स्मरण नाम महिमा माहात्म्य

दादू उज्जवल निर्मला, हरि रंग राता होइ।
काहे दादू पचि मरै, पानी सेती धोइ ।। 59 ।।
शरीर सरोवर राम जल, माहीं संजम सार ।
दादू सहजैं सब गए, मन के मैल विकार ।। 60 ।।
दादू रामनाम जलं कृत्वां, स्नानं सदा जित:।
तन मन आत्म निर्मलं, पंच-भू पापं गत: ।। 61 ।।
दादू उत्तम इन्द्री निग्रहं, मुच्यते माया मन:।
परम पुरुष पुरातनं, चिंतते सदा तन ।। 62 ।।
दादू सब जग विष भर्‍या, निर्विष बिरला कोइ।
सोई निर्विष होइगा, जाके नाम निरंजन होइ ।। 63 ।।
दादू निर्विष नाम सौं, तन मन सहजैं होइ।
राम निरोगा करेगा, दूजा नांही कोइ ।। 64 ।।
ब्रह्म भक्ति जब उपजै, तब माया भक्ति बिलाइ।
दादू निर्मल मल गया, ज्यूँ रवि तिमिर नसाइ ।। 65 ।।

मनहर भाँवरि

दादू विषय विकार सौं, जब लग मन राता।
तब लग चित्त न आवई, त्रिभुवनपति दाता ।। 66 ।।

विरह जिज्ञासा

दादू क्या जाणों कब होइगा, हरि सुमिरण इक तार।
क्या जाणों कब छाड़ि है, यहु मन विषै विकार ।। 67 ।।

है सो सुमिरण होत नहीं, नहीं सो कीजै काम।
दादू यहु तन यूँ गया, क्यूँ कर पइये राम ॥ 68 ॥

स्मरण नाम महिमा माहात्म्य

दादू राम नाम निज मोहनी, जिन मोहे करतार।
सुर नर शंकर मुनि जना, ब्रह्मा सृष्टि विचार ॥ 69 ॥

दादू राम नाम निज औषधि, काटै कोटि विकार।
विषम व्याधि थैं ऊबरै, काया कंचन सार ॥ 70 ॥

दादू निर्विकार निज नांव ले, जीवन इहै उपाय।
दादू कृत्रिम काल है, ताके निकट न जाय ॥ 71 ॥

स्मरण

मन पवना गहि सुरति सौं,दादू पावै स्वाद।
सुमिरण माहिं सुख घणा, छाड़ि देहु बकवाद ॥ 72 ॥

माया प्रपंच का त्याग

नाम सपीड़ा लीजिए, प्रेम भगति गुण गाइ।
दादू सुमिरण प्रीति सौं, हेत सहित ल्यौ लाइ ॥ 73 ॥

लय लगाने की विधि

प्राण कवल मुख राम कहि, मन पवना मुख राम।
दादू सुरति मुख राम कहि, ब्रह्म शून्य निज ठाम ॥ 74 ॥

दादू कहतां सुणातां राम कह, लेतां देतां राम।
खातां पीतां राम कह, आत्म कवल विश्राम ॥ 75 ॥

ज्यूं जल पैसे दूध में, ज्यूं पाणी में लौंण।
ऐसे आत्मराम सौं, मन हठ साधै कौंण ॥ 76 ॥

दादू राम नाम में पैस कर, राम नाम ल्यौ जाइ।
यहु इंकत त्रिय लोक में, अनत काहे को जाइ ॥ 77 ॥

मध्य मार्ग

ना घर भला न वन भला, जहाँ नहीं निज नाँव।
दादू उनमनी मन रहै, भला तो सोई ठाँव ।। 78 ।।

निर्गुण नाम महिमा महात्तम

दादू निर्गुणं नामं मई, ह्रदय भाव प्रवर्त्तितम्।
भ्रमं कर्मं किल्विषं, माया मोहं कंपितम् ।। 79 ।।
कालं जालं सोचितं, भयानक यम किंकरम्।
हर्षं मुदितं सदगुरुं, दादू अविगत दर्शनम् ।। 80 ।।

भगवद् दर्शन का अनुपम माहात्म्य

दादू सब सुख स्वर्ग पयाल के, तोल तराजू बाहि।
हरि सुख एक पलक का, ता सम कह्या न जाहि ।। 81 ।।

स्मरण नाम पारिख लक्षण

दादू राम नाम सब को कहै, कहिबे बहुत विवेक।
एक अनेकों फिर मिले, एक समाना एक ।। 82 ।।

स्थूल रीति से राम–नाम स्मरण में भेद

दादू अपणी अपणी हद में, सब कोई लेवे नाउँ।
जे लागे बेहद सौं, तिन की मैं बलि जाउँ ।। 83 ।।

स्मरण नाम अगाधता

कौण पटंतर दीजिये, दूजा नाहीं कोइ।
राम सरीखा राम है, सुमिर्‍यां ही सुख होइ ।। 84 ।।
अपणी जाणै आप गति, और न जाणै कोइ।
सुमरि सुमरि रस पीजिये, दादू आनन्द होइ ।। 85 ।।

करणी बिना कथणी

दादू सबही वेद पुराण पढ़ि, नेटि नाम निर्धार।
सब कुछ इन ही मांहि है, क्या करिये विस्तार ।। 86 ।।

नाम अगाधता

पढि पढि थाके पंडिता, किनहुँ न पाया पार।
कथि कथि थाके मुनिजना, दादू नाम आधार ॥ 87 ॥
निगम हि अगम विचारिये, तऊ पार न आवै।
ताथैं सेवग क्या करै, सुमिरण ल्यौ लावै ॥ 88 ॥

कथनी बिना करणी

दादू अलिफ एक अल्लाह का, जे पढ़ि जाणै कोइ।
कुरान कतेबां इल्म सब, पढकर पूरा होइ ॥ 89 ॥
दादू यहु तन पिंजरा, मांहीं मन सूवा।
एक नाम अल्लाह का, पढि हाफिज हूवा ॥ 90 ॥

स्मरण नाम पारख लक्षण

नाम लिया तब जाणिए, जे तन मन रहै समाइ।
आदि अंत मधि एक रस, कबहूँ भूल न जाइ ॥ 91 ॥

विरह पतिव्रत

दादू एकै दशा अनन्य की, दूजी दशा न जाइ।
आपा भूलै आन सब, एकै रहै समाइ ॥ 92 ॥
दादू पीवै एक रस, बिसरि जाइ सब और।
अविगत यहु गति कीजिये, मन राखो इहि ठौर ॥ 93 ॥
आत्म चेतन कीजिए, प्रेम रस पीवै।
दादू भूलै देह गुण, ऐसैं जन जीवै ॥ 94 ॥

स्मरण नाम अगाधता

कहि कहि केते थाके दादू, सुणि सुणि कहु क्या लेइ।
लौंण मिलै गलि पाणियां, ता सम चित यों देइ ॥ 95 ॥
दादू हरि रस पीवतां, रती विलम्ब न लाइ।
बारम्बार संभालिये, मति वै बीसरि जाइ ॥ 96 ॥

स्मरण नाम विरह

दादू जगत सुपना ह्वै गया, चिंतामणि जब जाइ।
तब ही साचा होत है, आदि अंत उर लाइ ॥ 97 ॥

नांव न आवै तब दुखी, आवै सुख संतोष।
दादू सेवक राम का, दूजा हर्ष न शोक ॥ 98 ॥

मिले तो सब सुख पाइये, बिछुरे बहु दुःख होइ।
दादू सुख दुःख राम का, दूजा नाहीं कोइ ॥ 99 ॥

दादू हरि का नाम जल, मैं मीन ता माहिं।
संगि सदा आनन्द करै, बिछुरत ही मर जाहिं ॥ 100 ॥

दादू राम बिसार कर, जीवैं किहिं आधार।
ज्यूं चातक जल बूँद को, करै पुकार पुकार ॥ 101 ॥

हम जीवैं इहि आसरे, सुमिरण के आधार।
दादू छिटके हाथ थैं, तो हमको वार न पार ॥ 102 ॥

पतिव्रत निष्काम स्मरण

दादू नाम निमित रामहि भजै, भक्ति निमित भजि सोइ।
सेवा निमित सांई भजै, सदा सजीवन होइ ॥ 103 ॥

नाम सम्पूर्णता

दादू राम रसाइन नित चवै, हरि है हीरा साथ।
सो धन मेरे साइयां, अलख खजाना हाथ ॥ 104 ॥

हिरदै राम रहै जा जन के, ताको ऊरा कौण कहै।
अठ सिधि, नौ निधि ताके आगे, सनमुख सदा रहै ॥ 105 ॥

वंदित तीनों लोक बापुरा, कैसे दर्श लहै।
नाम निसान सकल जग ऊपर, दादू देखत है ॥ 106 ॥

दादू सब जग नीधना, धनवंता नहीं कोइ।
सो धनवंता जाणिये, जाके राम पदार्थ होइ ॥ 107 ॥

संगहि लागा सब फिरै, राम नाम के साथ।
चिंतामणि हिरदै बसै, तो सकल पदार्थ हाथ ।। 108 ।।
दादू आनन्द आत्मा, अविनाशी के साथ।
प्राणनाथ हिरदै बसै, तो सकल पदार्थ हाथ ।। 109 ।।

पुरुष प्रकाशित

दादू भावै तहाँ छिपाइए, साच न छाना होइ।
शेष रसातल गगन धू, प्रगट कहिये सोइ ।। 110 ।।
दादू कहाँ था नारद मुनिजना, कहाँ भक्त प्रहलाद।
परगट तीनों लोक में, सकल पुकारैं साध ।। 111 ।।
दादू कहाँ शिव बैठा ध्यान धरै, कहाँ कबीरा नाम।
सो क्यों छाना होइगा, जेरु कहैगा राम ।। 112 ।।
दादू कहाँ लीन शुकदेव था, कहाँ पीपा, रैदास।
दादू साचा क्यों छिपै, सकल लोक प्रकास ।। 113 ।।
दादू कहाँ था, गोरख, भरथरी, अनंत सिधों का मंत।
परगट गोपीचन्द है, दत्त कहैं सब संत ।। 114 ।।
अगम अगोचर राखिये, कर कर कोटि जतन।
दादू छाना क्यों रहै, जिस घट राम रतन ।। 115 ।।
दादू स्वर्ग पयाल में, साचा लेवे नाम।
सकल लोक सिर देखिये, प्रकट सब ही ठाम ।। 116 ।।

स्मरण लाम्बी रस

सुमिरण का शंसा रह्या, पछितावा मन मांहि।
दादू मीठा राम रस, सगला पिया नांहि ।। 117 ।।
दादू जैसा नाम था, तैसा लीया नांहि।
हौंस रही यहु जीव में, पछितावा मन मांहि ।। 118 ।।

स्मरण नाम चितावणी

दादू सिर करवत बहै, बिसरे आत्म राम।
मांहि कलेजा काटिये, जीव नहीं विश्राम ।। 119 ।।
दादू सिर करवत बहै, राम हिरदै थैं जाइ।
माँहि कलेजा काटिये, काल दसों दिसी खाइ ।। 120 ।।
दादू सिर करवत बहै, अंग परस नहीं होइ।
मांहि कलेजा काटिये, यहु बिथा न जाणै कोइ ।। 121 ।।
दादू सिर करवत बहै, नैनहूँ निरखै नांहि।
मांहि कलेजा काटिये, साल रह्या मन मांहि ।। 122 ।।

नाम चिंतन के फलाफल का विवेचन

जेता पाप सब जग करै, तैता नाम बिसारे होइ।
दादू राम संभालिये, तो येता डारे धोइ ।। 123 ।।
दादू जब ही राम बिसारिये, तब ही मोटी मार।
खंड खंड कर नाखिये, बीज पड़ै तिहिं बार ।। 124 ।।
दादू जबही राम बिसारिये, तब ही झंपै काल।
सिर ऊपर करवत बहै, आइ पड़ै जम जाल ।। 125 ।।
दादू जब ही राम बिसारिये, तब ही कंध बिनाश।
पग पग परलै पिंड पडै, प्राणीजाइ निराश ।। 126 ।।
दादू जब ही राम बिसारिये, तब ही हाना होइ।
प्राण पिंड सर्वस गया, सुखी न देख्या कोइ ।। 127 ।।

नाम सम्पूर्णता

साहिब जी के नांव में, बिरहा पीड़ पुकार।
ताला बेली रोवणा, दादू है दीदार ।। 128 ।।

विरह जागृति स्मरण विधि

साहिब जी के नांव में, भाव भगति विश्वास।
लै समाधि लागा रहै, दादू सांई पास ।। 129 ।।

साहिब जी के नांव में, मति बुधि ज्ञान विचार।
प्रेम प्रीति स्नेह सुख, दादू ज्योति अपार ।। 130 ।।
साहिब जी के नांव में, सब कुछ भरे भंडार।
नूर तेज अनन्त है, दादू सिरजनहार ।। 131 ।।
जिसमें सब कुछ सो लिया, निरंजन का नांउँ।
दादू हिरदै राखिए, मैं बलिहारी जांउँ ।। 132 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्तियोगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
द्वितीयो स्मरण काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 2 ।। साखी 132 ।।
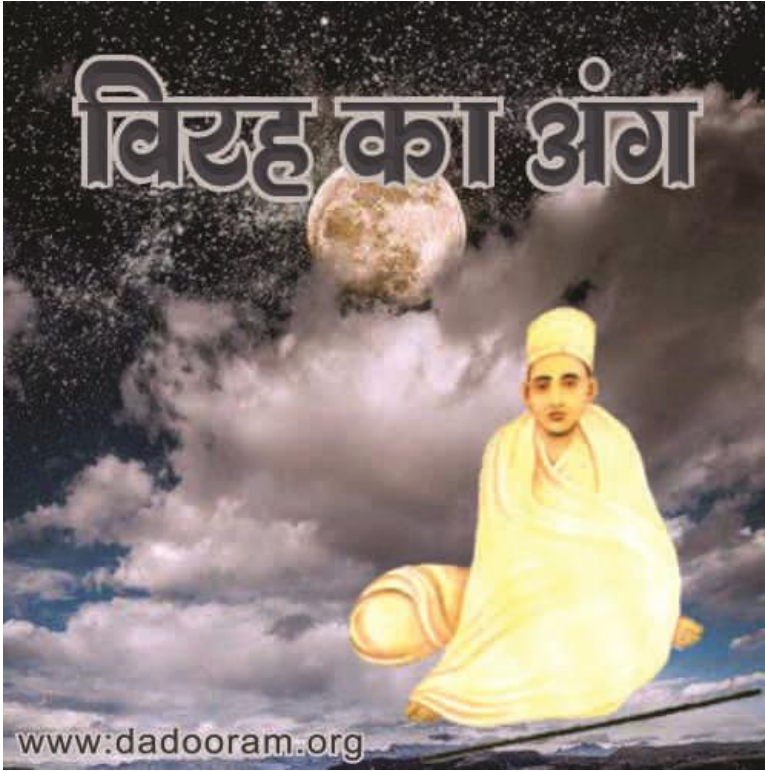
अथ विरह का अंग-३

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवत:।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगत: ॥ 1 ॥

रतिवंती आरति करै, राम सनेही आव।
दादू औसर अब मिलै, यहु विरहनी का भाव ॥ 2 ॥

विरहिनी की विरह दशा और उसका विलाप

पीव पुकारै विरहनी, निशदिन रहे उदास।
राम राम दादू कहै, ताला-बेली प्यास ॥ 3 ॥

विरहीजनों की अनन्यता

मन चित चातक ज्यों रटै, पीव पीव लागी प्यास।
दादू दर्शन कारणै, पुरवहु मेरी आस ।। 4 ।।
दादू विरहनी दुख कासनि कहै, कासनि देइ संदेश।
पंथ निहारत पीव का, विरहनी पलटे केश ।। 5 ।।
दादू विरहनी दुख कासनि कहै, जानत है जगदीश।
दादू निशदिन बिरही है, विरहा करवत शीश ।। 6 ।।
शब्द तुम्हारा ऊजला, चिरिया क्यों कारी?
तूँही, तूँही निशदिन करूँ, विरहा की जारी ।। 7 ।।

विरह विलाप

विरहनी रौवे रात दिन, झूरै मन ही मांहिं।
दादू औसर चल गया, प्रीतम पाये नाहिं ।। 8 ।।
दादू विरहनी कुरलै कुंज ज्यूं, निशदिन तलफत जाइ।
राम सनेही कारणै, रोवत रैन विहाइ ।। 9 ।।
पासैं बैठा सब सुणै, हमकों जवाब न देइ।
दादू तेरे सिर चढै, जीव हमारा लेइ ।। 10 ।।
सबको सुखिया देखिये, दुखिया नाहीं कोइ।
दुखिया दादू दास है, अैन परस नहीं होइ ।। 11 ।।

विरहीजनों के दुःख का कारण

साहिब मुख बोलै नहीं, सेवक फिरै उदास।
यहु बेदन जिय में रहै, दुखिया दादू दास ।। 12 ।।
पीव बिन पल पल जुग भया, कठिन दिवस क्यों जाइ।
दादू दुखिया राम बिन, काल रूप सब खाइ ।। 13 ।।
दादू इस संसार में, मुझसा दुखी न कोइ।
पीव मिलन के कारणै, मैं जल भरिया रोइ ।। 14 ।।

ना वह मिलै, न हम सुखी, कहो क्यों जीवन होइ।
जिन मुझको घायल किया, मेरी दारु सोइ ।। 15 ।।
दर्शन कारण विरहनी, वैरागिन होवै।
दादू विरह बियोगिनी, हरि मारग जोवै ।। 16 ।।

विरह उपदेश

अति गति आतुर मिलन को, जैसे जल बिन मीन।
सो देखे दीदार को, दादू आतम लीन ।। 17 ।।
राम बिछोही विरहनी, फिरि मिलन न पावै।
दादू तलपै मीन ज्यूं, तुझ दया न आवै ।। 18 ।।
दादू जब लग सुरति सिमटै नहीं, मन निश्चल नहीं होहि।
तब लग पीव परसै नहीं, बड़ी विपति यहु मोहि ।। 19 ।।
ज्यूं अमली के चित अमल है, सूरे के संग्राम।
निर्धन के चित धन बसै, यों दादू के राम ।। 20 ।।
ज्यूं चातक के चित जल बसैं, ज्यूं पानी बिन मीन।
जैसे चंद चकोर है, अैसे दादू हरि सौं कीन ।। 21 ।।
ज्यूं कुंजर के मन वन बसै, अनल पंखी आकास।
यूं दादू का मन राम सौं, ज्यूं वैरागी वनखंड वास ।। 22 ।।
भँवरा लुब्धी बास का, मोह्या नाद कुरंग।
यों दादू का मन राम सौं, ज्यों दीपक ज्योति पंतग ।। 23 ।।
श्रवणा राते नाद सौं, नैनां राते रूप।
जिभ्या राती स्वाद सौं, त्यों दादू एक अनूप ।। 24 ।।

विरह उपदेश

देह पियारी जीव को, निशदिन सेवा मांहि।
दादू जीवन मरण लौं, कबहूं छाड़ी नांहि ।। 25 ।।

देह पियारी जीव को, जीव पियारा देह।
दादू हरि रस पाइये, जे ऐसा होइ स्नेह ।। 26 ।।

प्रेमा भक्ति के बिना सब फीका है

दादू हरदम मांहि दिवान, सेज हमारी पीव है।
देखूँ सो सुबहान, ये इश्क हमारा जीव है ।। 27 ।।
दादू हरदम मांहि दिवान, कहूँ दरुने दर्द सौं।
दर्द दरुने जाइ, जब देखूँ दीदार कों ।। 28 ।।

विरह विनती

दादू दरूने दर्दबंद, यहु दिल दर्द न जाइ।
हम दुखिया दीदार के, महरबान दिखलाइ ।। 29 ।।
मूये पीड़ पुकारतां, बैद न मिलिया आइ।
दादू थोड़ी बात थी, जे टुक दर्श दिखाइ ।। 30 ।।
दादू मैं भिखारी मंगता, दर्शन देहु दयाल।
तुम दाता दुख भंजता, मेरी करहु संभाल ।। 31 ।।

छिन बिछोह

क्या जीये में जीवना, बिन दर्शन बेहाल।
दादू सोई जीवना, प्रकट परसन लाल ।। 32 ।।
इहि जग जीवन सो भला, जब लग हिरदै राम।
राम बिना जे जीवना, सो दादू बेकाम ।। 33 ।।

विरह विनती

दादू कहु दीदार की, सांई सेती बात।
कब हरि दरशन देहुगे, यहु औसर चलि जात ।। 34 ।।
बिथा तुम्हारे दर्श की, मोहि व्यापे दिन रात।
दुखी न कीजे दीन को, दर्शन दीजे तात ।। 35 ।।
दादू इस हियड़े ये साल, पीव बिन क्योंहि न जाइसी।
जब देखूँ मेरा लाल, तब रोम रोम सुख आइसी ।। 36 ।।

तूँ है तैसा प्रकाश कर, अपना आप दिखाइ।
दादू को दीदार दे, बलि जाऊँ विलंब न लाइ ।। 37 ।।
दादू पिव जी देखै मुझ को, हौं भी देखूँ पीव।
हौं देखूँ देखत मिलै, तो सुख पावै जीव ।। 38 ।।

विरह कसौटी

दादू कहै, तन मन तुम पर वारणैं, कर दीजे कै बार।
जे ऐसी विधि पाइये, तो लीजे सिरजनहार ।। 39 ।।

विरह पतिव्रत

दीन दुनी सदके करूँ, टुक देखण दे दीदार।
तन मन भी छिन छिन करूँ, भिस्त दोजग भी वार ।। 40 ।।
दादू हम दुखिया दीदार के, तूं दिल थैं दूरि न होइ।
भावै हमको जाल दे, होना है सो होइ ।। 41 ।।

विरह पतिव्रत

दादू कहै, जे कुछ दिया हमको, सो सब तुम ही लेहु।
तुम बिन मन मानै नहीं, दरस आपणां देहु ।। 42 ।।
दूजा कुछ मांगै नहीं, हमको दे दीदार।
तूं है तब लग एक टग, दादू के दिलदार ।। 43 ।।
दादू कहै, तूं है तैसी भक्ति दे, तूं है तैसा प्रेम।
तूं है तैसी सुरति दे, तूं है तैसा खेम ।। 44 ।।
दादू कहै, सदिके करूँ शरीर को, बेर बेर बहु भंत।
भाव भक्ति हित प्रेम ल्यौ, खरा पियारा कंत ।। 45 ।।
दादू दर्शन की रली, हम को बहुत अपार।
क्या जाणूं कबही मिले, मेरा प्राण आधार ।। 46 ।।
दादू कारण कंत के, खरा दुखी बेहाल।
मीरां मेरा महर कर, दे दर्शन दरहाल ।। 47 ।।

ताला बेली प्यास बिन, क्यों रस पीया जाइ।
विरहा दर्शन दर्द सौं, हमको देहु खुदाइ ।। 48 ।।
ताला बेली पीड़ सौं, विरहा प्रेम पियास।
दर्शन सेती दीजिये, बिलसै दादू दास ।। 49 ।।
दादू कहै, हमको अपणां आप दे, इश्क मुहब्बत दर्द।
सेज सुहाग सुख प्रेम रस, मिल खेलैं लापर्द ।। 50 ।।
प्रेम भगति माता रहै, ताला बेली अंग।
सदा सपीड़ा मन रहै, राम रमै उन संग ।। 51 ।।
प्रेम मगन रस पाइये, भक्ति हेत रुचि भाव।
विरह बेसास निज नाम सौं, देव दया कर आव ।। 52 ।।
गई दशा सब बाहुड़ै, जे तुम प्रकटहु आइ।
दादू ऊजड़ सब बसै, दर्शन देहु दिखाइ ।। 53 ।।
हम कसिये क्या होइगा, बिड़द तुम्हारा जाइ।
पीछै ही पछिताहुगे, ताथैं प्रकटहु आइ ।। 54 ।।

छिन विछोह

मीयां मैंडा आव घर, वांढी वंता लोइ।
डुखंडे मुहिंडे गये, मरां विच्छौहे रोइ ।। 55 ।।

विरह पतिव्रत

है, सो निधि नहिं पाइये, नहीं, सो है भरपूर।
दादू मन मानै नहीं, ताथैं मरिये झूर ।। 56 ।।

विरही विरह लक्षण

जिस घट इश्क अलाह का, तिस घट लोही न मांस।
दादू जियरे जक नहीं, ससकै सांसैं सांस ।। 57 ।।
रत्ती रब्ब ना बीसरै, मरै संभाल संभाल।
दादू सुहदा थीर है,आसिक अल्लह नाल ।। 58 ।।

दादू आसिक रब्ब दा, सिर भी डेवै लाहि।
अल्लह कारण आपको, साड़े अंदर भाहि ।। 59 ।।
भोरे भोरे तन करै, वंडे करि कुरवाण।
मिट्ठा कौड़ा ना लगै, दादू तो हूं साण ।। 60 ।।

विरही विरह लक्षण

जब लग सीस न सौंपिये, जब लग इश्क न होइ।
आशिक मरणैं ना डरै, पिया पियाला सोइ ।। 61 ।।

विरह पतिव्रत

तैं डीनोंई सभु, जे डीये दीदार के।
उंजे लहदी अभु, पसाई दो पाण के।। 62 ।।
बिचौं सभो डूरि कर, अंदर बिया न पाइ।
दादू रत्ता हिकदा, मन मोहब्बत लाइ ।। 63 ।।

विरह उपदेश

दादू इश्क मोहब्बत मस्त मन, तालिब दर दीदार।
दोस्त दिल हरदम हजूर, यादगार हुसियार ।। 64 ।।

विरह लक्षण

आशिक एक अल्लाह के, फारिक दुनियां दीन।
तारिक इस औजूद थैं, दादू पाक यकीन ।। 65 ।।

विरह जिज्ञासु उपदेश

आसिकां रह कब्ज कर्दां, दिल वजां रफतंद।
अल्लह आले नूर दीदम, दिल ही दादू बंद ।। 66 ।।
दादू इश्क आवाज सौं, ऐसे कहै न कोइ।
दर्द मोहब्बत पाइये, साहिब हासिल होइ ।। 67 ।।

विरह विलाप

कहँ आशिक अल्लाह के, मारे अपने हाथ।
कहँ आलम औजूद सौं, कहै जबां की बात ।। 68 ।।

दादू इश्क अल्लाह का, जे कबहुँ प्रकटै आइ।
तो तन मन दिल अरवाह का, सब पड़दा जल जाइ ।। 69 ।।

विरह जिज्ञासु उपदेश

अरवाहे सिजदा कुनंद, औजूद रा चे कार।
दादू नूर दादनी, आशिकां दीदार ।। 70 ।।

विरह ज्ञान अग्नि

विरह अग्नि तन जालिये, ज्ञान अग्नि दौं लाइ।
दादू नखशिख परजलै, तब राम बुझावै आइ ।। 71 ।।
विरह अग्नि में जालिबा, दरशन के तांईं।
दादू आतुर रोइबा, दूजा कुछ नांहिं ।। 72 ।।

विरह पतिव्रत

साहिब सौं कुछ बल नहीं, जनि हठ साधै कोइ।
दादू पीड़ पुकारिये, रोतां होइ सो होइ ।। 73 ।।
ज्ञान ध्यान सब छाड़ दे, जप तप साधन जोग।
दादू विरहा ले रहै, छाड़ सकल रस भोग ।। 74 ।।
जहँ विरहा तहँ और क्या, सुधि, बुधि नाठे ज्ञान।
लोक वेद मारग तजे, दादू एकै ध्यान ।। 75 ।।

विरही विरह लक्षण

विरही जन जीवै नहीं, जे कोटि कहैं समझाइ।
दादू गहिला ह्वै रहै, तलफि तलफि मर जाइ ।। 76 ।।
दादू तलफै पीड़ सौं, बिरही जन तेरा।
ससकै सांई कारणै, मिलि साहिब मेरा ।। 77 ।।
पड़्या पुकारै पीड़ सौं, दादू बिरही जन।
राम सनेही चित बसै, और न भावै मन ।। 78 ।।
जिस घट विरहा राम का, उस नींद न आवै।
दादू तलफै विरहनी, उसे पीड़ जगावै ।। 79 ।।

सारा सूरा नींद भर, सब कोई सोवै।
दादू घायल दर्दवंद, जागै अरु रोवै ।। 80 ।।
पीड़ पुराणी ना पड़ै, जे अन्तर बेध्या होइ।
दादू जीवण मरण लौं, पड़या पुकारै सोइ ।। 81 ।।
दादू बिरही पीड़ सौं, पड़या पुकारै मिंत।
राम बिना जीवै नहीं, पीव मिलन की चिंत ।। 82 ।।
जे कबहुँ विरहनी मरै, तो सुरति विरहनी होइ।
दादू पिव पिव जीवतां, मुवा भी टेरे सोइ ।। 83 ।।

कथनी बिना करणी

दादू अपनी पीड़ पुकारिये, पीड़ पराई नांहि।
पीड़ पुकारै सो भला, जाके करक कलेजे मांहि ।। 84 ।।

विरह विलाप

ज्यूँ जीवत मृतक कारणै, गत कर नाखै आप।
यूँ दादू कारण राम के, विरही करै विलाप ।। 85 ।।
दादू तलफि तलफि विरहनी मरै, करि करि बहुत बिलाप।
विरह अग्नि में जल गई, पीव न पूछै बात ।। 86 ।।
दादू कहाँ जाऊँ? कौण पै पुकारूँ? पीव न पूछै बात।
पीव बिन चैन न आवई, क्यों भरूँ दिन रात? ।। 87 ।।
दादू विरह बियोग न सहि सकूँ, मोपै सह्या न जाइ।
कोई कहो मेरे पीव को, दरस दिखावै आइ ।। 88 ।।
दादू विरह बियोग न सहि सकूँ, निसदिन सालै मोहि।
कोई कहो मेरे पीव को, कब मुख देखूँ तोहि ।। 89 ।।
दादू विरह वियोग न सहि सकूँ, तन मन धरै न धीर।
कोई कहो मेरे पीव को, मेटे मेरी पीर ।। 90 ।।
दादू कहै, साध दुखी संसार में, तुम बिन रह्या न जाइ।
औरों के आनन्द है, सुख सौं रैन बिहाइ ।। 91 ।।

दादू लाइक हम नहीं, हरि के दर्शन जोग।
बिन देखे मर जाहिंगे, पीव के विरह वियोग ।। 92 ।।
दादू सुख सांई सौं, और सबै ही दुख।
देखूँ दर्शन पीव का, तिस ही लागे सुख ।। 93 ।।
चन्दन सीतल चन्द्रमा, जल सीतल सब कोइ।
दादू विरही राम का, इन सौं कदे न होइ ।। 94 ।।

विरही विरह लक्षण

दादू घायल दरदवंद, अंतरि करै पुकार।
सांई सुणै सब लोक में, दादू यह अधिकार ।। 95 ।।
दादू जागे जगतगुरु, जग सगला सोवे।
विरह जागे पीड़ सौं, जे घाइल होवे ।। 96 ।।

विरही ज्ञान अग्नि

विरह अग्नि का दाग दे, जीवत मृतक गोर।
दादू पहली घर किया, आदि हमारी ठौर ।। 97 ।।

विरह पतिव्रत

दादू देखे का अचरज नहीं, अणदेखे का होइ।
देखे ऊपर दिल नहीं, अणदेखे को रोइ ।। 98 ।।

विरह उपजन

पहली आगम विरह का, पीछे प्रीति प्रकाश।
प्रेम मगन लै लीन मन, तहाँ मिलन की आस ।। 99 ।।
विरह वियोगी मन भला, सांई का वैराग।
सहज संतोषी पाइये, दादू मोटे भाग ।। 100 ।।
दादू तृषा बिना तन प्रीति न ऊपजै, सीतल निकट जल धरिया।
जन्म लगै जीव पुणग न पीवै, निरमल दह दिस भरिया ।। 101 ।।
दादू क्षुधा बिना तन प्रीति न ऊपजै, बहु विधि भोजन नेरा।
जनम लगैं जीव रती न चाखै, पाक पूरि बहु तेरा ।। 102 ।।

दादू तप्त बिना तन प्रीति न ऊपजै, संग ही शीतल छाया।
जनम लगै जीव जाणैं नाही, तरवर त्रिभुवन राया ।। 103 ।।
दादू चोट बिना तन प्रीति न ऊपजै, औषध अंग रहंत।
जनम लगै जीव पलक न परसै, बूंटी अमर अनंत ।। 104 ।।
दादू चोट न लागी विरह की, पीड़ न उपजी आइ।
जागै न रोवै धाह दे, सोवत गई बिहाइ ।। 105 ।।
दादू पीड़ न ऊपजी, ना हम करी पुकार।
ताथैं साहिब ना मिल्या, दादू बीती बार ।। 106 ।।
अंदर पीड़ न ऊभरै, बाहर करै पुकार।
दादू सो क्यों करि लहै, साहिब का दीदार ।। 107 ।।
मन ही मांही झूरणां, रोवै मन ही मांहिं।
मन ही मांहीं धाह दे, दादू बाहर नांहिं ।। 108 ।।
बिन ही नैनहुँ रोवाणां, बिन मुख पीड़ पुकार।
बिन ही हाथों पीटणां, दादू बारम्बार ।। 109 ।।
प्रीति न उपजै विरह बिन, प्रेम भक्ति क्यों होइ।
सब झूठै दादू भाव बिन, कोटि करे जे कोइ ।। 110 ।।
दादू बातों विरह न ऊपजै, बातों प्रीति न होइ।
बातों प्रेम न पाइये, जनि रू पतीजै कोइ ।। 111 ।।

विरह उपदेश

दादू तो पीव पाइये, कश्मल है सो जाइ।
निर्मल मन कर आरसी, मूरति मांहि लखाइ ।। 112 ।।
दादू तो पीव पाइये, कर मंझे विलाप।
सुनि है कबहुँ चित्त धरि, परगट होवै आप ।। 113 ।।
दादू तो पीव पाइये, कर सांई की सेव।
काया मांहि लखाइसी, घट ही भीतर देव ।। 114 ।।

दादू तो पीव पाइये, भावै प्रीति लगाइ।
हेजैं हरि बुलाइये, मोहन मंदिर आइ ।। 115 ।।

विरह उपजन

दादू जाके जैसी पीड़ है, सो तैसी करै पुकार।
को सूक्ष्म, को सहज में, को मृतक तिहिं बार ।। 116 ।।

विरह लक्षण

दर्द हि बूझै दर्दवंद, जाके दिल होवे।
क्या जाणै दादू दर्द की, नींद भरि सोवे ।। 117 ।।

करणी बिना कथनी

दादू अक्षर प्रेम का, कोइ पढ़ेगा एक।
दादू पुस्तक प्रेम बिन, केते पढें अनेक।। 118 ।।
दादू पाती प्रेम की, बिरला बांचै कोइ।
वेद पुरान पुस्तक पढे, प्रेम बिना क्या होइ ।। 119 ।।

विरह बाण

दादू कर बिन, शर बिन, कमान बिन, मारे खैंचि कसीस।
लागी चोट शरीर में, नखशिख सालै सीस ।। 120 ।।
दादू भलका मारे भेद सौं, सालै मंझि पराण।
मारणहारा जाणि है, कै जिहिं लागे बाण ।। 121 ।।
दादू सो शर हमको मार ले, जिहिं शर मिलिये जाइ।
निशदिन मारग देखिये, कबहूँ लागे आइ ।। 122 ।।
दादू मारे प्रेम सौं, बेधे साध सुजाण।
मारणहारे को मिले, दादू बिरही बाण ।। 123 ।।
जिहि लागी सो जागि है, बेध्या करै पुकार।
दादू पिंजर पीड़ है, सालै बारम्बार ।। 124 ।।
विरही सिसकै पीड़ सौं, ज्यूं घायल रण माहिं।
प्रीतम मारे बाण भर, दादू जीवै नाहिं ।। 125 ।।

दादू विरह जगावे दर्द को, दर्द जगावे जीव।
जीव जगावे सुरति को, पंच पुकारैं पीव ।। 126 ।।
सहजैं मनसा मन सधै, सहजैं पवना सोइ।
सहजैं पंचों थिर भये, जे चोट विरह की होइ ।। 127 ।।
मारणहारा रहि गया, जिहिं लागी सो नांहि।
कबहूँ सो दिन होइगा, यहु मेरे मन मांहि ।। 128 ।।
प्रीतम मारे प्रेम सौं, तिन को क्या मारे।
दादू जारे विरह के, तिन को क्या जारे ।। 129 ।।

छिन बिछोह

दादू पड़दा पलक का, येता अन्तर होइ।
दादू विरही राम बिन, क्यों कर जीवै सोइ ।। 130 ।।

विरह लक्षण

काया मांहैं क्यों रह्या, बिन देखे दीदार।
दादू बिरही बावरा, मरै नहीं तिहिं बार ।। 131 ।।

विरह कसौटी

बिन देखे जीवै नहीं, विरह का सहिनाण।
दादू जीवै जब लगै, तब लग विरह न जाण ।। 132 ।।

विरह बिनती

रोम-रोम रस प्यास है, दादू करहि पुकार।
राम घटा दल उमंग कर, बरसहु सिरजनहार ।। 133 ।।

विरह लक्षण

प्रीति जु मेरे पीव की, पैठी पिंजर मांहि।
रोम-रोम पीव-पीव करै, दादू दूसर नांहि ।। 134 ।।
सब घट श्रवणा सुरति सौं सब घट रसना बैंन।
सब घट नैनां ह्वै रहै, दादू विरहा ऐन ।। 135 ।।

विरह विलाप

रात दिवस का रोवणां, पहर पलक का नांहि।
रोवत रोवत मिल गया, दादू साहिब माँहि ॥ 136 ॥
दादू नैन हमारे बावरे, रोवें नहीं दिन रात।
सांई संग न जागही, पीव क्यों पूछे बात ॥ 137 ॥
नैनहुँ नीर न आइया, क्या जाणैं ये रोइ।
तैसें ही करि रोइये, साहिब नैनहूँ जोइ ॥ 138 ॥
दादू नैन हमारे ढीठ हैं, नाले नीर न जांहि।
सूके सरां सहेत वै, करंक भये गलि मांहि ॥ 139 ॥

विरही विरह लक्षण

दादू विरह प्रेम की लहर में यह मन पंगुल होइ।
राम नाम में गलि गया, बूझे बिरला कोइ ॥ 140 ॥

विरह ज्ञान अग्नि

दादू विरह अग्नि में जल गये, मन के मैल विकार।
दादू विरही पीव का, देखेगा दीदार ॥ 141 ॥
विरह अग्नि में जल गये, मन के विषय विकार।
ताथैं पंगुल ह्वै रह्या, दादू दर दीदार ॥ 142 ॥
जब विरहा आया दर्द सौं, तब मीठा लगा राम।
काया लागी काल ह्वै, कड़वे लागे काम ॥ 143 ॥
जब राम अकेला रह गया, तन मन गया बिलाइ।
दादू विरही तब सुखी, जब दर्श पर्श मिल जाइ ॥ 144 ॥
जे हम छाड़ै राम को, तो राम न छाड़ै।
दादू अमली अमल तैं, मन क्यों करि काढै ॥ 145 ॥

विरह प्रतिबिम्ब

विरहा पारस जब मिला, तब विरहनी विरहा होइ।
दादू परसै विरहनी, पीव पीव टेरे सोइ ॥ 146 ॥

आशिक माशूक ह्वै गया, इश्क कहावै सोइ।
दादू उस माशूक का, अल्लाह आशिक होइ ।। 147 ।।
राम विरहनी ह्वै रह्या, विरहनी ह्वै गई राम।
दादू विरहा बापुरा, ऐसे कर गया काम ।। 148 ।।
विरह बिचारा ले गया, दादू हमको आइ।
जहं अगम अगोचर राम था, तहँ विरह बिना को जाइ ।। 149 ।।
विरह बापुरा आइ कर, सोवत जगावे जीव।
दादू अंग लगाइ कर, ले पहुँचावे पीव ।। 150 ।।
विरहा मेरा मीत है, विरहा बैरी नांहि।
विरहा को बैरी कहै, सो दादू किस मांहि ।। 151 ।।
दादू इश्क अलह की जाति है, इश्क अलह का अंग।
इश्क अलह वजूदहै, इश्क अलह का रंग ।। 152 ।।

साध महिमा महात्म

दादू प्रीतम के पग परसिये, मुझ देखण का चाव।
तहाँ ले सीस नवाइये, जहाँ धरे थे पाँव ।। 153 ।।

विरह पतिव्रत

बाट विरही की सोधि करि, पंथ प्रेम का लेहु।
लै के मारग जाइये, दूसर पांव न देहु ।। 154 ।।
बिरही बेगा भक्ति सहज में, आगै पीछै जाइ।
थोड़े माहीं बहुत है, दादू रहू ल्यौ लाइ ।। 155 ।।
बिरहा बेगा ले मिलै, तालाबेली पीर।
दादू मन घाइल भया, सालै सकल सरीर ।। 156 ।।

विरह विनती

आज्ञा अपरंपार की, बसि अंबर भरतार।
हरे पटंबर पहरि करि, धरती करै सिंगार ।। 157 ।।

वसुधा सब फूलै फलै, पृथ्वी अनंत अपार।
गगन गर्ज जल थल भरै, दादू जै जै कार ।। 158 ।।
काला मुँह कर काल का, सांई सदा सुकाल।
मेघ तुम्हारे घर घणां, बरसहु दीनदयाल ।। 159 ।।
इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य तृतीयो विरह काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 3 ।। साखी 159 ।।
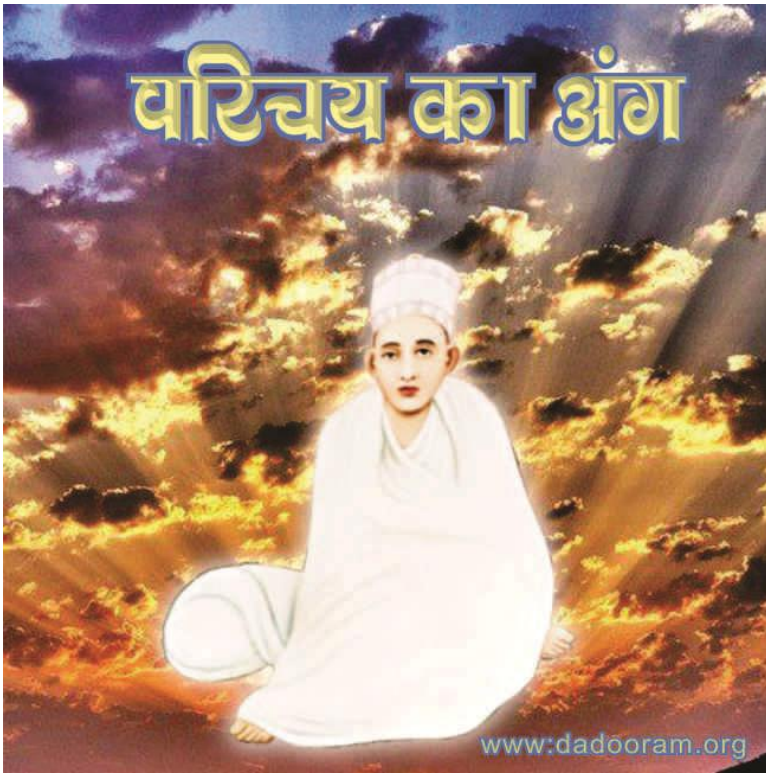
अथ परिचय का अंग ४

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ।। 1 ।।

दादू निरंतर पीव पाइया, तहँ पंखी उनमनि जाइ।
सप्तों मंडल भेदिया, अष्टैं रह्या समाइ ।। 2 ।।

परमात्मा का स्वरूप

दादू निरंतर पीव पाइया, तहँ निगम न पहुँचे वेद।
तेज स्वरूपी पीव बसे, कोई बिरला जानैं भेद ।। 3 ।।

परमेश्वर का निवास

दादू निरंतर पीव पाइया, तीन लोक भरपूर।
सब सेजों साँई बसै, लोक बतावें दूर ।। 4 ।।

दादू निरंतर पीव पाइया, जहँ आनन्द बारह मास।
हंस सौं परम हंस खेलै, तहँ सेवक स्वामी पास ।। 5 ।।
दादू रंग भर खेलों पीव सौं, तहँ बाजै बैन रसाल।
अकल पाट पर बैठा स्वामी, प्रेम पिलावै लाल ।। 6 ।।
दादू रंग भर खेलौं पीव सौं, सेती दीनदयाल।
निसवासर नहिं तहँ बसै, मानसरोवर पाल ।। 7 ।।
दादू रंग भर खेलौं पीव सौं, तहँ कबहुं न होइ वियोग।
आदि पुरुष अन्तर मिल्या, कुछ पूरबले संयोग ।। 8 ।।
दादू रंग भर खेलौं पीव सौं, तहँ बारह मास बसंत।
सेवग सदा आनन्द है, जुग जुग देखूँ कंत ।। 9 ।।

भगवत् प्राप्ति का स्थान

दादू काया अन्तर पाइया, त्रिकुटी केरे तीर।
सहजैं आप लखाइया, व्याप्या सकल सरीर ।। 10 ।।
दादू काया अंतर पाइया, निरन्तर निरधार।
सहजैं आप लखाइया, ऐसा समरथ सार ।। 11 ।।
दादू काया अंतर पाइया, अनहद बैन बजाइ।
सहजैं आप लखाइया, शून्य मंडल में जाइ ।। 12 ।।
दादू काया अंतर पाइया, सब देवन का देव।
सहजैं आप लखाइया, ऐसा अलख अभेव ।। 13 ।।

सुख महिमा और फल

दादू भँवर कँवल रस बेधिया, सुख सरवर रस पीव।
तहँ हंसा मोती चुणै, पीव देखै सुख जीव ।। 14 ।।
दादू भँवर कँवल रस बेधिया, गहे चरण कर हेत।
पीवजी परसत ही भया, रोम रोम सब श्वेत ।। 15 ।।
दादू भँवर कँवल रस बेधिया, अनत न भरमैं जाइ।
तहाँ बास बिलंबिया, मगन भया रस खाइ ।। 16 ।।

दादू भँवर कँवल रस बेधिया, गही जो पीव की ओट।
तहाँ दिल भँवरा रहै, कौण करै शिर चोट ।। 17 ।।

परिचय जिज्ञासु उपदेश

दादू खोजि तहाँ पीव पाइये, सबद ऊपने पास।
तहाँ एक एकांत है, जहाँ ज्योति प्रकास ।। 18 ।।
दादू खोजि तहाँ पीव पाइये, जहँ चन्द न ऊगे सूर।
निरंतर निर्धार है, तेज रह्या भरपूर ।। 19 ।।
दादू खोजि तहाँ पीव पाइये, जहँ बिन जिह्वा गुण गाइ।
तहँआदि पुरुष अलेख है, सहजैं रह्या समाइ ।। 20 ।।
दादू खोजि तहाँ पीव पाइये, जहँ अजरा अमर उमंग।
जरा मरण भौ भाजसी, राखै अपणे संग ।। 21 ।।

जिज्ञासु उपदेश (सिंधी)

दादू गाफिल छो वतें, मंझेइ रबु निहारि।
मंझेइ पीव पाण जो, मंझेइ सु विचारि ।। 22 ।।
दादू गाफिल छो वतें, आहे मंझि अलाह।
पिरी पांण जो पाण सैं, लहै सभोई साव ।। 23 ।।
दादू गाफिल छो वतें, आहे मंझि मकान।
दरगह में दीवाण तत, पसेन बैठो पाण ।। 24 ।।
दादू गाफिल छो वतें, अंदर पिरीं पसु।
तखत रबाणीं बीच मैं, पे तिन्हीं वसु ।। 25 ।।

परिचय साक्षात्कार

हरि चिन्तामणि चिन्ततां, चिंता चित की जाइ।
चिंतामणि चित में मिल्या, तहँ दादू रह्या लुभाइ ।। 26 ।।

घी सो घोट =आत्म अभ्यास

अपने नैनहुँ आप को, जब आतम देखै।
तहँ दादू परमात्मा, ताही को पेखै ।। 27 ।।

दादू बिन रसना जहँ बोलिये, तहँ अंतरयामी आप।
बिन श्रवणहुँ सांई सुनै, जे कुछ कीजे जाप ।। 28 ।।

परिचय जिज्ञासु उपदेश

ज्ञान लहर जहाँ थैं उठै, वाणी का परकास।
अनुभव जहाँ थैं उपजे, शब्दैं किया निवास ।। 29 ।।

सो घर सदा विचार का, तहाँ निरंजन वास।
तहँ तूँ दादू खोजि ले, ब्रह्म जीव के पास ।। 30 ।।

जहँ तन मन का मूल है, उपजे ओंकार।
अनहद सेझा शब्द का, आतम करै विचार ।। 31 ।।

भाव भक्ति लै ऊपजै, सो ठाहर निज सार।
तहँ दादू निधि पाइये, निरंतर निरधार ।। 32 ।।

एक ठौर सूझै सदा, निकट निरन्तर ठाउँ ।
तहाँ निरंजन पूरि ले, अजरावर तिहिं नाउँ ।। 33 ।।

साधु जन क्रीला करैं, सदा सुखी तिहिं गाँव।
चलु दादू उस ठौर की, मैं बलिहारी जाँव ।। 34 ।।

दादू पसु पिरंनि के, पेही मंझि कलूब।
बैठो आहे बीच में, पाण जो महबूब ।। 35 ।।

नैनहुं वाला निरखि करि, दादू घालै हाथ।
तब ही पावै रामधन, निकट निरंजन नाथ ।। 36 ।।

नैनहुँ बिन सूझे नहीं, भूला कतहू जाइ।
दादू धन पावै नहीं, आया मूल गँवाइ ।। 37 ।।

परिचय लै लक्षण सहज

जहाँ आत्म तहाँ राम है, सकल रह्या भरपूर।
अंतरगति ल्यौ लाइ रहु, दादू सेवक सूर ।। 38 ।।

परिचय जिज्ञासु उपदेश

पहली लोचन दीजिये, पीछे ब्रह्म दिखाइ।
दादू सूझै सार सब, सुख में रहे समाइ ॥ 39 ॥
आंधी के आनन्द हुआ, नैंनहुँ सूझन लाग।
दर्शन देखे पीव का, दादू मोटे भाग ॥ 40 ॥
दादू मिहीं महल बारीक है, गाँव न ठाँव न नाँव।
तासौं मन लागा रहै, मैं बलिहारी जाँव ॥ 41 ॥
दादू खेल्या चाहै प्रेम रस, आलम अंगि लगाइ।
दूजे को ठाहर नहीं, पुहुप न गंध समाइ ॥ 42 ॥
नाहीं ह्वै करि नाम ले, कुछ न कहाई रे।
साहिब जी की सेज पर, दादू जाई रे ॥ 43 ॥
जहाँ राम तहँ मैं नहीं, मैं तहँ नाहीं राम।
दादू महल बारीक है, द्वै को नाहीं ठाम ॥ 44 ॥
मैं नाहीं तहँ मैं गया, एकै दूसर नाहीं।
नाहीं को ठाहर घणी, दादू निज घर माहिं ॥ 45 ॥
दादू मैं नाहीं तहँ मैं गया, आगे एक अलाव।
दादू ऐसी बंदगी, दूजा नाहीं आव ॥ 46 ॥
दादू आपा जब लगै, तब लग दूजा होइ।
जब यहु आपा मिट गया, तब दूजा नाहीं कोइ ॥ 47 ॥
दादू मैं नाहीं तब एक है, मैं आई तब दोइ।
मैं तैं पड़दा मिट गया, तब ज्यूं था त्यूं ही होइ ॥ 48 ॥
दादू है को भय घणां, नाहीं को कुछ नाहीं।
दादू नाहीं होइ रहु, अपणे साहिब माहिं ॥ 49 ॥

परिचय

दादू तीन शून्य आकार की, चौथी निर्गुण नाम।
सहज शून्य में रमि रह्या, जहाँ तहाँ सब ठाम ॥ 50 ॥

काया शून्य पंच का बासा, आत्म शून्य प्राण प्रकासा।
परम शून्य ब्रह्म सौं मेला, आगे दादू आप अकेला ।। 51 ।।
पाँच तत्त्व के पांच हैं, आठ तत्त्व के आठ।
आठ तत्त्व का एक है, तहाँ निरंजन हाट ।। 52 ।।
जहँ मन माया ब्रह्म था, गुण इन्द्रिय आकार।
तहँ मन बिरचै सबनि थैं, रचि रहु सिरजनहार ।। 53 ।।
दादू जहाँ थैं सब ऊपजे, चंद सूर आकाश।
पानी पवन पावक किये, धरती का प्रकाश ।। 54 ।।
काल कर्म जीव ऊपजै, माया मन घट श्वास।
तहँ रहता रमता राम है, सहज शून्य सब पास ।। 55 ।।
सहज शून्य सब ठौर है, सब घट सबही माहिं।
तहाँ निरंजन रम रह्या, कोई गुण व्यापै नाहीं ।। 56 ।।
दादू तिस सरवर के तीर, सो हंसा मोती चुणैं।
पीवैं नीझर नीर, सो है हंसा सो सुणैं ।। 57 ।।
दादू तिस सरवर के तीर, जप तप संयम कीजिये।
तहँ सनमुख सिरजनहार, प्रेम पिलावै पीजिये ।। 58 ।।
दादू तिस सरवर के तीर, संगी सबै सुहावणे।
तहाँ बिन कर बाजै बैन, जिभ्या हीणे गावणे ।। 59 ।।
दादू तिस सरवर के तीर, चरण कमल चित लाइया।
तहँ आदि निरंजन पीव, भाग हमारे आइया ।। 60 ।।
दादू सहज सरोवर आतमा, हंसा करै कलोल।
सुख सागर सूभर भर्या, मुक्ताहल मन मोल ।। 61 ।।
दादू हरि सरवर पूरण सबै, जित तित पाणी पीव।
जहाँ तहाँ जल अंचतां, गई तृषा सुख जीव ।। 62 ।।

सुख सागर सूभर भऱ्या, उज्जवल निर्मल नीर।
प्यास बिना पीवै नहीं, दादू सागर तीर ।। 63 ।।
शून्य सरोवर हंस मन, मोती आप अनंत।
दादू चुगि चुगि चंचुभरि, यौं जन जीवैं संत ।। 64 ।।
शून्य सरोवर मीन मन, नीर निरंजन देव।
दादू यहु रस विलसिये, ऐसा अलख अभेव ।। 65 ।।
शून्य सरोवर मन भँवर, तहाँ कमल करतार।
दादू परिमल पीजिए, सन्मुख सिरजनहार ।। 66 ।।
शून्य सरोवर सहज का, तहँ मर जीवा मन ।
दादू चुणि चुणि लेयगा, भीतर राम रतन ।। 67 ।।
दादू मंझि सरोवर विमल जल, हंसा केलि करांहि।
मुक्ताहल मुक्ता चुगैं, तिहिं हंसा डर नांहि ।। 68 ।।
अखंड सरोवर अथग जल, हंसा सरवर न्हाँहि।
निर्भय पायाआप घर, अब उड़ि अनत न जांहि ।। 69 ।।
दादू दरिया प्रेम का, तामें झूलैं दोइ।
इक आतम परआत्मा, एकमेक रस होइ ।। 70 ।।
दादू हिण दरियाव, माणिक मंझेई।
डुबि डेई पाण मैं, डिठो हंझेई ।। 71 ।।
परआतम सौं आत्मा, ज्यूँ हंस सरोवर मांहि।
हिलि मिलि खेलैं पीव सौं, दादू दूसर नांहि ।। 72 ।।
दादू सरवर सहज का, तामें प्रेम तरंग।
तहँ मन झूलै आत्मा, अपणे सांई संग ।। 73 ।।
दादू देखौं निज पीव को, दूसर देखौं नांहि।
सबै दिसा सौं सोधि करि, पाया घट ही मांहि ।। 74 ।।

दादू देखौं निज पीव को, और न देखौं कोइ।
पूरा देखौं पीव को, बाहिर भीतर सोइ ।। 75 ।।
दादू देखौं निज पीव को, देखत हि दुख जाइ।
हूँ तो देखौं पीव को, सब में रह्या समाइ ।। 76 ।।
दादू देखौं निज पीव को, सोई देखन जोग।
परगट देखौं पीव को, कहाँ बतावैं लोग ।। 77 ।।

परिचय जिज्ञासु उपदेश

दादू देखु दयालु को, सकल रह्या भरपूर।
रोम रोम में रमि रह्या, तूँ जनि जानै दूर ।। 78 ।।
दादू देखु दयालु को, बाहरि भीतरि सोइ।
सब दिसि देखौं पीव को, दूसर नाहीं कोइ ।। 79 ।।
दादू देखु दयालु को, सनमुख सांई सार।
जीधरि देखौं नैंन भरि, तीधरि सिरजनहार ।। 80 ।।
दादू देखु दयालु को, रोक रह्या सब ठौर।
घट घट मेरा सांइयाँ, तूँ जनि जानै और ।। 81 ।।

उभै असमाव

तन मन नाहीं, मैं नहीं, नहीं माया, नहीं जीव।
दादू एकै देखिए, दह दिसि मेरा पीव ।। 82 ।।
दादू पाणी मांहीं पैसि करि, देखै दृष्टि उघारि।
जलाबिंब सब भरि रह्या, ऐसा ब्रह्म विचारि ।। 83 ।।
सदा लीन आनन्द में, सहज रूप सब ठौर।
दादू देखै एक को, दूजा नाहीं और ।। 84 ।।
दादू जहँ तहँ साथी संग है, मेरे सदा अनंद।
नैन बैन हिरदै रहै, पूरण परमानंद ।। 85 ।।
जागत जगपति देखिये, पूरण परमानंद।
सोवत भी सांई मिलै, दादू अति आनन्द ।। 86 ।।

दादू दह दिश दीपक तेज के, बिन बाती बिन तेल।
चहुँ दिसि सूरज देखिये, दादू अद्भुत खेल ।। 87 ।।
सूरज कोटि प्रकास है, रोम रोम की लार।
दादू ज्योति जगदीश की, अंत न आवै पार ।। 88 ।।
ज्यों रवि एक आकाश है, ऐसे सकल भरपूर।
दादू तेज अनन्त है, अल्लह आली नूर ।। 89 ।।
सूरज नहीं तहँ सूरज देख्या, चंद नहीं तहँ चन्दा।
तारे नहीं तहँ झिलमिल देख्या, दादू अति आनन्दा ।। 90 ।।
बादल नहीं तहँ बरषत देख्या, शब्द नहीं गरजंदा।
बीज नहीं तहँ चमकत देख्या, दादू परमानन्दा ।। 91 ।।

आत्म बेलीतरु

दादू जोति चमकै झिलमिलै, तेज पुंज प्रकाश।
अमृत झरै रस पीजिए, अमर बेलि आकाश ।। 92 ।।

परिचय अंग

दादू अविनाशी अंग तेज का, अैसा तत्त्व अनूप।
सो हम देख्या नैन भरि, सुन्दर सहज स्वरूप ।। 93 ।।
परम तेज प्रगट भया, तहाँ मन रह्या समाइ।
दादू खेलै पीव सौं, नहीं आवै नहीं जाइ ।। 94 ।।
निराधार निज देखिये, नैनहुँ लागा बन्द।
तहँ मन खेलै पीव सौं, दादू सदा आनन्द ।। 95 ।।

आत्म बेलितरु

अैसा एक अनूप फल, बीज बाकुला नांहि।
मीठा निर्मल एक रस, दादू नैनहुँ मांहि ।। 96 ।।

परिचय

हीरे हीरे तेज के, सो निरखै त्रय लोइ।
कोइ इक देखै संत जन, और न देखै कोइ ।। 97 ।।

नैन हमारे नूर मां, तहाँ रहै ल्यौ लाइ।
दादू उस दीदार को, निसदिन निरखत जाइ ।। 98 ।।
दादू नैनहुँ आगे देखिये, आत्म अंतर सोइ।
तेज पुंज सब भरि रह्या, झिलमिल झिलमिल होइ ।। 99 ।।
अनहद बाजे बाजिये, अमरापुरी निवास।
जोति स्वरूपी जगमगै, कोइ निरखै निज दास ।। 100 ।।
परम तेज तहँ मन रहे, परम नूर निज देखे।
परम जोति तहँ आतम खेले, दादू जीवन लेखे ।। 101 ।।
दादू जरै सु जोति स्वरूप है, जरै सु तेज अनंत।
जरै सु झिलमिल नूर है, जरै सु पुंज रहंत ।। 102 ।।

परिचय पति पहचान

सतगुरु अलख अलाह का, कहु कैसा है नूर।
दादू बेहद हद नहीं, सकल रह्या भरपूर ।। 103 ।।
वार पार नहिं नूर का, दादू तेज अनंत ।
कीमत नहीं करतार की, ऐसा है भगवंत ।। 104 ।।
निरसंध नूर अपार है, तेज पुंज सब मांहि।
दादू जोति अनंत है, आगो पीछो नांहि ।। 105 ।।
खंड खंड निज ना भया, इकलस एकै नूर।
ज्यूं था त्यूं ही तेज है, ज्योति रही भरपूर ।। 106 ।।
परम तेज प्रकास है, परम नूर निवास।
परम ज्योति आनन्द में, हंसा दादू दास ।। 107 ।।

परिचय साक्षात्कार

नूर सरीखा नूर है, तेज सरीखा तेज।
ज्योति सरीखी ज्योति है, दादू खेलै सेज ।। 108 ।।
तेज पुंज की सुन्दरी, तेज पुंज का कंत।
तेज पुंज की सेज पर, दादू बन्या बसंत ।। 109 ।।

पुहप प्रेम बरसै सदा, हरि जन खेलैं फाग।
अैसा कौतुक देखिये, दादू मोटे भाग ।। 110 ।।

परिचय रस

अमृतधारा देखिए, पारब्रह्म बरषंत।
तेज पुंज झिलमिल झरै, को साधु जन पीवंत ।। 111 ।।
रस ही में रस बरषि है, धारा कोटि अनंत।
तहाँ मन निश्चल राखिये, दादू सदा बसंत ।। 112 ।।
घन बादल बिन बरषि है, नीझर निर्मल धार।
दादू भीजै आत्मा, को साधु पीवनहार ।। 113 ।।
अैसा अचरज देखिया, बिन बादल बरषै मेह।
तहँ चित चातक ह्वै रह्या, दादू अधिक स्नेह ।। 114 ।।
महारस मीठा पीजिये, अविगत अलख अनन्त।
दादू निर्मल देखिये, सहजैं सदा झरंत ।। 115 ।।

परिचय कामधेनु

कामधेनु दुहि पीजिये, अकल अनुपम एक ।
दादू पीवै प्रेम सौं, निर्मल धार अनेक।। 116 ।।
कामधेनु दुहि पीजिये, ताको लखै न कोइ।
दादू पीवै प्यास सौं, महारस मीठा सोइ ।। 117 ।।
कामधेनु दुहि पीजिये, अलख रूप आनन्द।
दादू पीवै हेत सौं, सुखमन लागा बंद ।। 118 ।।
कामधेनु दुहि पीजिये, अगम अगोचर जाइ।
दादू पीवै प्रीति सूं, तेज पुंज की गाइ ।। 119 ।।
कामधेनु करतार है, अमृत सरवै सोइ।
दादू बछरा दूध को, पीवै तो सुख होइ ।। 120 ।।
अैसी एकै गाइ है, दूझै बारह मास।
सो सदा हमारे संग है, दादू आतम पास ।। 121 ।।

परिचय आत्मबली तरु

तरुवर साखा मूल बिन, धरती पर नांही।
अविचल अमर अनंत फल, सो दादू खांही ।। 122 ।।
तरुवर साखा मूल बिन, धर अंबर न्यारा।
अविनाशी आनन्द फल, दादू का प्यारा ।। 123 ।।
तरुवर साखा मूल बिन, रज बीरज रहिता।
अजरा अमर अतीत फल, सो दादू गहिता ।। 124 ।।
तरुवर साखा मूल बिन, उत्पति परलै नांहि।
रहिता रमता राम फल, दादू नैनहुँ मांहि ।। 125 ।।
प्राण तरुवर सुरति जड़, ब्रह्म भूमि ता मांहि।
रस पीवै फूलै फलै, दादू सूखै नांहि ।। 126 ।।

परिचय जिज्ञासु उपदेश (प्रश्न)

ब्रह्म सुनि तहँ क्या रहै ? आतम के अस्थान ?
काया अस्थल क्या बसै ? सतगुरु कहो सुजान ।। 127 ।।

देह अध्यासियों के लक्षण (उत्तर)

काया के अस्थल रहैं, मन राजा पंच प्रधान।
पच्चीस प्रकृति तीन गुण, आपा गर्व गुमान ।। 128 ।।

आत्म जिज्ञासु के लक्षण

आतम के स्थान हैं, ज्ञान ध्यान विश्वास।
सहज सील संतोष सत, भाव भक्ति निधि पास ।। 129 ।।

ब्रह्मनिष्ठ के लक्षण

ब्रह्म शून्य तहँ ब्रह्म है, निरंजन निराकार।
नूर तेज तहँ ज्योति है, दादू देखणहार ।। 130 ।।

अबुल फज़ल के प्रश्न

मौजूद खबर, माबूद खबर, अरवाह खबर औजूद।
मुकाम चिः चीज हस्त, दादनी सजूद ।। 131 ।।

औजूद मकामे हस्त - देह अध्यासी के लक्षण

नफ्स गालिब किब्र काबिज, गुस्सः मनी एस्त।
दुइ दरोग, हिर्स हुज्जत, नाम नेकी नेस्त ॥ 132 ॥

अरवाह मकामे हस्त - आत्मवादी के लक्षण

इश्क इबादत बंदगी, यगानगी इखलास।
मिहर मुहब्बत, खैर खूबी,नाम नेकी पास ॥ 133 ॥

मावूद मकामे हस्त - ब्रह्मवादी के लक्षण

यके नूर खूबे खूबां, दीदनी हैरान।
अजब चीज खुरदनी,पियालए मस्तान ॥ 134 ॥

मौजूद खबर (शरीयत - मंजिल)

हैवान आलम गुमराह गाफिल, अब्वल शरीयत पंद।
हलाल हराम नेकी बदी, दर्से दानिशमंद ॥ 135 ॥

तरीकत मंजिल

कुल फारिग तर्क दुनिया, हररोज हरदम याद।
अल्लः आली इश्क आशिक, दरूने फरियाद ॥ 136 ॥

मार्फत मंजिल

आब आतश अर्श कुर्सी, सूरते सुबहान।
शिरर सिफ्त करद बूद, मारफत मकाम ॥ 137 ॥

हकीकत मंजिल

हक हासिल नूर दीदम, करारे मकसूद।
दीदार दरिया अरवाहे आमद, मौजूदे मौजूद ॥ 138 ॥

चारों मंजिलें

चहार मंजिल बयां गुफ्तम, दस्त करदः बूद।
पीरां मुरीदां खबर करदः, जां राहे माबूद ॥ 139 ॥

पहली प्राण पशु नर कीजे, साच झूठ संसार।
नीति अनीति भला बुरा, शुभ अशुभ निरधार ॥ 140 ॥

सब तज देखि विचार कर, मेरा नाहीं कोइ।
अनुदिन राता राम सौं, भाव भक्ति रत होइ ॥ 141 ॥
दादू अंबर धरती सूर शशि, सांई, सब लै लावै अंग।
यश कीरति करुणा करै, तन मन लागा रंग ॥ 142 ॥
दादू परम तेज तहँ मैं गया, नैनहुँ देख्या आइ।
सुख संतोष पाया घणा, ज्योतिहिं ज्योति समाइ ॥ 143 ॥
अर्थ चार अस्थान का, गुरु सिष कह्या समझाइ।
मारग सिरजनहार का, भाग बड़े सो जाइ ॥ 144 ॥

नमाज सिजदा

अरवाहे सिजदा कुनंद, औजूद रा चि कार।
दादू नूर दादनी, आसिकां दीदार ॥ 145 ॥
आशिकां रहः कब्ज करदां, दिल वजां रफतंद।
अलह आले नूर दीदम, दिल है दादू बंद ॥ 146 ॥
आशिकां मस्ताने आलम, खुरदनी दीदार।
चंद दह चिः कार दादू, यारे मां दिलदार ॥ 147 ॥

ब्रह्म साक्षात्कार धारणा

दादू दया दयालु की, सो क्यों छानी होइ।
प्रेम पुलक मुलकत रहै, सदा सुहागनी सोइ ॥ 148 ॥
दादू बिगसि बिगसि दर्शन करै, पुलकि पुलकि रस पान।
मगन गलित माता रहै, अरस परस मिलि प्राण ॥ 149 ॥
दादू देखि देखि सुमिरण करै, देखि देखि लै लीन।
देखि देखि तन मन विलै, देखि देखि चित्त दीन ॥ 150 ॥
दादू निरखि निरखि निज नाम ले, निरखि निरखि रस पीव।
निरखि निरखि पिव कौं मिलै, निरखि निरखि सुख जीव ॥ 151 ॥

परिचय स्मरण नाम पारख लक्षण

तन सौं सुमिरण सब करैं, आत्म सुमिरण एक ।
आत्म आगै एक रस, दादू बड़ा विवेक।। 152 ।।
दादू माटी के मुकाम का, सब कोइ जाणैं जाप।
एक आध अरवाह का, बिरला आपै आप ।। 153 ।।
दादू जब लग असथल देह का, तब लग सब व्यापै।
निर्भय असथल आत्मा, आगै रस आपै ।। 154 ।।
जब नांही सुरति शरीर की, बिसरै सब संसार।
आतम न जाणैंआप को, तब एक रह्या निरधार ।। 155 ।।
तन सौं सुमिरण कीजिये, जब लग तन नीका।
आत्म सुमिरण ऊपजै, तब लागै फीका ।।
आगै आपैं आप है, तहाँ क्या जी का।
दादू दूजा कहन को, नाहीं लघु टीका ।। 156 ।।

परिचय अंग

चर्म दृष्टि देखै बहुत, आतम दृष्टि एक।
ब्रह्म दृष्टि परचै भया, तब दादू बैठा देख ।। 157 ।।
ये ही नैनां देह के, ये ही आत्म होइ।
ये ही नैनां ब्रह्म के, दादू पलटे दोइ ।। 158 ।।
घट परचै सब घट लखै, प्राण परचै प्राण।
ब्रह्म परचै पाइये, दादू है हैरान ।। 159 ।।

सूक्ष्म सौंज अरचा बंदगी

दादू जल पाषाण ज्यों, सेवै सब संसार।
दादू पाणी लूंण ज्यों, कोइ बिरला पूजणहार ।। 160 ।।

नाम पारिख लक्षण

अलख नाम अंतर कहै, सब घट हरि हरि होइ।
दादू पाणी लूण ज्यों, नाम कहीजे सोइ ।। 161 ।।

लै लक्षण सहज

छाड़ै सुरति शरीर को, तेज पुंज में आइ।
दादू ऐसैं मिल रहै, ज्यों जल जलहि समाइ ।। 162 ।।
सुरति रूप शरीर का, पीव के परसे होइ।
दादू तन मन एक रस, सुमिरण कहिये सोइ ।। 163 ।।
राम कहत राम ही रह्या, आप विसर्जन होइ।
मन पवना पंचों विलै, दादू सुमिरण सोइ ।। 164 ।।
जहँ आतम राम संभालिये, तहँ दूजा नांही और।
देही आगे अगम है, दादू सूक्ष्म ठौर ।। 165 ।।
पर आतम सौं आतमा, ज्यों पाणी में लूंण।
दादू तन मन एक रस, तब दूजा कहिये कूंण ।। 166 ।।
तन मन विलै यों कीजिये, ज्यों पाणी में लूंण।
जीव ब्रह्म एकै भया, तब दूजा कहिये कूंण ।। 167 ।।
तन मन विलै यों कीजिये, ज्यों घृत लागे घाम।
आतम कमल तहँ बंदगी, जहँ दादू प्रकट राम ।। 168 ।।

नख शिख स्मरण

कोमल कमल तहँ पैसि कर, जहाँ न देखै कोइ।
मन थिर सुमिरण कीजिये, तब दादू दर्शन होइ ।। 169 ।।
नखसिख सब सुमिरण करैं, ऐसा कहिये जाप।
अन्तर बिगसै आत्मा, तब दादू प्रगटै आप ।। 170 ।।
अंतरगत हरि हरि करे, तब मुख की हाजत नांहि।
सहजैं धुनि लागी रहै, दादू मन ही मांहि ।। 171 ।।
दादू सहजैं सुमिरण होत है, रोम रोम रमि राम।
चित्त चहूँट्या चित्त सौं, यों लीजे हरि नाम ।। 172 ।।
दादू सुमिरण सहज का, दीन्हा आप अनंत।
अरस परस उस एक सौं, खेलैं सदा बसंत ।। 173 ।।

दादू शब्द अनाहद हम सुन्या, नखसिख सकल शरीर।
सब घट हरि हरि होत है, सहजैं ही मन थीर ॥ 174 ॥
हुण दिल लग्गा हिकसां, मे कूं येहा ताति।
दादू कम्म खुदाय दे, बैठा डी है राति ॥ 175 ॥
दादू माला सब आकार की, कोई साधु सुमिरै राम।
करणी कर तैं क्या किया, ऐसा तेरा नाम ॥ 176 ॥
सब घट मुख रसना करै, रटै राम का नाम।
दादू पीवै रामरस, अगम अगोचर ठाम ॥ 177 ॥
दादू मन चित सुस्थिर कीजिये, तो नख सिख सुमिरण होइ।
श्रवण नेत्र मुख नासिका, पंचों पूरे सोइ ॥ 178 ॥

साध महिमा

आतम आसन राम का, तहाँ बसै भगवान।
दादू दोन्यूं परस्पर, हरि आतम का थान ॥ 179 ॥
राम जपै रुचि साधु को, साधु जपै रुचि राम।
दादू दोनों एक टग, यहु आरम्भ यहु काम ॥ 180 ॥
जहाँ राम तहाँ संतजन, जहाँ साधु तहाँ राम।
दादू दोन्यूं एकठे, अरस परस विश्राम ॥ 181 ॥
दादू हरि साधु यों पाइये, अविगति के आराध ।
साधु संगति हरि मिलै, हरि संगति तैं साध ॥ 182 ॥
दादू राम नाम सौं मिलि रहै, मन के छाड़ि विकार।
तो दिल ही मांहैं देखिये, दोनों का दीदार ॥ 183 ॥
साधु समाना राम में, राम रह्या भरपूर।
दादू दोनों एक रस, क्यों कर कीजै दूर ॥ 184 ॥

सत्संग महात्म

दादू सेवक सांई का भया, तब सेवक का सब कोइ।
सेवक सांई को मिल्या, तब सांई सरीखा होइ ॥ 185 ॥

मिश्री मांही मेल कर, मोल बिकाना बंस।
यों दादू महँगा भया, पारब्रह्म मिल हंस ।। 186 ।।
मीठे मांही राखिये, सो काहे न मीठा होइ।
दादू मीठा हाथ ले, रस पीवै सब कोइ ।। 187 ।।

सत्संगति-कुसंगति

मीठे सौं मीठा भया, खारे सौं खारा।
दादू ऐसा जीव है, यहु रंग हमारा ।। 188 ।।

साध महिमा महात्म्य

मीठै मीठे कर लिये, मीठा मांही बाहि।
दादू मीठा ह्वै रह्या, मीठे मांहि समाहि ।। 189 ।।
राम बिना किस काम का, नहीं कौड़ी का जीव।
सांई सरीखा ह्वै गया, दादू परसै पीव ।। 190 ।।

पारिख अपारिख

हीरा कौड़ी ना लहै, मूरख हाथ गँवार।
पाया पारिख जौहरी, दादू मोल अपार ।। 191 ।।
अंधे हीरा परखिया, कीया कौड़ी मोल।
दादू साधू जौहरी, हीरे मोल न तोल ।। 192 ।।

साध महिमा

मीरां कीया महर सौं, परदे थैं लापर्द।
राखि लिया दीदार में, दादू भूला दर्द ।। 193 ।।
दादू नैन बिन देखबा, अंग बिन पेखबा,
रसन बिन बोलबा ब्रह्म सेती।
श्रवण बिन सुनबा, चरण बिन चालबा,
चित्त बिन चिन्तबा, सहज एती ।। 194 ।।

पतिव्रत

दादू देख्या एक मन, सो मन सब ही मांहि।
तिहि मन सौं मन मानिया, दूजा भावे नांहि ।। 195 ।।

पुरुष प्रकाशी

दादू जिहिं घट दीपक राम का, तिहिं घट तिमिर न होइ।
उस उजियारे ज्योति के, सब जग देखै सोइ ।। 196 ।।

पतिव्रत

दादू दिल अरवाह का, सो अपणा ईमान।
सोई साबित राखिये, जहँ देखै रहमान ।। 197 ।।

अल्लह आप ईमान है, दादू के दिल मांहि।
सोई साबित राखिये, दूजा कोई नांहि ।। 198 ।।

प्राण पवन ज्यों पतला, काया करै कमाइ।
दादू सब संसार में, क्योंहि गह्या न जाइ ।। 199 ।।

नूर तेज ज्यों जोति है, प्राण पिंड यो होइ।
दृष्टि मुष्टि आवै नहीं, साहिब के वश सोइ ।। 200 ।।

काया सूक्ष्म कर मिलै, ऐसा कोई एक।
दादू आत्म ले मिलैं, ऐसे बहुत अनेक।। 201 ।।

सुन्दरी सुहाग

आडा आत्म तन धरै, आप रहै ता मांहि।
आपण खेलै आप सौं, जीवन सेती नांहि ।। 202 ।।

अध्यात्म

दादू अनुभै थैं आनन्द भया, पाया निर्गुण नांव।
निश्चल निर्मल निर्वाण पद, अगम अगोचर ठांव ।। 203 ।।

दादू अनुभै वाणी अगम को, ले गई संग लगाइ।
अगह गहै, अकह कहै, अभेद भेद लहाइ ।। 204 ।।

जो कुछ बेद कुरान थैं, अगम अगोचर बात।
सो अनुभै साचा कहै, यहु दादू अकह कहात ।। 205 ।।

दादू जब घट अनुभै उपजै, तब किया कर्म का नाश।
भय अरु भ्रम भागे सबै, पूरण ब्रह्म प्रकाश ।। 206 ।।
दादू अनुभै काटै रोग को, अनहद उपजै आइ।
सेझे का जल निर्मला, पीवै रुचि ल्यौलाइ ।। 207 ।।
दादू वाणी ब्रह्म की, अनुभै घट परकास।
राम अकेला रहि गया, शब्द निरंजन पास ।। 208 ।।
जे क बहूँ समझै आत्मा, तौ दृढ़ गह राखै मूल।
दादू सेझा राम रस, अमृत काया कूल ।। 209 ।।

परिचय जिज्ञासु उपदेश

दादू मुझ ही मांही मैं रहूँ, मैं मेरा घरबार।
मुझ ही मांही मैं बसूँ, आप कहै करतार ।। 210 ।।
दादू मैं ही मेरा अर्श में, मैं ही मेरा स्थान।
मैं ही मेरी ठौर में, आप कहै रहमान ।। 211 ।।
दादू मैं ही मेरे आसरे, मैं मेरे आधार।
मेरे तकिये मैं रहूँ, कहै सिरजनहार ।। 212 ।।
दादू मैं ही मेरी जाति में, मैं ही मेरा अंग।
मैं ही मेरा जीव में, आप कहै प्रसंग ।। 213 ।।
दादू सबै दिशा सो सारिखा, सबै दिशा मुख बैन।
सबै दिशा श्रवणहुँ सुने, सबै दिशा कर नैन ।। 214 ।।
सबै दिसा पग सीस हैं, सबै दिसा मन चैन।
सबै दिसा सन्मुख रहै, सबै दिसा अंग अैन ।। 215 ।।
बिन श्रवणहुँ सब कुछ सुनै, बिन नैनहुँ सब देखै।
बिन रसना मुख सब कुछ बोलै, यहु दादू अचरज पेखै ।। 216 ।।
सब अंग सब ही ठौर सब, सर्वंगी सब सार।
कहै गहै देखै सुनै, दादू सब दीदार ।। 217 ।।

कहै सब ठौर, गहै सब ठौर, रहै सब ठौर, जोति परवाने।
नैन सब ठौर, बैन सब ठौर, अैन सब ठौर, सोई भल जाने ॥
सीस सब ठौर, श्रवण सब ठौर, चरण सब ठौर, कोई यहु माने।
अंग सब ठौर, संग सब ठौर, सबै सब ठौर, दादू ध्याने ॥ 218 ॥

तेज ही कहना, तेज ही गहना, तेज ही रहना सारे।
तेज ही बैना, तेज ही नैना, तेज ही अैन हमारे।
तेज ही मेला, तेज ही खेला, तेज अकेला, तेज ही तेज सँवारे।
तेज ही लेवे, तेज ही देवे, तेज ही खेवे, तेज ही दादू तारे ॥ 219 ॥

नूर हि का धर, नूर हि का घर, नूर हि का वर मेरा।
नूर हि मेला, नूर हि खेला, नूर अकेला, नूर हि मंझ बसेरा।
नूर हि का अंग, नूर हि का संग, नूर हि का रंग मेरा।
नूर हि राता, नूर हि माता, नूर हि खाता दादू तेरा ॥ 220 ॥

सूक्ष्म सौंज अर्चा बन्दगी

दादू नूरी दिल अरवाह का, तहाँ बसै माबूदं।
तहँ बंदे की बंदगी, जहाँ रहै मौजूदं ॥ 221 ॥

दादू नूरी दिल अरवाह का, तहँ खालिक भरपूरं।
आली नूर अल्लाह का, खिदमतगार हजूरं ॥ 222 ॥

दादू नूरी दिल अरवाह का, तहँ देख्या करतारं।
तहँ सेवक सेवा करै, अनन्त कला रवि सारं ॥ 223 ॥

दादू नूरी दिल अरवाह का, तहाँ निरंजन वासं।
तहँ जन तेरा एक पग, तेज पुंज प्रकाशं ॥ 224 ॥

दादू तेज कमल दिल नूर का, तहाँ राम रहमानं।
तहँ कर सेवा बंदगी, जे तूँ चतुर सयानं ॥ 225 ॥

तहाँ हजूरी बंदगी, नूरी दिल में होइ।
तहँ दादू सिजदा करै, जहाँ न देखै कोइ ॥ 226 ॥

दादू देही मांहि दोइ दिल, इक खाकी इक नूर।
खाकी दिल सूझै नहीं, नूरी मंझि हजूर ॥ 227 ॥

नमाज सिजदा

दादू हौज हजूरी दिल ही भीतरि, गुसल हमारा सारं।
उजू साजि अलह केआगे, तहाँ नमाज गुजारं ॥ 228 ॥
दादू काया मसीत कर पंच जमाती, मन ही मुल्ला इमामं।
आप अलेख इलाही आगे, तहँ सिजदा करे सलामं ॥ 229 ॥
दादू सब तन तसबी कहै करीमं, ऐसा करले जापं।
रोजा एक दूर कर दूजा, कलमा आपै आपं ॥ 230 ॥
दादू आठों पहर अलह के आगै, इकटक रहिबा ध्यानं।
आपै आप अर्श के ऊपर, जहाँ रहै रहमानं ॥ 231 ॥
दादू अट्ठे पहर इबादती, जीवण मरण निबाहि।
साहिब दर सेवै खड़ा, दादू छाड़ि न जाहि ॥ 232 ॥

साधु महिमा महात्म

अट्ठे पहर अर्श में, ऊभोई आहे।
दादू पसे तिनके, अल्लह गाल्हाये ॥ 233 ॥
अट्ठे पहर अर्श में, बैठा पीरी पसन्नि।
दादू पसे तिन्न के, जे दीदार लहन्नि ॥ 234 ॥
अट्ठे पहर अर्श में, जिन्हीं रूह रहन्नि।
दादू पसे तिन्न के, गुझ्यूं गाल्हि कन्नि ॥ 235 ॥
अट्ठे पहर अर्श में, लुड़ींदा आहीन।
दादू पसे तिन्न के, असां खबर डीन ॥ 236 ॥
अट्ठे पहर अर्श में, वजी जे गाहीन।
दादू पसे तिन्न के, कितेई आहीन ॥ 237 ॥

रस प्रेम प्याला

प्रेम प्याला नूर का, आशिक भर दीया।
दादू दर दीदार में, मतवाला कीया ॥ 238 ॥

इश्क सलूनां आशिकां, दरगह तैं दीया।
दर्द मोहब्बत प्रेम रस, प्याला भर पीया ॥ 239 ॥
दादू दिल दीदार दे, मतवाला कीया।
जहाँ अर्श इलाही आप था, अपना कर लीया ॥ 240 ॥
दादू प्याला नूर दा, आशिक अर्श पीवन्न।
अट्ठे पहर अल्लह दा, मुँह दिट्ठे जीवन्न ॥ 241 ॥
आशिक अमली साधु सब, अलख दरीबे जाइ।
साहिब दर दीदार में, सब मिल बैठे आइ ॥ 242 ॥
राते माते प्रेम रस, भर भर देहु खुदाइ।
मस्तान मालिक कर लिये, दादू रहे ल्यौ लाइ ॥ 243 ॥

लांबी भक्ति अगाध

दादू भक्ति निरंजन राम की, अविचल अविनाशी।
सदा सजीवन आतमा, सहजैं परकाशी ॥ 244 ॥
दादू जैसा राम अपार है, तैसी भक्ति अगाध।
इन दोनों की मित नहीं, सकल पुकारैं साध ॥ 245 ॥
दादू जैसा अविगत राम है, तैसी भक्ति अलेख।
इन दोनों की मित नहीं, सहस मुखां कहै शेष ॥ 246 ॥
दादू जैसा निर्गुण राम है, तैसी भक्ति निरंजन जाणि।
इन दोनों की मित नहीं, संत कहैं परमाणि ॥ 247 ॥
दादू जैसा पूरा राम है, तैसी पूरण भक्ति समान।
इन दोनों की मित नहीं, दादू नांही आन ॥ 248 ॥

सेवा अखंडित

दादू जब लग राम है, तब लग सेवक होइ।
अखंडित सेवा एक रस, दादू सेवक सोइ ॥ 249 ॥
दादू जैसा राम है, तैसी सेवा जाणि।
पावेगा तब करेगा, दादू सो परमाणि ॥ 250 ॥

सांई सरीखा सुमिरण कीजे, सांई सरीखा गावै।
सांई सरीखी सेवा कीजे, तब सेवक सुख पावै ।। 251 ।।

परिचय करुणा विनती

दादू सेवग सेवा कर डरै, हम थैं कछु न होइ।
तूँ है तैसी बन्दगी, कर नहिं जाणै कोइ ।। 252 ।।

दादू जे साहिब मानै नहीं, तऊ न छाडूं सेव।
इहि अवलंबन जीजिये, साहिब अलख अभेव ।। 253 ।।

सूक्ष्म सौंज अरचा बन्दगी

आदि अंति आगे रहे, एक अनुपम देव।
निराकार निज निर्मला, कोई न जाणे भेव ।। 254 ।।

अविनासी अपरंपरा, वार वार नहीं छेव।
सो तूँ दादू देखि ले, उर अंतर कर सेव ।। 255 ।।

दादू भीतर पैसि कर, घट के जड़े कपाट।
सांई की सेवा करै, दादू अविगत घाट ।। 256 ।।

घट परिचै सेवा करै, प्रत्यक्ष देखै देव।
अविनाशी दर्शन करै, दादू पूरी सेव ।। 257 ।।

भ्रम विध्वंस

पूजनहारे पास हैं, देही मांहैं देव।
दादू ताकौं छाड़ कर, बाहर मांडी सेव ।। 258 ।।

परिचय

दादू रमता राम सौं, खेलैं अन्तर मांहि।
उलट समाना आप में, सो सुख कतहुँ नांहि ।। 259 ।।

दादू जे जन बेधे प्रीति सौं, सो जन सदा सजीव।
उलट समाने आप में, अंतर नांही पीव ।। 260 ।।

परगट खेलैं पीव सौं, अगम अगोचर ठांव।
एक पलक का देखणा, जीवण मरण का नांव ।। 261 ।।

सूक्ष्म सौंज अर्चा बंदगी

आत्म मांही राम है, पूजा ताकी होइ ।
सेवा वंदन आरती, साध करैं सब कोइ ।। 262 ।।

परिचै सेवा आरती, परिचै भोग लगाइ।
दादू उस प्रसाद की, महिमा कही न जाइ ।। 263 ।।

मांहि निरंजन देव है, मांहि सेवा होइ।
मांहि उतारै आरती, दादू सेवक सोइ ।। 264 ।।

दादू मांहि कीजै आरती, मांहि पूजा होइ।
मांहि सतगुरू सेविये, बूझै विरला कोइ ।। 265 ।।

संत उतारैं आरती, तन मन मंगलचार।
दादू बलि बलि वारणैं, तुम पर सिरजनहार ।। 266 ।।

दादू अविचल आरती, जुग-जुग देव अनन्त।
सदा अखंडित एक रस, सकल उतारैं संत ।। 267 ।।

।। सौंज मंत्र ।।

सत्यराम, आत्मा वैष्णव, सुबुद्धि भूमि, संतोष स्थान, मूल मंत्र, मन माला, गुरु तिलक, सत्य संयम, शील शुचिता,ध्यान धोवती, काया कलश, प्रेम जल, मनसामंदिर,निरंजन देव, आत्मा पाती, पुहुप प्रीति, चेतनाचंदन, नवधा नाम, भाव पूजा, मति पात्र, सहज समर्पण, शब्द घंटा, आनन्द आरती, दया प्रसाद, अनन्य एक-दशा, तीर्थ सत्संग, दान उपदेश, व्रत स्मरण, षट्गुण ज्ञान, अजपा जाप, अनुभव आचार, मर्यादा राम, फल दर्शन, अभि अन्तर सदा निरन्तर सत्य सौंज दादू वर्तते, आत्मा उपदेश, अंतर्गति पूजा ।।268 ।।

पीव सौं खेलूँ प्रेम रस, तो जियरे जक होइ।
दादू पावै सेज सुख, पड़दा नाहीं कोइ ।। 269 ।।

सूक्ष्म सौंज

सेवक बिसरै आप कौं, सेवा बिसरि न जाइ।
दादू पूछै राम कौं, सो तत्त कहि समझाइ ।। 270 क ।।

दादू सूतां पीछे सुरति निरति सूं, बालक ज्यूं पय पीवे।
ऐसेअन्तर लगन नाम सूं, आतम जुग-जुग जीवे ।। 270 ख ।।
ज्यों रसिया रस पीवतां, आपा भूलै और।
यों दादू रह गया एक रस, पीवत पीवत ठौर ।। 271 ।।
जहँ सेवक तहँ साहिब बैठा, सेवक सेवा मांहि।
दादू सांई सब करै, कोई जानै नांहि ।। 272 ।।
दादू सेवक सांई वश किया, सौंप्या सब परिवार।
तब साहिब सेवा करै, सेवक के दरबार ।। 273 ।।
तेज पुंज ''को बिलसना'', मिलि खेलैं इक ठांव।
भर भर पीवै राम रस, सेवा इसका नांव ।। 274 ।।
अरस परस मिल खेलिये, तब सुख आनंद होइ।
तन मन मंगल चहुँ दिशि भये, दादू देखे सोइ ।। 275 ।।

सुन्दरी सुहाग

मस्तक मेरे पांव धर, मंदिर माहीं आव।
सैंयां सोवै सेज पर, दादू चम्पै पांव ।। 276 ।।
ये चारों पद पलंग के, साँई की सुख सेज।
दादू इन पर बैस कर, साँई सेती हेज ।। 277 ।।
प्रेम लहर की पालकी, आतम बैसे आइ।
दादू खेलै पीव सौं, यहु सुख कह्या न जाइ ।। 278 ।।

अर्चना भक्ति

दादू देव निरंजन पूजिये, पाती पंच चढाइ।
तन मन चंदन चर्चिये, सेवा सुरति लगाइ ।। 279 ।।
भक्ति भक्ति सब कोइ कहै, भक्ति न जाने कोइ।
दादू भक्ति भगवंत की, देह निरन्तर होइ ।। 280 ।।
देही मांही देव है, सब गुण तैं न्यारा।
सकल निरंतर भर रह्या, दादू का प्यारा ।। 281 ।।

जीव पियारे राम को, पाती पंच चढाइ।
तन मन मनसा सौंपि सब, दादू विलम्ब न लाइ ।। 282 ।।

अध्यात्म ध्यान

शब्द सुरति लै सान चित्त, तन मन मनसा मांहि।
मति बुद्धि पंचों आतमा, दादू अनत न जांहि ।। 283 ।।
दादू तन मन पवना पंच गहि, ले राखै निज ठौर।
जहाँ अकेला आप है, दूजा नांही और ।। 284 ।।
दादू यहु मन सुरति समेट करि, पंच अपूठे आणि।
निकटि निरंजन लाग रहु, संगि सनेही जाणि ।। 285 ।।
मन चित मनसा आत्मा, सहज सुरति ता मांहि।
दादू पंचों पूर ले, जहँ धरती अंबर नांहि ।। 286 ।।
दादू भीगे प्रेम रस, मन पंचों का साथ।
मगन भये रस में रहे, तब सन्मुख त्रिभुवन-नाथ ।। 287 ।।
दादू शब्दैं शब्द समाइ ले, पर आतम सौं प्राण।
यहु मन मन सौं बंधि ले, चित्तैं चित्त सुजान ।। 288 ।।
दादू सहजैं सहज समाइ ले, ज्ञानैं बंध्या ज्ञान।
सूत्रैं सूत्र समाइ ले, ध्यानैं बंध्या ध्यान ।। 289 ।।
दादू दृष्टैं दृष्टि समाइ ले, सुरतैं सुरति समाइ।
समझैं समझ समाइ ले, लै सौं लै ले लाइ ।। 290 ।।
दादू भावैं भाव समाइ ले, भक्तैं भक्ति समान।
प्रेमैं प्रेम समाइ ले, प्रीतैं प्रीति रस पान ।। 291 ।।
दादू सूरतैं सुरति समाइ रहु, अरु बैनहुं सौं बैन।
मन ही सौं मन लाइ रहु, अरु नैनहुँ सौं नैन ।। 292 ।।
जहाँ राम तहँ मन गया, मन तहँ नैना जाइ।
जहँ नैना तहँ आतमा, दादू सहजि समाइ ।। 293 ।।

जीवन मुक्ति, विषय वासना निवृत्ति

प्राणन खेलै प्राण सौं, मनन खेलै मन।
शब्दन खेलै शब्द सौं, दादू राम रतन ।। 294 ।।
चित्तन खेलै चित्त सौं, बैनन खेलै बैन।
नैनन खेलै नैन सौं, दादू प्रकट ऐन ।। 295 ।।
पाकन खेलै पाक सौं, सारन खेलै सार।
खूबन खेलै खूब सौं, दादू अंग अपार ।। 296 ।।
नूर न खेलै नूर सौं, तेज न खेलै तेज।
ज्योतिन खेलै ज्योति सौं, दादू एकै सेज ।। 297 ।।
पंच पदारथ मन रतन, पवना माणिक होइ।
आतम हीरा सुरति सौं, मनसा मोती पोइ ।। 298 ।।
अजब अनूपम हार है, सांई सरीषा सोइ।
दादू आतम राम गल, जहाँ न देखे कोइ ।। 299 ।।
दादू पंचों संगी संग ले, आये आकासा।
आसन अमर अलेख का, निर्गुण नित वासा ।। 300 ।।
प्राण पवन मन मगन ह्वै, संगी सदा निवासा।
परचा परम दयालु सौं, सहजैं सुख दासा ।। 301 ।।
दादू प्राण पवन मन मणि बसै, त्रिकुटि केरे संधि।
पाँचों इन्द्री पीव सौं, ले चरणों में बंधि ।। 302 ।।
प्राण हमारा पीव सौं, यों लागा सहिये।
पुहुप वास घृत दूध में, अब कासौं कहिये ।। 303 ।।
पाहण लोह बिच वासदेव, ऐसे मिल रहिये।
दादू दीन दयाल सौं, संग हि सुख लहिये ।। 304 ।।
दादू ऐसा बड़ा अगाध है, सूक्षम जैसा अंग।
पुहुप वास तैं पतला, सो सदा हमारे संग ।। 305 ।।

दादू जब दिल मिली दयालु सौं, तब अंतर कुछ नांहि।
ज्यों पाला पाणी कों मिल्या, त्यों हरिजन हरि मांहि ।। 306 ।।
दादू जब दिल मिली दयालु सौं, तब सब पड़दा दूर।
अैसैं मिल एकै भया, बहु दीपक पावक पूर ।। 307 ।।
दादू जब दिल मिली दयालु सौं, तब अंतर नांही रेख।
नाना विधि बहु भूषणां, कनक कसौटी एक।। 308 ।।
दादू जब दिल मिली दयालु सौं, तब पलक न पड़दा कोइ।
डाल मूल फल बीज में, सब मिल एकै होइ ।। 309 ।।
फल पाका बेली तजी, छिटकाया मुख मांहि।
सांई अपना कर लिया, सो फिर ऊगै नांहि ।। 310 ।।
दादू काया कटोरा दूध मन, प्रेम प्रीति सों पाइ।
हरि साहिब इहि विधि अंचवै, वेगा वार न लाइ ।। 311 ।।
टगा टगी जीवन मरण, ब्रह्म बराबरि होइ।
परगट खेलै पीव सौं, दादू बिरला कोइ ।। 312 ।।
दादू निबरा ना रहै, ब्रह्म सरीखा होइ।
लै समाधि रस पीजिये, दादू जब लग दोइ ।। 313 ।।
बेखुद खबर होशियार बाशद, खुद खबर पैमाल।
बेकीमत मस्तान गलतान, नूर प्याले ख्याल ।। 314 ।।
दादू माता प्रेम का, रस में रह्या समाइ।
अन्त न आवै जब लगै, तब लग पीवत जाइ ।। 315 ।।
पीया तेता सुख भया, बाकी बहु वैराग।
ऐसे जन थाके नहीं, दादू उनमनि लाग ।। 316 ।।
निकट निरंजन लाग रहु, जब लग अलख अभेव।
दादू पीवै राम रस, निहकामी निज सेव ।। 317 ।।

राम रटणि छाड़ै नहीं, हरि लै लागा जाइ।
बीचैं ही अटकै नहीं, कला कोटि दिखलाइ ।। 318 ।।
दादू हरि रस पीवतां, कबहुँ अरुचि न होइ।
पीवत प्यासा नित नवा, पीवणहारा सोइ ।। 319 ।।
दादू जैसे श्रवणा दोइ हैं, ऐसे होंहि अपार।
राम कथा रस पीजिये, दादू बारंबार ।। 320 ।।
जैसे नैना दोइ हैं, ऐसे होंहि अनंत।
दादू चंद चकोर ज्यों, रस पीवैं भगवंत ।। 321 ।।
ज्यों रसना मुख एक है, ऐसे होंहि अनेक।
तो रस पीवै शेष ज्यों, यों मुख मीठा एक।। 322 ।।
ज्यों घट आत्म एक है, ऐसे होंहि असंख।
भर भर राखै रामरस, दादू एकै अंक।। 323 ।।
ज्यों ज्यों पीवै राम रस, त्यों त्यों बढै पियास।
ऐसा कोई एक है, बिरला दादू दास ।। 324 ।।
राता माता राम का, मतवाला मैमंत।
दादू पीवत क्यों रहै,जे जुग जांहि अनन्त ।। 325 ।।
दादू निर्मल ज्योति जल, वर्षा बारह मास।
तिहि रस राता प्राणिया, माता प्रेम पियास ।। 326 ।।
रोम रोम रस पीजिए, एती रसना होइ।
दादू प्यासा प्रेम का, यों बिन तृप्ति न होइ ।। 327 ।।
तन गृह छाड़ै लाज पति, जब रस माता होइ।
जब लग दादू सावधान, कदे न छाड़े कोइ ।। 328 ।।
आंगण एक कलाल के, मतवाला रस मांहि।
दादू देख्या नैन भर, ताके दुविधा नांहि ।। 329 ।।

पीवत चेतन जब लगै, तब लग लेवै आइ।
जब माता दादू प्रेम रस, तब काहे को जाइ ।। 330 ।।
दादू अंतर आत्मा, पीवै हरि जल नीर।
सौंज सकल ले उद्धरै, निर्मल होइ शरीर ।। 331 ।।

लांबी रस

दादू मीठा राम रस, एक घूँट कर जाऊँ।
पुणग न पीछे को रहे, सब हिरदै मांहि समाऊँ।। 332 ।।
चिड़ी चंचु भरि ले गई, नीर निघट नहिं जाइ।
ऐसा बासण ना किया, सब दरिया मांहि समाइ ।। 333 ।।
दादू अमली राम का, रस बिन रह्या न जाइ।
पलक एक पावै नहीं, तो तबहिं तलफ मर जाइ ।। 334 ।।
दादू राता राम का, पीवै प्रेम अघाइ।
मतवाला दीदार का, मांगै मुक्ति बलाइ ।। 335 ।।
उज्जवल भँवरा हरि कमल, रस रुचि बारह मास।
पीवै निर्मल वासना, सो दादू निज दास ।। 336 ।।
नैनहुँ सौं रस पीजिये, दादू सुरति सहेत।
तन मन मंगल होत है, हरि सौं लागा हेत ।। 337 ।।
पीवै पिलावै राम रस, माता है हुसियार।
दादू रस पीवै घणां, औरों को उपकार ।। 338 ।।
नाना विधि पिया राम रस, केती भाँति अनेक।
दादू बहुत विवेक सौं, आत्म अविगत एक।। 339 ।।

परिचय महात्म

परिचय का पय प्रेम रस, जे कोई पीवै।
मतवाला माता रहै, यों दादू जीवै ।। 340 ।।
परिचय का पय प्रेम रस, पीवै हित चित लाइ।
मनसा वाचा कर्मणा, दादू काल न खाइ ।। 341 ।।

परिचय पीवै राम रस, युग युग सुस्थिर होइ।
दादू अविचल आतमा, काल न लागै कोइ ।। 342 ।।
परिचय पीवै राम रस, सो अविनाशी अंग।
काल मीच लागै नहीं, दादू सांई संग ।। 343 ।।
परिचय पीवै राम रस, सुख में रहै समाइ।
मनसा वाचा कर्मणा, दादू काल न खाइ ।। 344 ।।
परिचय पीवै राम रस, राता सिरजनहार।
दादू कुछ व्यापै नहीं, ते छूटे संसार ।। 345 ।।
अमृत भोजन राम रस, काहे न विलसै खाइ।
काल विचारा क्या करै, रम रम राम समाइ ।। 346 ।।

सजीवन

दादू जीव अजा बिघ काल है, छेली जाया सोइ।
जब कुछ बस नहीं काल का, तब मीनी का मुख होइ ।। 347 ।।
मन लवरू के पंख हैं, उनमनि चढै आकास।
पग रहि पूरे साच के, रोपि रह्या हरि पास ।। 348 ।।
तन मन वृक्ष बबूल का, कांटे लागे सूल।
दादू माखण ह्वै गया, काहू का स्थूल ।। 349 ।।
दादू संषा शब्द है, सुनहाँ संशा मारि।
मन मींडक सूं मारिये, शंका सर्प निवारि ।। 350 ।।
दादू गांझी ज्ञान है, भंजन है सब लोक।
राम दूध सब भरि रह्या, ऐसा अमृत पोष ।। 351 ।।
दादू झूठा जीव है, गढिया गोविन्द बैन।
मनसा मूंगी पंखि सौं, सूरज सरीखे नैन ।। 352 ।।
सांई दीया दत घणां, तिसका वार न पार।
दादू पाया राम धन, भाव भक्ति दीदार ।। 353 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम
तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा
धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं
मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
चतुर्थो परिचय काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 4 ।। साखी 353 ।।
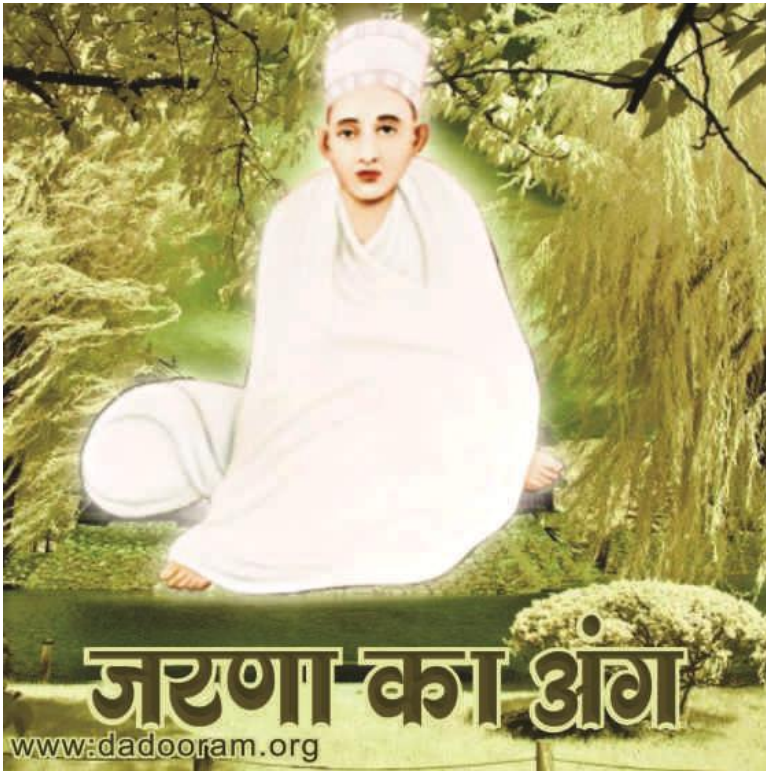
अथ जरणा का अंग ५

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः ।
वंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ।। 1 ।।

जरणा का स्वरूप

को साधु राखै रामधन, गुरु बाइक वचन विचार ।
गहिला दादू क्यों रहै, मरकत हाथ गँवार ।। 2 ।।
जनि खोवै दादू रामधन, हिरदै राखि जनि जाइ ।
रतन जतन करि राखिये, चिंतामणि चित लाइ ।। 3 ।।
दादू मन ही मांहि समझ कर, मन ही मांहि समाइ ।
मन ही मांहि राखिये, बाहर कहि न जनाइ ।। 4 ।।

दादू समझ समाइ रहु, बाहरि कहि न जनाइ।
दादू अद्भुत देखिया, तहँ ना को आवै जाइ ।। 5 ।।
कहि कहि क्या दिखलाइये, सांई सब जाने।
दादू प्रगट क्या कहै, कुछ समझि सयाने ।। 6 ।।
दादू मन ही मांहैं ऊपजै, मन ही मांहि समाइ।
मन ही मांहैं राखिये, बाहर कहि न जनाइ ।। 7 ।।

जरणा करने की विधि

लै विचार लागा रहै, दादू जरता जाइ।
कबहुँ पेट न आफरै, भावै तेता खाइ ।। 8 ।।
सोइ सेवक सब जरै, जेती उपजै आइ।
कहि न जनावै और को, दादू मांहि समाइ ।। 9 ।।
सोइ सेवग सब जरै, जेता रस पीया।
दादू गुझ गंभीर का, प्रकाश न कीया ।। 10 ।।
सोई सेवक सब जरै, जे अलख लखावा।
दादू राखै रामधन, जेता कुछ पावा ।। 11 ।।
सोइ सेवक सब जरै, प्रेम रस खेला।
दादू सो सुख कस कहै, जहाँ आप अकेला ।। 12 ।।
सोई सेवक सब जरै, जेता घट परकास।
दादू सेवक सब लखै, कहि न जनावै दास ।। 13 ।।
अजर जरै रस ना झरै, घट मांहि समावै।
दादू सेवक सो भला, जे कहि न जनावै ।। 14 ।।
अजर जरै रस ना झरै, घट अपना भर लेइ।
दादू सेवक सो भला, जारै जाण न देइ ।। 15 ।।
अजर जरै रस ना झरै, जेता सब पीवै।
दादू सेवक सो भला, राखै रस जीवै ।। 16 ।।

अजर जरै रस ना झरै, पीवत थाकै नांहि।
दादू सेवक सो भला, भर राखै घट मांहि ।। 17 ।।

साधु महिमा

जरणा जोगी जुग जुग जीवै, झरणा मर मर जाइ।
दादू जोगी गुरुमुखी, सहजैं रहै समाइ ।। 18 ।।
जरणा जोगी जग रहै, झरणा परलै होइ।
दादू जोगी गुरुमुखी, सहज समाना सोइ ।। 19 ।।
जरणा जोगी थिर रहै, झरणा घट फूटै।
दादू जोगी गुरुमुखी, काल थैं छूटै ।। 20 ।।
जरणा जोगी जगपती, अविनाशी अवधूत।
दादू जोगी गुरुमुखी, निरंजन का पूत ।। 21 ।।
जरै सु नाथ निरंजन बाबा, जरै सु अलख अभेव।
जरै सु जोगी सब की जीवन, जरै सु जग में देव ।। 22 ।।
जरै सु आप उपावनहारा, जरै सु जगपति सांईं।
जरै सु अलख अनूप है, जरै सु मरणा नांहीं ।। 23 ।।
जरै सु अविचल राम है, जरै सु अमर अलेख।
जरै सु अविगत आप है, जरै सु जग में एक।। 24 ।।
जरै सु अविगत आप है, जरै सु अपरम्पार।
जरै सु अगम अगाध है, जरै सु सिरजनहार ।। 25 ।।
जरै सु निज निराकार है, जरै सु निज निरधार।
जरै सु निज निर्गुणमयी, जरै सु निज तत सार ।। 26 ।।
जरै सु पूरण ब्रह्म है, जरै सु पूरणहार।
जरै सु पूरण परमगुरु, जरै सु प्राण हमार ।। 27 ।।
दादू जरै सु ज्योति स्वरूप है, जरै सु तेज अनन्त।
जरै सु झिलमिल नूर है, जरै सु पुंज रहंत ।। 28 ।।

दादू जरै सु परम प्रकाश है, जरै सु परम उजास ।
जरै सु परम उदीत है, जरै सु परम विलास ।। 29 ।।
दादू जरै सु परम पगार है, जरै सु परम विगास।
जरै सु परम प्रभास है, जरै सु परम निवास ।। 30 ।।

परमेश्वर की दयालुता

दादू एक बोल भूले हरि, सो कोई न जाणै प्राण।
औगुण मन आणै नहिं, और सब जाणै हरि जाण ।। 31 ।।

सतगुरु अगम बात जानने के लिए विनय करते हैं

दादू तुम जीवों के औगुण तजे, सु कारण कौन अगाध?
मेरी जरणा देख कर, मति को सीखें साध ।। 32 ।।

धारणा

पवना पानी सब पिया, धरती अरु आकास।
चन्द सूर पावक मिले, पंचों एक ग्रास ।। 33 ।।
चौदह तीनों लोक सब, ठूंगे श्वासै श्वास।
दादू साधू सब जरैं, सतगुरु के विश्वास ।। 34 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य

पांचवां जरणा काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 5 ।। साखी 34 ।।
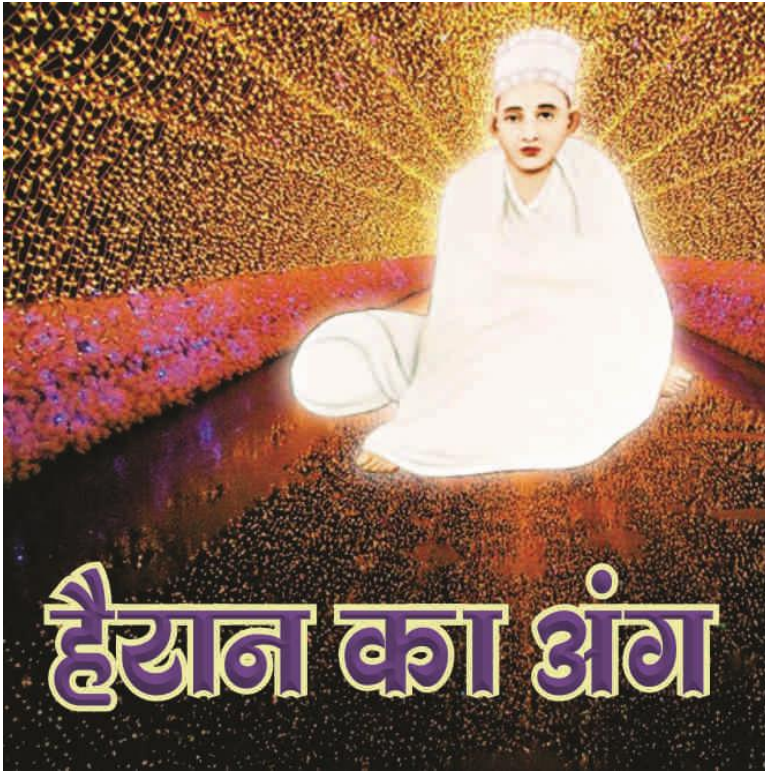
अथ हैरान का अंग ६

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ।। 1 ।।

रतन एक बहु पारिखू, सब मिल करैं विचार।
गूंगे गहिले बावरे, दादू वार न पार ।। 2 ।।

अनेक मतवादी

केते पारिख जौहरी, पंडित ज्ञाता ध्यान।
जाण्या जाइ न जाणिए, का कहि कथिये ज्ञान ।। 3 ।।

केते पारिख पच मुये, कीमत कही न जाइ।
दादू सब हैरान हैं, गूँगे का गुड़ खाइ ।। 4 ।।

सब ही ज्ञानी पंडिता, सुर नर रहे उरझाइ।
दादू गति गोविन्द की, क्यों ही लखी न जाइ ॥ 5 ॥
जैसा है तैसा नाम तुम्हारा, ज्यों है त्यों कह सांई।
तूं आपै जाणै आपको, तहँ मेरी गम नांहि ॥ 6 ॥
केते पारिख अंत न पावैं, अगम अगोचर मांही।
दादू कीमत कोई न जानै, खीर नीर की नांही ॥ 7 ॥
जीव ब्रह्म सेवा करै, ब्रह्म बराबर होइ।
दादू जाणै ब्रह्म को, ब्रह्म सरीखा सोइ ॥ 8 ॥
वारपार को ना लहै, कीमत लेखा नांहि।
दादू एकै नूर है, तेज पुंज सब मांहि ॥ 9 ॥

पीव पिछान

हस्त पांव नहिं शीश मुख, श्रवण नेत्र कहुं कैसा।
दादू सब देखैं सुनैं, कहै गहै है ऐसा ॥ 10 ॥
'पाया पाया' सब कहैं, केतक 'देहुँ दिखाइ।'
कीमत किनहूँ ना कही, दादू रहु ल्यौ लाइ ॥ 11 ॥
अपना भंजन भर लिया, उहाँ उता ही जाण।
अपणी अपणी सब कहैं, दादू बिड़द बखाण ॥ 12 ॥
पार न देवै आपना, गोप गूझ मन मांहि।
दादू कोई ना लहै, केते आवैं जांहि ॥ 13 ॥
गूंगे का गुड़ का कहूँ, मन जानत है खाइ।
त्यों राम रसायन पीवतां, सो सुख कह्या न जाइ ॥ 14 ॥
दादू एक जीभ केता कहूँ, पूरण ब्रह्म अगाध।
वेद कतेबां मित नहीं, थकित भये सब साध ॥ 15 ॥
दादू मेरा एक मुख, कीर्ति अनन्त अपार।
गुण केते परिमित नहीं, रहे विचार विचार ॥ 16 ॥

सकल शिरोमणि नाम है, तूं है तैसा नांहि।
दादू कोई ना लहै, केते आवैं जांहि ।। 17 ।।
दादू केते कह गये, अंत न आवै ओर ।
हमहूँ कहते जात हैं, केते कहसी होर ।। 18 ।।
दादू मैं क्या जानूँ क्या कहूँ, उस बलिये की बात।
क्या जानूँ क्यों ही रहै, मो पै लख्या न जात ।। 19 ।।
दादू केते चल गये, थाके बहुत सुजान।
बातों नाम न नीकले, दादू सब हैरान ।। 20 ।।
ना कहीं दिठ्ठा ना सुण्या, ना कोई आखणहार।
ना कोई उत्थों थी फिर्‌या, ना उर वार न पार ।। 21 ।।

परमार्थ स्वरूप

नहिं मृतक नहिं जीवता, नहिं आवै नहिं जाइ।
नहिं सूता नहिं जागता, नहिं भूखा नहिं खाइ ।। 22 ।।
न तहाँ चुप ना बोलणां, मैं तैं नांहीं कोइ।
दादू आपा पर नहीं, न तहाँ एक न दोइ ।। 23 ।।
एक कहूँ तो दोइ हैं, दोइ कहूँ तो एक।
यों दादू हैरान है, ज्यों है त्यों ही देख ।। 24 ।।
देख दीवाने ह्वै गए, दादू खरे सयान।
वार पार कोई ना लहै, दादू है हैरान ।। 25 ।।

पतिव्रत निष्काम

दादू करणहार जे कुछ किया, सोई हौं कर जाण।
जे तूं चतुर सयाना जानराइ, तो याही परमाण ।। 26 ।।
दादू जिन मोहनि बाजी रची, सो तुम्ह पूछो जाइ।
अनेक एक तैं क्यों किये, साहिब कहि समझाइ ।। 27 ।।
इति श्री दादूदास–विरचिते सतगुरु–प्रसादेन प्रोक्तं भक्तियोगनाम
तत्वसारमत–सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान–सर्वशास्त्र–शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा

धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं
मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
छठा हैरान काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 6 ।। साखी 27 ।।
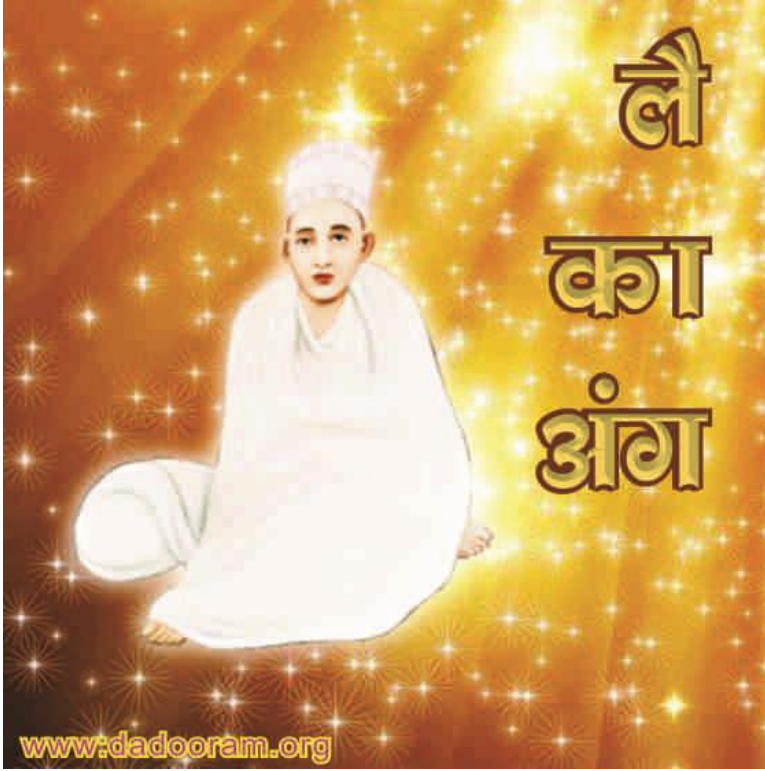
अथ लै का अंग ७

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः ।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

लय का स्वरूप लक्षण

दादू लै लागी तब जाणिये, जे कबहुँ छूट न जाइ ।
जीवत यों लागी रहै, मूवां मंझ समाइ ॥ 2 ॥

दादू जे नर प्राणी लै गता, सोई गत ह्वै जाइ ।
जे नर प्राणी लै रता, सो सहजैं रहै समाइ ॥ 3 ॥

सब तज गुण आकार के, निश्चल मन ल्यौ लाइ ।
आत्म चेतन प्रेम रस, दादू रहै समाइ ॥ 4 ॥

तन मन पवना पंच गह, निरंजन ल्यौ लाइ।
जहँ आत्म तहँ परमात्मा, दादू सहज समाइ ।। 5 ।।
अर्थ अनुपम आप है, और अनर्थ भाई।
दादू ऐसी जानि कर, तासौं ल्यौ लाई ।। 6 ।।

लै लगाने की विधि

ज्ञान भक्ति मन मूल गह, सहज प्रेम ल्यौ लाइ।
दादू सब आरंभ तजि, जनि काहू संग जाइ ।। 7 ।।

अगम संस्कार

पहली था सो अब भया, अब सो आगे होइ।
दादू तीनों ठौर की, बूझै बिरला कोइ ।। 8 ।।

अध्यात्म

योग समाधि सुख सुरति सौं, सहजैं सहजैं आव।
मुक्ता द्वारा महल का, इहै भक्ति का भाव ।। 9 ।।
सहज शून्य मन राखिये, इन दोनों के मांहि।
लै समाधि रस पीजिये, तहाँ काल भय नांहि ।। 10 ।।
दादू बिन पायन का पंथ है, क्यों कर पहुँचै प्राण।
विकट घाट औखट खरे, मांहि शिखर असमान ।। 11 ।।
मन ताजी चेतन चढै, ल्यौ की करै लगाम।
शब्द गुरु का ताजणा, कोई पहुँचै साधु सुजान ।। 12 ।।

सूक्ष्म मार्ग

किहिं मारग ह्वै आइया, किहिं मारग ह्वै जाइ।
दादू कोई ना लहै, केते करैं उपाइ ।। 13 ।।
शून्य हि मार्ग आइया, शून्य हि मारग जाइ।
चेतन पैंडा सुरति का, दादू रहु ल्यौ लाइ ।। 14 ।।
दादू पारब्रह्म पैंडा दिया, सहज सुरति लै सार।
मन का मारग मांहि घर, संगी सिरजनहार ।। 15 ।।

लय

राम कहै जिस ज्ञान सौं, अमृत रस पीवै।
दादू दूजा छाड़ि सब, लै लागी जीवै ।। 16 ।।
राम रसायन पीवतां, जीव ब्रह्म ह्वै जाइ।
दादू आत्म राम सौं, सदा रहै ल्यौ लाइ ।। 17 ।।

रस रंग

सुरति समाइ सन्मुख रहै, जुग जुग जन पूरा।
दादू प्यासा प्रेम का, रस पीवै सूरा ।। 18 ।।

अध्यात्म

दादू जहाँ जगद्गुरु रहत है, तहाँ जे सुरति समाइ।
तो इन ही नैनहुँ उलट कर, कौतुक देखै आइ ।। 19 ।।
अख्यूं पसण के पिरी, भिरे उलथौं मंझ।
जिते बैठो मां पिरी, निहारी दो हंझ ।। 20 ।।
दादू उलट अनूठा आप में, अंतर सोध सुजाण।
सो ढिग तेरे बावरे, तज बाहर की बाण ।। 21 ।।
सुरति अपूठी फेरि कर, आत्म मांही आन।
लाग रहै गुरुदेव सौं, दादू सोई सयान ।। 22 ।।

सूक्ष्म सौंज अर्चा बंदगी

जहँ आत्म तहँ राम है, सकल रह्या भरपूर।
अन्तर्गत ल्यौ लाइ रहु, दादू सेवक सूर ।। 23 ।।
दादू अन्तर्गत ल्यौ लाइ रहु, सदा सुरति सौं गाइ।
यहु मन नाचै मगन ह्वै, भावै ताल बजाइ ।। 24 ।।
दादू पावै सुरति सौं, बाणी बाजै ताल।
यहु मन नाचै प्रेम सौं, आगै दीन दयाल ।। 25 ।।
दादू सब बातन की एक है, दुनिया तैं दिल दूर।
सांई सेती संग कर, सहज सुरति लै पूर ।। 26 ।।

दादू एक सुरति सौं सब रहैं, पंचों उनमनि लाग।
यहु अनुभव उपदेश यहु, यहु परम योग वैराग ॥ 27 ॥
दादू सहजैं सुरति समाइ ले, पारब्रह्म के अंग।
अरस परस मिल एक ह्वै, सन्मुख रहबा संग ॥ 28 ॥
सुरति सदा सन्मुख रहै, जहाँ तहाँ लै लीन।
सहज रूप सुमिरण करै, निष्कामी दादू दीन ॥ 29 ॥
सुरति सदा साबति रहै, तिनके मोटे भाग।
दादू पीवैं राम रस, रहैं निरंजन लाग ॥ 30 ॥

सूक्ष्म सौंज

दादू सेवा सुरति सौं, प्रेम प्रीति सौं लाइ।
जहँ अविनाशी देव है, तहँ सुरति बिना को जाइ ॥ 31 ॥

विनती

दादू ज्यों वै बरत गगन तैं टूटै, कहाँ धरणी कहँ ठाम।
लागी सुरति अंग तैं छूटै, सो कत जीवै राम ॥ 32 ॥

अध्यात्म

सहज योग सुख में रहै, दादू निर्गुण जाण।
गंगा उलटी फेरि कर, जमुना मांहि आण ॥ 33 ॥

लय

परआत्म सो आत्मा, ज्यों जल उदक समान।
तन मन पाणी लौंण ज्यों, पावै पद निर्वाण ॥ 34 ॥
मन ही सौं मन सेविये, ज्यौं जल जलहि समाइ।
आत्म चेतन प्रेम रस, दादू रहु ल्यौ लाइ ॥ 35 ॥
छाड़ै सुरति शरीर को, तेज पुंज में आइ।
दादू ऐसे मिल रहै, ज्यों जल जलहि समाइ ॥ 36 ॥
यों मन तजै शरीर को, ज्यों जागत सो जाइ।
दादू बिसरै देखतां, सहज सदा ल्यौ लाइ ॥ 37 ॥

जिहि आसन पहली प्राण था, तिहि आसन ल्यौ लाइ।
जे कुछ था सोई भया, कछू न व्यापै आइ ।। 38 ।।
तन मन अपणा हाथ कर, ताहि सौं ल्यौ लाइ।
दादू निर्गुण राम सौं, ज्यों जल जलहि समाइ ।। 39 ।।
एक मना लागा रहै, अंत मिलेगा सोइ।
दादू जाके मन बसै, ताको दर्शन होइ ।। 40 ।।
दादू निबहै त्यौं चलै, धीरै धीरज मांहि।
परसेगा पीव एक दिन, दादू थाके नांहि ।। 41 ।।

लय

जब मन मृतक ह्वै रहै, इन्द्री बल भागा।
काया के सब गुण तजै, निरंजन लागा ।। 42 ।।
आदि अंत मधि एक रस, टूटै नहीं धागा।
दादू एकै रह गया, तब जाणी जागा ।। 43 ।।
जब लग सेवग तन धरै, तब लग दूसर आहि।
एकमेक ह्वै मिलि रहै, तो रस पीवन तैं जाइ ।। 44 ।।
ये दोनों ऐसी कहैं, कीजे कौन उपाइ।
ना मैं एक, न दूसरा, दादू रहु ल्यौ लाइ ।। 45 ।।

इति श्री दादूदास–विरचिते सतगुरु–प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत–सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान–सर्वशास्त्र–शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र–सत्योपदेश–ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य–श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य

सातवां लै काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 7 ।। साखी 45 ।।
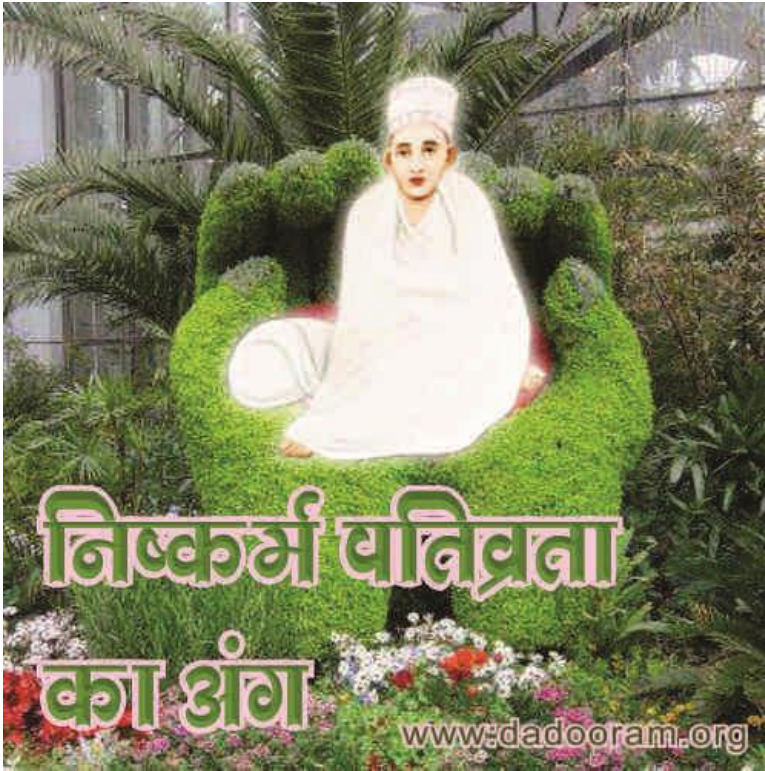
अथ निष्कर्मी पतिव्रता का अंग ८

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः ।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ।। 1 ।।

एक तुम्हारे आसरे, दादू इहि विश्वास ।
राम भरोसा तोर है, नहिं करणी की आस ।। 2 ।।

रहणी राजस ऊपजै, करणी आपा होइ ।
सबथैं दादू निर्मला, सुमिरण लागा सोइ ।। 3 ।।

दादू मन अपना लै लीन कर, करणी सब जंजाल ।
साधू सहजैं निर्मला, आपा मेट संभाल ।। 4 ।।

दादू सिद्धि हमारे सांइयां, करामात करतार।
ऋद्धि हमारे राम है, आगम अलख अपार ।। 5 ।।
गोविन्द गोसांई तुम्हीं आमचे गुरु, तुम्हे अमचां ज्ञान।
तुम्हे अमचे देव, तुम्हे अमचा ध्यान ।। 6 ।।
तुम्हीं आमची पूजा, तुम्हीं आमची पाती।
तुम्हीं आमचा तीर्थ, तुम्हीं आमची जाती ।। 7 ।।
तुम्हीं आमचा नाद, तुम्हीं आमचा भेद।
तुम्हीं आमचा पुराण, तुम्हीं आमचा वेद ।। 8 ।।
तुम्हीं आमची युक्ति, तुम्हीं आमचा योग।
तुम्हीं आमचा वैराग्य, तुम्हीं आमचा भोग ।। 9 ।।
तुम्हीं आमची जीवनी, तुम्हीं आमचा जप।
तुम्हीं आमचा साधन, तुम्हीं आमचा तप ।। 10 ।।
तुम्हीं आमचा शील, तुम्हीं आमचा संतोष।
तुम्हीं आमची मुक्ति, तुम्हीं आमचा मोक्ष ।। 11 ।।
तुम्हीं आमचा शिव, तुम्हीं आमची शक्ति।
तुम्हीं आमचा आगम, तुम्हीं आमची उक्ति।। 12 ।।
तूं सत्य तूं अविगत तूं अपरंपार, तूं निराकार तुम्हचा नाम।
दादू चा विश्राम, देहु देहु अवलम्बन राम ।। 13 ।।
दादू राम कहूँ ते जोड़बा, राम कहूँ ते साखि।
राम कहूँ ते गाइबा, राम कहूँ ते राखि ।। 14 ।।
दादू कुल हमारे केशवा, सगा तो सिरजनहार।
जाति हमारी जगद्गुरू, परमेश्वर परिवार ।। 15 ।।
दादू एक सगा संसार में, जिन हम सिरजे सोइ।
मनसा वाचा कर्मणा, और न दूजा कोइ ।। 16 ।।

स्मरण नाम निःसंशय

सांई सन्मुख जीवतां, मरतां सन्मुख होइ।
दादू जीवन मरण का, सोच करै जनि कोइ ।। 17 ।।

पतिव्रत

साहिब मिल्या तो सब मिले, भेंटे भेंटा होइ।
साहिब रह्या तो सब रहे, नहीं तो नाहीं कोइ ।। 18 ।।
दादू रीझै राम पर, अनत न रीझै मन।
मीठा भावै एक रस, दादू सोई जन ।। 19 ।।
दादू मेरे हृदय हरि बसै, दूजा नांही और।
कहो कहाँ धौं राखिये, नहीं आन को ठौर ।। 20 ।।
दादू नारायण नैना बसै, मनहीं मोहन राइ।
हिरदा मांही हरि बसै, आतम एक समाइ ।। 21 ।।
दादू तन मन मेरा पीव सौं, एक सेज सुख सोइ।
गहिला लोग न जाणही, पच पच आपा खोइ ।। 22 ।।
दादू एक हमारे उर बसै, दूजा मेल्या दूर।
दूजा देखत जाइगा, एक रह्या भरपूर ।। 23 ।।
निश्चल का निश्चल रहै, चंचल का चल जाइ।
दादू चंचल छाड़ि सब, निश्चल सौं ल्यौ लाइ ।। 24 ।।
साहिब रहतां सब रह्या, साहिब जातां जाइ।
दादू साहिब राखिये, दूजा सहज स्वभाइ ।। 25 ।।
मन चित मनसा पलक में, सांई दूर न होइ।
निष्कामी निरखै सदा, दादू जीवन सोइ ।। 26 ।।

कथनी बिना करणी

जहाँ नाम तहँ नीति चाहिये, सदा राम का राज।
निर्विकार तन मन भया, दादू सीझै काज ।। 27 ।।

सुन्दरी विलाप

जिसकी खूबी, खूब सब, सोई खूब सँभार।
दादू सुन्दरी खूब सौं, नखशिख साज सँवार ।। 28 ।।
दादू पंच आभूषण पीव कर, सोलह सब ही ठांव।
सुन्दरी यहु श्रृंगार करि, ले ले पीव का नांव ।। 29 ।।
यहु व्रत सुन्दरी ले रहै, तो सदा सुहागिनी होइ।
दादू भावै पीव कौं, ता सम और न कोइ ।। 30 ।।

पतिव्रता निष्काम

साहिब जी का भावता, कोई करै कलि मांहि।
मनसा वाचा कर्मना, दादू घटि घटि नांहि ।। 31 ।।
आज्ञा मांहैं बैसै ऊठै, आज्ञा आवै जाइ।
आज्ञा मांहैं लेवै देवै, आज्ञा पहरै खाइ ।। 32 ।।
आज्ञा मांही बाहर भीतर, आज्ञा रहै समाइ।
आज्ञा मांही तन मन राखै, दादू रहै ल्यौ लाइ ।। 33 ।।
पतिव्रता गृह आपने, करै खसम की सेव।
ज्यों राखै त्यों ही रहै, आज्ञाकारी टेव ।। 34 ।।

सुन्दरी विलाप

दादू नीच ऊँच कुल सुन्दरी, सेवा सारी होइ।
सोई सुहागिन कीजिये, रूप न पीजे धोइ ।। 35 ।।
दादू जब तन मन सौंप्या राम को, ता सन क्या व्यभिचार।
सहज शील संतोष सत, प्रेम भक्ति लै सार ।। 36 ।।
पर पुरुषा सब परहरै, सुन्दरी देखै जागि।
अपणा पीव पिछाण करि, दादू रहिये लागि ।। 37 ।।
आन पुरुष हूँ बहिनड़ी, परम पुरुष भरतार।
हूँ अबला समझूं नहीं, तूं जानै करतार ।। 38 ।।

जिसका तिसकौं दीजिये, सांई सन्मुख आइ।
दादू नख शिख सौंप सब, जनि यहु बंट्या जाइ ।। 39 ।।
सारा दिल सांई सौं राखै, दादू सोई सयान।
जे दिल बंटै आपना, सो सब मूढ़ अयान ।। 40 ।।
दादू सारों सौं दिल तोरि कर, सांई सौं जोड़ै।
सांई सेती जोड़ करि, काहे को तोड़ै ।। 41 ।।
साहिब देवै राखणा, सेवक दिल चोरै।
दादू सब धन साह का, भूला मन थोरै ।। 42 ।।

पतिव्रत

दादू मनसा वाचा कर्मना, अंतर आवै एक।
ताको प्रत्यक्ष राम जी, बातें और अनेक ।। 43 ।।
दादू मनसा वाचा कर्मना, हिरदै हरि का भाव।
अलख पुरुष आगे खड़ा, ताके त्रिभुवन राव ।। 44 ।।
दादू मनसा वाचा कर्मना, हरि जी सौं हित होइ।
साहिब सन्मुख संग है, आदि निरंजन सोइ ।। 45 ।।
दादू मनसा वाचा कर्मणा, आतुर कारण राम।
सम्रथ सांई सब करै, परगट पूरे काम ।। 46 ।।
नारी पुरुषा देख करि, पुरुषा नारी होइ।
दादू सेवक राम का, शीलवन्त है सोइ ।। 47 ।।

आन लग्न व्यभिचार

पर पुरुषा रत बांझणी, जाणे जे फल होइ।
जन्म बिगोवै आपना, दादू निष्फल सोइ ।। 48 ।।
दादू तज भरतार को, पर पुरुषा रत होइ।
ऐसी सेवा सब करैं, राम न जाने सोइ ।। 49 ।।

पतिव्रत

नारी सेवक तब लगै, जब लग सांई पास।
दादू परसै आन को, ताकी कैसी आस ।। 50 ।।

आन लगन व्यभिचार

दादू नारी पुरुष को, जाने जे वश होइ।
पीव की सेवा ना करै, कामणिगारी सोइ ।। 51 ।।

करूणा

कीया मन का भावता, मेटी आज्ञाकार।
क्या ले मुख दिखलाइये, दादू उस भर्तार ।। 52 ।।

आन लग्न व्यभिचार

करामात कलंक है, जाकै हिरदै एक।
अति आनन्द व्यभिचारिणी, जाके खसम अनेक।। 53 ।।
दादू पतिव्रता के एक है, व्यभिचारिणी के दोइ।
पतिव्रता व्यभिचारिणी, मेला क्यों कर होइ ।। 54 ।।
पतिव्रता के एक है, दूजा नांही आन।
व्यभिचारिणी के दोइ हैं, पर घर एक समान ।। 55 ।।

सुन्दरी सुहाग

दादू पुरुष हमारा एक है, हम नारी बहु अंग।
जे जे जैसी ताहि सौं, खेलैं तिस हि रंग ।। 56 ।।

पतिव्रत

दादू रहता राखिये, बहता देइ बहाइ।
बहते संग न जाइये, रहते सौं ल्यौ लाइ ।। 57 ।।
जनि बाझैं काहू कर्म सौं, दूजै आरंभ जाइ।
दादू एकै मूल गहि, दूजा देइ बहाइ ।। 58 ।।
बावें देखि न दाहिने, तन मन सन्मुख राखि।
दादू निर्मल तत्त्व गह, सत्य शब्द यहु साखि ।। 59 ।।
दादू दूजा नैन न देखिये, श्रवणहुँ सुने न जाइ।
जिह्वा आन न बोलिये, अंग न और सुहाइ ।। 60 ।।

चरणहुँ अनत न जाइये, सब उलटा मांहि समाइ।
उलट अपूठा आप में, दादू रहु ल्यौ लाइ ॥ 61 ॥
दादू दूजे अंतर होत है, जनि आने मन मांहि।
तहाँ ले मन को राखिये, जहँ कुछ दूजा नांहि ॥ 62 ॥

भ्रम विध्वंस

भ्रम तिमिर भाजै नहीं, रे जिय आन उपाइ।
दादू दीपक साज ले, सहजैं ही मिट जाइ ॥ 63 ॥
दादू सो वेदन नहीं बावरे, आन किये जे जाइ।
सब दुख भंजन सांइयाँ, ताहि सौं ल्यौ लाइ ॥ 64 ॥
दादू औषध मूली कुछ नहीं, ये सब झूठी बात।
जे औषध ही जीविये, तो काहे को मर जात ॥ 65 ॥

पतिव्रत

मूल गहै सो निश्चल बैठा, सुख में रहै समाइ।
डाल पान भ्रमत फिरै, वेदों दिया बहाइ ॥ 66 ॥
सो धक्का सुनहाँ को देवै, घर बाहर काढै।
दादू सेवक राम का, दरबार न छाड़ै ॥ 67 ॥
साहिब का दर छाड़ि कर, सेवक कहीं न जाय।
दादू बैठा मूल गह, डालों फिरै बलाय ॥ 68 ॥
दादू जब लग मूल न सींचिये, तब लग हरा न होइ।
सेवा निष्फल सब गई, फिर पछताना सोइ ॥ 69 ॥
दादू सींचे मूल के, सब सींच्या विस्तार।
दादू सींचे मूल बिन, बाद गई बेगार ॥ 70 ॥
सब आया उस एक में, डाल पान फल फूल।
दादू पीछे क्या रह्या, जब निज पकड़्या मूल ॥ 71 ॥
खेत न निपजै बीज बिन, जल सींचे क्या होइ।
सब निष्फल दादू राम बिन, जानत है सब कोइ ॥ 72 ॥

दादू जब मुख मांहि मेलिये, तब सब ही तृप्ता होइ।
मुख बिन मेले आन दिश, तृप्ति न माने कोइ ।। 73 ।।
जब देव निरंजन पूजिये, तब सब आया उस मांहि।
डाल पान फल फूल सब, दादू न्यारे नांहि ।। 74 ।।
दादू टीका राम को, दूसर दीजे नांहि।
ज्ञान ध्यान तप भेष पक्ष, सब आये उस मांहि ।। 75 ।।
साधू राखै राम को, संसारी माया।
संसारी पल्लव गहै, मूल साधू पाया ।। 76 ।।

आन लगन व्यभिचार

दादू जे कुछ कीजिये, अविगत बिन आराध।
कहबा सुनबा देखबा, करबा सब अपराध ।। 77 ।।
सब चतुराई देखिए, जे कुछ कीजै आन।
दादू आपा सौंपि सब, पीव को लेहु पिछान ।। 78 ।।

पतिव्रत

दादू दूजा कुछ नहीं, एक सत्य कर जान।
दादू दूजा क्या करै, जिन एक लिया पहचान ।। 79 ।।
दादू कोई वांछै मुक्ति फल, कोइ अमरापुर वास।
कोई वांछै परमगति, दादू राम मिलन की प्यास ।। 80 ।।
तुम हरि हिरदै हेत सौं, प्रगटहु परमानन्द।
दादू देखै नैन भर, तब केता होइ आनन्द ।। 81 ।।
प्रेम पियाला राम रस, हमको भावै येहि।
रिधि सिधि मांगैं मुक्ति फल, चाहैं तिनको देहि ।। 82 ।।
कोटि वर्ष क्या जीवना, अमर भये क्या होइ।
प्रेम भक्ति रस राम बिन, का दादू जीवन सोइ ।। 83 ।।
कछू न कीजे कामना, सगुण निर्गुण होहि।
पलट जीव तैं ब्रह्म गति, सब मिलि मानैं मोहि ।। 84 ।।

घट अजरावर ह्वै रहै, बन्धन नांही कोइ।
मुक्ता चौरासी मिटै, दादू संशय सोइ ।। 85 ।।

लाँबि रस

निकटि निरंजन लाग रहु, जब लग अलख अभेव।
दादू पीवै राम रस, निहकामी निज सेव ।। 86 ।।

परिचय पतिव्रत

सालोःय संगति रहै, सामीप्य सन्मुख सोइ।
सारूप्य सारीखा भया, सायुज्य एकै होइ ।। 87 ।।

राम रसिक वांछै नहीं, परम पदारथ चार।
अठसिधि नव निधि का करै, राता सिरजनहार ।। 88 ।।

आन लग्न व्यभिचार

स्वारथ सेवा कीजिये, ताथैं भला न होइ।
दादू ऊसर बाहि कर, कोठा भरै न कोइ ।। 89 ।।

सुत वित मांगैं बावरे, साहिब सी निधि मेलि।
दादू वे निष्फल गये, जैसे नागर बेलि ।। 90 ।।

फल कारण सेवा करै, जाचै त्रिभुवन राव।
दादू सो सेवक नहीं, खेलै अपना दाव ।। 91 ।।

सहकामी सेवा करैं, मागैं मुग्ध गँवार।
दादू ऐसे बहुत हैं, फल के भूँचनहार ।। 92 ।।

स्मरण नाम महात्म

तन मन लै लागा रहै, राता सिरजनहार।
दादू कुछ मांगैं नहीं, ते बिरला संसार ।। 93 ।।

दादू सांई को संभालतां, कोटि विघ्न टल जांहि।
राई मन बैसंदरा, केते काठ जलांहि ।। 94 ।।

करतूति कर्म

कर्मै कर्म काटै नहीं, कर्मै कर्म न जाइ।
कर्मै कर्म छूटै नहीं, कर्मै कर्म बँधाइ ।। 95 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्तियोगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
आठवां निष्कर्मी पतिव्रता काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 8 ।। साखी 95 ।।
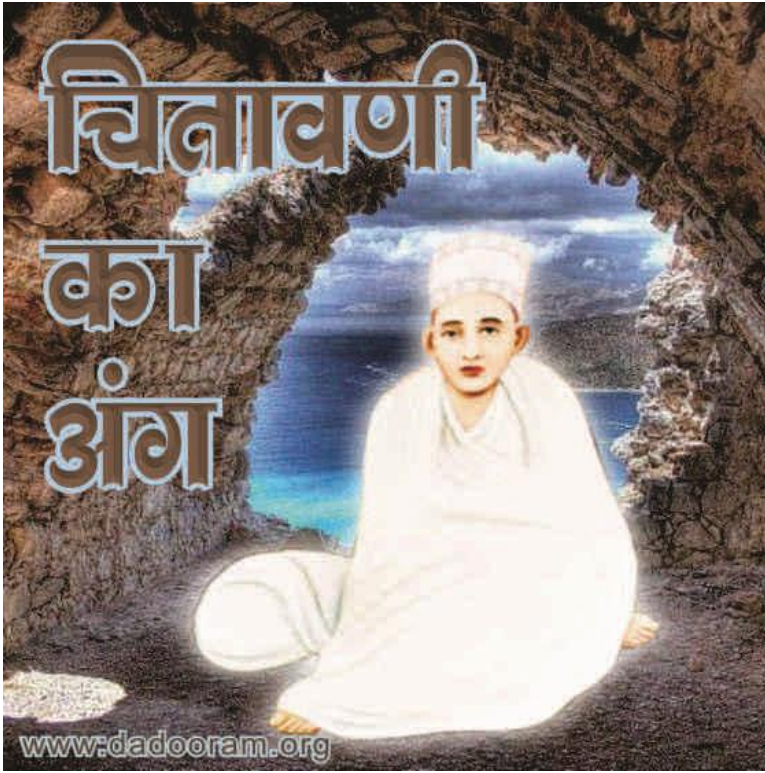
अथ चितावणी का अंग ९

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

दादू जे साहिब कौं भावै नहीं, सो हम थैं जनि होइ।
सतगुरु लाजै आपणा, साध न मानैं कोइ ॥ 2 ॥

दादू जे साहिब को भावै नहीं, सो सब परिहर प्राण।
मनसा वाचा कर्मणा, जे तूं चतुर सुजाण ॥ 3 ॥

दादू जे साहिब को भावै नहीं, सो जीव न कीजी रे।
परिहर विषय विकार सब, अमृत रस पीजी रे ॥ 4 ॥

दादू जे साहिब को भावै नहीं, सो बाट न बूझी रे।
सांई सौं सन्मुख रही, इस मन सौं झूझी रे ।। 5 ।।
दादू अचेत न होइये, चेतन सौं चित लाइ।
मनवा सूता नींद भर, सांई संग जगाइ ।। 6 ।।
दादू अचेत न होइये, चेतन सौं करि चित्त।
यह अनहद जहाँ थैं ऊपजै, खोजो तहाँ ही नित्त ।। 7 ।।
दादू जन ! कुछ चेत कर, सौदा लीजे सार।
निखर कमाई न छूटणा, अपने जीव विचार ।। 8 ।।

स्मरण नाम चितावणी

दादू कर सांई की चाकरी, ये हरि नाम न छोड़।
जाना है उस देश को, प्रीति पिया सौं जोड़ ।। 9 ।।
आपा पर सब दूर कर, राम नाम रस लाग।
दादू अवसर जात है, जाग सकै तो जाग ।। 10 ।।
बार बार यह तन नहीं, नर नारायण देह।
दादू बहुरि न पाइये, जन्म अमोलिक येह ।। 11 ।।
एका एकी राम सों, कै साधु का संग।
दादू अनत न जाइये, और काल का अंग ।। 12 ।।
दादू तन मन के गुण छाड़ि सब, जब होइ नियारा।
तब अपने नैनहुं देखिये, प्रगट पीव प्यारा ।। 13 ।।
दादू झांती पाये पसु पिरी, अंदरि सो आहे।
होणी पाणे बिच्च में, महर न लाहे ।। 14 ।।
दादू झांती पाये पसु पिरी, हाणे लाइ न बेर।
साथ सभौई हल्लियो, पोइ पसंदो केर ।। 15 ।।
इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्तियोगनाम
तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा

धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य

आठवां चितावणी काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 9 ।। साखी 15 ।।
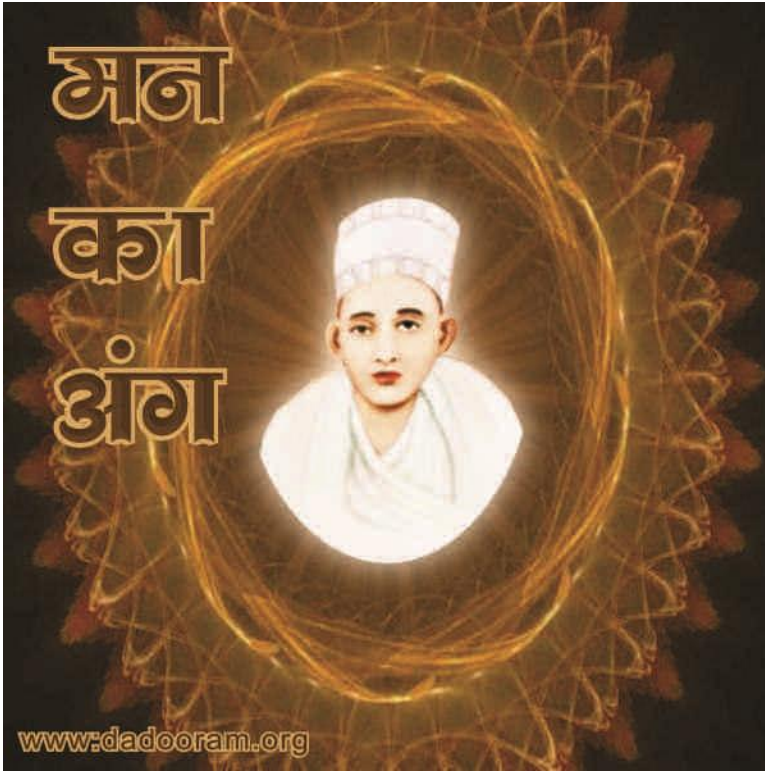
अथ मन का अंग १०

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

दादू यहु मन बरजि बावरे, घट में राखि घेरि।
मन हस्ती माता बहै, अंकुश दे दे फेरि ॥ 2 ॥

हस्ती छूटा मन फिरे, क्यों ही बँध्या न जाइ।
बहुत महावत पच गये, दादू कछु न वशाइ ॥ 3 ॥

जहाँ थैं मन उठ चलै, फेरि तहाँ ही राखि।
तहँ दादू लै लीन कर, साध कहैं गुरु साखि ॥ 4 ॥

थोरे थोरे हठ किये, रहेगा ल्यौ लाइ।
जब लागा उनमनि सौं, तब मन कहीं न जाइ ।। 5 ।।
आड़ा दे दे राम को, दादू राखै मन।
साखी दे सुस्थिर करै, सोई साधू जन ।। 6 ।।
सोई शूर जे मन गहै, निमख न चलने देइ।
जब ही दादू पग भरै, तब ही पकड़ि लेइ ।। 7 ।।
जेती लहर समंद की, ते ते मनहि मनोरथ मार।
बैसे सब संतोंष कर, गहि आत्म एक विचार ।। 8 ।।
दादू जे मुख मांहीं बोलतां, श्रवणहुँ सुनतां आइ।
नैनहुँ मांहैं देखतां, सो अंतर उरझाइ ।। 9 ।।
दादू चुम्बक देख कर, लोहा लागै आइ।
यों मन गुण इन्द्री एक सौं, दादू लीजै लाइ ।। 10 ।।
मन का आसन जे जीव जानै, तौ ठौर ठौर सब सूझै।
पंचों आनि एक घर राखै, तब अगम निगम सब बूझै ।। 11 ।।
बैठे सदा एक रस पीवै, निर्वैरी कत झूझै।
आत्मराम मिलै जब दादू, तब अंग न लागै दूजै ।। 12 ।।
जब लग यहु मन थिर नहीं, तब लग परस न होइ।
दादू मनवा थिर भया, सहज मिलैगा सोइ ।। 13 ।।
दादू बिन अवलम्बन क्यों रहै, मन चंचल चल जाइ।
सुस्थिर मनवा तो रहै, सुमिरण सेती लाइ ।। 14 ।।
सतगुरु चरण शरण चलि जांहीं, नित प्रति रहिये तिनकी छांहीं।
मन स्थिर करि लीजै नाम, दादू कहै तहाँ ही राम ।। 15 ।।
हरि सुमिरण सौं हेत कर, तब मन निश्चल होइ।
दादू बेध्या प्रेम रस, बीष न चालै सोइ ।। 16 ।।

जब अंतर उरझ्या एक सौं, तब थाके सकल उपाइ।
दादू निश्चल थिर भया, तब चलि कहीं न जाइ ॥ 17 ॥
दादू कौवा बोहित बैस कर, मंझि समंदाँ जाइ।
उड़ि उड़ि थाका देख तब, निश्चल बैठा आइ ॥ 18 ॥
यहु मन कागद की गुडी, उड़ी चढी आकास।
दादू भीगे प्रेम जल, तब आइ रहे हम पास ॥ 19 ॥
दादू खीला गार का, निश्चल थिर न रहाइ।
दादू पग नहीं साँच के, भ्रमै दहदिशि जाइ ॥ 20 ॥
तब सुख आनन्द आत्मा, जे मन थिर मेरा होइ।
दादू निश्चल राम सौं, जे कर जाने कोइ ॥ 21 ॥
मन निर्मल थिर होत है, राम नाम आनंद।
दादू दर्शन पाइये, पूरण परमानन्द ॥ 22 ॥

विषय विरक्ति

दादू यों फूटे थैं सारा भया, संधे संधि मिलाइ।
बाहुड़ विषय न भूँचिये, तो कबहुँ फूट न जाइ ॥ 23 ॥
दादू यहु मन भूला सो गली, नरक जाणै के घाट।
अब मन अविगत नाथ सों, गुरु दिखाई बाट ॥ 24 ॥
दादू मन सुध साबित आपणा, निश्चल होवे हाथ।
तो इहाँ ही आनन्द है, सदा निरंजन साथ ॥ 25 ॥
जब मन लागै राम सौं, तब अनत काहे को जाइ।
दादू पानी लौंन ज्यों, ऐसैं रहै समाइ ॥ 26 ॥
ज्यों जल पैसे दूध में, ज्यों पानी में लौंन।
ऐसैं आत्मराम सौं, मन हठ साधै कौंन ॥ 27 ॥
मन का मस्तक मूंडिये, काम क्रोध के केश।
दादू विषय विकार सब, सतगुरु के उपदेश ॥ 28 ॥

करुणा

सो कुछ हम थैं ना भया, जा पर रीझे राम।
दादू इस संसार में, हम आये बेकाम ।। 29 ।।
क्या मुँह ले हँस बोलिये, दादू दीजे रोइ।
जन्म अमोलक आपना, चले अकारथ खोइ ।। 30 ।।
जा कारण जग जीजिये, सो पद हिरदै नांहि।
दादू हरि की भक्ति बिना, ध्रिक् जीवन कलि मांहि ।। 31 ।।
किया मन का भावता, मेटी आज्ञाकार।
क्या ले मुख दिखलाइये, दादू उस भरतार ।। 32 ।।
इन्द्री स्वारथ सब किया, मन माँगै सो दीन्ह।
जा कारण जग सिरजिया, सो दादू कछु न कीन्ह ।। 33 ।।
किया था इस काम कौं, सेवा कारण साज।
दादू भूला बंदगी, सर्‍या न एकौ काज ।। 34 ।।
दादू विषै विकार सौं, जब लग मन राता।
तब लग चित्त न आवई, त्रिभुवनपति दाता ।। 35 ।।
दादू का जाणूँ कब होइगा, हरि सुमिरण इकतार।
का जाणूँ कब छाड़ि है, यह मन विषय विकार ।। 36 ।।

मन प्रबोध

बाद हि जन्म गँवाइया, किया बहुत विकार।
यहु मन सुस्थिर ना भया, जहँ दादू निज सार ।। 37 ।।

विषय अतृप्ति

दादू जनि विष पीवै बावरे, दिन दिन बाढै रोग।
देखत ही मर जाइगा, तज विषया रस भोग ।। 38 ।।
आपा पर सब दूर कर, राम नाम रस लाग।
दादू औसर जात है, जाग सके तो जाग ।। 39 ।।

मन हरि भावनि

दादू सब कुछ विलसतां, खातां पीतां होइ।
दादू मन का भावता, कहि समझावै कोइ ॥ 40 ॥

दादू मन का भावता, मेरी कहै बलाइ।
साच राम का भावता, दादू कहै सुणि आइ ॥ 41 ॥

दादू ये सब मन का भावता, जे कुछ कीजै आन।
मन गहि राखै एक सौं, दादू साधु सुजान ॥ 42 ॥

जे कुछ भावै राम को, सो तत कह समझाइ।
दादू मन का भावता, सबको कहि बनाइ ॥ 43 ॥

चाणक उपदेश

पैंडे पग चालै नहीं, होइ रह्या गलियार।
राम रथ निबहै नहीं, खाबे को हुशियार ॥ 44 ॥

पर प्रबोध

दादू का परमोधै आन को, आपण बहिया जात।
औरों को अमृत कहै, आपण ही विष खात ॥ 45 ॥

दादू पंचों ये परमोध ले, इन्हीं को उपदेश।
यहु मन अपणा हाथ कर, तो चेला सब देश ॥ 46 ॥

दादू पंचों का मुख मूल है, मुख का मनवां होइ।
यहु मन राखै जतन कर, साधु कहावै सोइ ॥ 47 ॥

दादू जब लग मन के दोइ गुण, तब लग निपना नांहि।
द्वै गुण मन के मिट गये, तब निपनां मिल मांहि ॥ 48 ॥

काचा पाका जब लगै, तब लग अंतर होइ।
काचा पाका दूर कर, दादू एकै सोइ ॥ 49 ॥

मध्य निष्पक्ष

सहज रूप मन का भया, तब द्वै द्वै मिटी तरंग।
ताता शीला सम भया, तब दादू एकै अंग ॥ 50 ॥

मन

दादू बहुरूपी मन जब लगै, तब लग माया रंग।
जब मन लागा राम सौं, तब दादू एकै अंग ।। 51 ।।

हीरा मन पर राखिये, तब दूजा चढै न रंग।
दादू यों मन थिर भया, अविनाशी के संग ।। 52 ।।

सुख दुख सब झांई पड़ै, तब लग काचा मन।
दादू कुछ व्यापै नहीं, तब मन भया रतन ।। 53 ।।

दादू पाका मन डोलै नहीं, निश्चल रहै समाइ।
काचा मन दह दिशि फिरै, चंचल चहुँ दिशि जाइ ।। 54 ।।

विरक्तता

सीप सुधा रस ले रहै, पीवै न खारा नीर।
मांहैं मोती नीपजै, दादू बंद शरीर ।। 55 ।।

मन

दादू मन पंगुल भया, सब गुण गये बिलाइ।
है काया नौ–जोबनी, मन बूढ़ा ह्वै जाइ ।। 56 ।।

दादू कच्छप अपने कर लिये, मन इन्द्री निज ठौर।
नाम निरंजन लाग रहु, प्राणी परिहर और ।। 57 ।।

जाचक

मन इन्द्री अंधा किया, घट में लहर उठाइ।
साँई सतगुरु छाड़ कर, देख दिवाना जाइ ।। 58 ।।

दादू कहै राम बिना मन रंक है, जाचै तीनों लोक।
जब मन लागा राम सौं, तब भागे दालिद्र दोष ।। 59 ।।

इन्द्री के आधीन मन, जीव जंत सब जाचै।
तिणे तिणे के आगे दादू, तिहुं लोक फिर नाचै ।। 60 ।।

इंद्री अपने वश करै, सो काहे जाचन जाइ।
दादू सुस्थिर आत्मा, आसन बैसै आइ ।। 61 ।।

मन मनसा दोनों मिले, तब जीव किया भांड।
पंचों का फेर्‌या फिरै, माया नचावै रांड ।। 62 ।।
दादू नकटी आगे नकटा नाचे, नकटी ताल बजावे।
नकटी आगे नकटा गावे, नकटी नकटा भावे ।। 63 ।।

आन लगन व्यभिचार

पांचों इंद्री भूत हैं, मनवा क्षेत्रपाल।
मनसा देवी पूजिये, दादू तीनों काल ।। 64 ।।
जीवत लूटै जगत सब, मृतक लूटैं देव।
दादू कहाँ पुकारिये, कर कर मूये सेव ।। 65 ।।

मन

अग्नि धूम ज्यों नीकलै, देखत सबै बिलाइ।
त्यों मन बिछुटा राम सौं, दह दिश बीखर जाइ ।। 66 ।।
घर छाड़े जब का गया, मन बहुरि न आया।
दादू अग्नि के धूम ज्यों, खुर खोज न पाया ।। 67 ।।
सब काहू के होत हैं, तन मन पसरैं जाइ।
ऐसा कोई एक है, उलटा मांहिं समाइ ।। 68 ।।
क्यों करि उलटा आनिये, पसर गया मन फेरि।
दादू डोरी सहज की, यों आनै घर घेरि ।। 69 ।।
दादू साधु शब्द सौं मिलि रहै, मन राखै बिलमाइ।
साधु शब्द बिन क्यों रहै, तब ही बीखर जाइ ।। 70 ।।
चंचल चहुँ दिशि जात है, गुरु बाइक सौं बंध।
दादू संगति साधु की, पारब्रह्म सौं संध ।। 71 ।।
एक निरंजन नाम सौं, कै साधु संगति मांहि।
दादू मन बिलमाइये, दूजा कोई नांहि ।। 72 ।।

तन में मन आवै नहीं, निशदिन बाहर जाइ।
दादू मेरा जीव दुखी, रहै नहीं ल्यौ लाइ ॥ 73 ॥
तन में मन आवै नहीं, चंचल चहुँ दिशि जाइ।
दादू मेरा जीव दुखी, रहै न राम समाइ ॥ 74 ॥
कोटि यत्न कर कर मुये, यहु मन दह दिशि जाइ।
राम नाम रोक्या रहै, नाहीं आन उपाइ ॥ 75 ॥
यहु मन बहु बकबाद सौं, बाय भूत ह्वै जाइ।
दादू बहुत न बोलिये, सहजैं रहै समाइ ॥ 76 ॥

स्मरण नाम चितावणी

भूला भौंदू फेर मन, मूरख मुग्ध गँवार।
सुमिर सनेही आपणा, आतम का आधार ॥ 77 ॥
मन माणिक मूरख राखि रे, जण जण हाथ न देहु।
दादू पारिख जौंहरी, राम साधु दोइ लेहु ॥ 78 ॥
दादू मार्‍यां बिन मानै नहीं, यहु मन हरि की आन।
ज्ञान खड्ग गुरुदेव का, ता संग सदा सुजान ॥ 79 ॥

मन

मन मृगा मारै सदा, ताका मीठा मांस।
दादू खाइबे को हिल्या, तातैं आन उदास ॥ 80 ॥
कह्या हमारा मान मन, पापी परिहर काम।
विषयों का संग छाड़ दे, दादू कह रे राम ॥ 81 ॥
केता कहि समझाइया, मानै नहीं निलज्ज।
मूरख मन समझै नहीं, कीये काज अकज्ज ॥ 82 ॥

सांच

मन ही मंजन कीजिये, दादू दरपण देह।
मांहैं मूरति देखिये, इहि औसर कर लेह ॥ 83 ॥

आन लगन-व्यभिचार

तब ही कारा होत है, हरि बिन चितवत आन।
क्या कहिये समझै नहीं, दादू सिखवत ज्ञान ।। 84 ।।

साच

दादू पाणी धोवैं बावरे, मन का मैल न जाइ।
मन निर्मल तब होइगा, जब हरि के गुण गाइ ।। 85 ।।
दादू ध्यान धरे क्या होत है, जो मन नहीं निर्मल होइ।
तो बग सब ही उद्धरैं, जे इहि विधि सीझै कोइ ।। 86 ।।
दादू ध्यान धरे क्या होत है, जे मन का मैल न जाइ।
बग मीनी का ध्यान धर, पसू बिचारे खाइ ।। 87 ।।
दादू काले थैं धोला भया, दिल दरिया में धोइ।
मालिक सेती मिलि रह्या, सहजैं निर्मल होइ ।। 88 ।।
दादू जिसका दर्पण ऊजला, सो दर्शन देखै मांहि।
जिस की मैली आरसी, सो मुख देखै नांहि ।। 89 ।।
दादू निर्मल शुद्ध मन, हरि रंग राता होइ।
दादू कंचन कर लिया, काच कहै नहीं कोइ ।। 90 ।।
यहु मन अपना थिर नहीं, कर नहीं जानै कोइ।
दादू निर्मल देव की, सेवा क्यों कर होइ ।। 91 ।।
दादू यहु मन तीनों लोक में, अरस परस सब होइ।
देही की रक्षा करैं, हम जनि भींटै कोइ ।। 92 ।।
दादू देह जतन कर राखिये, मन राख्या नहीं जाइ।
उत्तम मध्यम वासना, भला बुरा सब खाइ ।। 93 ।।
दादू हाडों मुख भऱ्या, चाम रह्या लिपटाय।
मांहैं जिभ्या मांस की, ताही सेती खाइ ।। 94 ।।
दादू नौवों द्वारे नरक के, निशदिन बहै बलाइ।
शुचि कहाँ लौं कीजिये, राम सुमरि गुण गाइ ।। 95 ।।

प्राणी तन मन मिल रह्या, इंद्री सकल विकार।
दादू ब्रह्मा शूद्र धर, कहाँ रहै आचार ॥ 96 ॥

मन की चपलता

दादू जीवै पलक में, मरतां कल्प बिहाइ।
दादू यहु मन मसखरा, जनि कोई पतियाइ ॥ 97 ॥
दादू मूवां मन हम जीवित देख्या, जैसे मरघट भूत।
मूवां पीछे उठ उठ लागै, ऐसा मेरा पूत ॥ 98 ॥
निश्चल करतां जुग गये, चंचल तब ही होहि।
दादू पसरै पलक में, यहु मन मारै मोहि ॥ 99 ॥
दादू यहु मन मींडका, जल सौं जीवै सोइ।
दादू यहु मन रिंद है, जनि रु पतीजै कोइ ॥ 100 ॥
मांही सूक्ष्म ह्वै रहै, बाहरि पसारै अंग।
पवन लाग पौढ़ा भया, काला नाग भुवंग ॥ 101 ॥

आशय विश्राम

सपना तब लग देखिये, जब लग चंचल होइ।
जब निश्चल लागा नाम सौं, तब सपना नांही कोइ ॥ 102 ॥
जागत जहँ जहँ मन रहै, सोवत तहँ तहँ जाइ।
दादू जे जे मन बसै, सोइ सोइ देखै आइ ॥ 103 ॥
दादू जे जे चित बसै, सोई सोई आवै चीति।
बाहर भीतर देखिये, जाही सेती प्रीति ॥ 104 ॥
सावण हरिया देखिये, मन चित ध्यान लगाइ।
दादू केते जुग गये, तो भी हर्‍या न जाइ ॥ 105 ॥
जिसकी सुरति जहाँ रहै, तिसका तहँ विश्राम।
भावै माया मोह में, भावै आतम राम ॥ 106 ॥
जहँ मन राखै जीवतां, मरतां तिस घर जाइ।
दादू वासा प्राण का, जहँ पहली रह्या समाइ ॥ 107 ॥

जहाँ सुरति तहँ जीव है, जहँ नांही तहँ नांहि।
गुण निर्गुण जहँ राखिये, दादू घर वन मांहि ।। 108 ।।
जहाँ सुरति तहँ जीव है, आदि अन्त इस्थान।
माया ब्रह्म जहँ राखिये, दादू तहँ विश्राम ।। 109 ।।
जहाँ सुरति तहँ जीव है, जीवन मरण जिस ठौर।
विष अमृत तहँ राखिये, दादू नाहीं और ।। 110 ।।
जहाँ सुरति तहँ जीव है, जहँ जाणै तहँ जाइ।
गम अगम जहँ राखिये, दादू तहाँ समाइ ।। 111 ।।
मन मनसा का भाव है, अन्त फलेगा सोइ।
जब दादू बाणक बण्या, तब आशय आसण होइ ।। 112 ।।
जप तप करणी कर गये, स्वर्ग पहुँचे जाइ।
दादू मन की वासना, नरक पड़े फिर आइ ।। 113 ।।
पाका काचा ह्वै गया, जीत्या हारे डाव।
अंत काल गाफिल भया, दादू फिसले पांव ।। 114 ।।
दादू यहु मन पंगुल पंच दिन, सब काहू का होइ।
दादू उतर आकाश तैं, धरती आया सोइ ।। 115 ।।
ऐसा कोई एक मन, मरै सो जीवै नाहिं।
दादू ऐसे बहुत हैं, फिर आवै कलि माहिं ।। 116 ।।
देखा देखी सब चले, पार न पहुँच्या जाइ।
दादू आसन पहल के, फिर फिर बैठे आइ ।। 117 ।।

जग जन विपरीत

बरतन एकै भांति सब, दादू संत असंत।
भिन्न भाव अन्तर घणां, मनसा तहाँ गच्छन्त ।। 118 ।।
यहु मन मारै मोमिनां, यहु मन मारै मीर।
यहु मन मारै साधकाँ, यहु मन मारै पीर ।। 119 ।।

दादू मन मारे मुनिवर मुये, सुर नर किये संहार।
ब्रह्मा विष्णु महेश सब, राखै सिरजनहार ॥ 120 ॥
मन बाहे मुनिवर बड़े, ब्रह्मा विष्णु महेश।
सिद्ध साधक योगी यति, दादू देश विदेश ॥ 121 ॥

मनमुखी मान बड़ाई

पूजा मान बड़ाइयां, आदर मांगै मन।
राम गहै, सब परिहरै, सोई साधु जन ॥ 122 ॥
जहाँ जहाँ आदर पाइये, तहाँ तहाँ जीव जाइ।
बिनआदरदीजे राम रस, छाड़ि हलाहल खाइ ॥ 123 ॥

करणी बिना कथनी

करणी किरका को नहिं, कथनी अनंत अपार।
दादू यों क्यों पाइये, रे मन मूढ गँवार ॥ 124 ॥

जाया माया मोहनी

दादू मन मृतक भया, इंद्री अपने हाथ।
तो भी कदे न कीजिये, कनक कामिनी साथ ॥ 125 ॥

मन

अब मन निर्भय घर नहीं, भय में बैठा आइ।
निर्भय संग थैं बीछुट्या, तब कायर ह्वै जाइ ॥ 126 ॥
जब मन मृतक ह्वै रहे, इंद्री बल भागा।
काया के सब गुण तजे, निरंजन लागा ॥ 127 ॥
आदि अंत मधि एक रस, टूटे नहीं धागा।
दादू एकै रहि गया, तब जाणी जागा ॥ 128 ॥
दादू मन के शीश मुख, हस्त पांव है जीव।
श्रवण नेत्र रसना रटै, दादू पाया पीव ॥ 129 ॥
जहँ के नवाये सब नवैं, सोई सिर कर जाण।
जहँ के बुलाये बोलिये, सोई मुख परमाण ॥ 130 ॥

जहँ के सुणाये सब सुणैं, सोई श्रवण सयाण।
जहँ के दिखाये देखिये, सोई नैन सुजाण ।। 131 ।।
दादू मन ही सौं मल ऊपजे, मन ही सौं मल धोइ।
सीख चली गुरु साध की, तो तूँ निर्मल होइ ।। 132 ।।
दादू मन ही माया ऊपजे, मन ही माया जाइ।
मन ही राता राम सौं, मन ही रह्या समाइ ।। 133 ।।
दादू मन ही मरणा ऊपजै, मन ही मरणा खाइ।
मन अविनासी ह्वै रह्या, साहिब सौं ल्यौ लाइ ।। 134 ।।
मन ही सन्मुख नूर है, मन ही सन्मुख तेज।
मन ही सन्मुख ज्योति है, मन ही सन्मुख सेज ।। 135 ।।
मन ही सौं मन थिर भया, मन ही सौं मन लाइ।
मन ही सौं मन मिल रह्या, दादू अनत न जाइ ।। 136 ।।

इति श्री दादूदास–विरचिते सतगुरु–प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत–सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान–सर्वशास्त्र–शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र–सत्योपदेश–ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य–श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
दसवां मन काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 10 ।। साखी 136 ।।
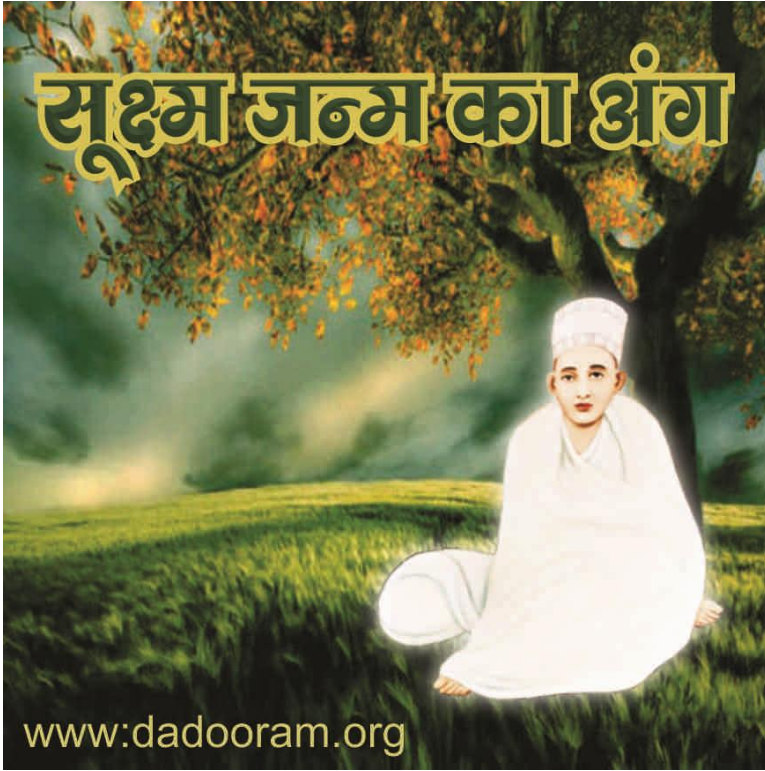
अथ सूक्ष्म जन्म का अंग ११

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

दादू चौरासी लख जीव की, प्रकृति घट मांहि।
अनेक जन्म दिन के करै, कोई जाणै नांहि ॥ 2 ॥

अनेक जन्म दिन के करै

दादू जेते गुण व्यापैं जीव को, ते ते ही अवतार।
आवागमन यहु दूर कर, समर्थ सिरजनहार ॥ 3 ॥

सब गुण सब ही जीव के, दादू व्यापैं आइ।
घट मांहि जामैं मरै, कोइ न जाणै ताहि ॥ 4 ॥
जीव जन्म जाणै नहीं, पलक पलक में होइ।
चौरासी लख भोगवै, दादू लखै न कोइ ॥ 5 ॥
अनेक रूप दिन के करै, यहु मन आवै जाइ।
आवागमन मन का मिटै, तब दादू रहै समाइ ॥ 6 ॥
निशिवासर यहु मन चलै, सूक्ष्म जीव संहार।
दादू मन थिर कीजिये, आतम लेहु उबारि ॥ 7 ॥
कबहूँ पावक कबहूँ पाणी, धर अम्बर गुण बाइ।
कबहूँ कुंजर कबहूँ कीड़ी, नर पशुवा ह्वै जाइ ॥ 8 ॥

करणी बिना कथनी

शूकर स्वान सियाल सिंह, सर्प रहैं घट मांहि।
कुंजर कीड़ी जीव सब, पांडे जाणै नांहि ॥ 9 ॥

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्तियोगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
ग्यारहवां सूक्ष्म जन्म काअंग सम्पूर्ण ॥ अंग 11 ॥ साखी 9 ॥

माया का अंग ११
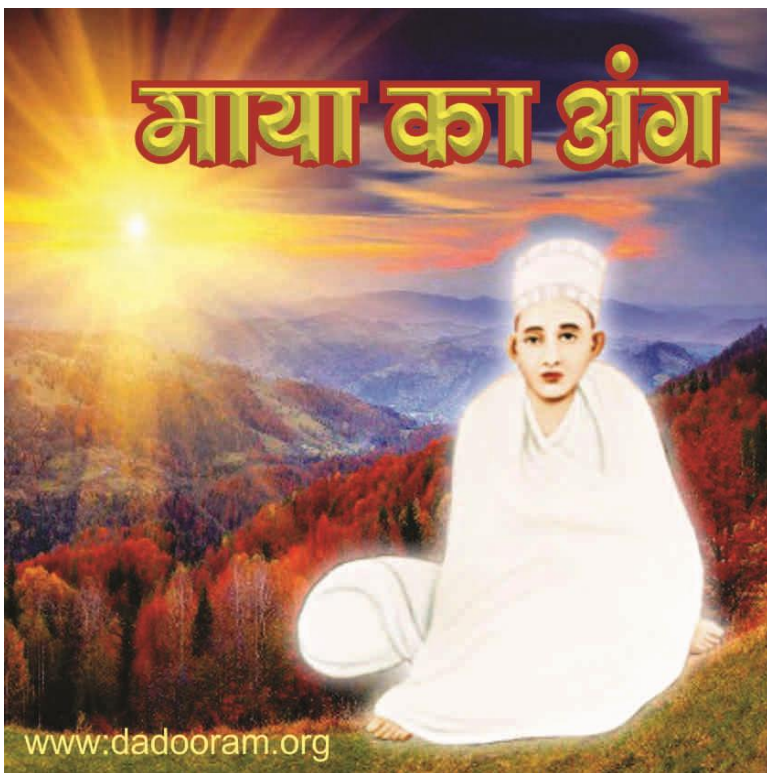
मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

साहिब है पर हम नहीं, सब जग आवै जाइ।
दादू सपना देखिये, जागत गया बिलाइ ॥ 2 ॥

दादू माया का सुख पंच दिन, गर्व्यो कहा गँवार।
सपने पायो राज धन, जात न लागे बार ॥ 3 ॥

दादू सपने सूता प्राणिया, किये भोग विलास।
जागत झूठा ह्वै गया, ताकी कैसी आस ॥ 4 ॥

यों माया का सुख मन करै, सेजां सुंदरी पास।
अंत काल आया गया, दादू होहु उदास ॥ 5 ॥
जे नांही सो देखिये, सूता सपने माँहि।
दादू झूठा ह्वै गया, जागे तो कुछ नांहि ॥ 6 ॥
यहु सब माया मृग जल, झूठा झिलमिल होइ।
दादू चिलका देखि कर, सत कर जाना सोइ ॥ 7 ॥
झूठा झिलमिल मृग जल, पाणी कर लीया।
दादू जग प्यासा मरै, पसु प्राणी पीया ॥ 8 ॥

पति पहचान

छलावा छल जायगा, सपना बाजी सोइ।
दादू देख न भूलिये, यहु निज रूप न होइ ॥ 9 ॥

चितावणी

सपने सब कुछ देखिये, जागे तो कुछ नांहि।
ऐसा यहु संसार है, समझ देखि मन माँहि ॥ 10 ॥
दादू ज्यों कुछ सपने देखिये, तैसा यहु संसार।
ऐसा आपा जानिये, फूल्यो कहा गँवार ॥ 11 ॥
दादू जतन जतन करि राखिये, दिढ़ गहि आतम मूल।
दूजा दृष्टि न देखिये, सब ही सैंबल फूल ॥ 12 ॥
दादू नैनहुँ भर नहिं देखिये,सब माया का रूप।
तहँ ले नैना राखिये, जहँ है तत्त्व अनूप ॥ 13 ॥
हस्ती हय बर धन देख कर, फूल्यो अंग न माइ।
भेरि दमामा एक दिन, सब ही छाड़े जाइ ॥ 14 ॥
दादू माया बिहड़ै देखतां, काया संग न जाइ।
कृत्रिम बिहड़ै बावरे, अजरावर ल्यौ लाइ ॥ 15 ॥

दादू माया का बल देख कर, आया अति अहंकार।
अन्ध भया सूझै नहीं, का करि है सिरजनहार ।। 16 ।।

विरक्तता

मन मनसा माया रती, पंच तत्व प्रकाश।
चौदह तीनों लोक सब, दादू होहु उदास ।। 17 ।।
माया देखे मन खुशी, हिरदै होइ विकास।
दादू यहु गति जीव की, अंत न पूगै आस ।। 18 ।।
मन की मूठि न माँडिये, माया के नीसाण।
पीछे ही पछिताहुगे, दादू खूटे बाण ।। 19 ।।

शिश्न स्वाद

कुछ खातां कुछ खेलतां, कुछ सोवत दिन जाइ।
कुछ विषिया रस विलसतां, दादू गये विलाइ ।। 20 ।।

संगति कुसंगति

माखन मन पाहण भया, माया रस पीया।
पाहण मन माखन भया, राम रस लीया ।। 21 ।।
दादू माया सौं मन बिगड़्या, ज्यों कांजी करि दुग्ध।
है कोई संसार में, मन करि देवे शुद्ध ।। 22 ।।
गंदी सौं गंदा भया, यों गंदा सब कोइ।
दादू लागै खूब सौं, तो खूब सरीखा होइ ।। 23 ।।
दादू माया सौं मन रत भया, विषय रस माता।
दादू साचा छाड़ कर, झूठे रंग राता ।। 24 ।।
माया के संग जे गये, ते बहुरि न आये।
दादू माया डाकिनी, इन केते खाये ।। 25 ।।
दादू माया मोट विकार की, कोइ न सकै डार।
बहि बहि मूये बापुरे, गये बहुत पचि हार ।। 26 ।।

दादू रूप राग गुण अनुसरे, जहँ माया तहँ जाइ।
विद्या अक्षर पंडिता, तहाँ रहे घर छाइ ॥ 27 ॥
साधु न कोई पग भरै, कबहूँ राज दुवार।
दादू उलटा आप में, बैठा ब्रह्म विचार ॥ 28 ॥

आशय-विश्राम

दादू अपणे अपणे घर गये, आपा अंग विचार।
सहकामी माया मिले, निहकामी ब्रह्म संभार ॥ 29 ॥

माया

दादू माया मगन जु हो रहे, हमसे जीव अपार।
माया माहीं ले रही, डूबे काली धार ॥ 30 ॥

शिश्न स्वाद

दादू विषय के कारणै रूप राते रहैं,
नैन नापाक यों कीन्ह भाई।
बदी की बात सुनत सारा दिन,
श्रवण नापाक यों कीन्ह जाई ॥ 31 ॥
स्वाद के कारणै लुब्धि लागी रहे,
जिभ्या नापाक यों कीन्ह खाई।
भोग के कारणै भूख लागी रहे,
अंग नापाक यों कीन्ह लाई ॥ 32 ॥
दादू नगरी चैन तब, जब इक राजी होइ।
द्वै राजी दुख द्वन्द्व में, सुखी न बैसे कोइ ॥ 33 ॥
इक राजी आनन्द है, नगरी निश्चल वास।
राजा प्रजा सुखी बसै, दादू जोति प्रकाश ॥ 34 ॥

शिश्न स्वाद

जैसे कुंजर काम वश, आप बंधाणा आइ।
ऐसे दादू हम भये, क्यों कर निकस्या जाइ ॥ 35 ॥

जैसे मर्कट जीभ रस, आप बंधाणा अंध।
ऐसे दादू हम भये, क्यों कर छूटै फंध ॥ 36 ॥
ज्यों सूवा सुख कारणै, बंध्या मूरख माँहि।
ऐसे दादू हम भये, क्यों ही निकसै नांहि ॥ 37 ॥
जैसे अंध अज्ञान गृह, बंध्या मूरख स्वाद।
अैसैं दादू हम भये, जन्म गँवाया बाद ॥ 38 ॥
दादू बूड रह्या रे बापुरे, माया गृह के कूप।
मोह्या कनक अरु कामिनी, नाना विधि के रूप ॥ 39 ॥

शिश्न स्वाद

दादू स्वाद लागि संसार सब, देखत परलै जाइ।
इन्द्री स्वारथ साच तजि, सबै बंधाणै आइ ॥ 40 ॥
विष सुख माँहैं रम रहे, माया हित चित लाइ।
सोई संतजन ऊबरे, स्वाद छाड़ि गुण गाइ ॥ 41 ॥

आसक्तता मोह

दादू झूठी काया झूठ घर, झूठा यहु परिवार।
झूठी माया देखकर, फूल्यो कहा गँवार ॥ 42 ॥
दादू झूठा संसार, झूठा परिवार, झूठा घर बार,
झूठा नर नार, तहाँ मन माने।
झूठा कुल जात, झूठा पितु मात, झूठा बंधु भ्रात,
झूठा तन गात, सत्य कर जाने।
झूठा सब धंध, झूठा सब फंध, झूठा सब अंध,
झूठा जाचंध, कहा मग छाने।
दादू भाग, झूठ सब त्याग, जाग रे जाग, देख दीवाने ॥ 43 ॥
दादू झूठे तन के कारणै, कीये बहुत विकार।
गृह दारा धन संपदा, पूत कुटुम्ब परिवार ॥ 44 ॥

ता कारण हत आतमा, झूठ कपट अहंकार।
सो माटी मिल जायगा, बिसऱ्या सिरजनहार ॥ 45 ॥
दादू जन्म गया सब देखतां, झूठी के संग लाग।
साचे प्रीतम को मिले, भाग सके तो भाग ॥ 46 ॥
दादू गतं गृहं, गतं धनं, गतं दारा सुत यौवनं।
गतं माता, गतं पिता, गतं बंधु सज्जनं।
गतं आपा, गतं परा, गतं संसार कत रंजनं।
भजसि भजसि रे मन, परब्रह्म निरंजनं ॥ 47 ॥

आसक्ति मोह

जीवों माँही जीव रहै, ऐसा माया मोह।
सांई सूधा सब गया, दादू नहीं अंदोह ॥ 48 ॥

विरक्तता

माया मगहर खेत खर, सद्गति कदे न होइ।
जे बंचे ते देवता, राम सरीखे सोइ ॥ 49 ॥
कालर खेत न नीपजै, जो बाहे सौ बार।
दादू हाना बीज का, क्या पचि मरै गँवार ॥ 50 ॥
दादू इस संसार सौं, निमष न कीजे नेह।
जामण मरण आवटणा, छिन छिन दाझै देह ॥ 51 ॥
दादू मोह संसार को, विहरै तन मन प्राण।
दादू छूटै ज्ञान कर, को साधु संत सुजाण ॥ 52 ॥
मन हस्ती माया हस्तिनी, सघन वन संसार।
तामैं निर्भय हो रह्या, दादू मुग्ध गँवार ॥ 53 ॥
दादू काम कठिन घट चोर है, घर फोड़ै दिन रात।
सोवत साह न जागई, तत्त्व वस्तु ले जात ॥ 54 ॥
काम कठिन घट चोर है, मूसे भरे भंडार।
सोवत ही ले जायगा, चेतन पहरे चार ॥ 55 ॥

ज्यों घुण लागै काठ को, लोहा लागै काट।
काम किया घट जाजरा, दादू बारह बाट ॥ 56 ॥

करतूति कर्म

राहु गिलै ज्यों चंद को, ग्रहण गिलै ज्यों सूर।
कर्म गिलै यों जीव को, नख-सिख लागै पूर ॥ 57 ॥
दादू चन्द्र गिलै जब राहु को, ग्रहण गिलै जब सूर।
जीव गिलै जब कर्म को, राम रह्या भरपूर ॥ 58 ॥
कर्म कुहाड़ा अंग वन, काटत बारंबार।
अपने हाथों आप को, काटत है संसार ॥ 59 ॥

मित्रता शत्रुता

आपै मारै आप कौं, यहु जीव बिचारा।
साहिब राखणहार है, सो हितू हमारा ॥ 60 ॥
आपै मारै आपकौं, आप आपकौं, खाइ।
आपै अपणा काल है, दादू कहै समझाइ ॥ 61 ॥

करतूती कर्म

मरबे की सब ऊपजै, जीबे की कुछ नांहि।
जीबे की जाणैं नहीं, मरबे की मन माँहि ॥ 62 ॥
बंध्या बहुत विकार सौं, सर्व पाप का मूल।
ढाहै सब आकार को, दादू येह स्थूल ॥ 63 ॥
दादू यह तो दोज़ख देखिये, काम क्रोध अहंकार।
रात दिवस जरबौ करै, आपा अग्नि विकार ॥ 64 ॥
विषय हलाहल खाइ कर, सब जग मर मर जाइ।
दादू मोहरा नाम ले, हृदय राखि ल्यौ लाइ ॥ 65 ॥
जेती विषया विलसिये, तेती हत्या होइ।
प्रत्यक्ष मानुष मारिये, सकल शिरोमणि सोइ ॥ 66 ॥

विषया का रस मद भया, नर नारी का माँस।
माया माते मद पिया, किया जन्म का नाश ।। 67 ।।
दादू भावै शाक्त भक्त हो, विषय हलाहल खाइ।
तहँ जन तेरा राम जी, सपने कदे न जाइ ।। 68 ।।
दादू खाडा बूजी भगत है, लोहरवाडा माँहि।
परगट पैंडाइत बसैं, तहँ संत काहे को जांहि ।। 69 ।।
साँपणि एक सब जीव को, आगे पीछे खाइ।
दादू कहि उपकार कर, कोइ जन ऊबर जाइ ।। 70 ।।
दादू खाये साँपणी, क्यों कर जीवैं लोग।
राम मंत्र जन गारुड़ी, जीवैं इहि संजोग ।। 71 ।।
दादू माया कारण जग मरै, पीव के कारण कोइ।
देखो ज्यों जग परजलै, निमष न न्यारा होइ ।। 72 ।।
काल कनक अरु कामिनी, परिहर इन का संग।
दादू सब जग जल मुवा,ज्यों दीपक ज्योति पतंग ।। 73 ।।
दादू जहाँ कनक अरु कामनी, तहँ जीव पतंगे जांहि।
आग अनंत सूझै नहीं, जल-जल मूये माँहि ।। 74 ।।
घट माँही माया घणी, बाहर त्यागी होइ।
फाटी कंथा पहर कर, चिन्ह करै सब कोइ ।। 75 ।।
काया राखे बन्ध दे, मन दह दिशि खेले।
दादू कनक अरु कामिनी, माया नहीं मेले ।। 76 ।।
दरसन पहरै मूंड मुंडावै, दुनियां देख त्याग दिखलावै।
मन सौं मीठी मुख सौं खारी, माया त्यागी कहैं बजारी ।। 77 ।।
माया मंदिर मीच का, तामैं पैठा धाइ।
अंध भया सूझै नहीं, साध कहैं समझाइ ।। 78 ।।

दादू केते जल मुए, इस जोगी की आग।
दादू दूरै बंचिये, जोगी के संग लाग ।। 79 ।।
ज्यों जल मैंणी माछली, तैसा यहु संसार।
माया माते जीव सब, दादू मरत न बार ।। 80 ।।
दादू माया फोड़े नैन दोइ, राम न सूझै काल।
साधु पुकारैं मेरू चढ़, देखि अग्नि की झाल ।। 81 ।।
बिना भुवंगम हम डसे, बिन जल डूबे जाइ।
बिन ही पावक ज्यों जले, दादू कुछ न बसाइ ।। 82 ।।
दादू अमृत रूपी आप है, और सबै विष झाल।
राखणहारा राम है, दादू दूजा काल ।। 83 ।।
बाजी चिहर रचाय कर, रह्या अपरछन होइ।
माया पट पड़दा दिया, तातैं लखै न कोइ ।। 84 ।।
दादू बाहे देखतां, ढिग ही ढोरी लाइ।
पीव पीव करते सब गये, आपा दे न दिखाइ ।। 85 ।।
मैं चाहूँ सो ना मिलै, साहिब का दीदार।
दादू बाजी बहुत हैं, नाना रंग अपार ।। 86 ।।
हम चाहैं सो ना मिलै, और बहुतेरा आइ।
दादू मन मानै नहीं, केता आवै जाइ ।। 87 ।।
बाजी मोहे जीव सब, हमको भुरकी बाहि।
दादू कैसी कर गया, आपण रह्या छिपाइ ।। 88 ।।
दादू सांई सत्य है, दूजा भ्रम विकार।
नाम निरंजन निर्मला, दूजा घोर अंधार ।। 89 ।।
दादू सो धन लीजिये, जे तुम सेती होइ।
माया बांधे कई मुए, पूरा पड़्या न कोइ ।। 90 ।।

दादू कहै, जे हम छाड़ै हाथ थैं, सो तुम लिया पसार।
जे हम लेवैं प्रीति सौं, सो तुम दिया डार ।। 91 ।।
दादू हीरा पग सौं ठेलि कर, कंकर को कर लीन्ह।
पारब्रह्म को छाड़ कर, जीवन सौं हित कीन्ह ।। 92 ।।
दादू सबको बणिजै खार खल, हीरा कोई न लेय।
हीरा लेगा जौहरी, जो माँगै सो देय ।। 93 ।।
दड़ी दोट ज्यों मारिये, तिहुँ लोक में फे र।
धुरि पहुँचे संतोष है, दादू चढिबा मेर ।। 94 ।।
अनिल पंखी आकाश को, माया मेरु उलंघ।
दादू उलटे पंथ चढ, जाइ बिलंबे अंग ।। 95 ।।
दादू माया आगे जीव सब, ठाढे रहे कर जोड़।
जिन सिरजे जल बूँद सौं, तासौं बैठे तोड़ ।। 96 ।।
सुर नर मुनिवर वश किये, ब्रह्मा विष्णु महेश।
सकल लोक के सिर खड़ी, साधु के पग हेठ ।। 97 ।।
दादू माया चेरी संत की, दासी उस दरबार।
ठकुराणी सब जगत की, तीनों लोक मंझार ।। 98 ।।
दादू माया दासी संत की, शाकत की सिरताज।
शाकत सेती भांडणी, संतों सेती लाज ।। 99 ।।
चार पदार्थ मुक्ति बापुरी, अठ सिधि नव निधि चेरी।
माया दासी ताकेआगे, जहँ भक्ति निरंजन तेरी ।। 100 ।।
दादू कहै, माया चेरी साधुहि सेवै। साधुन कबहूँ आदर देवै ।।
ज्यों आवै, त्यों जाइ बिचारी। विलसी, वितड़ी, न माथै मारी ।। 101 ।।
दादू माया सब गहले किये, चौरासी लख जीव।
ताका चेरी क्या करै, जे रंग राते पीव ।। 102 ।।

विरक्तता

दादू माया बैरिण जीव की, जनि कोइ लावे प्रीति।
माया देखे नरक कर, यह संतन की रीति ।। 103 ।।

माया

माया मति चकचाल कर, चंचल कीये जीव।
माया माते मद पिया, दादू बिसऱ्या पीव ।। 104 ।।

आन लग्न व्यभिचार

जने जने की राम की, घर घर की नारी।
पतिव्रता नहीं पीव की, सो माथै मारी ।। 105 ।।
जन जन के उठ पीछे लागै, घर घर भ्रमत डोलै।
ताथैं दादू खाइ तमाचे, माँदल दुहुँ मुख बोलै ।। 106 ।।

विषय विरक्तता

जे नर कामिनी परहरैं,ते छूटैं गर्भवास।
दादू ऊँधे मुख नहीं, रहैं निरंजन पास ।। 107 ।।
रोक न राखै, झूठ न भाखै, दादू खरचै खाइ।
नदी पूर प्रवाह ज्यों, माया आवै जाइ ।। 108 ।।
सदका सिरजनहार का, केता आवै जाइ।
दादू धन संचय नहीं, बैठा खुलावै खाइ ।। 109 ।।

माया

जोगिनी ह्वै जोगी गहै, सूफिनी ह्वै कर शेख।
भक्तिनी ह्वै भक्ता गहै, कर कर नाना भेख ।। 110 ।।
बुद्धि विवेक बल हरणी, त्रय तन ताप उपावनी।
अंग अगनि प्रजालिनी, जीव घरबार नचावनी ।। 111 ।।
नाना विधि के रूप धर, सब बांधे भामिनी।
जग बिटंब परलै किया, हरि नाम भुलावनी ।। 112 ।।

बाजीगर की पूतली, ज्यौं मर्कट मोह्या।
दादू माया राम की, सब जगत बिगोया ।। 113 ।।

शिश्न स्वाद

मोरा मोरी देखकर, नाचै पंख पसार।
यों दादू घर आंगणै, हम नाचे कै बार ।। 114 ।।

पुरुष प्रकाशक

दादू जिस घट दीपक राम का, तिस घट तिमिर न होइ।
उस उजियारे ज्योति के, सब जग देखै सोइ ।। 115 ।।

माया

दादू जेहि घट ब्रह्म न प्रकटै, तहँ माया मंगल गाइ।
दादू जागै ज्योति जब, तब माया भ्रम विलाइ ।। 116 ।।

पति पहचान

दादू जोति चमकै तिरवरे, दीपक देखै लोइ।
चन्द सूर का चान्दणा, पगार छलावा होइ ।। 117 ।।

माया

दादू दीपक देह का, माया प्रगट होइ।
चौरासी लख पंखिया, तहाँ परै सब कोइ ।। 118 ।।

पुरुष प्रकाशक

दादू यहु घट दीपक साध का, ब्रह्म ज्योति प्रकाश।
दादू पंखी संतजन, तहाँ परैं निज दास ।। 119 ।।

विषय विरक्तता

दादू मन मृतक भया, इंद्री अपणै हाथ।
तो भी कदे न कीजिये, कनक कामिनी साथ ।। 120 ।।

जानै बूझै जीव सब, त्रिया पुरुष का अंग।
आपा पर भूला नहीं, दादू कैसा संग ।। 121 ।।

माया के घट साजि द्वै, त्रिया पुरुष धरि नांव।
दोन्यूं सुन्दर खेलैं दादू, राखि लेहु बलि जांव ।। 122 ।।

बहिन बीर सब देखिये, नारी अरु भरतार।
परमेश्वर के पेट का, दादू सब परिवार ।। 123 ।।
पर घर परिहर आपणी, सब एकै उणहार।
पसु प्राणी समझै नहीं, दादू मुग्ध गँवार ।। 124 ।।
पुरुष पलट बेटा भया, नारी माता होहि।
दादू को समझै नहीं, बड़ा अचंभा मोहि ।। 125 ।।
माता नारी पुरुष की, पुरुष नारी का पूत।
दादू ज्ञान विचार कर, छाड़ गये अवधूत ।। 126 ।।

अध्यात्म

दादू माया का जल पीवतां, व्याधि होइ विकार।
सेझे का जल निर्मला, प्राण सुखी सुध सार ।। 127 ।।
जीव गहिला जीव बावला, जीव दीवाना होइ।
दादू अमृत छाड़ कर, विष पीवै सब कोइ ।। 128 ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश लौं, सुर नर उरझाया।
विष का अमृत नाम धर, सब किनहूँ खाया ।। 129 ।।

माया

माया मैली गुणमयी, धर धर उज्ज्वल नांम।
दादू मोहे सबनि को, सुर नर सब ही ठांम ।। 130 ।।

विषय अतृप्ति

विष का अमृत नांव धर, सब कोई खावै।
दादू खारा ना कहै, यहु अचरज आवै ।। 131 ।।
दादू जे विष जारे खाइ कर, जनि मुख में मेलै।
आदि अन्त परलै गये, जे विष सौं खेलै ।। 132 ।।
जिन विष खाया ते मुये, क्या मेरा तेरा।
आग पराई आपणी, सब करै निबेरा ।। 133 ।।

अपना पराया खाइ विष, देखत ही मर जाय।
दादू को जीवै नहीं, इहि भोरे जनि खाय ।। 134 ।।
दादू कहै, जनि विष पीवै बावरे, दिन दिन बाढै रोग।
देखत ही मर जाइगा, तजि विषिया रस भोग ।। 135 ।।

माया

ब्रह्म सरीखा होइ कर, माया सौं खेलै।
दादू दिन दिन देखतां, अपने गुण मेलै ।। 136 ।।
माया मारै लात सौ, हरि को घालै हाथ।
संग तजै सब झूठ का, गहै साच का साथ ।। 137 ।।
घर के मारे वन के मारे, मारे स्वर्ग पयाल।
सूक्ष्म मोटा गूंथकर, माँड्या माया जाल ।। 138 ।।
दादू ऊभा सारं, बैठा विचारं, संभारं जागत सूता।
तीन लोक तत जाल विडारण, तहाँ जाइगा पूता ।।139।।
मूये सरीखे ह्वै रहे, जीवन की क्या आस।
दादू राम विसार कर, बांछे भोग विलास ।। 140 ।।

कृत्रिम कर्ता

माया रूपी राम को, सब कोई ध्यावै।
अलख आदि अनादि है, सो दादू गावै ।। 141 ।।
ब्रह्मा का वेद, विष्णु की मूर्ति, पूजे सब संसारा।
महादेव की सेवा लागे, कहाँ है सिरजनहारा ।। 142 ।।
माया का ठाकुर किया, माया की महामाइ।
ऐसे देव अनंत कर, सब जग पूजन जाइ ।। 143 ।।
माया बैठी राम ह्वै, कहै मैं ही मोहन राइ।
ब्रह्मा विष्णु महेश लौं, जोनी आवै जाइ ।। 144 ।।
माया बैठी राम ह्वै, ताको लखै न कोइ।
सब जग मानै सत्य कर, बड़ा अचंभा मोहि ।। 145 ।।

अंजन किया निरंजना, गुण निर्गुण जानैं।
धरा दिखावैं अधर कर, कैसे मन मानैं ।। 146 ।।
निरंजन की बात कहै, आवै अंजन माँहि।
दादू मन मानै नहीं, स्वर्ग रसातल जांहि ।। 147 ।।
कामधेनु कै पटंतरे, करै काठ की गाइ।
दादू दूध दूझै नहीं, मूरख देइ बहाइ ।। 148 ।।
चिंतामणि कंकर किया, माँगै कुछ न देइ।
दादू कंकर डारदे, चिंतामणि कर लेइ ।। 149 ।।
पारस किया पाषाण का, कंचन कदे न होइ।
दादू आत्मराम बिन, भूल पड़्या सब कोइ ।। 150 ।।
सूरज फटिक पाषाण का, तासौं तिमिर न जाइ।
साचा सूरज परगटै, दादू तिमिर नशाइ ।। 151 ।।
मूर्ति घड़ी पाषाण की, किया सिरजनहार।
दादू साच सूझै नहीं, यों डूबा संसार ।। 152 ।।
पुरुष विदेश कामिनी किया, उसही के उणिहार।
कारज को सीझै नहीं, दादू माथे मार ।। 153 ।।
कागद का मानुष किया, छत्रपति सिरमौर।
राजपाट साधै नहीं, दादू परिहर और ।। 154 ।।
सकल भुवन भानै घड़ै, चतुर चलावनहार।
दादू सो सूझै नहीं, जिसका वार न पार ।। 155 ।।

कर्ता साक्षीभूत

दादू पहली आप उपाइ कर, न्यारा पद निर्वांण।
ब्रह्मा विष्णु महेश मिल, बाँध्या सकल बंधाण ।। 156 ।।

कृत्रिम कर्ता

नाम नीति अनीति सब, पहली बाँधे बंध।
पशु न जाणै पारधी, दादू रोपे फंध ।। 157 ।।

दादू बाँधे वेद विधि, भरम करम उरझाइ।
मर्यादा माँही रहै, सुमिरण किया न जाइ ।। 158 ।।

माया नगरी दोष निरूपण

दादू माया मीठी बोलणी, नइ नइ लागै पाइ।
दादू पैसि पेट में, काढ कलेजा खाइ ।। 159 ।।
नारी नागिन जे डसे, ते नर मुये निदान।
दादू को जीवै नहीं, पूछो सबै सयान ।। 160 ।।
नारी नागिन एक सी, बाघिन बड़ी बलाइ।
दादू जे नर रत भये, तिनका सर्वस खाइ ।। 161 ।।
नारी नैन न देखिये, मुख सौं नाम न लेइ।
कानों कामिनि जनि सुणै, यहु मन जाण न देइ ।। 162 ।।
सुन्दरी खाये साँपिनी, केते इहि कलि माँहि।
आदि अन्त इन सब डसे, दादू चेते नांहि ।। 163 ।।
दादू पैसै पेट में, नारी नागिन होइ।
दादू प्राणी सब डसे, काढ सकै न कोइ ।। 164 ।।
माया सांपिनी सब डसे, कनक कामिनी होइ।
ब्रह्मा विष्णु महेश लौं, दादू बचै न कोइ ।। 165 ।।
माया मारै जीव सब, खंड खंड कर खाइ।
दादू घट का नास कर, रोवै जग पतियाइ ।। 166 ।।
बाबा बाबा कहि गिलै, भाई कहि कहि खाइ ।
पूत पूत कहि पी गई, पुरुषा जनि पतियाइ ।। 167 ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश की, नारी माता होइ।
दादू खाये जीव सब, जनि रु पतीजै कोइ ।। 168 ।।
माया बहुरूपी नटणी नाचै, सुर नर मुनि को मोहै।
ब्रह्मा विष्णु महादेव बाहे, दादू बपुरा को है ।। 169 ।।

माया फाँसी हाथ ले, बैठी गोप छिपाहि।
जे कोई धीजे प्राणियां, ताही के गल बाहि ॥ 170 ॥
पुरुषा फाँसी हाथ कर, कामिनि के गल बाहि।
कामिनि कटारी कर गहै, मार पुरुष को खाहि ॥ 171 ॥
नारी बैरिन पुरुष की, पुरुषा बैरी नार।
अंत काल दोन्यूं मुये, दादू देख विचार ॥ 172 ॥
नारी पुरुष को ले मुई, पुरुषा नारी साथ।
दादू दोनों पच मुये, कछू न आया हाथ ॥ 173 ॥
नारी पीवै पुरुष को, पुरुष नारी को खाइ।
दादू गुरु के ज्ञान बिन, दोनों गये विलाइ ॥ 174 ॥
भँवरा लुब्धी बास का, कमल बँधाना आइ।
दिन दश माँहैं देखतां, दोनों गये विलाइ ॥ 175 ॥

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
बारहवां माया काअंग सम्पूर्ण ॥ अंग 12 ॥ साखी 175 ॥
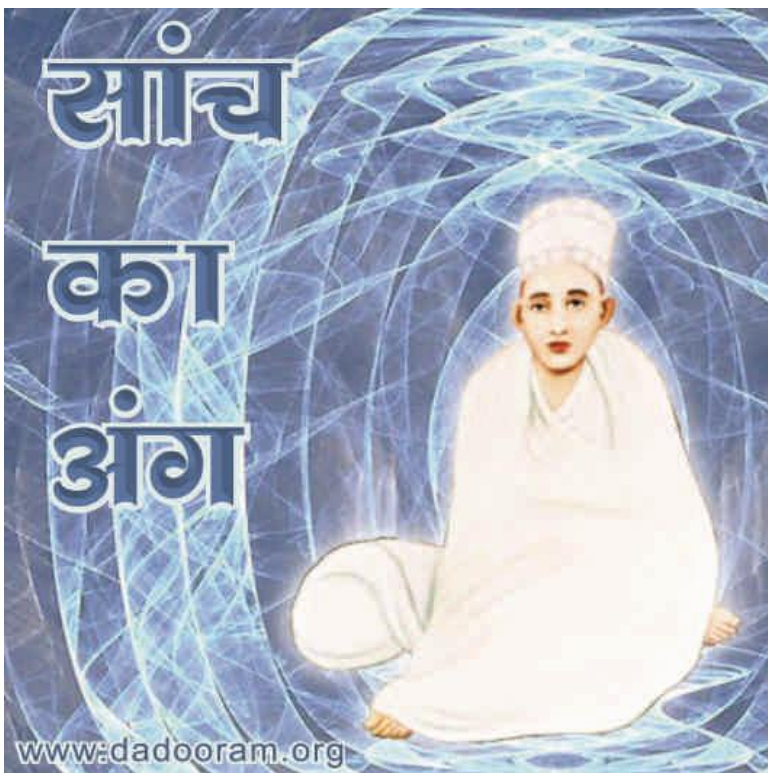
अथ सांच का अंग १३

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः ।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ।। 1 ।।

अदया हिंसा

दादू दया जिन्हों के दिल नहिं, बहुरि कहावें साध ।
जे मुख उनका देखिये, तो लागै बहु अपराध ।। 2 ।।
दादू महर मोहब्बत मन नहीं, दिल के वज्र कठोर ।
काले काफिर ते कहिये, मोमिन मालिक और ।। 3 ।।

दादू कोई काहू जीव की, करै आत्माघात।
साच कहूँ संशय नहीं, सो प्राणी दोज़ख जात ।। 4 ।।
दादू नाहर सिंह सियाल सब, केते मुसलमान।
माँस खाइ मोमिन भये, बड़े मियां का ज्ञान ।। 5 ।।
दादू माँस अहारी जे नरा, ते नर सिंह सियाल।
बक1 मंजार2 सुनहाँ3 सही, एता प्रत्यक्ष काल ।। 6 ।।
दादू मुई मार मानुष घणे, ते प्रत्यक्ष जम काल।
महर दया नहीं सिंह दिल, कूकर काग सियाल ।। 7 ।।
माँस अहारी मद पीवै, विषय विकारी सोइ।
दादू आत्मराम बिन, दया कहाँ थी होइ ।। 8 ।।
लंगर लोग लोभ सौं लागैं, बोलैं सदा उन्हों की भीर।
जोर जुल्म बीच बटपारे, आदि अंत उनहीं सौं सीर ।। 9 ।।
तन मन मार रहे सांई सौं, तिनकौं देख करैं ताजीर।
ये बड़ि-बूझ कहाँ थैं पाई, ऐसी कजा अवलिया पीर ।। 10 ।।
बे महर गुमराह गाफिल, गोश्त खुरदनी।
बेदिल बदकार आलम, हयात मुरदनी ।। 11 ।।
छल कर बल कर घाइ कर, मारै जिंहि तिंहि फेरि।
दादू ताहि न धीजिये, परणै सगी पतेरि ।। 12 ।।
दादू दुनियां सौं दिल बांध करि, बैठे दीन गँवाइ।
नेकी नाम बिसार करि, करद कमाया खाइ ।। 13 ।।
दादू गल काटैं कलमा भरैं, अया विचारा दीन।
पंचों वक्त नमाज गुजारैं, साबित नहीं यकीन ।। 14 ।।
दुनियां के पीछे पड़ा, दौड़ा दौड़ा जाइ।
दादू जिन पैदा किया, ता साहिब को छिटकाइ ।। 15 ।।

कुफ्र जे के मन में, मीयां मुसलमान।
दादू पेया झंग में, बिसारे रहमान ।। 16 ।।
आपस को मारै नहीं, पर को मारन जाइ।
दादू आपा मारे बिना, कैसे मिले खुदाइ ।। 17 ।।
दादू भीतर द्वन्दर भर रहे, तिनको मारैं नांहि।
साहिब की अरवाह को, ताको मारन जांहि ।। 18 ।।
दादू मूये को क्या मारिये, मीयां मूई मार।
आपस को मारै नहीं, औरों को हुसियार ।। 19 ।।

सांच

जिसका था तिसका हुआ, तो काहे का दोष।
दादू बंदा बंदगी, मीयां ना कर रोष ।। 20 ।।
सेवक सिरजनहार का, साहिब का बंदा।
दादू सेवा बंदगी, दूजा क्या धंधा ।। 21 ।।
सो काफिर जे बोलै काफ, दिल अपना नहीं राखै साफ।
सांई को पहचानै नांहीं, कूड़ कपट सब उन्हींमाँहीं ।। 22 ।।
साँई का फरमान न मानैं, कहाँ पीव ऐसै कर जानैं।
मन अपणे में समझत नांहीं, निरखत चलैं आपनी छांहीं ।। 23 ।।
जोर करै मसकीन सतावै, दिल उसके में दर्द न आवै।
सांई सेती नांही नेह, गर्व करै अति अपनी देह ।। 24 ।।
इन बातन क्यों पावै पीव, पर धन ऊपर राखै जीव।
जोर जुल्म कर कुटम्ब सौं खाइ, सो काफिर दोजख में जाइ ।। 25 ।।

अदया–हिंसा

दादू जाको मारन जाइये, सोई फिर मारै।
जाको तारन जाइये, सोई फिर तारै ।। 26 ।।

दादू नफ्स नाम सौं मारिये, गोशमाल दे पंद।
दूई है सो दूरि कर, तब घर में आनन्द ।। 27 ।।

सच्चे मुसलमान के लक्षण

मुसलमान जो राखे मान, सांई का माने फरमान।
सारों को सुखदाई होइ, मुसलमान कर जानूँ सोइ ।। 28 ।।
दादू मुसलमान महर गह रहै, सबको सुख, किसही नहिं दहै।
मुवा न खाइ, जीवत नहिं मारै, करै बंदगी, राह संवारै ।। 29 ।।
सो मोमिन मन मे कर जान, सत्य सबूरी बैसे आन।
चलै साच सँवारे बाट, तिनको खुले बहिश्त के पाट ।। 30 ।।
सो मोमिन मोम दिल होइ, सांई को पहचानै सोइ।
जोर न करै हराम न खाइ, सो मोमिन बहिश्त में जाइ ।। 31 ।।
जो हम नहीं गुजारते, तुम्ह को क्या भाई।
सीर नहीं कुछ बंदगी, कहु क्यों फरमाई ।। 32 ।।
अपने अमलों छूटिये, काहू के नाहीं।
सोई पीड़ पुकार सी, जा दूखै माहीं ।। 33 ।।
कोई खाइ अघाइ करि, भूखे क्यों भरिये।
खूटी पूगी आन की, आपण क्यों मरिये ।। 34 ।।
फूटी नाव समंद में, सब डूबन लागे।
अपना अपना जीव ले, सब कोई भागे ।। 35 ।।
दादू शिर शिर लागी आपने, कहु कौण बुझावै।
अपना अपना साच दे, सांई को भावै ।। 36 ।।

सुमिरण नाम चितावणी

साचा नाम अल्लाह का, सोई सत्य कर जाण।
निश्चल कर ले बंदगी, दादू सो परमाण ।। 37 ।।

आवट कूटा होत है, अवसर बीता जाइ।
दादू कर ले बंदगी, राखणहार खुदाइ ।। 38 ।।
इस कलि केते ह्वै गये, हिंदू मुसलमान।
दादू सांची बंदगी, झूठा सब अभिमान ।। 39 ।।

कथनी बिना करणी

पोथी अपना पिंड कर, हरि यश माँहीं लेख।
पंडित अपना प्राण कर, दादू कथहु अलेख ।। 40 ।।
काया कतेब बोलिए, लिख राखूं रहमान।
मनवा मुल्लां बोलिये, श्रोता है सुबहान ।। 41 ।।
दादू काया महल में नमाज गुजारूं, तहँ और न आवन पावै।
मन मणके कर तसबीह फेरूं, तब साहिब के मन भावै ।। 42 ।।
दिल दरिया में गुसल हमारा, ऊजू कर चित लाऊँ ।
साहिब आगेकरूं बंदगी, बेर बेर बलि जाऊँ।। 43 ।।
दादू पंचों संग संभालूं सांई, तन मन तब सुख पाऊँ।
प्रेम पियाला पिवजी देवै, कलमा ये लै लाऊँ।। 44 ।।
शोभा कारण सब करै, रोजा बांग नमाज।
मुवा न एकौ आह सौं, जे तुझ साहिब सेती काज ।। 45 ।।
हर रोज हजूरी होइ रहु, काहे करै कलाप।
मुल्ला तहाँ पुकारिये, जहँ अर्श इलाही आप ।। 46 ।।
हरदम हाजिर होना बाबा, जब लग जीवै बंदा।
दायम दिल सांई सौं साबित, पंच वक्त क्या धंधा ।। 47 ।।

हिंदू मुसलमानों का भ्रम

दादू हिंदू मारग कहैं हमारा, तुरक कहैं रह मेरी।
कहाँ पंथ है कहो अलह का? तुम तो ऐसी हेरी ।। 48 ।।
दादू दुई दरोग लोग को भावै, सांई को साँच पियारा।
कौन पंथ हम चलैं कहो धू, साधो करो विचारा ।। 49 ।।

खंड खंड कर ब्रह्म को, पख पख लीया बाँट।
दादू पूरण ब्रह्म तज, बँधे भरम की गाँठ ।। 50 ।।

मन विकार औषधि

जीवत दीसै रोगिया, कहैं मूवां पीछै जाइ।
दादू दुँह के पाढ में, ऐसी दारू लाइ ।। 51 ।।
सो दारू किस काम की, जाथैं दर्द न जाइ।
दादू काटै रोग को, सो दारू ले लाइ ।। 52 ।।
दादू अनुभव काटै रोग को, अनहद उपजै आइ।
सेझे का जल निर्मला, पीवै रुचि ल्यौ लाइ ।। 53 ।।
सोई अनुभव सोई ऊपजी, सोई शब्द तत सार।
सुनतां ही साहिब मिलै, मन के जाहिं विकार ।। 54 ।।

चानक उपदेश

औषध खाइ न पथ्य रहै, विषम व्याधि क्यों जाइ।
दादू रोगी बावरा, दोष बैद को लाइ ।। 55 ।।
एक सेर का ठांवड़ा, क्योंही भऱ्या न जाइ।
भूख न भागी जीव की, दादू केता खाइ ।। 56 ।।
पशुवां की नांई भर भर खाइ, व्याधि घणेरी बधती जाइ।
पशुवां नांई करै अहार, दादू बाढै रोग अपार ।। 57 ।।
राम रसायन भर भर पीवै, दादू जोगी जुग जुग जीवै।
संयम सदा, न व्यापै व्याधी, रहै निरोगी लगै समाधी ।। 58 ।।

शिश्न श्वास

दादू चारै चित दिया, चिन्तामणि को भूल।
जन्म अमोलक जात है, बैठे माँझी फूल ।। 59 ।।
भरी अधौड़ी भावठी, बैठा पेट फुलाइ।
दादू शूकर स्वान ज्यों, ज्यों आवै त्यों खाइ ।। 60 ।।

दादू खाटा मीठा खाइ करि, स्वादैं चित दीया।
इन में जीव विलंबिया, हरि नाम न लीया ।। 61 ।।
भक्ति न जाणै राम की, इन्द्री के आधीन।
दादू बँध्या स्वाद सौं, ताथैं नाम न लीन ।। 62 ।।

सांच

दादू अपना नीका राखिये, मैं मेरा दिया बहाइ।
तुझ अपने सेती काज है, मैं मेरा भावै तीधर जाइ ।। 63 ।।
जे हम जाण्या एक कर, तो काहे लोक रिसाइ।
मेरा था सो मैं लिया, लोगों का क्या जाइ ।। 64 ।।

करणी बिना कथनी

दादू द्वै द्वै पद किये, साखी भी द्वै चार।
हमको अनुभव ऊपजी, हम ज्ञानी संसार ।। 65 ।।
सुन सुन पर्चे ज्ञान के, साखी शब्दी होइ।
तब ही आपा ऊपजै, हम-सा और न कोइ ।। 66 ।।
सो उपज किस काम की, जे जण जण करै क्लेश।
साखी सुन समझै साधु की, ज्यों रसना रस शेष ।। 67 ।।
दादू पद जोड़ै साखी कहै, विषय न छाड़ै जीव।
पानी घालि बिलोइये तो, क्यों करि निकसै घीव ।। 68 ।।
दादू पद जोड़े का पाइये, साखी कहे का होइ।
सत्य शिरोमणि सांइयां, तत्त न चीन्हा सोइ ।। 69 ।।
कहबा सुनबा मन खुशी, करबा औरै खेल।
बातों तिमिर न भाजई, दीवा बाती तेल ।। 70 ।।
दादू करबे वाले हम नहीं, कहबे को हम शूर।
कहबा हम थैं निकट है, करबा हम थैं दूर ।। 71 ।।
कहे कहे का होत है, कहे न सीझै काम।
कहे कहे का पाइये, जब लग हृदै न आवै राम ।। 72 ।।

चौंप चरचा

दादू श्रोता घर नहीं, वक्ता बकै सु बादि।
वक्ता श्रोता एक रस, कथा कहावै आदि ।। 73 ।।

वक्ता श्रोता घर नहीं, कहै सुनै को राम।
दादू यहु मन थिर नहीं, बाद बकै बेकाम ।। 74 ।।

विचार दृढ ज्ञान

अन्तर सुरझे समझ कर, फिर न अरूझे जाइ।
बाहर सुरझे देखतां, बहुरि अरूझे आइ ।। 75 ।।

झूठे गुरु

आतम लावै आप सौं, साहिब सेती नांहि।
दादू को निपजै नहीं, दोन्यूं निष्फल जांहि ।। 76 ।।

तू मुझ को मोटा कहै, हौं तुझ बड़ाई मान।
सांई को समझै नहीं, दादू झूठा ज्ञान ।। 77 ।।

कस्तूरिया मृग

सदा समीप रहै संग सन्मुख, दादू लखै न गूझ।
सपने ही समझै नहीं, क्यों कर लहै अबूझ ।। 78 ।।

बेखर्च व्यसनी

दादू सेवक नाम बुलाइये, सेवा सपनैं नांहिं।
नाम धराये का भया, जे एक नहीं मन माहिं ।। 79 ।।

नाम धरावै दास का, दासातन थैं दूर।
दादू कारज क्यों सरै, हरि सौं नहीं हजूर ।। 80 ।।

भक्त न होवै भक्ति बिन, दासातन बिन दास।
बिन सेवा सेवक नहीं, दादू झूठी आस ।। 81 ।।

राम भक्ति भावै नहीं, अपनी भक्ति का भाव।
राम भक्ति मुख सौं कहै, खेलै अपना डाव ।। 82 ।।

भक्ति निराली रह गई, हम भूल पड़े वन माहिं।
भक्ति निरंजन राम की, दादू पावै नांहिं ।। 83 ।।
सो दशा कतहूँ रही, जिहि दिशि पहुंचै साध।
मैं तैं मूरख गह रहे, लोभ बड़ाई बाद ।। 84 ।।
दादू राम विसार कर, कीये बहु अपराध।
लाजों मारे संत सब, नांव हमारा साध ।। 85 ।।

करणी बिना कथनी

मनसा के पकवान सौं, क्यों पेट भरावै।
ज्यों कहिये त्यों कीजिये, तब ही बन आवै ।। 86 ।।
दादू मिश्री मिश्री कीजिये, मुख मीठा नाहीं।
मीठा तब ही होइगा, छिटकावै माहीं ।। 87 ।।
दादू बातों ही पहुंचै नहीं, घर दूर पयाना।
मारग पन्थी उठि चलै, दादू सोई सयाना ।। 88 ।।
बातों सब कुछ कीजिये, अंत कछू नहिं देखै।
मनसा वाचा कर्मना, तब लागै लेखै ।। 89 ।।

समझ सुजानता

दादू कासौं कहि समझाइये, सब कोई चतुर सुजान।
कीड़ी कुंजर आदि दे, नाहिंन कोई अजान ।। 90 ।।

करणी बिना कथनी

शूकर स्वान सियाल सिंह, सर्प रहैं घट माँहि।
कुंजर कीड़ी जीव सब, पांडे जाणैं नांहि ।। 91 ।।
दादू सूना घट सोधी नहीं, पंडित ब्रह्मा पूत।
आगम निगम सब कथैं, घर में नाचै भूत ।। 92 ।।
पढे न पावै परमगति, पढे न लंघै पार।
पढे न पहुंचै प्राणियां, दादू पीड़ पुकार ।। 93 ।।

दादू निवरे नाम बिन, झूठा कथैं गियान।
बैठे सिर खाली करैं, पंडित वेद पुरान ।। 94 ।।
दादू केते पुस्तक पढ़ मुये, पंडित वेद पुरान।
केते ब्रह्मा कथ गये, नांहिन राम समान ।। 95 ।।
सब हम देख्या सोध कर, वेद कुरानों माँहि।
जहाँ निरंजन पाइये, सो देश दूर, इत नांहि ।। 96 ।।
पढ पढ थाके पंडिता, किनहूँ न पाया पार।
कथ कथ थाके मुनिजना, दादू नाम अधार ।। 97 ।।
काजी कजा न जानहीं, कागद हाथ कतेब।
पढतां पढतां दिन गये, भीतर नांहि भेद ।। 98 ।।
मसि कागज के आसरे, क्यों छूटै संसार?
राम बिना छूटै नहीं, दादू भ्रम विकार ।। 99 ।।
कागद काले कर मुए, केते वेद पुराण।
एकै अक्षर पीव का, दादू पढै सुजान ।। 100 ।।
एकै अक्षर प्रेम का, कोई पढेगा एक।
दादू पुस्तक प्रेम बिन, केते पढ़ैं अनेक।। 101 ।।
दादू पाती प्रेम की, बिरला बांचै कोइ।
बेद पुरान पुस्तक पढै, प्रेम बिना क्या होइ ।। 102 ।।
दादू कहतां कहतां दिन गये, सुनतां सुनतां जाइ।
दादू ऐसा को नहीं, कहि सुनि राम समाइ ।। 103 ।।

मध्य निरपक्ष

मौन गहैं ते बावरे, बोलैं खरे अयान।
सहजैं राते राम सौं, दादू सोई सयान ।। 104 ।।

करुणा

कहतां सुनतां दिन गये, ह्वै कछू न आवा।
दादू हरि की भक्ति बिन, प्राणी पछतावा ।। 105 ।।

अनाधिकारी

दादू कथनी और कुछ, करणी करैं कछु और।
तिन थैं मेरा जीव डरै, जिनके ठीक न ठौर ॥ 106 ॥
अन्तरगत औरै कछु, मुख रसना कुछ और।
दादू करणी और कुछ, तिनको नांही ठौर ॥ 107 ॥

मन प्रबोध

दादू राम मिलन की कहत हैं, करते कुछ औरे।
ऐसे पीव क्यौं पाइये, समझि मन बौरे ॥ 108 ॥

बेखर्च व्यसनी

दादू बगनी भंगा खाइ कर, मतवाले माँझी।
पैका नांही गांठड़ी, पातशाह खांजी ॥ 109 ॥
दादू टोटा दालिदी, लाखों का व्यौपार।
पैका नांही गांठड़ी, सिरै साहूकार ॥ 110 ॥

मध्य निष्पक्ष–सब मतों का निशाना एक

दादू ये सब किसके पंथ में, धरती अरु आसमान।
पानी पवन दिन रात का, चंद सूर रहमान ॥ 111 ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश का, कौन पंथ गुरुदेव।
सांई सिरजनहार तूं, कहिये अलख अभेव ॥ 112 ॥
मुहम्मद किसके दीन में, जिब्राईल किस राह?
इनके मुर्शिद पीर की, कहिये एक अल्लाह ॥ 113 ॥
दादू ये सब किसके ह्वै रहे, यहु मेरे मन माँहि।
अलख इलाही जगत–गुरु, दूजा कोई नांहि ॥ 114 ॥

पतिव्रत व्यभिचार

दादू औरैं ही औला तके, थीयां सदै बियंनि।
सो तू मीयां ना घुरै, जो मीयां मीयंनि ॥ 115 ॥

सत्य असत्य गुरु पारख लक्षण

आई रोजी ज्यों गई, साहिब का दीदार।
गहला लोगों कारणैं, देखै नहीं गँवार ॥ 116 ॥

पतिव्रत निष्काम

दादू सोई सेवक राम का, जिसे न दूजी चिंत।
दूजा को भावै नहीं, एक पियारा मिंत ॥ 117 ॥

भ्रम विध्वंसण

अपनी अपनी जाति सौं, सब को बैसैं पांति।
दादू सेवग राम का, ताके नहीं भरांति ॥ 118 ॥
चोर अन्याई मसखरा, सब मिलि बैसैं पांति।
दादू सेवक राम का, तिन सौं करैं भरांति ॥ 119 ॥
दादू सूप बजायां क्यों टलै, घर में बड़ी बलाइ।
काल झाल इस जीव का, बातन ही क्यों जाइ?120 ॥
साँप गया सहनाण को, सब मिलि मारैं लोक।
दादू ऐसा देखिए, कुल का डगरा फोक॥ 121 ॥
दादू दोन्यूँ भरम हैं, हिन्दू तुरक गंवार।
जे दुहुवाँ थैं रहित है, सो गहि तत्त्व विचार ॥ 122 ॥
अपना अपना कर लिया, भंजन माँही बाहि।
दादू एकै कूप जल, मन का भ्रम उठाहि ॥ 123 ॥
दादू पानी के बहु नाम धर, नाना विधि की जात।
बोलणहारा कौन है, कहो धौं कहाँ समात ॥ 124 ॥
जब पूरण ब्रह्म विचारिये, तब सकल आत्मा एक।
काया के गुण देखिये, तो नाना वरण अनेक ॥ 125 ॥

अमिट पाप प्रचण्ड

भाव भक्ति उपजै नहीं, साहिब का प्रसंग।
विषय विकार छूटै नहीं, सो कैसा सत्संग ॥ 126 ॥

बासण विषय विकार के, तिनको आदर मान।
संगी सिरजनहार के, तिन सौं गर्व गुमान ।। 127 ।।
अंधे को दीपक दिया, तो भी तिमिर न जाय।
सोधी नहीं शरीर की, तासन का समझाइ ।। 128 ।।

सगुरा निगुरा

दादू कहिए कुछ उपकार को, मानै अवगुण दोष।
अंधे कूप बताइया, सत्य न मानै लोक।। 129 ।।
कालर खेत न नीपजै, जे बाहे सौ बार।
दादू हाना बीज का, क्या पचि मरै गँवार ।। 130 ।।

कृत्रिम कर्ता

दादू जिन कंकर पत्थर सेविया, सो अपना मूल गँवाइ।
अलख देव अंतर बसै, क्या दूजी जगह जाइ ।। 131 ।।
पत्थर पीवे धोइ कर, पत्थर पूजे प्राण।
अन्तकाल पत्थर भये, बहु बूडे इहि ज्ञान ।। 132 ।।
कंकर बंध्या गांठड़ी, हीरे के विश्वास।
अंतकाल हरि जौहरी, दादू सूत कपास ।। 133 ।।
दादू पहली पूजे ढूंढसी, अब भी ढूंढस बाणि।
आगे ढूंढस होइगा, दादू सत्य कर जाणि ।। 134 ।।

भ्रम विध्वंसण

दादू पैंडे पाप के, कदे न दीजे पांव।
जिहिं पैंडे मेरा पीव मिले, तिहिं पैंडे का चाव ।। 135 ।।
दादू सुकृत मारग चालतां, बुरा न कबहूँ होइ।
अमृत खातां प्राणिया, मुवा न सुनिया कोइ ।। 136 ।।
कुछ नाहीं का नाम क्या, जे धरिये सो झूठ।
सुर नर मुनिजन बंधिया, लोका आवट कूट ।। 137 ।।

कुछ नाहीं का नाम धर, भरम्या सब संसार।
साच झूठ समझै नहीं, ना कुछ किया विचार ।। 138 ।।

कस्तूरिया मृग

दादू केई दौडे द्वारिका, केई काशी जांहि।
केई मथुरा को चले, साहिब घट ही माँहि ।। 139 ।।

पूजनहारे पास हैं, देही माँही देव।
दादू ताको छाड़ कर, बाहर माँडी सेव ।। 140 ।।

सांच

ऊपरि आलम सब करैं, साधू जन घट माँहि।
दादू एता अन्तरा, ताथैं बनती नांहि ।। 141 ।।

दादू सब थे एक के, सो एक न जाना।
जने जने का ह्वै गया, यहु जगत दिवाना ।। 142 ।।

दादू झूठा साचा कर लिया, विष अमृत जाना।
दुख को सुख सब को कहै, ऐसा जगत दिवाना ।। 143 ।।

सूधा मारग साच का, साचा हो सो जाइ।
झूठा कोई ना चलै, दादू दिया दिखाइ ।। 144 ।।

साहिब सौं साचा नहीं, यहु मन झूठा होइ।
दादू झूठे बहुत हैं, साचा विरला कोइ ।। 145 ।।

दादू साचा अंग न ठेलिये, साहिब माने नांहि।
साचा सिर पर राखिये, मिलि रहिये ता माँहि ।। 146 ।।

जे कोई ठेले साच कौं, तो साचा रहै समाइ।
कौड़ी बर क्यों दीजिये, रत्न अमोलक जाइ ।। 147 ।।

साचे साहिब को मिले, साचे मारग जाइ।
साचे सौं साचा भया, तब साचे लिये बुलाइ ।। 148 ।।

दादू साचा साहिब सेविये, साची सेवा होइ।
साचा दर्शन पाइये, साचा सेवक सोइ ।। 149 ।।

साचे का साहिब धणी, समर्थ सिरजनहार।
पाखंड की यहु पृथ्वी, प्रपंच का संसार ।। 150 ।।
कहै दादू जन जो कृत धारै, भलो बुरो फल ताही लारै।
झूठा परगट साचा छानै, तिन की दादू राम न मानै ।। 151 ।।
कहँ आशिक अल्लाह के, मारे अपने हाथ।
कहँ आलम औजूद सौं, कहै जुबां की बात ।। 152 ।।
दादू पाखंड पीव न पाइये, जे अंतर साच न होइ।
ऊपर थैं क्यूं ही रहो, भीतर के मल धोइ ।। 153 ।।
साच अमर जुग जुग रहै, दादू विरला कोइ।
झूठ बहुत संसार में, उत्पत्ति परलै होइ ।। 154 ।।
दादू झूठा बदलिये, साच न बदल्या जाइ।
साचा सिर पर राखिये, साध कहै समझाइ ।। 155 ।।
साच न सूझै जब लगै, तब लग लोचन अंध।
दादू मुक्ता छाड़ कर, गल में घाल्या फंद ।। 156 ।।
साच न सूझै जब लगै, तब लग लोचन नांहि।
दादू निर्बंध छाड़ कर, बंध्या द्वै पख माँहि ।। 157 ।।
एक साच सौं गहगही, जीवन मरण निबाहि।
दादू दुखिया राम बिन, भावै तीधर जाहि ।। 158 ।।

चितावणी

दादू छानै छानै कीजिये, चौड़े प्रगट होइ।
दादू पैस पयाल में, बुरा करे जनि कोइ ।। 159 ।।
अनकिया लागै नहीं, किया लागै आइ।
साहिब के दर न्याय है, जे कुछ राम रजाइ ।। 160 ।।

आत्मार्थी भेख

सोइ जन साधु सिद्ध सो, सोइ सतवादी शूर।
सोइ मुनिवर दादू बड़े, सन्मुख रहणि हजूर ।। 161 ।।

सोइ जन साचे सो सती, सोइ साधक सुजान।
सोइ ज्ञानी सोई पंडिता, जे राते भगवान ।। 162 ।।
दादू सोइ जोगी, सोइ जंगमा, सोइ सूफी सोइ शेख।
सोइ सन्यासी, सेवड़ा, दादू एक अलेख ।। 163 ।।
सोइ काजी सोई मुल्ला, सोइ मोमिन मुसलमान।
सोइ सयाने सब भले, जे राते रहमान ।। 164 ।।
राम नाम को बणिजन बैठे, ताथैं माँड्या हाट।
सांई सौं सौदा करैं, दादू खोल कपाट ।। 165 ।।

अधिकारी अनअधिकारी

बिच के सिर खाली करैं, पूरे सुख सन्तोष।
दादू सुध बुध आत्मा, ताहि न दीजे दोष ।। 166 ।।
सुध बुध सौं सुख पाइये, कै साधु विवेकी होइ।
दादू ये बिच के बुरे, दाधे रीगे सोइ ।। 167 ।।
जनि कोई हरि नाम में, हमको हाना बाहि।
ताथैं तुमथैं डरत हूँ, क्यों ही टलै बला हि ।। 168 ।।

परमार्थी

जे हम छाड़ैं राम को, तो कौन गहेगा?
दादू हम नहिं उच्चरैं,तो कौन कहेगा?169 ।।

विरक्तता

एक राम छाड़ै नहीं, छाड़ै सकल विकार।
दूजा सहजैं होइ सब, दादू का मत सार ।। 170 ।।
जे तू चाहै राम को, तो एक मना आराध।
दादू दूजा दूर कर, मन इन्द्री कर साध ।। 171 ।।

विरक्तता

कबीर बिचारा कह गया, बहुत भाँति समझाइ।
दादू दुनिया बावरी, ताके संग न जाइ ।। 172 ।।

सूक्ष्म मार्ग

पावैंगे उस ठौर को, लंघैंगे यहु घाट।
दादू क्या कह बोलिये, अजहुं बिच ही बाट ।। 173 ।।

सांच

साचा राता सांच सौं, झूठा राता झूठ।
दादू न्याय निबेरिये, सब साधों को पूछ ।। 174 ।।

अद्वैत निरूपण

जे पहुँचे ते कह गए, तिनकी एकै बात।
सबै सयाने एक मत, उनकी एकै जात ।। 175 ।।
जे पहुँचे तेहि पूछिये, तिनकी एकै बात।
सब साधों का एक मत, ये बिच के बारह बाट ।। 176 ।।
सबै सयाने कह गये, पहुँचे का घर एक।
दादू मार्ग माहिं ले, तिन की बात अनेक।। 177 ।।
सूरज साखी भूत है, साच करै परकास।
चोर डरै चोरी करै, रैन तिमिर का नाश ।। 178 ।।
चोर न भावै चांदणां, जनि उजियारा होइ।
सूते का सब धन हरूँ, मुझे न देखै कोइ ।। 179 ।।

संस्कार आगम

घट घट दादू कह समझावै, जैसा करै सो तैसा पावै।
को घट पापी को घट पुण्य। को घट चेतन को घट शून्य?
को काहू का सीरी नांहीं, साहिब देखे सब घट माँहीं ।। 180 ।।

इति श्री दादूदास–विरचिते सतगुरु–प्रसादेन प्रोक्तं भक्तियोगनाम तत्वसारमत–सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान–सर्वशास्त्र–शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र–सत्योपदेश–ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य–श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
तेरहवां साँच काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 13 ।। साखी 180 ।।

भेष का अंग १४

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

पतिव्रत निष्काम

दादू बूड़े ज्ञान सब, चतुराई जल जाइ।
अंजन मंजन फूंक दे, रहै राम ल्यौ लाइ ॥ 2 ॥
राम बिना सब फीका लागै, करणी कथा गियान।
सकल अविरथा, कोटि कर दादू जोग धियान ॥ 3 ॥

ज्ञानी पंडित बहुत हैं, दाता शूर अनेक।
दादू भेष अनन्त हैं, लाग रह्या सो एक।। 4 ।।

आत्मार्थी इंद्रियार्थी भेष

कोरा कलश अवाह का, ऊपरि चित्र अनेक।
क्या कीजे दादू वस्तु बिन, ऐसे नाना भेष ।। 5 ।।
बाहर दादू भेष बिन, भीतर वस्तु अगाध।
सो ले हिरदै राखिये, दादू सन्मुख साध ।। 6 ।।
दादू भांडा भर धर वस्तु सौं, ज्यों महँगे मोल बिकाइ।
खाली भांडा वस्तु बिन, कौड़ी बदले जाइ ।। 7 ।।
दादू कनक कलश विष सौं भऱ्या, सो आवै किस काम।
सो धन कूटा चाम का, जामें अमृत राम ।। 8 ।।
दादू देखे वस्तु को, बासन देखे नांहि।
दादू भीतर भर धऱ्या, सो मेरे मन मांहि ।। 9 ।।
दादू जे तूं समझै तो कहूँ, सांचा एक अलेख।
डाल पान तज मूल गह, क्या दिखलावै भेख ।। 10 ।।
दादू सब दिखलावैं आपको, नाना भेष बनाइ।
जहँ आपा मेटन, हरि भजन, तिहिं दिशि कोइ न जाइ ।। 11 ।।
सो दशा कतहूँ रही, जिहिं दिश पहुँचे साध।
मैं तैं मूरख गहि रहे, लोभ बड़ाई वाद ।। 12 ।।
दादू भेष बहुत संसार में, हरिजन विरला कोइ।
हरिजन राता राम सौं, दादू एकै होइ ।। 13 ।।
हीरे रीझै जौहरी, खल रीझै संसार।
स्वाँगी साधु बहु अन्तरा, दादू सत्य विचार ।। 14 ।।
स्वांगी साधु बहु अन्तरा, जेता धरणी आकाश।
साधु राता राम सौं, स्वांगी जगत की आश ।। 15 ।।

दादू स्वांगी सब संसार है, साधू विरला कोइ।
जैसे चन्दन बावना, वन वन कहीं न होइ ।। 16 ।।
दादू स्वांगी सब संसार है, साधू कोई एक ।
हीरा दूर दिशन्तरा, कंकर और अनेक।। 17 ।।
दादू स्वांगी सब संसार है, साधू सोध सुजाण।
पारस परदेशों भया, दादू बहुत पषाण ।। 18 ।।
दादू स्वांगी सब संसार है, साधु समन्दां पार।
अनल पंखी कहँ पाइये, पंखी कोटि हजार ।। 19 ।।
दादू चन्दन वन नहीं, शूरन के दल नांहि।
सकल समन्द हीरा नहीं, त्यों साधू जग मांहि ।। 20 ।।
जे सांई का ह्वै रहै, सांई तिसका होइ।
दादू दूजी बात सब, भेष न पावै कोइ ।। 21 ।।
दादू स्वांग सगाई कुछ नहीं, राम सगाई साच।
साधू नाता नाम का, दूजै अंग न राच ।। 22 ।।
दादू एकै आत्मा, साहिब है सब मांहि।
साहिब के नाते मिले, भेष पंथ के नांहि ।। 23 ।।
दादू माला तिलक सौं कुछ नहीं, काहू सेती काम।
अन्तर मेरे एक है, अहनिशि उसका नाम ।। 24 ।।

अमिट पाप प्रचण्ड

भक्त भेख धरि मिथ्या बोलै, निंदा पर अपवाद।
साचे को झूठा कहै, लागै बहु अपराध ।। 25 ।।
दादू कबहूँ कोई जनि मिलै, भक्त भेष सौं जाइ।
जीव जन्म का नाश है, कहैं अमृत, विष खाइ ।। 26 ।।

चित्त कपटी

दादू पहुँचे पूत बटाऊ होइ कर, नट ज्यों काछा भेख ।
खबर न पाई खोज की, हमको मिल्या अलेख ।। 27 ।।

दादू माया कारण मूंड मुंडाया, यहु तौ योग न होई।
पारब्रह्म सूं परिचय नांहीं, कपट न सीझै कोई ।। 28 ।।
पीव न पावै बावरी, रचि रचि करै श्रृंगार।
दादू फिर फिर जगत सूं, करैगी व्यभिचार ।। 29 ।।
प्रेम प्रीति सनेह बिन, सब झूठे श्रृंगार।
दादू आतम रत नहीं, क्यों मानैं भरतार ।। 30 ।।
दादू जग दिखलावै बावरी, षोडश करै श्रृंगार।
तहँ न सँवारे आपको, जहँ भीतर भरतार ।। 31 ।।

इन्द्रियार्थी भेष

सुध बुध जीव धिजाइ कर, माला संकल बाहि।
दादू माया ज्ञान सौं, स्वामी बैठा खाइ ।। 32 ।।
जोगी जंगम सेवड़े, बौद्ध सन्यासी शेख।
षट् दर्शन दादू राम बिन, सबै कपट के भेष ।। 33 ।।
दादू शेख मुशायख औलिया, पैगम्बर सब पीर।
दर्शन सौं परसन नहीं, अजहूँ वैली तीर ।। 34 ।।
दादू नाना भेष बनाइ कर, आपा देख दिखाइ।
दादू दूजा दूर कर, साहिब सौं ल्यो लाइ ।। 35 ।।
दादू देखा देखी लोक सब, केते आवैं जांहि।
राम सनेही ना मिलैं, जे निज देखैं मांहि ।। 36 ।।
दादू सब देखैं अस्थूल को, यहु ऐसा आकार।
सूक्ष्म सहज न सूझई, निराकार निरधार ।। 37 ।।
दादू बाहर का सब देखिये, भीतर लख्या न जाइ।
बाहर दिखावा लोक का, भीतर राम दिखाइ ।। 38 ।।
दादू यह परिख सराफी ऊपली, भीतर की यहु नाहिं।
अन्तर की जानैं नहीं, तातैं खोटा खाहिं ।। 39 ।।

इन्द्रीयार्थी भेष

दादू झूठा राता झूठ सौं, साँचा राता साँच।
एता अंध न जानहिं, कहँ कंचन, कहँ काँच ॥ 40 ॥
दादू सच बिन सांई ना मिलै, भावै भेष बनाइ।
भावै करवत उर्ध्वमुख, भावै तीरथ जाइ ॥ 41 ॥
दादू साचा हरि का नाम है, सो ले हिरदै राखि।
पाखंड प्रपंच दूर कर, सब साधों की साखि ॥ 42 ॥

आपा निर्दोष

हिरदै की हरि लेइगा, अंतरजामी राइ।
साच पियारा राम को, कोटिक करि दिखलाइ ॥ 43 ॥
दादू मुख की ना गहै, हिरदै की हरि लेइ।
अन्तर सूधा एक सौं, तो बोल्याँ दोष न देइ ॥ 44 ॥

आत्म अर्थी भेष

सब चतुराई देखिये, जे कुछ कीजे आन।
मन गह राखै एक सौं, दादू साधु सुजान ॥ 45 ॥
शब्द सूई सुरति धागा, काया कंथा लाइ।
दादू जोगी जुग जुग पहिरै, कबहूँ फाट न जाइ ॥ 46 ॥
ज्ञान गुरु का गूदड़ी, शब्द, गुरु का भेष।
अतीत हमारी आत्मा, दादू पंथ अलेख ॥ 47 ॥
इश्क अजब अबदाल है, दर्दवंद दरवेश।
दादू सिक्का सब्र है, अक्ल पीर उपदेश ॥ 48 ॥

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य

चौदहवां भेष काअंग सम्पूर्ण ॥ अंग 14 ॥ साखी 48 ॥

अथ साधु का अंग १५

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

साधु महिमा

दादू निराकार मन सुरति सौं, प्रेम प्रीति सौं सेव।
जे पूजे आकार को, तो साधु प्रत्यक्ष देव ॥ 2 ॥

दादू भोजन दीजे देह को, लिया मन विश्राम।
साधु के मुख मेलिये, पाया आतमराम ॥ 3 ॥

ज्यों यहु काया जीव की, त्यों सांई के साध।
दादू सब संतोषिये, मांहि आप अगाध ।। 4 ।।

सत्संग महात्म

साधु जन संसार में, भव-जल बोहित अंग।
दादू केते उद्धरे, जेते बैठे संग ।। 5 ।।
साधु जन संसार में, शीतल चंदन वास।
दादू केते उद्धरे, जे आये उन पास ।। 6 ।।
साधु जन संसार में, हीरे जैसा होय।
दादू केते उद्धरे, संगति आये सोय ।। 7 ।।
साधु जन संसार में, पारस प्रकट गाइ।
दादू केते उद्धरे, जेते परसे आइ ।। 8 ।।
रूख वृक्ष वनराइ सब, चंदन पासैं होइ।
दादू बास लगाइ कर, किये सुगन्धे सोइ ।। 9 ।।
जहाँ अरण्ड अरु आक थे, तहँ चन्दन ऊग्या मांहि।
दादू चन्दन कर लिया, आक कहै को नांहि ।। 10 ।।
साधु नदी जल राम रस, तहाँ पखाले अंग।
दादू निर्मल मल गया, साधु जन के संग ।। 11 ।।
ब्रह्मंड हंड चढ़ाइया, मानौं ऊरे अन।
कोई गुरु कृपा तैं ऊबरे, दादू साधू जन ।। 11क ।।
साधु बरसैं राम रस, अमृत वाणी आइ।
दादू दर्शन देखतां, त्रिविध ताप तन जाइ ।। 12 ।।

साधु संग महिमा महात्म

संसार विचारा जात है, बहिया लहर तरंग।
भेरे बैठा ऊबरे, सत साधु के संग ।। 13 ।।

दादू नेड़ा परम पद, साधु संगति मांहि।
दादू सहजैं पाइये, कबहुँ निष्फल नांहि ।। 14 ।।
दादू नेड़ा परम पद, कर साधु का संग।
दादू सहजैं पाइये, तन मन लागै रंग ।। 15 ।।
दादू नेड़ा परम पद, साधु संगति होइ।
दादू सहजैं पाइये, साबित सन्मुख सोइ ।। 16 ।।
दादू नेड़ा परम पद, साधु जन के साथ।
दादू सहजैं पाइये, परम पदार्थ हाथ ।। 17 ।।
साधु मिलै तब ऊपजै, हिरदै हरि का भाव।
दादू संगति साधु की, जब हरि करै पसाव ।। 18 ।।
साधु मिलै तब ऊपजै, हिरदै हरि का हेत।
दादू संगति साधु की, कृपा करै तब देत ।। 19 ।।
साधु मिलै तब ऊपजै, प्रेम भक्ति रुचि होइ।
दादू संगति साधु की, दया कर देवै सोइ ।। 20 ।।
साधु मिलै तब ऊपजै, हिरदै हरि की प्यास।
दादू संगति साधु की, अविगत पुरवै आस ।। 21 ।।
साधु मिलै तब हरि मिलै, सब सुख आनन्द मूर।
दादू संगति साधु की, राम रह्या भरपूर ।। 22 ।।

चौंप चर्चा

परम कथा उस एक की, दूजा नांही आन।
दादू तन मन लाइ कर, सदा सुरति रस पान ।। 23 ।।
प्रेम कथा हरि की कहै, करै भक्ति ल्यौ लाइ।
पीवै पिलावै राम रस, सो जन मिलियो आइ ।। 24 ।।
दादू पीवै पिलावै राम रस, प्रेम भक्ति गुण गाइ।
नित प्रति कथा हरि की करै, हेत सहित ल्यौ लाइ ।। 25 ।।

आन कथा संसार की, हमहिं सुणावै आइ।
तिसका मुख दादू कहै, दई न दिखाइ ताहि ॥ 26 ॥
दादू मुख दिखलाइ साधु का, जे तुमहिं मिलावै आइ।
तुम मांही अन्तर करै, दई न दिखाइ ताहि ॥ 27 ॥
जब द्रवो तब दीजिये, तुम पै मांगूं येहु।
दिन प्रति दर्शन साधु का, प्रेम भक्ति दृढ़ देहु ॥ 28 ॥
साधु सपीड़ा मन करै, सतगुरु शब्द सुनाइ।
मीरां मेरा मिहर कर, अन्तर विरह उपाइ ॥ 29 ॥

जिज्ञासु कसौटी

ज्यों ज्यों होवै त्यों कहै, घट बध कहै न जाइ।
दादू सो सुध आत्मा, साधू परसै आइ ॥ 30 ॥

सत्संग महिमा

साहिब सौं सन्मुख रहै, सत संगति में आइ।
दादू साधू सब कहैं, सो निष्फल क्यों जाइ ॥ 31 ॥
ब्रह्म गाय त्रि लोक में, साधु अस्तन पान।
मुख मारग अमृत झरै, कत ढूँढै दादू आन ॥ 32 ॥
दादू पाया प्रेम रस, साधु संगति मांहि।
फिरि फिरि देखे लोक सब, यहु रस कतहूँ नांहि ॥ 33 ॥
दादू जिस रस को मुनिवर मरैं, सुर नर करैं कलाप।
सो रस सहजैं पाइये, साधु संगति आप ॥ 34 ॥
संगति बिन सीझे नहीं, कोटि करे जे कोइ।
दादू सतगुरु साधु बिन, कबहुँ शुद्ध न होइ ॥ 35 ॥
दादू नेड़ा दूर तैं, अविगत का आराध।
मनसा वाचा कर्मणा, दादू (साधु) संगति साध ॥ 36 ॥

स्रग न शीतल होइ मन, चन्द न चन्दन पास।
शीतल संगति साधु की, कीजे दादू दास ।। 37 ।।
दादू शीतल जल नहीं, हिम नहिं शीतल होइ।
दादू शीतल संत जन, राम सनेही सोइ ।। 38 ।।

साध बेपरवाही

दादू चन्दन कद कह्या, अपना प्रेम प्रकाश।
दह दिशि प्रगट ह्वै रह्या, शीतल गंध सुवास ।। 39 ।।
दादू पारस कद कह्या, मुझ थीं कंचन होइ।
पारस परगट ह्वै रह्या, साच कहै सब कोइ ।। 40 ।।

नरबिड़ रूप हठीजन

तन नहिं भूला, मन नहिं भूला, पंच न भूला प्राण।
साधु सबद क्यूँ भूलिये, रे मन मूढ अजाण ।। 41 ।।

साधु महिमा

रत्न पदारथ माणिक मोती, हीरों का दरिया।
चिंतामणि चित रामधन, घट अमृत भरिया ।। 42 ।।
समर्थ शूरा साधु सो, मन मस्तक धरिया।
दादू दर्शन देखतां, सब कारज सरिया ।। 43 ।।

साधु महिमा महात्म

धरती अम्बर रात दिन, रवि शशि नावैं शीश।
दादू बलि बलि वारणें, जे सुमिरैं जगदीश ।। 44 ।।
चन्द सूर सिजदा करैं, नाम अलह का लेइ।
दादू जमीं आस्मान सब, उन पावों सिर देइ ।। 45 ।।
जे जन राते राम सौं, तिनकी मैं बलि जांव।
दादू उन पर वारणे, जे लाग रहे हरि नांव ।। 46 ।।

साधु पारिख लक्षण

जे जन हरि के रंग रंगे, सो रंग कदे न जाइ।
सदा सुरंगे संत जन, रंग में रहे समाइ ।। 47 ।।
दादू राता राम का, अविनाशी रंग मांहि।
सब जग धोबी धो मरै, तो भी खूटै नांहि ।। 48 ।।
साहिब किया सो क्यों मिटै, सुन्दर शोभा रंग।
दादू धोवैं बावरे, दिन दिन होइ सुरंग ।। 49 ।।

साधु परमार्थी

परमारथ को सब किया, आप स्वार्थ नांहि।
परमेश्वर परमार्थी, कै साधु कलि मांहि ।। 50 ।।
पर उपकारी संत सब, आये इहि क लि मांहि।
पीवैं पिलावैं राम रस, आप सवारथ नांहि ।। 51 ।।
पर उपकारी संत जन, साहिब जी तेरे ।
जाती देखी आतमा, राम कहि टेरे ।। 52 ।।
चंद सूर पावक पवन, पाणी का मत सार।
धरती अंबर रात दिन, तरुवर फलैं अपार ।। 53 ।।
छाजन भोजन परमार्थी, आतम देव आधार।
साधु सेवक राम के, दादू पर उपकार ।। 54 ।।

साधु साक्षीभूत

जिसका तिसको दीजिये, सुकृत पर उपकार।
दादू सेवक सो भला, सिर नहिं लेवे भार ।। 55 ।।
परमार्थ को राखिये, कीजे पर उपकार।
दादू सेवक सो भला, निरंजन निराकार ।। 56 ।।
सेवा सुकृत सब गया, मैं मेरा मन मांहि।
दादू आपा जब लगै, साहिब मानै नांहि ।। 57 ।।

साधु पारिख लक्षण

साधु शिरोमणि शोध ले, नदी पूर पर आइ।
संजीवनि साम्हा चढै, दूजा बहिया जाइ ।। 58 ।।
जिनके मस्तक मणि बसै, सो सकल शिरोमणि अंग।
जिनके मस्तक मणि नहीं, ते विष भरे भुवंग ।। 59 ।।

साधु महिमा

दादू इस संसार में, ये द्वै रत्न अमोल।
इक सांई अरु संतजन, इनका मोल न तोल ।। 60 ।।
दादू इस संसार में, ये द्वै रहै लुकाइ।
राम स्नेही संतजन, और बहुतेरा आइ ।। 61 ।।
सगे हमारे साधु हैं, सिर पर सिरजनहार।
दादू सतगुरु सो सगा, दूजा धंध विकार ।। 62 ।।

साधु पारख लक्षण

जिनके हिरदै हरि बसै, सदा निरंजन नांऊँ।
दादू साचे साध की, मैं बलिहारी जांऊँ।। 63 ।।
साचा साधु दयालु घट, साहिब का प्यारा।
राता माता राम रस, सो प्राण हमारा ।। 64 ।।

सज्जन दुर्जन

दादू फिरता चाक कुम्हार का, यों दीसे संसार।
साधुजन निहचल भये, जिनके राम अधार ।। 65 ।।

सत्संग महिमा

जलती बलती आतमा, साधु सरोवर जाइ।
दादू पीवै राम रस, सुख में रहै समाइ ।। 66 ।।

कृत्तम कर्त्ता

कांजी मांहीं भेल कर, पीवै सब संसार।
कर्त्ता केवल निर्मला, को साधु पीवणहार ।। 67 ।।

संगति कुसंति फल

दादू असाधु मिलै अन्तर पड़ै, भाव भक्ति रस जाइ।
साधु मिलै सुख ऊपजै, आनन्द अंग न माइ ।। 68 ।।
दादू साधु संगति पाइये, राम अमीफल होइ।
संसारी संगति पाइये, विषफल देवै सोइ ।। 69 ।।
दादू सभा संत की, सुमति उपजै आइ।
शाक्त की सभा बैसतां, ज्ञान काया तैं जाइ ।। 70 ।।

जग जन विपरीत

दादू सब जग दीसै एकला, सेवक स्वामी दोइ।
जगत दुहागी राम बिन, साधु सुहागी सोइ ।। 71 ।।
दादू साधु जन सुखिया भये, दुनिया को बहु द्वन्द्व।
दुनी दुखी हम देखतां, साधुन सदा आनन्द ।। 72 ।।
दादू देखत हम सुखी, सांई के संग लाग।
यों सो सुखिया होयगा, जाके पूरे भाग ।। 73 ।।
दादू मीठा पीवै राम रस, सो भी मीठा होइ।
सहजैं कड़वा मिट गया, दादू निर्विष सोइ ।। 74 ।।

साध पारख लक्षण

दादू अन्तर एक अनंत सौं, सदा निरंतर प्रीत।
जिहिं प्राणी प्रीतम बसै, सो बैठा त्रिभुवन जीत ।। 75 ।।

साधु महिमा महात्म

दादू मैं दासी तिहिं दास की, जिहिं संगि खेलै पीव।
बहुत भाँति कर वारणें, तापर दीजे जीव ।। 76 ।।

भ्रम विध्वंसण

दादू लीला राजा राम की, खेलैं सब ही संत।
आपा पर एकै भया, छूटी सबै भरंत ।। 77 ।।

जग जन विपरीत

दादू आनंद सदा अडोल सौं, राम सनेही साध।
प्रेमी प्रीतम को मिले, यहु सुख अगम अगाध ॥ 78 ॥

पुरुष प्रकाशिक

यहु घट दीपक साध का, ब्रह्म ज्योति प्रकाश।
दादू पंखी संतजन, तहाँ परैं निज दास ॥ 79 ॥
घर वन मांहीं राखिये, दीपक ज्योति जगाइ।
दादू प्राण पतंग सब, जहँ दीपक तहँ जाइ ॥ 80 ॥
घर वन मांहीं राखिये, दीपक जलता होइ।
दादू प्राण पतंग सब, आइ मिलैं सब कोइ ॥ 81 ॥
घर वन मांहीं राखिये, दीपक प्रकट प्रकाश।
दादू प्राण पतंग सब, आइ मिलैं उस पास ॥ 82 ॥
घर वन मांही राखिये, दीपक ज्योति सहेत।
दादू प्राण पतंग सब, आइ मिलैं उस हेत ॥ 83 ॥
जिहिं घट प्रकट राम है, सो घट तज्या न जाइ।
नैनहुँ मांही राखिये, दादू आप नशाइ ॥ 84 ॥
जिहिं घट दीपक राम का, तिहिं घट तिमिर न होइ।
उस उजियारे ज्योति के, सब जग देखै सोइ ॥ 85 ॥

साधु अबिहड़

कबहुँ न बिहड़ै सो भला, साधु दिढ मति होइ।
दादू हीरा एक रस, बाँध गाँठड़ी सोइ ॥ 86 ॥

साधु पारख लक्षण

गरथ न बांधै गांठड़ी, नहीं नारी सौं नेह।
मन इंद्री सुस्थिर करै, छाड़ सकल गुण देह ॥ 87 ॥
निराकार सौं मिल रहै, अखंड भक्ति कर लेह।
दादू क्यों कर पाइये, उन चरणों की खेह ॥ 88 ॥

समाचार सत पीव का, कोइ साधु कहेगा आइ।
दादू शीतल आत्मा, सुख में रहे समाइ ।। 89 ।।
साधु शब्द सुख वर्षहि, शीतल होइ शरीर।
दादू अन्तर आत्मा, पीवे हरि जल नीर ।। 90 ।।

साधु लक्षण

साधु सदा संयम रहै, मैला कदे न होइ।
दादू पंक परसै नहीं, कर्म न लागै कोइ ।। 91 ।।
साध सदा संयम रहै, मैला कदे न होइ।
शून्य सरोवर हंसला, दादू विरला कोइ ।। 92 ।।
साहिब का उनहार सब, सेवक मांही होइ।
दादू सेवक साधु को, दूजा नांही कोइ ।। 93 ।।
दादू जब लग नैन न देखिये, साध कहैं ते अंग।
तब लग क्यों कर मानिये, साहिब का प्रसंग ।। 94 ।।
दादू सोइ जन साधु सिद्ध सो, सोइ सकल सिरमौर।
जिहिं के हिरदै हरि बसै, दूजा नाहीं और ।। 95 ।।
दादू अवगुण छाड़ै गुण गहै, सोई शिरोमणि साध।
गुण औगुण तैं रहित है, सो निज ब्रह्म अगाध ।। 96 ।।

जग जन विपरीत

दादू सैन्धव फटिक पाषाण का, ऊपर एकै रंग।
पानी मांहैं देखिये, न्यारा न्यारा अंग ।। 97 ।।
दादू सैंधव के आपा नहीं, नीर खीर परसंग।
आपा फटिक पाषाण के, मिलै न जल के संग ।। 98 ।।
दादू सब जग फटिक पाषाण है, साधु सैंधव होइ।
सैंधव एकै ह्वै रह्या, पानी पत्थर दोइ ।। 99 ।।

साधु परमार्थी

को साधु जन उस देश का, आया इहि संसार।
दादू उसको पूछिये, प्रीतम के समाचार ।। 100 ।।
दादू दत्त दरबार का, को साधु बांटै आइ।
तहाँ राम रस पाइये, जहँ साधु तहँ जाइ ।। 101 ।।

चौंप चरचा

दादू श्रोता स्नेही राम का, सो मुझ मिलवहु आणि।
तिस आगे हरि गुण कथूं, सुणत न करई काणि ।। 102 ।।

साधु परमार्थी

दादू सब ही मृतक समान हैं, जीया तब ही जाण।
दादू छांटा अमी का, को साधु बाहे आण ।। 103 ।।
सबही मृतक ह्वै रहे, जीवैं कौन उपाइ।
दादू अमृत रामरस, को साधू सींचे आइ ।। 104 ।।
सब ही मृतक देखिये, क्यों कर जीवैं सोइ।
दादू साधु प्रेम रस, आणि पिलावे कोइ ।। 105 ।।
सब ही मृतक देखिये, किहिं विधि जीवैं जीव।
साधु सुधारस आणि करि, दादू बरसे पीव ।। 106 ।।
हरि जल बरसै बाहिरा, सूखे काया खेत।
दादू हरिया होइगा, सींचणहार सुचेत ।। 107 ।।

कुसंगति

गंगा यमुना सरस्वती, मिलैं जब सागर मांहि।
खारा पानी ह्वै गया, दादू मीठा नांहि ।। 108 ।।
दादू राम न छाड़िये, गहिला तज संसार।
साधु संगति शोध ले, कुसंगति संग निवार ।। 109 ।।
दादू कुसंगति सब परिहरै, मात पिता कुल कोइ।
सजन स्नेही बांधवा, भावै आपा होइ ।। 110 ।।

अज्ञान मूर्खः हितकारी, सज्जनो हि समो रिपुः।
ज्ञात्वा(परि)त्यजंति ते, निरामयी मनोजितः ॥ 111 ॥
कुसंगति केते गये, तिनका नांव न ठांव।
दादू ते क्यों उद्धरैं, साधु नहीं जिस गाँव ॥ 112 ॥
भाव भक्ति का भंग कर, बटपारे मारहिं बाट।
दादू द्वारा मुक्ति का, खोले जड़े कपाट ॥ 113 ॥

सत्संग महिमा महात्म

साधु संगति अंतर पड़े, तो भागेगा किस ठौर।
प्रेम भक्ति भावै नहीं, यहु मन का मत और ॥ 114 ॥
दादू राम मिलन के कारणे, जे तूँ खरा उदास।
साधु संगति शोध ले, राम उन्हीं के पास ॥ 115 ॥

पुरुष प्रकाशिक संत महिमा

ब्रह्मा शंकर सेष मुनि, नारद ध्रुव शुकदेव।
सकल साधु दादू सही, जे लागे हरि सेव ॥ 116 ॥
साधु कंवल हरि वासना, संत भ्रमर संग आइ।
दादू परिमल ले चले, मिले राम को जाइ ॥ 117 ॥

साधु सज्जन

दादू सहजैं मेला होइगा, हम तुम हरि के दास।
अंतरगति तो मिलि रहे, पुनि प्रकट प्रकाश ॥ 118 ॥
दादू मम सिर मोटे भाग, साधों का दर्शन किया।
कहा करै जम काल, राम रसायन भर पिया ॥ 119 ॥

साधु समर्थता

दादू एता अविगत आप थैं, साधों का अधिकार।
चौरासी लख जीव का, तन मन फेरि सँवार ॥ 120 ॥
विष का अमृत कर लिया, पावक का पाणी।
बाँका सूधा करि लिया, सो साध बिनाणी ॥ 121 ॥

दादू ऊरा पूरा कर लिया, खारा मीठा होइ।
फूटा सारा कर लिया, साधु विवेकी सोइ ।। 122 ।।
बंध्या मुक्ता कर लिया, उरझ्या सुरझ समान।
बैरी मिंता कर लिया, दादू उत्तम ज्ञान ।। 123 ।।
झूठा साचा कर लिया, काँचा कंचन सार।
मैला निर्मल कर लिया, दादू ज्ञान विचार ।। 124 ।।

अमिट पाप प्रचंड

दादू काया कर्म लगाइ कर, तीर्थ धोवै आइ।
तीर्थ मांही कीजिए, सो कैसे कर जाइ ।। 125 ।।
जहँ तिरिये तहँ डूबिये, मन में मैला होइ।
जहँ छूटे तहँ बंधिये, कपट न सीझे कोइ ।। 126 ।।

सत्संग महिमा

दादू जब लग जीविये, सुमिरण संगति साध।
दादू साधू राम बिन, दूजा सब अपराध ।। 127 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
पन्द्रहवां साधु काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 15 ।। साखी 127 ।।

अथ मध्य का अंग १६

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

मध्य निष्पक्ष

दादू द्वै पख रहिता सहज सो, सुख दुख एक समान।
मरै न जीवै सहज सो, पूरा पद निर्वाण ॥ 2 ॥
सहज रूप मन का भया, जब द्वै द्वै मिटी तरंग।
ताता शीला सम भया, तब दादू एकै अंग ॥ 3 ॥

सुख दुख मन मानै नहीं, राम रंग राता।
दादू दोन्यों छाड़ि सब, प्रेम रस माता ।। 4 ।।
मति मोटी उस साधु की, द्वै पख रहित समान।
दादू आपा मेट कर, सेवा करै सुजान ।। 5 ।।
कछु न कहावै आपको, काहू संग न जाइ।
दादू निरपख ह्वै रहै, साहिब सौं ल्यौ लाइ ।। 6 ।।
सुख दुख मन मानै नहीं, आपा पर सम भाइ।
सो मन ! मन कर सेविये, सब पूरण ल्यौ लाइ ।। 7 ।।
ना हम छाड़ैं ना गहैं, ऐसा ज्ञान विचार।
मध्य भाव सेवैं सदा, दादू मुक्ति द्वार ।। 8 ।।
सहज शून्य मन राखिये, इन दोन्यों के मांहि।
लै समाधि रस पीजिये, तहाँ काल भय नांहि ।। 9 ।।
आपा मेटै मृत्तिका, आपा धरै आकास।
दादू जहाँ जहाँ द्वै नहीं, मध्य निरंतर वास ।। 10 ।।

ध्येय परम स्थान निरूपण

नहिं मृतक नहिं जीवता, नहिं आवै नहिं जाइ।
नहिं सूता नहि जागता, नहिं भूखा नहिं खाइ ।। 11 ।।
दादू इस आकार तैं, दूजा सूक्षम लोक।
तातैं आगे और है, तहँ वहाँ हर्ष न शोक।। 12 ।।
दादू हद छाड़ बेहद में, निर्भय निर्पख होइ।
लाग रहै उस एक सौं, जहाँ न दूजा कोइ ।। 13 ।।
दादू दूजे अन्तर होत है, जनि आणै मन मांहि।
तहँ ले मन को राखिये, जहँ कुछ दूजा नांहि ।। 14 ।।
निराधार घर कीजिये, जहँ नांहि धरणि आकास।
दादू निश्चल मन रहै, निर्गुण के विश्वास ।। 15 ।।

मन चित मनसा आत्मा, सहज सुरति ता मांहि।
दादू पंचों पूरि ले, जहँ धरती अंबर नांहि ।। 16 ।।
अधर चाल कबीर की, आसंघी नहिं जाइ।
दादू डाकै मृग ज्यों, उलट पड़ै भुवि आइ ।। 17 ।।
दादू रहणी कबीर की, कठिन विषम यहु चाल।
अधर एक सौं मिल रह्या, जहाँ न झंपै काल ।। 18 ।।
निराधार निज भक्ति कर, निराधार निज सार।
निराधार निज नाम ले, निराधार निराकार ।। 19 ।।
निराधार निज राम रस, को साधु पीवनहार।
निराधार निर्मल रहै, दादू ज्ञान विचार ।। 20 ।।
जब निराधार मन रह गया, आत्म के आनन्द।
दादू पीवे रामरस, भेटे परमानन्द ।। 21 ।।

माया

दुहुँ बिच राम अकेला आपै, आवण जाण न देहि।
जहँ के तहँ सब राखै दादू, पार पहुँचे तेहि ।। 22 ।।

मध्य निर्पक्ष

चलु दादू तहँ जाइये, जहँ मरै न जीवै कोइ।
आवागमन भय को नहीं, सदा एक रस होइ ।। 23 ।।
चलु दादू तहँ जाइये, जहँ चंद सूर नहिं जाइ।
रात दिवस की गम नहीं, सहजैं रह्या समाइ ।। 24 ।।
चलु दादू तहँ जाइये, माया मोह तैं दूर।
सुख दुख को व्यापै नहीं, अविनासी घर पूर ।। 25 ।।
चलु दादू तहँ जाइये, जहँ जम जोरा को नांहि।
काल मीच लागै नहीं, मिल रहिये ता मांहि ।। 26 ।।

एक देश हम देखिया, जहँ ऋतु नहीं पलटै कोइ।
हम दादू उस देश के, जहँ सदा एक रस होइ ॥ 27 ॥
एक देश हम देखिया, जहँ बस्ती ऊजड़ नांहि।
हम दादू उस देश के, सहज रूप ता मांहि ॥ 28 ॥
एक देश हम देखिया, नहिं नेड़े नहिं दूर।
हम दादू उस देश के, रहे निरंतर पूर ॥ 29 ॥
एक देश हम देखिया, जहँ निशदिन नांहीं घाम।
हम दादू उस देश के, जहँ निकट निरंजन राम ॥ 30 ॥
बारहमासी नीपजै, तहाँ किया परवेश।
दादू सूखा ना पड़ै, हम आये उस देश ॥ 31 ॥
जहँ वेद कुरान की गम नहीं, तहाँ किया परवेश।
तहँ कछु अचरज देखिया, यहु कुछ औरै देश ॥ 32 ॥

भ्रम विध्वंस

ना घर रह्या न वन गया, ना कुछ किया क्लेश।
दादू मन ही मन मिल्या, सतगुरु के उपदेश ॥ 33 ॥
काहे दादू घर रहै, काहे वन-खंड जाइ।
घर वन रहिता राम है, ताही सौं ल्यौ लाइ ॥ 34 ॥
दादू जिन प्राणी कर जानिया, घर वन एक समान।
घर मांही वन ज्यों रहै, सोई साधु सुजान ॥ 35 ॥
सब जग मांही एकला, देह निरंतर वास।
दादू कारण राम के, घर वन मांहि उदास ॥ 36 ॥
घर वन मांही सुख नहीं, सुख है सांई पास।
दादू तासौं मन मिल्या, इनतैं भया उदास ॥ 37 ॥
ना घर भला न वन भला, जहाँ नहीं निज नांव।
दादू उनमन मन रहै, भला तो सोई ठांव ॥ 38 ॥

बैरागी वन में बसै, घरबारी घर मांहि।
राम निराला रह गया, दादू इनमें नांहि ॥ 39 ॥
दीन दुनी सदिकै करूं, टुक देखण दे दीदार।
तन मन भी छिन छिन करूं, भिश्त दोजग भी वार ॥ 40 ॥
दादू जीवन मरण का, मुझ पछतावा नांहि।
मुझ पछतावा पीव का, रह्या न नैनहुँ मांहि ॥ 41 ॥
स्वर्ग नरक संशय नहीं, जीवन मरण भय नांहि।
राम विमुख जे दिन गये, सो सालैं मन मांहि ॥ 42 ॥
स्वर्ग नरक सुख दुख तजे, जीवन मरण नशाइ।
दादू लोभी राम का, को आवै को जाइ ॥ 43 ॥

मध्य निष्पक्ष

दादू हिन्दू तुरक न होइबा, साहिब सेती काम।
षट् दर्शन के संग न जाइबा, निर्पख कहबा राम ॥ 44 ॥
षट् दर्शन दोन्यों नहीं, निरालंब निज बाट।
दादू एकै आसरे, लंघे औघट घाट ॥ 45 ॥
दादू ना हम हिन्दू होहिंगे, ना हम मुसलमान।
षट् दर्शन में हम नहीं, हम राते रहमान ॥ 46 ॥
जोगी जंगम सेवड़े, बौद्ध सन्यासी शेख।
षट् दर्शन दादू राम बिन, सबै कपट के भेख ॥ 47 ॥
दादू अल्लाह राम का, द्वै पख तैं न्यारा।
रहिता गुण आकार का, सो गुरु हमारा ॥ 48 ॥

उभय असमाव

दादू मेरा तेरा बावरे, मैं तैं की तज बान।
जिन यहु सब कुछ सिरजिया, करता ही का जान ॥ 49 ॥

दादू करणी हिन्दू तुरक की, अपनी अपनी ठौर।
दुहुं बिच मारग साधु का, यहु संतों की रह और ॥ 50 ॥
दादू हिन्दू तुरक का, द्वै पख पंथ निवार।
संगति साचे साधु की, सांई को संभार ॥ 51 ॥
दादू हिन्दू लागे देहुरे, मुसलमान मसीति।
हम लागे एक अलेख सौं, सदा निरंतर प्रीति ॥ 52 ॥
न तहाँ हिन्दू देवरा, न तहाँ तुरक मसीति।
दादू आपै आप है, नहीं तहाँ रह रीति ॥ 53 ॥
यहु मसीत यहु देहुरा, सतगुरु दिया दिखाइ।
भीतर सेवा बन्दगी, बाहिर काहे जाइ ॥ 54 ॥
दोनों हाथी ह्वै रहे, मिल रस पिया न जाइ।
दादू आपा मेट कर, दोनों रहें समाइ ॥ 55 ॥
भयभीत भयानक ह्वै रहे, देख्या निर्पख अंग।
दादू एकै ले रह्या, दूजा चढै न रंग ॥ 56 ॥
जानै बूझै साच है, सबको देखन धाइ।
चाल नहीं संसार की, दादू गह्या न जाइ ॥ 57 ॥
दादू पख काहू के ना मिले, निर्पख निर्मल नांव।
सांई सौं सन्मुख सदा, मुक्ता सब ही ठांव ॥ 58 ॥
दादू जब तैं हम निर्पख भये, सबै रिसाने लोक।
सतगुरु के परसाद तैं, मेरे हर्ष न शोक॥ 59 ॥
निर्पख ह्वै कर पख गहै, नरक पड़ैगा सोइ।
हम निर्पख लागे नाम सौं, कर्त्ता करै सो होइ ॥ 60 ॥

हरि भरोसा

दादू पख काहू के ना मिलैं, निष्कामी निर्पख साध।
एक भरोसे राम के, खेलैं खेल अगाध ॥ 61 ॥

मध्य

दादू पखा पखी संसार सब, निर्पख विरला कोइ।
सोई निर्पख होइगा, जाके नाम निरंजन होइ ।। 62 ।।
अपने अपने पंथ की, सब को कहै बढाइ।
तातैं दादू एक सौं, अन्तरगति ल्यौ लाइ ।। 63 ।।
दादू द्वै पख दूर कर, निर्पख निर्मल नांव।
आपा मेटै हरि भजै, ताकी मैं बलि जांव ।। 64 ।।

संजीवन

दादू तज संसार सब, रहै निराला होइ।
अविनाशी के आसरे, काल न लागै कोइ ।। 65 ।।

मत्सर ईर्ष्या

कलियुग कूकर कलमुँहा, उठ-उठ लागै धाइ।
दादू क्यों करि छूटिये, कलियुग बड़ी बलाइ ।। 66 ।।

संसार का त्याग

काला मुँह संसार का, नीले कीये पाँव।
दादू तीन तलाक दे, भावै तीधर जाव ।। 67 ।।
दादू भावहीन जे पृथ्वी, दया विहूणा देश।
भक्ति नहीं भगवंत की, तहँ कैसा प्रवेश ।। 68 ।।
जे बोलैं तो चुप कहैं, चुप तो कहैं पुकार।
दादू क्यों कर छूटिये, ऐसा है संसार ।। 69 ।।
न जाणूं, हाँजी, चुप गहि, मेट अग्नि की झाल।
सदा सजीवन सुमिरिये, दादू बंचै काल ।। 70 ।।
पंथ चलैं ते प्राणिया, तेता कुल व्यवहार।
निर्पख साधु सो सही, जिनके एक अधार ।। 71 ।।
दादू पंथों पड़ गये, बपुरे बारह बाट।
इनके संग न जाइये, उलटा अविगत घाट ।। 72 ।।

आशय विश्राम

दादू जागे को आया कहैं, सूते को कहैं जाइ।
आवन जाना झूठ है, जहाँ का तहाँ समाइ ।। 73 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य

सोलहवां मध्य का अंग सम्पूर्ण ।। अंग 16 ।। साखी 73 ।।

अथ सारग्राही का अंग १७

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

दादू साधु गुण गहै, औगुण तजै विकार।
मानसरोवर हंस ज्यूं, छाड़ि नीर, गहि सार ॥ 2 ॥

हंस गियानी सो भला, अन्तर राखे एक।
विष में अमृत काढ ले, दादू बड़ा विवेक॥ 3 ॥

पहली न्यारा मन करै, पीछै सहज शरीर।
दादू हंस विचार सौं, न्यारा किया नीर ॥ 4 ॥

आपै आप प्रकाशिया, निर्मल ज्ञान अनन्त।
क्षीर नीर न्यारा किया, दादू भज भगवंत ।। 5 ।।
क्षीर नीर का संत जन, न्याव नबेरैं आइ।
दादू साधु हंस बिन, भेल सभेले जाइ ।। 6 ।।
दादू मन हंसा मोती चुणै, कंकर दिया डार।
सतगुरु कह समझाइया, पाया भेद विचार ।। 7 ।।
दादू हंस मोती चुणै, मानसरोवर जाइ।
बगुला छीलर बापुड़ा, चुण चुण मछली खाइ ।। 8 ।।
दादू हंस मोती चुगैं, मानसरोवर न्हाइ।
फिर फिर बैसैं बापुड़ा, काग करंकां आइ ।। 9 ।।
दादू हंस परखिये, उत्तम करणी चाल।
बगुला बैसे ध्यान धर, प्रत्यक्ष कहिये काल ।। 10 ।।
उज्ज्वल करणी हंस है, मैली करणी काग।
मध्यम करणी छाड़ि सब, दादू उत्तम भाग ।। 11 ।।
दादू निर्मल करणी साधु की, मैली सब संसार।
मैली मध्यम ह्वै गये, निर्मल सिरजनहार ।। 12 ।।
दादू करणी ऊपर जाति है, दूजा सोच निवार।
मैली मध्यम ह्वै गये, उज्ज्वल ऊँच विचार ।। 13 ।।
उज्वल करणी राम है, दादू दूजा धंध।
का कहिये समझै नहीं, चारों लोचन अंध ।। 14 ।।
दादू गऊ बच्छ का ज्ञान गहि, दूध रहै ल्यौ लाइ।
सींग पूंछ पग परिहरै, स्तन हि लागै धाइ ।। 15 ।।
दादू काम गाय के दूध सौं, हाड़ चाम सौं नांहि।
इहिं विधि अमृत पीजिये, साधु के मुख मांहि ।। 16 ।।

स्मरण नाम

दादू काम धणी के नाम सौं, लोगन सौं कुछ नांहि।
लोगन सौं मन ऊपली, मन की मन ही मांहि ।। 17 ।।
जाके हिरदै जैसी होइगी, सो तैसी ले जाइ।
दादू तू निर्दोष रह, नाम निरंतर गाइ ।। 18 ।।
दादू साध सबै कर देखना, असाध न दीसै कोइ।
जिहिं के हिरदे हरि नहीं, तिहिं तन टोटा होइ ।। 19 ।।
साधू संगति पाइये, तब द्वन्द्वर दूर नशाइ।
दादू बोहिथ बैस करि, डूँडे निकट न जाइ ।। 20 ।।
जब परम पदार्थ पाइये, तब कंकर दिया डार।
दादू साचा सो मिले, तब कूड़ा काज निवार ।। 21 ।।
जब जीवन-मूरी पाइये, तब मरबा कौन बिसाहि।
दादू अमृत छाड़ कर, कौन हलाहल खाहि ।। 22 ।।
जब मानसरोवर पाइये, तब छीलर को छिटकाइ।
दादू हंसा हरि मिले, तब कागा गये बिलाइ ।। 23 ।।
जहँ दिनकर तहँ निशि नहीं, निशि तहँ दिनकर नांहि।
दादू एकै द्वै नहीं, साधुन के मत मांहि ।। 24 ।।
दादू एकै घोड़ै चढ चलै, दूजा कोतिल होइ।
दुहुँ घोड़ों चढ बैसतां, पार न पहुंता कोइ ।। 25 ।।
इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
सत्रहवां सारग्राही काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 17 ।। साखी 25 ।।
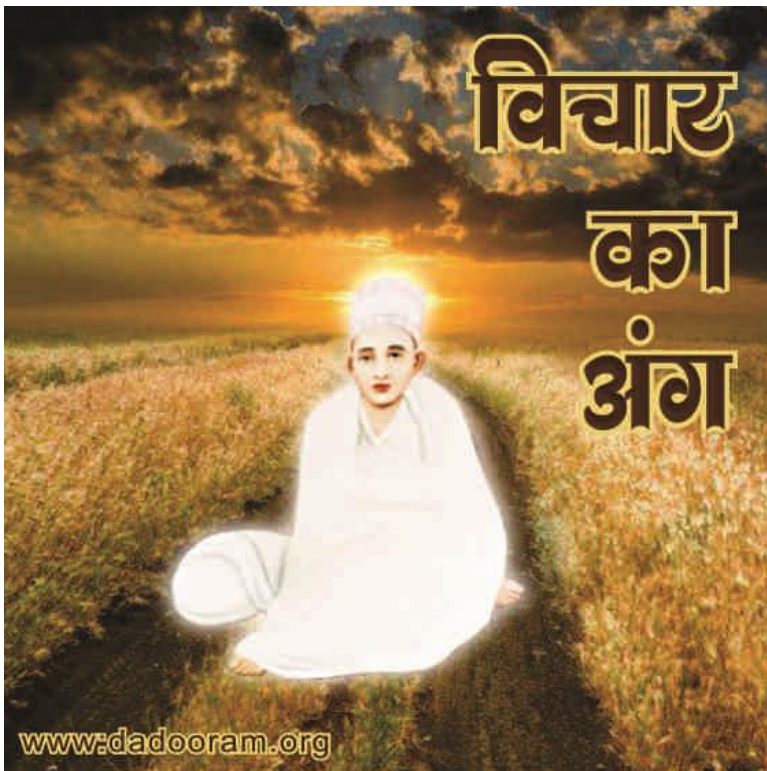
अथ विचार का अंग १८

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः ।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ।। 1 ।।

ज्ञान परिचय

दादू जल में गगन, गगन में जल है, पुनि वै गगन निरालं ।
ब्रह्म जीव इहिं विधि रहै, ऐसा भेद विचारं ।। 2 ।।
ज्यों दर्पण में मुख देखिये, पानी में प्रतिबिम्ब ।
ऐसे आत्मराम है, दादू सब ही संग ।। 3 ।।

सांच

जब दर्पण मांहि देखिये, तब अपना सूझै आप।
दर्पण बिन सूझै नहीं, दादू पुन्य रु पाप ।। 4 ।।

ज्ञान परिचय

जीयें तेल तिलनि में, जीयें गंध फूलनि।
जीयें माखणु खीर में, ईयें रब्ब रूहनि ।। 5 ।।
ईयें रब्ब रूहनि में, जीयें रूह रगनि।
जीयें जेरो सूर मां, ठंडो चन्द्र बसंनि ।। 6 ।।
दादू जिन यहु दिल मंदिर किया, दिल मंदिर में सोइ।
दिल मांही दिलदार है, और न दूजा कोइ ।। 7 ।।
मीत तुम्हारा तुम्ह कनै, तुम ही लेहु पिछान।
दादू दूर न देखिये, प्रतिबिम्ब ज्यों जान ।। 8 ।।

विरक्तता

दादू नाल कमल जल ऊपजै, क्यों जुदा जल मांहि?
चंद हि हित चित प्रीतड़ी, यो जल सेती नांहि ।। 9 ।।
दादू एक विचार सौं, सब तैं न्यारा होइ।
मांहि है पर मन नहीं, सहज निरंजन सोइ ।। 10 ।।
दादू गुण निर्गुण मन मिल रह्या, क्यों बेगर ह्वै जाहि।
जहँ मन नांही सो नहीं, जहँ मन चेतन सो आहि ।। 11 ।।

विचार

दादू सबही व्याधि की, औषधि एक विचार।
समझे तैं सुख पाइये, कोइ कुछ कहो गँवार ।। 12 ।।
दादू इक निर्गुण इक गुणमयी, सब घट ये द्वै ज्ञान।
काया का माया मिले, आतम ब्रह्म समान ।। 13 ।।
दादू कोटि अचारिन एक विचारी, तऊ न सरभर होइ।
आचारी सब जग भर्‍या, विचारी विरला कोइ ।। 14 ।।

दादू घट में सुख आनन्द है, तब सब ठाहर होइ।
घट में सुख आनन्द बिन, सुखी न देख्या कोइ ॥ 15 ॥

विरक्तता

काया लोक अनन्त सब, घट में भारी भीर।
जहाँ जाइ तहाँ संग सब, दरिया पैली तीर ॥ 16 ॥

काया माया ह्वै रही, जोधा बहु बलवंत।
दादू दुस्तर क्यों तिरै, काया लोक अनंत ॥ 17 ॥

मोटी माया तज गये, सूक्ष्म लिये जाइ।
दादू को छूटै नहीं, माया बड़ी बलाइ ॥ 18 ॥

दादू सूक्ष्म मांहिले, तिनका कीजे त्याग।
सब तज राता राम सौं, दादू यहु वैराग ॥ 19 ॥

गुणातीत सो दर्शनी, आपा धरै उठाइ।
दादू निर्गुण राम गहि, डोरी लागा जाइ ॥ 20 ॥

पिंड मुक्ति सब को करै, प्राण मुक्ति नहीं होइ।
प्राण मुक्ति सतगुरु करै, दादू विरला कोइ ॥ 21 ॥

शिष्य जिज्ञासा

दादू क्षुधा तृषा क्यों भूलिये, शीत तप्त क्यों जाइ ?
क्यों सब छूटैं देह गुण? सतगुरु कहि समझाइ ॥ 22 ॥

उत्तर

मांही थैं मन काढ कर, ले राखै निज ठौर।
दादू भूलै देह गुण, बिसर जाइ सब और ॥ 23 ॥

नाम भुलावै देह गुण, जीव दशा सब जाइ।
दादू छाड़ै नाम को, तो फिर लागै आइ ॥ 24 ॥

दादू दिन दिन राता राम सौं, दिन दिन अधिक स्नेह।
दिन दिन पीवै रामरस, दिन दिन दर्पण देह ॥ 25 ॥

दादू दिन दिन भूलै देह गुण, दिन दिन इंद्रिय नाश।
दिन दिन मन मनसा मरै, दिन दिन होइ प्रकाश ।। 26 ।।

सजीवन

देह रहै संसार में, जीव राम के पास।
दादू कुछ व्यापै नहीं, काल झाल दुख त्रास ।। 27 ।।
काया की संगति तजै, बैठा हरि पद मांहि।
दादू निर्भय ह्वै रहै, कोई गुण व्यापै नांहि ।। 28 ।।
काया मांही भय घणा, सब गुण व्यापैं आइ।
दादू निर्भय घर किया, रहे नूर में जाइ ।। 29 ।।
खड्ग धार विष ना मरै, कोइ गुण व्यापै नांहि।
राम रहै त्यों जन रहै, काल झाल जल मांहि ।। 30 ।।

विचार

सहज विचार सुख में रहै, दादू बड़ा विवेक।
मन इन्द्रिय पसरै नहीं, अंतर राखै एक।। 31 ।।
मन इन्द्रिय पसरै नहीं, अहनिशि एकै ध्यान।
पर उपकारी प्राणिया, दादू उत्तम ज्ञान ।। 32 ।।

उभय असभाव

दादू मैं नाहीं तब नाम क्या, कहा कहावै आप?
साधो ! कहो विचार कर, मेटहु तन की ताप ।। 33 ।।
जब समझ्या तब सुरझिया, उलट समाना सोइ।
कछु कहावै जब लगै, तब लग समझ न होइ ।। 34 ।।
जब समझ्या तब सुरझिया, गुरुमुख ज्ञान अलेख।
ऊर्ध्व कमल में आरसी, फिर कर आपा देख ।। 35 ।।
दादू आपा उरझे उरझिया, दीसे सब संसार।
आपा सुरझे सुरझिया, यहु गुरु ज्ञान विचार ।। 36 ।।

प्रेम भक्ति दिन दिन बधै, सोई ज्ञान विचार।
दादू आतम शोध कर, मथ कर काढ़्या सार ।। 37 ।।
दादू जिहिं बरियां यहु सब भया, सो कुछ करो विचार।
काजी पंडित बावरे, क्या लिख बांधे भार ।। 38 ।।
दादू जब यहु मनहि मन मिल्या, तब कुछ पाया भेद।
दादू लेकर लाइये, क्या पढ़ मरिये वेद ।। 39 ।।
पाणी पावक, पावक पाणी, जाणै नहीं अजाण।
आदि रु अंत विचार कर, दादू जाण सुजाण ।। 40 ।।
सुख मांहि दुख बहुत हैं, दुख मांही सुख होइ।
दादू देख विचार कर, आदि अंत फल दोइ ।। 41 ।।
मीठा खारा, खारा मीठा, जाने नहीं गँवार।
आदि अंत गुण देखकर, दादू किया विचार ।। 42 ।।
कोमल कठिन, कठिन है कोमल, मूरख मर्म न बूझै।
आदि रु अंत विचार कर, दादू सब कुछ सूझै ।। 43 ।।
पहली प्राण विचार कर, पीछे पग दीजे।
आदि अंत गुण देख कर, दादू कुछ कीजे ।। 44 ।।
पहली प्राण विचार कर, पीछे चलिये साथ।
आदि अंत गुण देखकर, दादू घाली हाथ ।। 45 ।।
पहली प्राण विचार कर, पीछे कुछ कहिये।
आदि अंत गुण देखकर, दादू निज गहिये ।। 46 ।।
पहली प्राण विचार कर, पीछे आवै जाइ।
आदि अंत गुण देख कर, दादू रहै समाइ ।। 47 ।।
दादू सोच करै सो सूरमा, कर सोचै सो कूर।
कर सोच्यां मुख श्याम ह्वै, सोच कियां मुख नूर ।। 48 ।।

जो मति पीछे ऊपजै, सो मति पहली होइ।
कबहुं न होवै जीव दुखी, दादू सुखिया सोइ ।। 49 ।।
आदि अन्त गाहन किया, माया ब्रह्म विचार।
जहँ का तहँ ले दे धर्‍या, दादू देत न बार ।। 50 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
अठरहवां विचार काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 18 ।। साखी 50 ।।
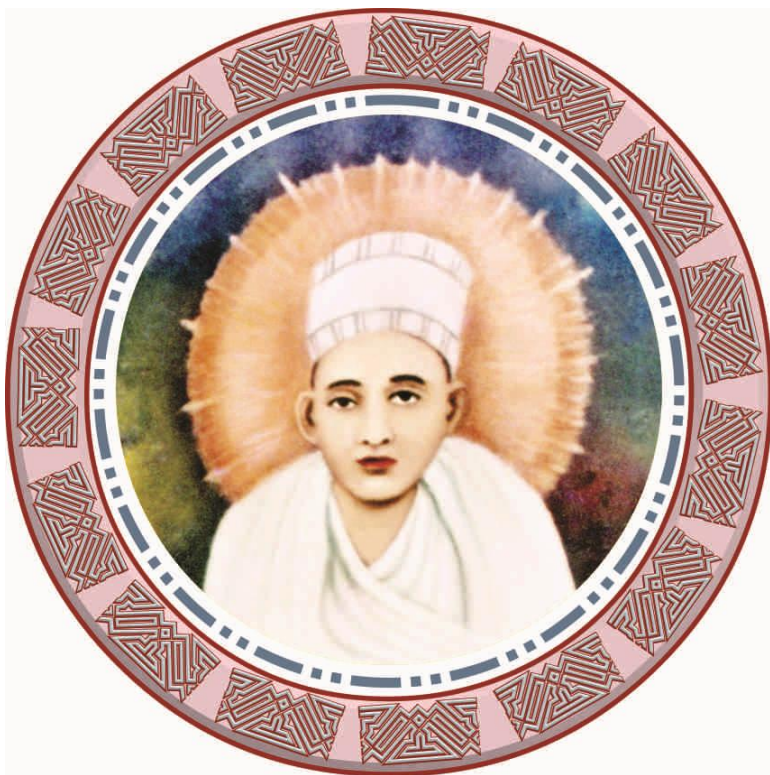
अथ विश्वास का अंग १९

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

दादू सहजैं सहजैं होइगा, जे कुछ रचिया राम।
काहे को कलपै मरै, दुःखी होत बेकाम ॥ 2 ॥

सांई किया सो ह्वै रह्या, जे कुछ करै सो होइ।
कर्ता करै सो होत है, काहे कलपै कोइ ॥ 3 ॥

दादू कहै जे तैं किया सो ह्वै रह्या, जे तूं करै सो होइ।
करण करावण एक तूं, दूजा नांहीं कोइ ॥ 4 ॥

दादू सोई हमारा सांइयां, जे सबका पूरणहार।
दादू जीवन मरण का, जाके हाथ विचार ॥ 5 ॥
दादू स्वर्ग भुवन पाताल मधि, आदि अंत सब सृष्ट।
सिरज सबन को देत है, सोई हमारा इष्ट ॥ 6 ॥
दादू करणहार कर्त्ता पुरुष, हमको कैसी चिंत।
सब काहू की करत है, सो दादू का मिंत ॥ 7 ॥
दादू मनसा वाचा कर्मणा, साहिब का विश्वास।
सेवक सिरजनहार का, करे कौन की आस? 8 ॥
शर्म न आवै जीव को, अनकिया सब होइ।
दादू मारग मिहर का, बिरला बूझै कोइ ॥ 9 ॥
दादू उद्यम औगुण को नहीं, जे कर जाणै कोइ।
उद्यम में आनन्द है, जे सांई सेती होइ ॥ 10 ॥
दादू पूरणहारा पूरसी, जो चित रहसी ठाम।
अन्तर तैं हरि उमग सी, सकल निरंतर राम ॥ 11 ॥
पूरक पूरा पास है, नाहीं दूर, गँवार।
सब जानत हैं, बावरे ! देबे को हुसियार ॥ 12 ॥
दादू चिन्ता राम को, समर्थ सब जाणै।
दादू राम संभाल ले, चिंता जनि आणै ॥ 13 ॥
दादू चिन्ता कियां कुछ नहीं, चिंता जीव को खाइ।
होना था सो ह्वै रह्या, जाना है सो जाइ ॥ 14 ॥

प्रतिपाल

दादू जिन पहुँचाया प्राण को, उदर उर्ध्व मुख खीर।
जठर अग्नि में राखिया, कोमल काया शरीर ॥ 15 ॥
दादू समर्थ संगी संग रहै, विकट घाट घट भीर।
सो सांई सूं गहगही, जनि भूलै मन बीर ॥ 16 ॥

गोविन्द के गुण चिंत कर, नैन, बैन, पग, शीश।
जिन मुख दिया कान, कर प्राणनाथ जगदीश ।। 17 ।।
तन मन सौंज सँवार सब, राखै बिसवा बीस।
सो साहिब सुमिरै नहीं, दादू भान हदीस ।। 18 ।।
दादू सो साहब जनि विसरै, जिन घट दिया जीव।
गर्भवास में राखिया, पालै पोषै पीव ।। 19 ।।
दादू राजिक रिजक लिये खड़ा, देवे हाथों हाथ।
पूरक पूरा पास है, सदा हमारे साथ ।। 20 ।।
हिरदै राम सँभाल ले, मन राखै विश्वास।
दादू समर्थ सांइयां, सब की पूरै आस ।। 21 ।।
दादू सांई सबन को, सेवक ह्वै सुख देइ।
अया मूढ मति जीव की, तो भी नाम न लेइ ।। 22 ।।
दादू सिरजनहारा सबन का, ऐसा है समरत्थ।
सोई सेवक ह्वै रह्या, जहँ सकल पसारैं हत्थ ।। 23 ।।

समर्थ साक्षीभूत

धनि धनि साहिब तू बड़ा, कौन अनुपम रीत।
सकल लोक सिर सांइयां, ह्वै कर रह्या अतीत ।। 24 ।।
दादू हौं बलिहारी सुरति की, सबकी करै सँभाल।
कीड़ी कुंजर पलक में, करता है प्रतिपाल ।। 25 ।।

विश्वास

दादू छाजन भोजन सहज में, संइयाँ देइ सो लेइ।
तातैं अधिका और कुछ, सो तूं कांई करेइ ।। 26 ।।
दादू टूका सहज का, संतोषी जन खाइ।
मृतक भोजन, गुरुमुखी काहे कलपै जाइ ।। 27 ।।
दादू भाड़ा देह का, तेता सहज विचार।
जेता हरि बिच अंतरा, तेता सबै निवार ।। 28 ।।

दादू जल दल राम का, हम लेवैं परसाद।
संसार का समझैं नहीं, अविगत भाव अगाध ॥ 29 ॥
परमेश्वर के भाव का, एक कणूँका खाइ।
दादू जेता पाप था, भ्रम कर्म सब जाइ ॥ 30 ॥
दादू कौण पकावै, कौण पीसै, जहाँ तहाँ सीधा ही दीसै ॥ 31 ॥
दादू जे कुछ खुसी खुदाइ की, होवेगा सोई।
पच पच कोई जनि मरै, सुन लीज्यो लोई ॥ 32 ॥
दादू छूट खुदाइ कहीं को नांही, फिरिहो पृथ्वी सारी।
दूजी दहन दूर कर बौरे, साधू शब्द विचारी ॥ 33 ॥
दादू बिना राम कहीं को नांही, फिरिहो देश विदेशा।
दूजी दहन दूर कर बौरे, सुनि यहु साधु संदेशा ॥ 34 ॥
दादू सिदक सबूरी साच गह, साबित राख यकीन।
साहिब सौं दिल लाइ रहु, मुरदा ह्वै मसकीन ॥ 35 ॥
दादू अनवांछित टूका खात हैं, मर्महि लागा मन।
नाम निरंजन लेत हैं, यों निर्मल साधु जन ॥ 36 ॥
अनबांछा आगे पड़ै, खिरा विचार रु खाइ।
दादू फिरै न तोड़ता, तरुवर ताक न जाइ ॥ 37 ॥
अनबांछा आगे पड़ै, पीछे लेइ उठाइ।
दादू के सिर दोष यहु, जे कुछ राम रजाइ ॥ 38 ॥
अनबांछी अजगैब की, रोजी गगन गिरास।
दादू सत करि लीजिये, सो सांई के पास ॥ 39 ॥

कर्त्ता कसौटी

मीठे का सब मीठा लागै, भावै विष भर देइ।
दादू कड़वा ना कहै, अमृत कर कर लेइ ॥ 40 ॥

विपति भली हरि नाम सौं, काया कसौटी दुख।
राम बिना किस काम का, दादू संपति सुख ।। 41 ।।

विश्वास संतोष

दादू एक बेसास बिन, जियरा डावांडोल।
निकट निधि दुःख पाइये, चिंतामणि अमोल ।। 42 ।।
दादू बिन बेसासी जीयरा, चंचल नांही ठौर।
निश्चय निश्चल ना रहै, कछू और की और ।। 43 ।।
दादू होना था सो ह्वै रह्या, स्वर्ग न बांछी धाइ।
नरक कनै थी ना डरी, हुआ सो होसी आइ ।। 44 ।।
दादू होना था सो ह्वै रह्या, जनि बांछे सुख दुःख।
सुख मांगे दुख आइसी, पै पीव न विसारी मुख ।। 45 ।।
दादू होना था सो ह्वै रह्या, जे कुछ किया पीव।
पल बधै न छिन घटै, ऐसी जानी जीव ।। 46 ।।
दादू होना था सो ह्वै रह्या, और न होवै आइ।
लेना था सो ले रह्या, और न लिया जाइ ।। 47 ।।
ज्यों रचिया त्यों होइगा, काहे को सिर लेह।
साहिब ऊपरि राखिये, देख तमाशा येह ।। 48 ।।

पतिव्रता निष्काम

ज्यों जाणों त्यों राखियो, तुम सिर डाली राइ।
दूजा को देखूं नहीं, दादू अनत न जाइ ।। 49 ।।
ज्यों तुम भावै त्यों खुसी, हम राजी उस बात।
दादू के दिल सिदक सौं, भावै दिन को रात ।। 50 ।।
दादू करणहार जे कुछ किया, सो बुरा न कहना जाइ।
सोई सेवक संत जन, रहबा राम रजाइ ।। 51 ।।

विश्वास-संतोष

दादू कर्त्ता हम नहीं, कर्त्ता औरै कोइ।
कर्त्ता है सो करेगा, तूं जनि कर्त्ता होइ ॥ 52 ॥

हरि भरोसा

काशी तज मगहर गया, कबीर भरोसे राम।
सैंदेही सांई मिल्या, दादू पूरे काम ॥ 53 ॥

दादू रोजी राम है, राजिक रिजक हमार।
दादू उस प्रसाद सौं, पोष्या सब परिवार ॥ 54 ॥

पंच संतोषे एक सौं, मन मतिवाला मांहि।
दादू भागी भूख सब, दूजा भावै नांहि ॥ 55 ॥

दादू साहिब मेरे कापड़े, साहिब मेरा खाण।
साहिब सिर का ताज है, साहिब पिंड प्राण ॥ 56 ॥

विनती

सांई सत संतोष दे, भाव भक्ति विश्वास।
सिदक सबूरी साँच दे, माँगे दादू दास ॥ 57 ॥

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य

उन्नीसवां विश्वास काअंग सम्पूर्ण ॥ अंग 19 ॥ साखी 57 ॥
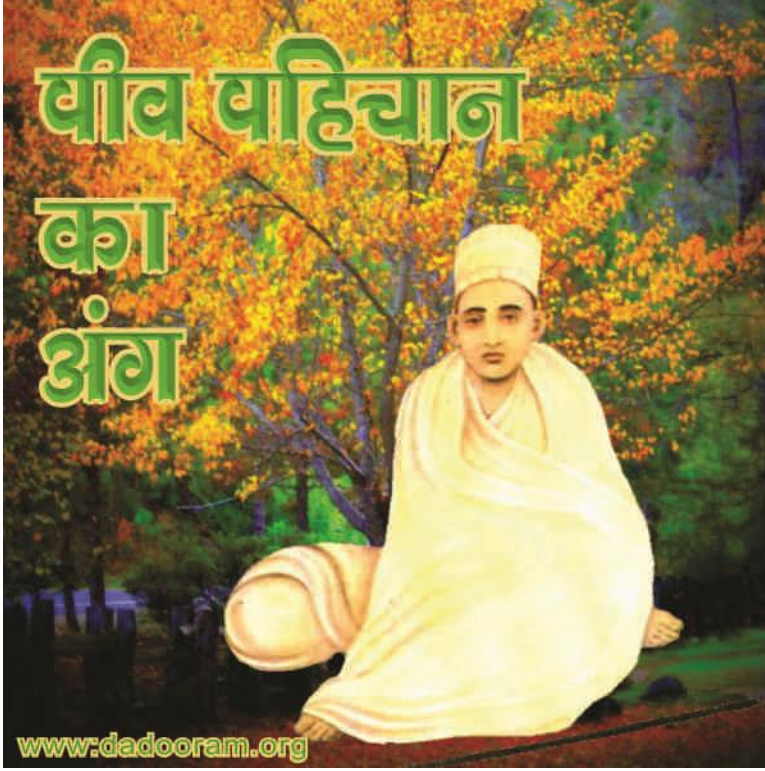
अथ पीव पहिचान का अंग २०

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः ।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ।। 1 ।।

सारों के सिर देखिये, उस पर कोई नांहि ।
दादू ज्ञान विचार कर, सो राख्या मन मांहि ।। 2 ।।

सब लालों सिर लाल है, सब खूबों सिर खूब ।
सब पाकों सिर पाक है, दादू का महबूब ।। 3 ।।

परब्रह्म परापरं, सो मम देव निरंजनम् ।
निराकारं निर्मलं, तस्य दादू वंदनम् ।। 4 ।।

एक तत्त्व ता ऊपर इतनी, तीन लोक ब्रह्मंडा।
धरती गगन पवन अरु पानी, सप्त द्वीप नौ खंडा ॥ 5 ॥
चंद सूर चौरासी लख, दिन अरु रैणी, रच ले सप्त समंदा।
सवा लाख मेरु गिरि पर्वत, अठारह भार, तीर्थ व्रत ता ऊपर मंडा।
चौदह लोक रहैं सब रचना, दादू दास तास घर बंदा ॥ 6 ॥
दादू जिन यहु एती कर धरी, थंभ बिन राखी।
सो हम को क्यों बीसरै, संत जन साखी ॥ 7 ॥
दादू जिन प्राण पिंड हमको दिया, अंतरि सेवे ताहि।
जे आवे औसाण सिर, सोई नाम संबाहि ॥ 8 ॥
दादू जिन मुझ को पैदा किया, मेरा साहिब सोइ।
मैं बन्दा उस राम का, जिन सिरज्या सब कोइ ॥ 9 ॥
दादू एक सगा संसार में, जिन हम सिरजे सोइ।
मनसा वाचा कर्मणा, और न दूजा कोइ ॥ 10 ॥
जे था कंत कबीर का, सोई वर वरहूँ।
मनसा वाचा कर्मणा, मैं और न करहूँ ॥ 11 ॥
दादू सबका साहिब एक है, जाका परगट नांव।
दादू सांई शोध ले, ताकी मैं बलि जांव ॥ 12 ॥
साचा सांई शोध कर, साचा राखी भाव।
दादू साचा नाम ले, साचे मारग आव ॥ 13 ॥
साचा सतगुरु शोध ले, साचे लीजे साध।
साचा साहिब शोध कर, दादू भक्ति अगाध ॥ 14 ॥
जामै मरै सो जीव है, रमता राम न होइ।
जामण मरण तैं रहित है, मेरा साहिब सोइ ॥ 15 ॥
उठे न बैसे एक रस, जागै सोवै नांहि।
मरै न जीवै जगतगुरु, सब उपज खपै उस मांहि ॥ 16 ॥

ना वह जामै ना मरै, ना आवै गर्भवास।
दादू ऊंधे मुख नहीं, नरक कुंड दस मास ॥ 17 ॥
कृत्रिम नहीं सो ब्रह्म है, घटै बधै नहिं जाइ।
पूरण निश्चल एक रस, जगत न नाचे आइ ॥ 18 ॥
उपजै विनशै गुण धरै, यहु माया का रूप।
दादू देखत थिर नहीं, क्षण छांहीं क्षण धूप ॥ 19 ॥
जे नांही सो ऊपजै, है सो उपजै नांहि।
अलख आदि अनादि है, उपजै माया मांहि ॥ 20 ॥

शिष्य जिज्ञासा

जे यहु कर्ता जीव था, संकट क्यों आया ?
कर्मों के वश क्यों भया, क्यों आप बंधाया ? 21 ॥

उत्तर जीव लक्षण

दादू कृत्रिम काल वश, बंध्या गुण मांही।
उपजै विनशै देखतां, यहु कर्त्ता नांही ॥ 22 ॥
जाती नूर अल्लाह का, सिफाती अरवाह।
सिफाती सिजदा करै, जाती बेपरवाह ॥ 23 ॥
खंड खंड निज ना भया, इकलस एकै नूर।
ज्यों था त्यों ही तेज है, ज्योति रही भरपूर ॥ 24 ॥
परम तेज प्रकाश है, परम नूर निवास।
परम ज्योति आनन्द में, हंसा दादू दास ॥ 25 ॥
परम तेज परापरं, परम ज्योति परमेश्वरं।
स्वयं ब्रह्म सदई सदा, दादू अविचल स्थिरं ॥ 26 ॥
अविनाशी साहिब सत्य है, जे उपजै विनशै नांहि।
जेता कहिये काल मुख, सो साहिब किस मांहि ॥ 27 ॥
सांई मेरा सत्य है, निरंजन निराकार।
दादू विनशै देखतां, झूठा सब आकार ॥ 28 ॥

राम रटण छाड़ै नहीं, हरि लै लागा जाइ।
बीचैं ही अटकै नहीं, कला कोटि दिखलाइ ॥ 29 ॥
उरैं ही अटकै नहीं, जहाँ राम तहँ जाइ।
दादू पावै परम सुख, विलसै वस्तु अघाइ ॥ 30 ॥
दादू उरैं ही उरझे घणे, मूये गल दे पास।
ऐन अंग जहँ आप था, तहाँ गये निज दास ॥ 31 ॥
सेवा का सुख प्रेम रस, सेज सुहाग न देइ।
दादू बाहे दास को, कहै दूजा सब लेइ ॥ 32 ॥

सुन्दरी विलाप

पर पुरषा सब परिहरे, सुन्दरि देखे जाग।
अपना पीव पिछाण कर, दादू रहिये लाग ॥ 33 ॥
आन पुरुष हूँ बहिनड़ी, परम पुरुष भर्तार।
हौं अबला समझूं नहीं, तूं जाणै कर्तार ॥ 34 ॥
लोहा माटी मिलि रह्या, दिन दिन काई खाइ।
दादू पारस राम बिन, कतहुँ गया विलाइ ॥ 35 ॥
लोहा पारस परस कर, पलटै अपणा अंग।
दादू कंचन ह्वै रहै, अपने सांई संग ॥ 36 ॥
दादू जिहिं परसे पलटै प्राणियाँ, सोई निज कर लेह।
लोहा कंचन ह्वै गया, पारस का गुण येह ॥ 37 ॥

विचार परचै जिज्ञासु उपदेश

दहदिशि फिरै सो मन है, आवै जाय सो पवन।
राखणहारा प्राण है, देखणहारा ब्रह्म ॥ 38 ॥

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्तियोगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य बीसवां पीव पहिचान काअंग सम्पूर्ण ॥ अंग 20 ॥ साखी 38 ॥
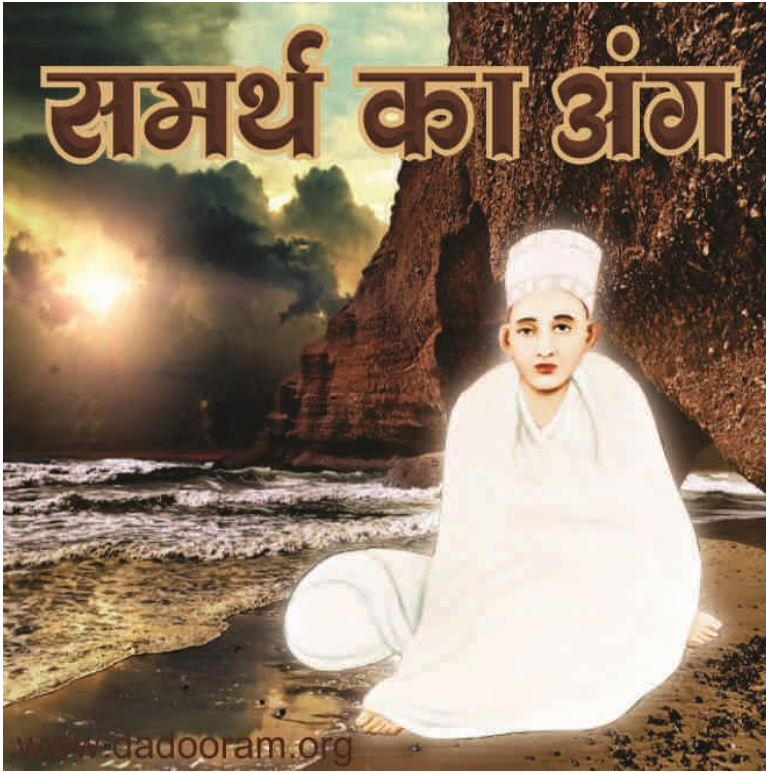
अथ समर्थता का अंग २१

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ।। 1 ।।

दादू कर्त्ता करै तो निमष मैं, कीड़ी कुंजर होइ।
कुंजर तैं कीड़ी करै, मेट सकै नहिं कोइ ।। 2 ।।

दादू कर्त्ता करै तो निमष में, राई मेरु समान।
मेरु को राई करै, तो को मेटै फरमान ।। 3 ।।

दादू कर्त्ता करै तो निमष में, जल मांही थल थाप।
थल मांही जलहर करै, ऐसा समर्थ आप ।। 4 ।।

दादू कर्त्ता करै तो निमष में, ठाली भरै भंडार।
भरिया गह ठाली करै, ऐसा सिरजनहार ।। 5 ।।
दादू धरती को अम्बर करै, अम्बर धरती होइ।
निशि अँधियारी दिन करै, दिन को रजनी सोइ ।। 6 ।।
मृतक काढ मसाण तैं, कहु कौन चलावै।
अविगत गति नहिं जाणिये, जग आन दिखावै ।। 7 ।।
दादू गुप्त गुण परगट करै, परगट गुप्त समाइ।
पलक मांहि भानै घड़ै, ताकी लखी न जाइ ।। 8 ।।

पोषपाल रक्षक

दादू सोई सही साबित हुआ, जा मस्तक कर देइ।
गरीब निवाजे देखतां, हरि अपना कर लेइ ।। 9 ।।

सूक्ष्म मार्ग

दादू सब ही मारग सांइयाँ, आगै एक मुकाम।
सोई सन्मुख कर लिया, जाही सेती काम ।। 10 ।।

पोष प्रतिपाल रक्षक

मीरां मुझ सौं महर कर, सिर पर दीया हाथ।
दादू कलियुग क्या करै, सांई मेरा साथ ।। 11 ।।

ईश्वर समर्थाई

दादू समर्थ सब विधि सांइयाँ, ताकी मैं बलि जाऊँ।
अंतर एक जु सो बसै, औरां चित्त न लाऊँ।। 12 ।।

सूक्ष्म मार्ग

दादू मार्ग महर का, सुखी सहज सौं जाइ।
भवसागर तैं काढ कर, अपणे लिये बुलाइ ।। 13 ।।

ईश्वर समर्थाई

दादू जे हम चिन्तवैं, सो कछु न होवै आइ।
सोई कर्त्ता सत्य है, कुछ औरै कर जाइ ।। 14 ।।

एकौं लेइ बुलाइ कर, एकौं देइ पठाइ।
दादू अद्‍भुत साहिबी, क्यों ही लखी न जाइ ।। 15 ।।
ज्यों राखै त्यों रहेंगे, अपने बल नांही।
सबै तुम्हारे हाथ है, भाज कत जांही ।। 16 ।।
दादू डोरी हरि के हाथ है, गल मांही मेरे।
बाजीगर का बांदरा, भावै तहाँ फेरे ।। 17 ।।
ज्यों राखै त्यों रहेंगे, मेरा क्या सारा।
हुक्मी सेवक राम का, बन्दा बेचारा ।। 18 ।।
साहिब राखै तो रहे, काया मांही जीव।
हुक्मी बन्दा उठ चले, जब ही बुलावे पीव ।। 19 ।।

पति पहचान

खंड खंड प्रकाश है, जहाँ तहाँ भरपूर।
दादू कर्त्ता कर रह्या, अनहद बाजै तूर ।। 20 ।।

ईश्वर समर्थाई

दादू दादू कहत हैं, आपै सब घट मांहि।
अपनी रुचि आपै कहैं, दादू तैं कुछ नांहि ।। 21 ।।
दादू हम तैं हुआ न होइगा, ना हम करणे जोग।
ज्यों हरि भावै त्यों करै, दादू कहैं सब लोग ।। 22 ।।
दादू दूजा क्यों कहै, सिर पर साहिब एक।
सो हम कौं क्यों बीसरै, जे जुग जाहिं अनेक।। 23 ।।

समर्थ साक्षीभूत

आप अकेला सब करै, औरों के सिर देइ।
दादू शोभा दास को, अपना नाम न लेइ ।। 24 ।।
आप अकेला सब करै, घट में लहरि उठाइ।
दादू सिर दे जीव के, यों न्यारा ह्वै जाइ ।। 25 ।।

ईश्वर समर्थता

ज्यों यहु समझै त्यों कहो, यहु जीव अज्ञानी।
जेती बाबा तैं कही, इन इक न मानी ॥ 26 ॥
दादू परचा माँगें लोग सब, कहैं हमकौं कुछ दिखलाइ।
समरथ मेरा सांइयाँ, ज्यों समझैं त्यों समझाइ ॥ 27 ॥
दादू तन मन लाइ कर, सेवा दृढ़ कर लेइ।
ऐसा समर्थ राम है, जे मांगै सो देइ ॥ 28 ॥

समर्थ साक्षीभूत

समर्थ सो सेरी समझाइनैं, कर अणकर्ता होइ।
घट घट व्यापक पूर सब, रहै निरंतर सोइ ॥ 29 ॥
रहै नियारा सब करै, काहू लिप्त न होइ।
आदि अंत भानै घड़ै, ऐसा समर्थ सोइ ॥ 30 ॥

कर्त्ता साक्षीभूत

श्रम नहीं सब कुछ करै, यों कल धरी बनाइ।
कौतिकहारा ह्वै रह्या, सब कुछ होता जाइ ॥ 31 ॥
लिपै छिपै नहिं सब करै, गुण नहिं व्यापे कोइ।
दादू निश्चल एक रस, सहजैं सब कुछ होइ ॥ 32 ॥
बिन गुण व्यापे सब किया, समर्थ आपै आप।
निराकार न्यारा रहै, दादू पुन्य न पाप ॥ 33 ॥

ईश्वर समर्थाई

समता के घर सहज में, दादू दुविध्या नांहि।
सांई समर्थ सब किया, समझि देख मन मांहि ॥ 34 ॥
पैदा किया घाट घड़, आपै आप उपाइ।
हिकमत हुनर कारीगरी, दादू लखी न जाइ ॥ 35 ॥
यंत्र बजाया साज कर, कारीगर करतार।
पंचों का रस नाद है, दादू बोलणहार ॥ 36 ॥

पंच ऊपना शब्द तैं, शब्द पंच सौं होइ।
सांई मेरे सब किया, बूझे बिरला कोइ ।। 37 ।।
है तो रती, नहीं तो नांहीं, सब कुछ उत्पति होइ।
हुक्मैं हाजिर सब किया, बूझे बिरला कोइ ।। 38 ।।
नहीं तहाँ तैं सब किया, आपै आप उपाइ।
निज तत न्यारा ना किया, दूजा आवै जाइ ।। 39 ।।
नहीं तहाँ तैं सब किया, फिर नांहीं ह्वै जाइ।
दादू नांहीं होइ रहु, साहिब सौं ल्यौ लाइ ।। 40 ।।
दादू खालिक खेलै खेल कर, बूझै बिरला कोइ।
लेकर सुखिया ना भया, देकर सुखिया होइ ।। 41 ।।
देबे की सब भूख है, लेबे की कुछ नांहि।
सांई मेरे सब किया, समझि देख मन मांहि ।। 42 ।।

कस्तूत कर्म

दादू जे साहिब सिरजै नहीं, तो आपै क्यों कर होइ।
जे आप ही ऊपजै, तो मर कर जीवै कोइ ।। 43 ।।
कर्म फिरावैं जीव को, कर्मों को करतार।
करतार को कोई नहीं, दादू फेरनहार ।। 44 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्तियोगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य इक्कीसवां समर्थता काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 21 ।। साखी 44 ।।
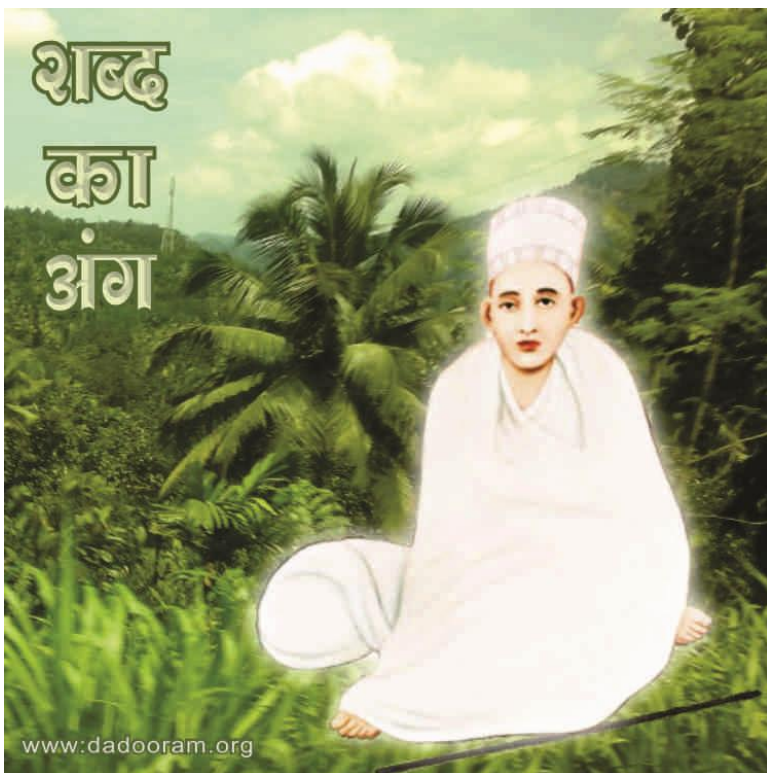
अथ शब्द का अंग २२

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः ।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ।। 1 ।।

आत्म बोधक गुरु उपदेश शब्द की महिमा

दादू शब्दैं बँध्या सब रहै, शब्दैं ही सब जाइ ।
शब्दैं ही सब ऊपजै, शब्दैं सबै समाइ ।। 2 ।।

दादू शब्दैं ही सचु पाइये, शब्दैं ही संतोंख ।
शब्दैं ही सुस्थिर भया, शब्दैं भागा शोक ।। 3 ।।

दादू शब्दैं ही सूक्ष्म भया, शब्दैं सहज समान।
शब्दैं ही निर्गुण मिले, शब्दैं निर्मल ज्ञान ॥ 4 ॥
दादू शब्दैं ही मुक्ता भया, शब्दैं समझे प्राण।
शब्दैं ही सूझे सबै, शब्दैं सुरझे जाण ॥ 5 ॥

सृष्टि क्रम

दादू ओंकार तैं ऊपजै, अरस परस संजोग।
अंकुर बीज द्वै पाप पुण्य, इहि विधि जोग रु भोग ॥ 6 ॥
ओंकार तैं ऊपजै, विनशै बहुत विकार।
भाव भक्ति लै थिर रहै, दादू आतम सार ॥ 7 ॥
पहली किया आप तैं, उत्पत्ति ओंकार।
ओंकार तैं ऊपजै, पंच तत्त्व आकार ॥ 8 ॥
पंच तत्त्व तैं घट भया, बहु विधि सब विस्तार।
दादू घट तैं ऊपजै, मैं तैं वर्ण विकार ॥ 9 ॥
एक शब्द सब कुछ किया, ऐसा समर्थ सोइ।
आगै पीछे तो करै, जे बलहीना होइ ॥ 10 ॥
निरंजन निराकार है, ओंकार आकार।
दादू सब रंग रूप सब, सब विधि सब विस्तार ॥ 11 ॥
आदि शब्द ओंकार है, बोलै सब घट माँहि।
दादू माया विस्तरी, परम तत्त यहु नांहि ॥ 12 ॥

ईश्वर समर्थाई

पैदा किया घाट घड़, आपै आप उपाइ।
हिक मत हुनर कारीगरी, दादू लखी न जाइ ॥ 13 ॥
यंत्र बजाया साज कर, कारीगर करतार।
पंचों का रस नाद है, दादू बोलनहार ॥ 14 ॥

पंच ऊपना शब्द तैं, शब्द पंच सौं होइ।
सांई मेरे सब किया, बूझै विरला कोइ ।। 15 ।।
दादू एक शब्द सौं ऊनवै, वर्षन लागै आइ।
एक शब्द सौं बीखरै, आप आपको जाइ ।। 16 ।।
दादू साधु शब्द सौं मिल रहै, मन राखै बिलमाइ।
साधु शब्द बिन क्यों रहै, तब ही बीखर जाइ ।। 17 ।।
दादू शब्द जरै सो मिल रहै, एक रस पूरा।
कायर भाजै जीव ले, पग मांडै शूरा ।। 18 ।।
शब्द विचारै करणी करै, राम नाम निज हिरदै धरै।
काया मांहीं शोधै सार, दादू कहै लहै सो पार ।। 19 ।।
दादू काहे कौड़ी खर्चिये, जे पैके सीझै काम।
शब्दों कारज सिध भया, तो सुरम न दीजै राम ।। 20 ।।
दादू राम हृदय रस भेलि कर, को साधु शब्द सुनाइ।
जानो कर दीपक दिया, भ्रम तिमिर सब जाइ ।। 21 ।।
दादू वाणी प्रेम की, कमल विकासै होहि।
साधु शब्द माता कहैं, तिन शब्दों मोह्या मोहि ।। 22 ।।
दादू हरि भुरकी वाणी साधु की, सो परियो मेरे शीश।
छूटे माया मोह तैं, प्रेम भजन जगदीश ।। 23 ।।
दादू भुरकी राम है, शब्द कहैं गुरु ज्ञान।
तिन शब्दों मन मोहिया, उनमन लागा ध्यान ।। 24 ।।
दादू वाणी ब्रह्म की, अनभै घट प्रकाश।
राम अकेला रह गया, शब्द निरंजन पास ।। 25 ।।
शब्दों माहिं राम धन, जे कोई लेइ विचार।
दादू इस संसार में, कबहुं न आवे हार ।। 26 ।।

दादू राम रसायन भर धर्या, साधुन शब्द मंझार।
कोई पारखि पीवै प्रीति सौं, समझै शब्द विचार ।। 27 ।।
शब्द सरोवर सुभर भर्या, हरि जल निर्मल नीर।
दादू पीवै प्रीति सौं, तिन के अखिल शरीर ।। 28 ।।
शब्दों मांहिं राम-रस, साधों भर दीया।
आदि अंत सब संत मिलि, यों दादू पीया ।। 29 ।।

गुरुमुख कसौटी

कारज को सीझै नहीं, मीठा बोलै बीर।
दादू साचे शब्द बिन, कटै न तन की पीर ।। 30 ।।

शब्द

दादू गुण तजि निर्गुण बोलिये, तेता बोल अबोल।
गुण गहि आपा बोलिये, तेता कहिये बोल ।। 31 ।।
साचा शब्द कबीर का, मीठा लागै मोहि।
दादू सुनतां परम सुख, केता आनन्द होहि ।। 32 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
बाईसवां शब्द काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 22 ।। साखी 32 ।।
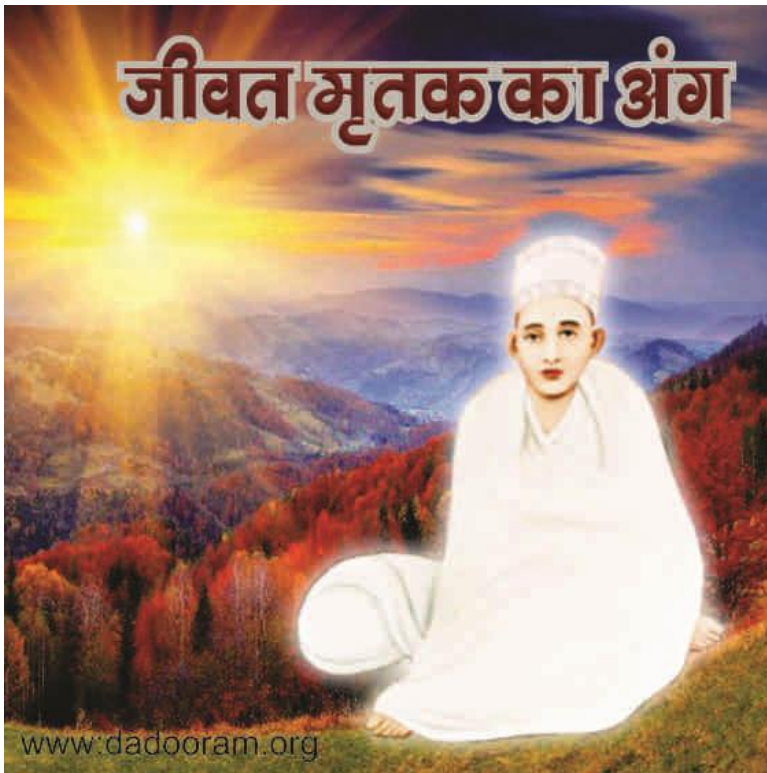
अथ जीवित मृतक का अंग २३

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ।। 1 ।।

धरती मत आकाश का, चंद सूर का लेइ।
दादू पानी पवन का, राम नाम कहि देइ ।। 2 ।।

दादू धरती ह्वै रहै, तज कूड़ कपट अहंकार।
सांई कारण सिर सहै, ताको प्रत्यक्ष सिरजनहार ।। 3 ।।

जीवित माटी मिल रहै, सांई सन्मुख होइ।
दादू पहली मर रहै, पीछे तो सब कोइ ।। 4 ।।

दीनता–गरीबी

दादू आपा गर्ब गुमान तज, मत मत्सर अहंकार।
गहै गरीबी बन्दगी, सेवा सिरजनहार ॥ 5 ॥
मद मत्सर आपा नहीं, कैसा गर्व गुमान।
सपनै ही समझै नहीं, दादू क्या अभिमान ॥ 6 ॥
झूठा गर्व गुमान तज, तज आपा अभिमान।
दादू दीन गरीब ह्वै, पाया पद निर्वाण ॥ 7 ॥
जीवित मृतक यही निशानी, दुर्बल देही निर्मल वाणी।
दादू भाव भक्ति दीनता अंग, प्रेम प्रीति सदा तिहिं संग ॥ 8 ॥
तब साहिब को सिजदा किया, जब सिर धर्‍या उतार।
यों दादू जीवित मरै, हिर्स हवा को मार ॥ 9 ॥
दादू राव रंक सब मरेंगे, जीवै नाहीं कोइ।
सोई कहिये जीवता, जे मरजीवा होइ ॥ 10 ॥
दादू मेरा वैरी मैं मुवा, मुझे न मारै कोइ।
मैं ही मुझको मारता, मैं मरजीवा होइ ॥ 11 ॥
वैरी मारे मरि गये, चित तैं विसरे नांहि।
दादू अजहूँ साल है, समझ देख मन मांहि ॥ 12 ॥

उभै असमाव

दादू तो तूं पावै पीव को, जे जीवित मृतक होइ।
आप गँवाये पीव मिलै, जानत हैं सब कोइ ॥ 13 ॥
दादू तो तूं पावै पीव का, आपा कुछ न जान।
आपा जिस तैं ऊपजै, सोई सहज पिछान ॥ 14 ॥
दादू तो तूं पावै पीव को, मैं मेरा सब खोइ।
मैं मेरा सहजैं गया, तब निर्मल दर्शन होइ ॥ 15 ॥
मैं ही मेरे पोट सिर, मरिये ताके भार।
दादू गुरु प्रसाद सौं, सिर तैं धरी उतार ॥ 16 ॥

मेरे आगे मैं खड़ा, ता तैं रह्या लुकाइ।
दादू प्रकट पीव है, जे यहु आपा जाइ ।। 17 ।।

सूक्ष्म–मार्ग

दादू जीवित मृतक होइ कर, मारग मांही आव।
पहली शीश उतार कर, पीछे धरिये पांव ।। 18 ।।

दादू मारग साधु का, खरा दुहेला जान।
जीवित मृतक ह्वै चलै, राम नाम नीशान ।। 19 ।।

दादू मारग कठिन है, जीवित चलै न कोइ।
सोई चलि है बापुरा, जो जीवित मृतक होइ ।। 20 ।।

मृतक होवै सो चलै, निरंजन की बाट।
दादू पावै पीव को, लंघै औघट घाट ।। 21 ।।

जीवित मृत्तक

दादू मृतक तब ही जानिये, जब गुण इंद्रिय नांहि।
जब मन आपा मिट गया, तब ब्रह्म समाना मांहि ।। 22 ।।

दादू जीवित ही मर जाइये, मर माँही मिल जाइ।
सांई का संग छाड़ कर, कौन सहै दुख आइ ।। 23 ।।

उभय निर्दोष

दादू आपा कहा दिखाइये, जे कुछ आपा होइ।
यहु तो जाता देखिये, रहता चीन्हों सोइ ।। 24 ।।

दादू आप छिपाइये, जहाँ न देखै कोइ।
पीव को देख दिखाइये, त्यों त्यों आनन्द होइ ।। 25 ।।

आपा निर्दोष

दादू अंतरगति आपा नहीं, मुख सौं मैं तैं होइ।
दादू दोष न दीजिये, यों मिल खेलैं दोइ ।। 26 ।।

जे जन आपा मेट कर, रहैं राम ल्यौ लाइ।
दादू सब ही देखतां, साहिब सौं मिल जाइ ।। 27 ।।

दीनता गरीबी

गरीब गरीबी गह रह्या, मसकीनी मसकीन।
दादू आपा मेट करि, होइ रह्या लै लीन ।। 28 ।।

उभय असमाव

मैं हूँ मेरी जब लगै, तब लग विलसै खाइ।
मै नाहीं मेरी मिटै, तब दादू निकट न जाइ ।। 29 ।।

दादू मना मनी सब ले रहे, मनी न मेटी जाइ।
मना मनी जब मिट गई, तब ही मिले खुदाइ ।। 30 ।।

दादू मैं मैं जाल दे, मेरे लागो आग।
मैं मैं मेरा दूर कर, साहिब के संग लाग ।। 31 ।।

दादू मैं नांहीं तब एक है, मैं आई तब दोइ।
मैं तैं पड़दा मिटि गया, तब ज्यों था त्यों ही होइ ।। 32 ।।

मनमुखी मान

दादू खोई आपणी, लज्जा कुल की कार।
मान बड़ाई पति गई, तब सन्मुख सिरजनहार ।। 33 ।।

परचै करूणा बिनती

नूर सरीखा कर लिया, बंदों का बंदा।
दादू दूजा को नहीं, मुझ सरीखा गंदा ।। 34 ।।

जीवत मृत्तक

दादू सीख्यों प्रेम न पाइये, सीख्यों प्रीति न होइ।
सीख्यों दरद न ऊपजै, जब लग आप न खोइ ।। 35 ।।

कहबा सुनबा गत भया, आपा पर का नाश।
दादू मैं तैं मिट गया, पूर्ण ब्रह्म प्रकाश ।। 36 ।।

दादू सांई कारण मांस का, लोही पानी होइ।
सूखे आटा अस्थि का, दादू पावै सोइ ।। 37 ।।

तन मन मैदा पीसकर, छांण छांण ल्यौ लाइ।
यों बिन दादू जीव का, कबहूँ साल न जाइ ।। 38 ।।
पीसे ऊपर पीसिये, छांणे ऊपर छांण।
तो आत्म कण ऊबरै, दादू ऐसी जाण ।। 39 ।।
पहली तन मन मारिये, इनका मर्दे मान।
दादू काढे जंत्र में, पीछे सहज समान ।। 40 ।।
काटे ऊपर काटिये, दाधे को दौं लाइ।
दादू नीर न सींचिये, तो तरुवर बधता जाइ ।। 41 ।।
दादू सबको संकट एक दिन, काल गहैगा आइ।
जीवित मृतक ह्वै रहै, ताके निकट न जाइ ।। 42 ।।
दादू जीवित मृतक ह्वै रहै, सबको विरक्त होइ।
काढ़ो काढ़ो सब कहैं, नाम न लेवै कोइ ।। 43 ।।

जरणा

सारा गहिला ह्वै रहै, अन्तरयामी जाणि।
तो छूटै संसार तैं, रस पीवै सारंगपाणि ।। 44 ।।
गूंगा गहिला बावरा, सांई कारण होइ।
दादू दीवाना ह्वै रहै, ताको लखै न कोइ ।। 45 ।।

जीवत मृत्तक

जीवित मृतक साधु की, वाणी का परकास।
दादू मोहे रामजी, लीन भये सब दास ।। 46 ।।
दादू जे तूं मोटा मीर है, सब जीवों में जीव।
आपा देख न भूलिये, खरा दुहेला पीव ।। 47 ।।
आपा मेट समाइ रहु, दूजा धंधा बाद।
दादू काहे पच मरै, सहजैं सुमिरण साध ।। 48 ।।

दादू आपा मेटे एक रस, मन हि स्थिर लै लीन।
अरस परस आनन्द कर, सदा सुखी सो दीन ।। 49 ।।

स्मरण नाम निस्सशंय

हम्हीं हमारा कर लिया, जीवित करणी सार।
पीछे संशय को नहीं, दादू अगम अपार ।। 50 ।।

मध्य निरपक्ष

माटी मांहि ठौर कर, माटी माटी मांहि।
दादू सम कर राखिये, द्वै पख दुविधा नांहि ।। 51 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
तेईसवां जीवत मृतक काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 23 ।। साखी 51 ।।
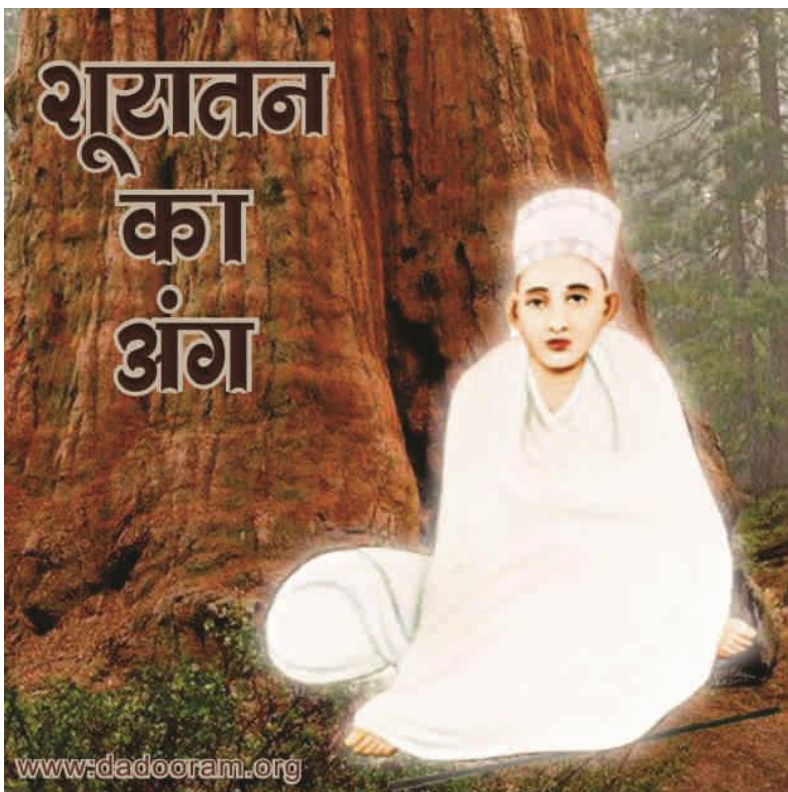
अथ शूरातन का अंग २४

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः ।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ।। 1 ।।

शूर सती साधु निर्णय

साचा सिर सौं खेलहै, यह साधुजन का काम ।
दादू मरणा आसँघै, सोई कहैगा राम ।। 2 ।।

राम कहैं ते मर कहैं, जीवित कह्या न जाइ ।
दादू ऐसैं राम कहि, सती शूर सम भाइ ।। 3 ।।

जब दादू मरबा गहै, तब लोगों की क्या लाज?
सती राम साचा कहै, सब तज पति सौं काज ।। 4 ।।

शूरवीर कायर

दादू हम काइर कड़बा कर रहे, शूर निराला होइ।
निकस खड़ा मैदान में, ता सम और न कोइ ।। 5 ।।

शूर सती साधु निर्णय

मड़ा न जीवै तो संग जलै, जीवै तो घर आण।
जीवन मरणा राम सौं, सोई सती करि जाण ।। 6 ।।
जन्म लगै व्यभिचारणी, नख शिख भरी कलंक।
पलक एक सन्मुख जली, दादू धोये अंक।। 7 ।।
स्वांग सती का पहर कर, करै कुटुम्ब का सोच।
बाहर शूरा देखिये, दादू भीतर पोच ।। 8 ।।
दादू सती तो सिरजनहार सौं, जलै विरह की झाल।
ना वह मरै न जलि बुझै, ऐसे संगि दयाल ।। 9 ।।
जे मुझ होते लाख सिर, तो लाखों देती वारि।
सह मुझ दिया एक सिर, सोई सौंपै नारि ।। 10 ।।
सती जल कोइला भई, मुये मड़े की लार।
यों जे जलती राम सौं,साचे संग भर्तार ।। 11 ।।
मुये मड़े सौं हेत क्या, जे जीव की जाणै नांहि।
हेत हरि सौं कीजिये, जे अन्तरजामी मांहि ।। 12 ।।

शूरवीर कायर

शूरा चढ़ संग्राम को, पाछा पग क्यों देहि ?
साहिब लाजै भाजतां, धृग् जीवन दादू तेहि ।। 13 ।।
सेवक शूरा राम का, सोई कहेगा राम।
दादू सूर सन्मुख रहै, नहिं कायर का काम ।। 14 ।।

कायर काम न आवही, यहु शूरे का खेत।
तन मन सौंपै राम को, दादू शीश सहेत ॥ 15 ॥
जब लग लालच जीव का, तब लग निर्भय हुआ न जाइ।
काया माया मन तजै, तब चौड़े रहै बजाइ ॥ 16 ॥
दादू चौड़े में आनन्द है, नाम धर्‌या रणजीत।
साहिब अपना कर लिया, अन्तरगत की प्रीति ॥ 17 ॥
दादू जे तुझ काम करीम सौं, तो चौहट चढ़ कर नाच।
झूठा है सो जाइगा, निहचै रहसी साच ॥ 18 ॥

जीवत मृत्तक

राम कहेगा एक को, जे जीवित–मृतक होइ।
दादू ढूंढे पाइये, कोटि मध्ये कोइ ॥ 19 ॥

शूर सती साध निर्णय

शूरा पूरा संत जन, सांई को सेवै।
दादू साहिब कारणै, सिर अपना देवै ॥ 20 ॥
शूरा झूझै खेत में, सांई सन्मुख आइ।
शूरे को सांई मिले, तब दादू काल न खाइ ॥ 21 ॥
मरबे ऊपरि एक पग, कर्ता करै सो होहि।
दादू साहिब कारणै, तालाबेली मोहि ॥ 22 ॥

हरि भरोसा

दादू अंग न खैंचिये, कहि समझाऊँ तोहि।
मोहि भरोसा राम का, बंका बाल न होहि ॥ 23 ॥
बहुत गया थोड़ा रह्या, अब जीव सोच निवार।
दादू मरणा मांड रहु, साहिब के दरबार ॥ 24 ॥

शूरवीर कायर

जीवों का संशय पड़्या, को काको तारै।
दादू सोई शूरमा, जे आप उबारै ॥ 25 ॥

जे निकसे संसार तैं, सांई की दिशि धाइ।
जे कबहुँ दादू बाहुड़े, तो पीछे मार्‍या जाइ ॥ 26 ॥
दादू कोई पीछे हेला जनि करै, आगे हेला आव।
आगे एक अनूप है, नहिं पीछे का भाव ॥ 27 ॥
पीछे को पग ना भरै, आगे को पग देइ।
दादू यहु मत शूर का, अगम ठौर को लेइ ॥ 28 ॥
आगा चल पीछा फिरै, ताका मुँह मा दीठ।
दादू देखे दोइ दल, भागे देकर पीठ ॥ 29 ॥
दादू मरणां माँड कर, रहै नहिं ल्यौ लाइ।
कायर भाजै जीव ले, आ-रण छाड़े जाइ ॥ 30 ॥
शूरा होइ सु मेर उलंघै, सब गुण बँध्या छूटै।
दादू निर्भय ह्वै रहे, कायर तिणा न टूटै ॥ 31 ॥

शूर सती साधु निर्णय

सर्प केसरी काल कुंजर, बहु जोध मारग मांहि।
कोटि में कोई एक ऐसा, मरण आसंघ जाहि ॥ 32 ॥
दादू जब जागै तब मारिये, वैरी जिय के साल।
मनसा डायनि, काम रिपु, क्रोध महाबली काल ॥ 33 ॥
पंच चोर चितवत रहैं, माया मोह विष झाल।
चेतन पहरै आपने, कर गह खड़्ग संभाल ॥ 34 ॥
काया कबज कमान कर, सार शब्द कर तीर।
दादू यहु सर सांध कर, मारै मोटे मीर ॥ 35 ॥
काया कठिन कमान है, खांचै विरला कोइ।
मारै पंचों मृगला, दादू शूरा सोइ ॥ 36 ॥
जे हरि कोप करै इन ऊपर, तो काम कटक दल जांहि कहाँ।
लालच लोभ क्रोध कत भाजैं, प्रगट रहे हरि जहाँ तहाँ ॥ 37 ॥

जीवित मृतक

तब साहिब को सिजदा किया, जब सिर धर्‍या उतार।
यों दादू जीवित्त मरै, हिर्स हवा को मार ॥ 38 ॥

शूरातन

दादू तन मन काम करीम के, आवै तो नीका।
जिसका तिसको सौंपिये, सोच क्या जी का ॥ 39 ॥
जे शिर सौंप्या राम को, सो शिर भया सनाथ।
दादू दे ऊरण भया, जिसका तिसके हाथ ॥ 40 ॥
जिसका है तिसको चढै, दादू ऊरण होइ।
पहली देवै सो भला, पीछे तो सब कोइ ॥ 41 ॥
सांई तेरे नाम पर, शिर जीव करूं कुर्बान।
तन मन तुम पर वारणै, दादू पिंड पराण ॥ 42 ॥
अपने सांई कारणै, क्या क्या नहिं कीजे?
दादू सब आरम्भ तज, अपणा शिर दीजे ॥ 43 ॥
शिर के साटै लीजिये, साहिब जी का नांव।
खेलै शीश उतार कर, दादू मैं बलि जांव ॥ 44 ॥
खेलै शीश उतार कर, अधर एक सौं आइ।
दादू पावै प्रेम रस, सुख में रहै समाइ ॥ 45 ॥

मरण भय निवारण

दादू मरणे थीं तूं मत डरै, सब जग मरता जोइ।
मिल कर मरणा राम सौं, तो कलि अजरावर होइ ॥ 46 ॥
दादू मरणे थीं तूं मत डरै, मरणा अंत निदान।
रे मन मरणा सिरजिया, कहले केवल राम ॥ 47 ॥
दादू मरणे थीं तूं मत डरै, मरणा पहुँच्या आइ।
रे मन मेरा राम कह, बेगा बार न लाइ ॥ 48 ॥

दादू मरणे थीं तूं मत डरै, मरणा आज कि काल।
मरणा मरणा क्या करै, बेगा राम सँभाल ॥ 49 ॥
दादू मरणा खूब है,निपट बुरा व्यभिचार।
दादू पति को छाड़ कर, आन भजै भरतार ॥ 50 ॥
दादू तन तैं कहाँ डराइये, जे विनश जाइ पल बार।
कायर हुआ न छूटिये, रे मन हो हुसियार ॥ 51 ॥
दादू मरणा खूब है, मर माहीं मिल जाइ।
साहिब का संग छाड़ कर, कौन सहै दुख आइ ॥ 52 ॥
दादू माहीं मन सौं झूझ कर, ऐसा शूरा वीर।
इंद्रिय अरि दल भान सब, यों कलि हुआ कबीर ॥ 53 ॥
सांई कारण शीश दे, तन मन सकल शरीर।
दादू प्राणी पंच दे, यों हरि मिल्या कबीर ॥ 54 ॥
सबै कसौटी शिर सहै, सेवक सांई काज।
दादू जीवन क्यों तजै, भाजे हरि को लाज ॥ 55 ॥
सांई कारण सब तजै, जन का ऐसा भाव।
दादू राम न छाड़िये, भावै तन मन जाव ॥ 56 ॥

पतिव्रत निष्काम

दादू सेवक सो भला, सेवै तन मन लाइ।
दादू साहिब छाड़ कर, काहू संग न जाइ ॥ 57 ॥
पतिव्रता निज पीव को, सेवै दिन अरु रात।
दादू पति को छाड़ कर, काहू संग न जात ॥ 58 ॥

शूरातन

दादू मरबो एक जु बार, अमर झुकेड़े मारिये।
तो तिरिये संसार, आतम कारज सारिये ॥ 59 ॥
दादू जे तूं प्यासा प्रेम का, तो जीवन की क्या आस।
शिर के साटे पाइये, तो भर भर पीवै दास ॥ 60 ॥

कायर

मन मनसा जीते नहीं, पंच न जीते प्राण।
दादू रिपु जीते नहीं, कहैं हम शूर सुजान ।। 61 ।।
मन मनसा मारे नहीं, काया मारण जांहि।
दादू बांबी मारिये, सर्प मरै क्यों मांहि ।। 62 ।।

शूरातन

दादू पाखर पहर कर, सब को झूझण जाइ।
अंग उघाड़े शूरवां, चोट मुँहैं मुँह खाइ ।। 63 ।।
जब झूझै तब जाणिये, काछ खड़े क्या होइ।
चोट मुँहैं मुँह खाइगा, दादू शूरा सोइ ।। 64 ।।
शूरातन सहजैं सदा, साच सेल हथियार।
साहिब के बल झूझतां, केते लिये सु मार ।। 65 ।।
दादू जब लग जिय लागैं नहीं, प्रेम प्रीति के सेल।
तब लग पिव क्यों पाइये, नहिं बाजीगर का खेल ।। 66 ।।
दादू जे तूं प्यासा प्रेम का, तो किसको सेतैं जीव।
शिर के साटै लीजिये, जे तुझ प्यारा पीव ।। 67 ।।
दादू महा जोध मोटा बली, सो सदा हमारी भीर।
सब जग रूठा क्या करै, जहाँ तहाँ रणधीर ।। 68 ।।
दादू रहते पहते राम जन, तिन भी माँड्या झूझ।
साचा मुँह मोड़ै नहीं, अर्थ इता ही बूझ ।। 69 ।।

हरि भरोसा

दादू काँधे सबल के, निर्वाहेगा और।
आसन अपने ले चल्या, दादू निश्चल ठौर ।। 70 ।।
दादू क्या बल कहा पतंग का, जलत न लागै बार।
बल तो हरि बलवंत का, जीवै जिहिं आधार ।। 71 ।।

राखणहारा राम है, शिर ऊपर मेरे।
दादू केते पच गये, बैरी बहुतेरे ॥ 72 ॥

शूरातन विनती

दादू बल तुम्हारे बापजी, गिनत न राणा राव।
मीर मलिक प्रधान पति, तुम बिन सब ही बाव ॥ 73 ॥
दादू राखी राम पर, अपणी आप संवाह।
दूजा को देखूं नहीं, ज्यों जाणैं त्यों निर्वाह ॥ 74 ॥
तुम बिन मेरे को नहीं, हमको राखणहार।
जे तूं राखै सांइयां, तो कोइ न सकै मार ॥ 75 ॥
सब जग छाड़ै हाथ तैं, तो तुम जनि छाड़हु राम।
नहिं कुछ कारज जगत सौं, तुमहीं सेती काम ॥ 76 ॥

शूरातन

दादू जाते जीव तैं तो डरूं, जे जीव मेरा होइ।
जिन यहु जीव उपाइया, सार करेगा सोइ ॥ 77 ॥
दादू जिन को सांई पाधरा, तिन बंका नांही कोइ।
सब जग रूठा क्या करै, राखणहारा सोइ ॥ 78 ॥
दादू साचा साहिब शिर ऊपरै, तती न लागै बाव।
चरण कमल की छाया रहै, किया बहुत पसाव ॥ 79 ॥

विनती

दादू कहै-जे तूं राखै सांइयां, तो मार सकै ना कोइ।
बाल न बांका कर सकै, जे जग बैरी होइ ॥ 80 ॥
दादू राखणहारा राखै, तिसे कौन मारै।
उसे कौन डुबोवे, जिसे सांई तारै ॥
बाकी कौन बिगारै, जाकी आप सुधारै।
कहै दादू सो कबहूँ न हारै, जे जन सांई संभारै ॥ 81 ॥

निर्भय बैठा राम जप, कबहूँ काल न खाइ।
जब दादू कुंजर चढै, तब सुनहाँ झख जाइ ॥ 82 ॥
कायर कूकर कोटि मिलि, भौंके अरु भागैं।
दादू गरवा गुरुमुखी, हस्ति नहीं लागैं ॥ 83 ॥
इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्तियोगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
चौबीसवां शूरातन काअंग सम्पूर्ण ॥ अंग 24 ॥ साखी 83 ॥

अथ काल का अंग २५

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

काल न सूझै कंध पर, मन चितवै बहु आश।
दादू जीव जाणै नहीं, कठिन काल की पाश ॥ 2 ॥

दादू काल हमारे कंध चढ, सदा बजावै तूर।
कालहरण कर्त्ता पुरुष, क्यों न सँभाले शूर ॥ 3 ॥

जहाँ जहाँ दादू पग धरै, तहाँ काल का फंध।
सर ऊपर सांधे खड़ा, अजहुँ न चेते अंध ॥ 4 ॥

दादू काल गिरासन का कहै, काल रहित कह सोइ।
काल रहित सुमिरण सदा, बिना गिरासन होइ ॥ 5 ॥
दादू मरिये राम बिन, जीजे राम सँभाल।
अमृत पीवै आत्मा, यों साधू बंचै काल ॥ 6 ॥
दादू यहु घट काचा जल भरा, बिनशत्त नाहीं बार।
यहु घट फूटा जल गया, समझत नहीं गँवार ॥ 7 ॥
फूटी काया जाजरी, नव ठाहर काणी।
तामें दादू क्यों रहै, जीव सरीषा पाणी ॥ 8 ॥
बाव भरी इस खाल का, झूठा गर्व गुमान।
दादू विनशै देखतां, तिसका क्या अभिमान ॥ 9 ॥
दादू हम तो मूये मांहि हैं, जीवण का रू भरम।
झूठे का क्या गर्वबा, पाया मुझे मरम ॥ 10 ॥
यहु वन हरिया देखकर, फूल्यो फिरै गँवार।
दादू यहु मन मृगला, काल अहेड़ी लार ॥ 11 ॥
सब ही दीसैं काल मुख, आपा गह कर दीन्ह।
विनशै घट आकार का, दादू जे कुछ कीन्ह ॥ 12 ॥
काल कीट तन काठ को, जरा जन्म को खाइ।
दादू दिन दिन जीव की, आयु घटंती जाइ ॥ 13 ॥
काल गिरासे जीव को, पल पल श्वासैं श्वास।
पग पग मांहि दिन घड़ी, दादू लखै न तास ॥ 14 ॥
पाव पलक की सुधि नहीं, श्वास शब्द क्या होइ।
कर मुख मांहि मेलतां, दादू लखै न कोइ ॥ 15 ॥
दादू काया कारवीं, देखत ही चल जाइ।
जब लग श्वास शरीर में, राम नाम ल्यौ लाइ ॥ 16 ॥

दादू काया कारवीं, मोहि भरोसा नांहि।
आसन कुंजर शिर छत्र, विनश जाहिं क्षण मांहि ।। 17 ।।
दादू काया कारवीं, पड़त न लागै बार।
बोलणहारा महल में, सो भी चालणहार ।। 18 ।।
दादू काया कारवीं, कदे न चालै संग।
कोटि वर्ष जे जीवना, तऊ होइला भंग ।। 19 ।।
कहतां, सुनतां, देखतां, लेतां, देतां प्राण।
दादू सो कतहुँ गया, माटी धरी मसाण ।। 20 ।।
सींगी नाद न बाजहि, कत गये सो जोगी।
दादू रहते मढी में, करते रस भोगी ।। 21 ।।
दादू जियरा जायगा, यहु तन माटी होइ।
जे उपज्या सो विनश है, अमर नहीं कलि कोइ ।। 22 ।।
दादू देही देखतां, सब किसही की जाइ।
जब लग श्वास शरीर में, गोविन्द के गुण गाइ ।। 23 ।।
दादू देही पाहुणी, हंस बटाऊ मांहि।
का जाणूं कब चालसी, मोहि भरोसा नांहि ।। 24 ।।
दादू सबको पाहुणा, दिवस चार संसार।
औसर औसर सब चले, हम भी इहै विचार ।। 25 ।।

भयमय पंथ बिखमता

सबको बैठे पंथ सिर, रहे बटाऊ होइ।
जे आये ते जाहिंगे, इस मारग सब कोइ ।। 26 ।।
बेग बटाऊ पंथ सिर, अब विलम्ब न कीजे।
दादू बैठा क्या करे, राम जप लीजे ।। 27 ।।
संझ्या चलै उतावला, बटाऊ वन-खंड मांहि।
बरियां नांहीं ढील की, दादू बेगि घर जांहि ।। 28 ।।

दादू करह पलाण कर, को चेतन चढ जाइ।
मिल साहिब दिन देखतां, सांझ पड़े जनि आइ ॥ 29 ॥
पंथ दुहेला दूर घर, संग न साथी कोइ।
उस मारग हम जाहिंगे, दादू क्यों सुख सोइ ॥ 30 ॥
लंघण1 के लकु2 घणा, कपर3 चाट4 डीन्ह।
अलह पांधी5 पंध6 में, बिहंदा7 आहीन8 ॥ 31 ॥

काल चितावणी

दादू हसतां रोतां पाहुणा, काहू छाड़ न जाइ।
काल खड़ा सिर ऊपरै, आवणहारा आइ ॥ 32 ॥
दादू जोरा बैरी काल है, सो जीव न जानै।
सब जग सूता नींदड़ी, इस तानै बानै ॥ 33 ॥
दादू करणी काल की, सब जग परलै होइ।
राम विमुख सब मर गये, चेत न देखै कोइ ॥ 34 ॥
साहिब को सुमिरै नहीं, बहुत उठावे भार।
दादू करणी काल की, सब परलै संसार ॥ 35 ॥
सूता काल जगाइ कर, सब पैसैं मुख मांहि।
दादू अचरज देखिया, कोई चेतै नांहि ॥ 36 ॥
सब जीव बिसाहैं काल को, कर कर कोटि उपाइ।
साहिब को समझैं नहीं, यों परलै ह्वै जाइ ॥ 37 ॥
दादू कारण काल के, सकल संवारैं आप।
मीच बिसाहैं मरण को, दादू शोक संताप ॥ 38 ॥
दादू अमृत छाड़ कर, विषय हलाहल खाइ।
जीव बिसाहै काल को, मूढा मर मर जाइ ॥ 39 ॥
निर्मल नाम विसार कर, दादू जीव जंजाल।
नहीं तहाँ तैं कर लिया, मनसा मांहीं काल ॥ 40 ॥

सब जग छेली, काल कसाई, कर्द लिये कंठ काटै।
पंच तत्त्व की पंच पंसुरी, खंड-खंड कर बांटै ।। 41 ।।
काल झाल में जग जलै, भाज न निकसै कोइ।
दादू शरणैं साच के, अभय अमर पद होइ ।। 42 ।।
सब जग सूता नींद भर, जागै नाहीं कोइ।
आगे पीछे देखिये, प्रत्यक्ष परलै होइ ।। 43 ।।

आसक्ति मोह

ये सज्जन दुर्जन भये, अंत काल की बार।
दादू इनमें को नहीं, विपति बटावनहार ।। 44 ।।
संगी सज्जन आपणां, साथी सिरजनहार।
दादू दूजा को नहीं, इहि कलि इहि संसार ।। 45 ।।

काल चिताावणी

ये दिन बीते चल गये, वे दिन आये धाइ।
राम नाम बिन जीव को, काल गरासै जाइ ।। 46 ।।
जे उपज्या सो विनश है, जे दीसै सो जाइ।
दादू निर्गुण राम जप, निश्चल चित्त लगाइ ।। 47 ।।
जे उपज्या सो विनश है, कोई थिर न रहाइ।
दादू बारी आपणी, जे दीसै सो जाइ ।। 48 ।।
दादू सब जग मर मर जात है, अमर उपावणहार।
रहता रमता राम है, बहता सब संसार ।। 49 ।।

सजीवन

दादू कोई थिर नहीं, यहु सब आवै जाइ।
अमर पुरुष आपै रहै, कै साधु ल्यौ लाइ ।। 50 ।।

काल चितावणी

यहु जग जाता देखकर, दादू करी पुकार।
घड़ी महूरत चालनां, राखै सिरजनहार ।। 51 ।।

दादू विषै सुख मांहि खेलतां, काल पहुँच्या आइ।
उपजै विनशै देखतां, यहु जग यों ही जाइ ॥ 52 ॥
राम नाम बिन जीव जे, केते मुये अकाल।
मीच बिना जे मरत हैं, तातैं दादू साल ॥ 53 ॥

कठोरता

सर्प सिंह हस्ती घणा, राक्षस भूत प्रेत।
तिस वन में दादू पड़या, चेतै नहीं अचेत ॥ 54 ॥
पूत पिता थैं बीछुट्या, भूलि पड़या किस ठौर।
मरै नहिं उर फाट कर, दादू बड़ा कठोर ॥ 55 ॥

काल चेतावनी

जे दिन जाइ सो बहुरि न आवै, आयु घटै तन छीजै।
अंतकाल दिन आइ पहुंता, दादू ढील न कीजै ॥ 56 ॥
दादू अवसर चल गया, बरियां गई बिहाइ।
कर छिटके कहँ पाइये, जन्म अमोलक जाइ ॥ 57 ॥
दादू गाफिल ह्वै रह्या, गहिला हुवा गँवार।
सो दिन चित्त न आवई, सोवै पांव पसार ॥ 58 ॥
दादू काल हमारा कर गहै, दिन दिन खैंचत जाइ।
अजहुं जीव जागै नहीं, सोवत गई बिहाइ ॥ 59 ॥
सूता आवै सूता जाइ, सूता खेले सूता खाइ।
सूता लेवै सूता देवै, दादू सूता जाइ ॥ 60 ॥
दादू देखत ही भया, श्याम वर्ण तैं सेत।
तन मन यौवन सब गया, अजहुँ न हरि सौं हेत ॥ 61 ॥
दादू झूठे के घर देख कर, झूठे पूछे जाइ।
झूठे झूठा बोलते, रहे मसाणों आइ ॥ 62 ॥

दादू प्राण पयाना कर गया, माटी धरी मसाण।
जालणहारे देखकर, चेतैं नहीं अजाण ।। 63 ।।
दादू केई जाले केई जालिये, केई जालण जांहि।
केई जालन की करैं, दादू जीवन नांहि ।। 64 ।।
केई गाड़े केई गाड़िये, केई गाडण जांहि।
केई गाड़ण की करैं, दादू जीवन नांहिं ।। 65 ।।
दादू कहै–उठ रे प्राणी जाग जीव, अपना सजन संभाल।
गाफिल नींद न कीजिये, आइ पहुंता काल ।। 66 ।।
समर्थ का शरणा तजै, गहै आन की औट।
दादू बलवंत काल की, क्यों कर बंचै चोट ।। 67 ।।

सजीव

अविनाशी के आसरे, अजरावर की ओट।
दादू शरणैं सांच के, कदे न लागै चोट ।। 68 ।।

काल चेतावनी

मूसा भागा मरण तैं, जहाँ जाइ तहाँ गोर।
दादू स्वर्ग पयाल में, कठिन काल का शोर ।। 69 ।।
सब मुख मांही काल के, मांड्या माया जाल।
दादू गोर मसाण में, झंखे स्वर्ग पयाल ।। 70 ।।
दादू मड़ा मसाण का, केता करै डफान।
मृतक मुर्दा गोर का, बहुत करै अभिमान ।। 71 ।।
राजा राणा राव मैं, मैं खानों सिर खान।
माया मोह पसारै एता, सब धरती आसमान ।। 72 ।।
पंच तत्त्व का पूतला, यहु पिंड सँवारा।
मंदिर माटी मांस का, बिनशत नहिं बारा ।। 73 ।।
हाड़ चाम का पिंजरा, बिच बोलणहारा।
दादू तामें पैस कर, बहुत किया पसारा ।। 74 ।।

बहुत पसारा कर गया, कुछ हाथ न आया।
दादू हरि की भक्ति बिन, प्राणी पछताया ।। 75 ।।
माणस जल का बुदबुदा, पानी का पोटा।
दादू काया कोट में, मैं वासी मोटा ।। 76 ।।
बाहर गढ निर्भय करै, जीबे के तांहीं।
दादू मांहीं काल है, सो जाणै नांहीं ।। 77 ।।

चित्त कपटी

दादू साचे मत साहिब मिलै, कपट मिलेगा काल।
साचे परम पद पाइये, कपट काया में साल ।। 78 ।।

काल चितावणी

मन ही मांही मीच है, सारों के शिर साल।
जे कुछ व्यापै राम बिन, दादू सोई काल ।। 79 ।।
दादू जेती लहर विकार की, काल कँवल में सोइ।
प्रेम लहर सो पीव की, भिन्न–भिन्न यों होइ ।। 80 ।।
दादू काल रूप मांही बसै, कोई न जानै ताहि।
यह कूड़ी करणी काल है, सब काहू को खाइ ।। 81 ।।
दादू विष अमृत घट में बसैं, दोन्यों एकै ठाँव।
माया विषय विकार सब, अमृत हरि का नाँव ।। 82 ।।
दादू कहाँ मुहम्मद मीर था, सब नबियों सिरताज।
सो भी मर माटी हुवा, अमर अलह का राज ।। 83 ।।
केते मर मांटी भये, बहुत बड़े बलवन्त।
दादू केते ह्वै गये, दाना देव अनन्त ।। 84 ।।
दादू धरती करते एक डग, दरिया करते फाल।
हाकों पर्वत फाड़ते, सो भी खाये काल ।। 85 ।।
दादू सब जग कंपै काल तैं, ब्रह्मा विष्णु महेश।
सुर नर मुनिजन लोक सब, स्वर्ग रसातल शेष ।। 86 ।।

चंद, सूर, धर, पवन, जल, ब्रह्मांड खंड प्रवेश।
सो काल डरै करतार तैं, जै जै तुम आदेश ॥ 87 ॥
पवना, पानी, धरती, अंबर, विनशै रवि, शशि, तारा।
पंत तत्त्व सब माया विनशै, मानुष कहा विचारा ॥ 88 ॥
दादू विनशैं तेज के, माटी के किस मांहि।
अमर उपावणहार है, दूजा कोई नांहि ॥ 89 ॥
प्राण पवन ज्यों पतला, काया करैं कमाइ।
दादू सब संसार में, क्यों हि गह्या न जाइ ॥ 90 ॥
नूर तेज ज्यों जोति है, प्राण पिंड यों होइ।
दृष्टि मुष्टि आवै नहीं, साहिब के वश सोइ ॥ 91 ॥

स्वकीयमित्र शत्रुता

मन ही मांही ह्वै मरै, जीवै मन ही मांहि।
साहिब साक्षीभूत है, दादू दूषण नांहि ॥ 92 ॥
आपै मारै आपको, आप आप को खाइ।
आपै अपना काल है, दादू कहि समझाइ ॥ 93 ॥
आपै मारै आपको, यहु जीव विचारा।
साहिब राखणहारा है, सो हितू हमारा ॥ 94 ॥
अग्नि रूप पुरुष इक कहहिं, संगति देह सहज ही दहहिं।
दीसे माणस प्रत्यक्ष काल, ज्यों कर त्यों कर दादू टाल ॥ 95 ॥
इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम
तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा
धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं
मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
पच्चीसवां काल काअंग सम्पूर्ण ॥ अंग 25 ॥ साखी 95 ॥
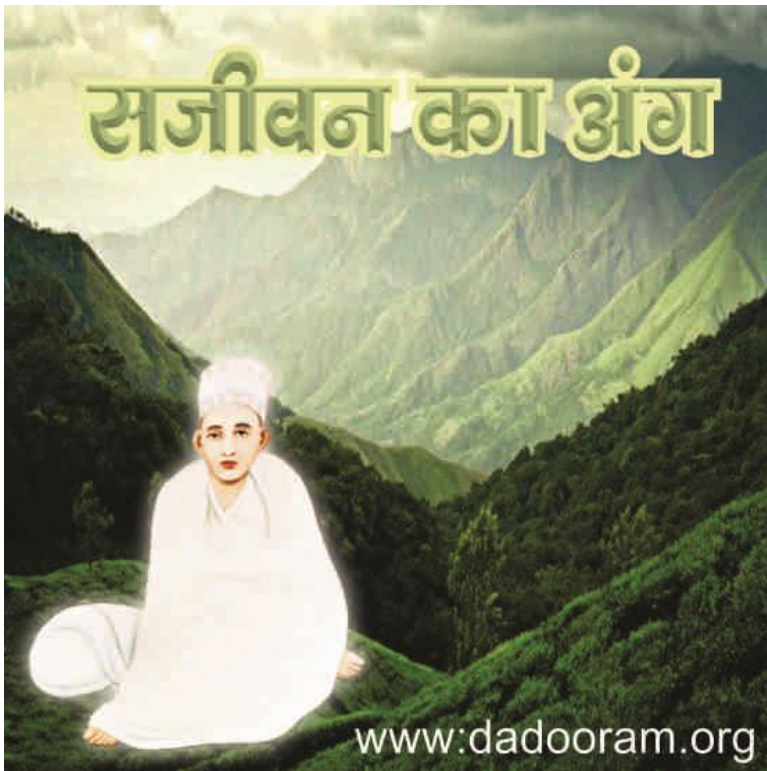
अथ सजीवन का अंग २६

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

दादू जे तूं जोगी गुरुमुखी, तो लेना तत्त्व विचार।
गह आयुध गुरु ज्ञान का, काल पुरुष को मार ॥ 2 ॥

नाद बिंदु सौं घट भरै, सो जोगी जीवै।
दादू काहे को मरै, राम रस पीवै ॥ 3 ॥

साधु जन की वासना, शब्द रहै संसार।
दादू आतम ले मिलै, अमर उपावनहार ॥ 4 ॥

राम सरीखे ह्वै रहैं, यहु नांही उनहार।
दादू साधू अमर हैं, विनशै सब संसार ॥ 5 ॥
जे कोई सेवे राम को, तो राम सरीखा होइ।
दादू नाम कबीर ज्यों, साखी बोलै सोइ ॥ 6 ॥
अर्थ न आया सो गया, आया सो क्यों जाइ।
दादू तन मन जीवतां, आपा ठौर लगाइ ॥ 7 ॥
जे जन बेधे प्रीति सौं, सो जन सदा सजीव।
उलट समाने आप में, अन्तर नांही पीव ॥ 8 ॥

दया विनती

दादू कहै-सब रंग तेरे तैं रंगे, तूं ही सब रंग मांहि।
सब रंग तेरे तैं किये, दूजा कोई नांहि ॥ 9 ॥

सजीवन

काटै फन्द तो छूटै द्वन्द, छूटै द्वन्द तौ लागै बंद।
लागै बन्द तो अमर कंद, अमर कंद दादू आनन्द ॥ 10 ॥

प्रश्न

कहँ जम जोरा भंजिये, कहाँ काल कौ दंड।
कहाँ मीच को मारिये, कहाँ जरा सत खंड ॥ 11 ॥
अमर ठौर अविनाशी आसन, तहाँ निरंजन लाग रहे।
दादू जोगी जुग जुग जीवै, काल ब्याल सब सहज गये ॥ 12 ॥
रोम रोम लै लाइ धुनि, ऐसे सदा अखंड।
दादू अविनाशी मिले, तो जम को दीजे दंड ॥ 13 ॥
दादू जरा काल जामण मरण, जहाँ जहाँ जीव जाइ।
भक्ति परायण लीन मन, ताको काल न खाइ ॥ 14 ॥
मरणा भागा मरण तैं, दुःखैं नाठा दुःख।
दादू भय सौं भय गया, सुःखैं छूटा सुःख ॥ 15 ॥

जीवन मरण

जीवित मिले सो जीवते, मूये मिल मर जाइ।
दादू दोन्यों देखकर, जहँ जानैं तहँ लाइ ।। 16 ।।

सजीवन

दादू साधन सब किया, जब उनमन लागा मन।
दादू सुस्थिर आत्मा, यों जुग जुग जीवैं जन ।। 17 ।।
रहते सेती लाग रहु, तो अजरावर होइ।
दादू देख विचार कर, जुदा न जीवै कोइ ।। 18 ।।
जेती करणी काल की, तेती परिहर प्राण।
दादू आतमराम सौं, जे तूं खरा सुजाण ।। 19 ।।
विष अमृत घट में बसै, विरला जानै कोइ।
जिन विष खाया ते मुये, अमर अमी सौं होइ ।। 20 ।।
दादू सब ही मर रहे, जीवे नांही कोइ।
सोई कहिये जीवता, जे कलि अजरावर होइ ।। 21 ।।
देह रहै संसार में, जीव राम के पास।
दादू कुछ व्यापै नहीं, काल झाल दुख त्रास ।। 22 ।।
काया की संगति तजै, बैठा हरि पद मांहि।
दादू निर्भय ह्वै रहै, कोई गुण व्यापै नांहि ।। 23 ।।
दादू तज संसार सब, रहे निराला होइ।
अविनाशी के आसरे, काल न लागे कोइ ।। 24 ।।
जागहु लागहु राम सौं, रैन बिहानी जाइ।
सुमिर सनेही आपणा, दादू काल न खाइ ।। 25 ।।
दादू जागहु लागहु राम सौं, छाड़हु विषय विकार।
जीवहु पीवहु राम रस, आतम साधन सार ।। 26 ।।
मरै तो पावै पीव को, जीवत बंचै काल।
दादू निर्भय नाम ले, दोनों हाथ दयाल ।। 27 ।।

दादू मरणे को चला, सजीवन के साथ।
दादू लाहा मूल सौं, दोनों आये हाथ ।। 28 ।।

करुणा

दादू जाता देखिये, लाहा मूल गँवाइ।
साहिब की गति अगम है, सो कुछ लखी न जाइ ।। 29 ।।

सजीवन

साहिब मिलै तो जीविये, नहीं तो जीवै नांहि।
भावै अनंत उपाय कर, दादू मूवों मांहि ।। 30 ।।
सजीवनि साधै नहीं, तातैं मर मर जाइ।
दादू पीवै राम रस, सुख में रहै समाइ ।। 31 ।।
दिन दिन लहुड़े होंहि सब, कहैं मोटा होता जाइ।
दादू दिन दिन ते बढ़ैं, जे रहैं राम ल्यौ लाइ ।। 32 ।।
न जाणूं हाँजी, चुप गह, मेट अग्नि की झाल।
सदा सजीवन सुमिरिये, दादू बंचै काल ।। 33 ।।

जीवन मुक्ति

दादू जीवित छूटै देह गुण, जीवित मुक्ता होइ।
जीवित काटै कर्म सब, मुक्ति कहावै सोइ ।। 34 ।।
दादू जीवित ही दुस्तर तिरे, जीवित लंघे पार।
जीवित पाया जगद्गुरु, दादू ज्ञान विचार ।। 35 ।।
जीवित जगपति को मिलै, जीवित आत्मराम।
जीवित दर्शन देखिये, दादू मन विश्राम ।। 36 ।।
जीवित पाया प्रेम रस, जीवित पिया अघाइ।
जीवित पाया स्वाद सुख, दादू रहे समाइ ।। 37 ।।
जीवित भागे भ्रम सब, छूटे कर्म अनेक।
जीवित मुक्त सद्गति भये, दादू दर्शन एक।। 38 ।।

जीवित मेला ना भया, जीवित परस न होइ।
जीवित जगपति ना मिले, दादू बूड़े सोइ ॥ 39 ॥
जीवित दुस्तर ना तिरे, जीवित न लंघे पार।
जीवित निर्भय ना भये, दादू ते संसार ॥ 40 ॥
जीवित प्रकट ना भया, जीवित परिचय नांहि।
जीवित न पाया पीव को, बूड़े भवजल मांहि ॥ 41 ॥
जीवित पद पाया नहीं, जीवित मिले न जाइ।
जीवित जे छूटे नहीं, दादू गये विलाइ ॥ 42 ॥
दादू छूटे जीवतां, मूवाँ छूटे नांहि।
मूवाँ पीछे छूटिये, तो सब आये उस मांहि ॥ 43 ॥
मूवाँ पीछे मुक्ति बतावैं, मूवाँ पीछे मेला।
मूवाँ पीछे अमर अभय पद, दादू भूले गहिला ॥ 44 ॥
मूवाँ पीछे वैकुंठ वासा, मूवाँ स्वर्ग पठावैं।
मूवाँ पीछे मुक्ति बतावैं, दादू जग बोरावैं ॥ 45 ॥
मूवाँ पीछे पद पहुँचावैं, मूवाँ पीछे तारैं।
मूवाँ पीछे सद्‌गति होवै, दादू जीवित मारैं ॥ 46 ॥
मूवाँ पीछे भक्ति बतावैं, मूवाँ पीछे सेवा।
मूवाँ पीछे संयम राखैं, दादू दोजख देवा ॥ 47 ॥

सजीवन

दादू धरती क्या साधन किया, अंबर कौन अभ्यास?
रवि शशि किस आरंभ तैं ? अमर भये निज दास ॥ 48 ॥
साहिब मारे ते मुये, कोई जीवै नांहि।
साहिब राखे ते रहे, दादू निज घर मांहि ॥ 49 ॥
जे जन राखे राम जी, अपने अंग लगाइ।
दादू कुछ व्यापै नहीं, जे कोटि काल झख जाइ ॥ 50 ॥

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य

छब्बीसवां सजीवन काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 26 ।। साखी 50 ।।
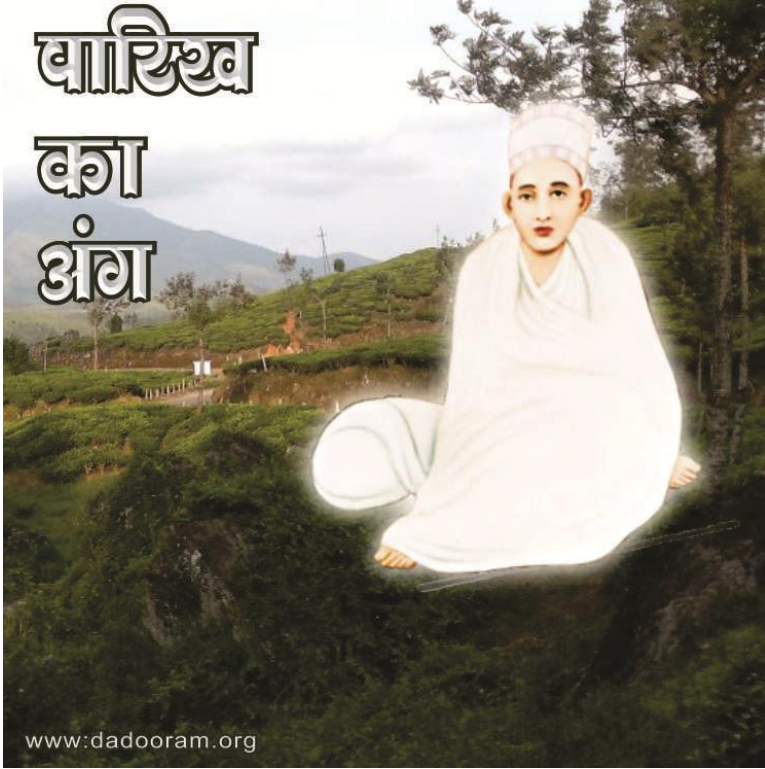
अथ पारिख का अंग २७

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः ।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ।। 1 ।।

साधुत्व परीक्षा

दादू मन चित आतम देखिये, लागा है किस ठौर?
जहँ लागा तैसा जाणिये, का देखै दादू और ।। 2 ।।

दादू साधु परखिये, अन्तर आतम देख।
मन मांहि माया रहै, कै आपै आप अलेख ।। 3 ।।

दादू मन की देख कर, पीछे धरिये नांव।
अन्तरगति की जे लखैं, तिनकी मैं बलि जांव ।। 4 ।।

यहु परिख सराफी ऊपली, भीतर की यहु नांहि।
अन्तर की जाणैं नहीं, ता तैं खोटा खांहि ।। 5 ।।
दादू बाहर का सब देखिये, भीतर लख्या न जाइ।
बाहर दिखावा लोक का, भीतर राम दिखाइ ।। 6 ।।
दादू जे नांही सो सब कहैं, है सो कहै न कोइ।
खोटा खरा परखिये, तब ज्यों था त्यों ही होइ ।। 7 ।।
दह दिशि फिरै सो मन है, आवै जाइ सो पवन।
राखणहारा प्राण है, देखणहारा ब्रह्म ।। 8 ।।
घट की भान अनीति सब, मन की मेट उपाध।
दादू परिहर पंच की, राम कहैं ते साध ।। 9 ।।
अर्थ आया तब जानिये, जब अनर्थ छूटे।
दादू भाँडा भरम का, गिरि चौड़े फूटे ।। 10 ।।
दादू दूजा कहबे को रह्या, अन्तर डारा धोइ।
ऊपर की ये सब कहैं, मांहि न देखै कोइ ।। 11 ।।
दादू जैसे मांहि जीव रहै, तैसी आवै बास।
मुख बोले तब जानिये, अन्तर का परकास ।। 12 ।।
दादू ऊपर देख कर, सबको राखै नांव।
अंतरगति की जे लखैं, तिनकी मैं बलि जांव ।। 13 ।।

जग जन विपरीत

तन मन आत्म एक है, दूजा सब उनहार।
दादू मूल पाया नहीं, दुविधा भ्रम विकार ।। 14 ।।
काया के सब गुण बँधे, चौरासी लख जीव।
दादू सेवक सो नहीं, जे रंग राते पीव ।। 15 ।।
काया के वश जीव सब, ह्वै गये अनन्त अपार।
दादू काया वश करै, निरंजन निराकार ।। 16 ।।

पूरण ब्रह्म विचारिये, तब सकल आत्मा एक।
काया के गुण देखिये, तो नाना वरण अनेक।। 17 ।।

नरबिड़ रूप पशु

मति बुद्धि विवेक विचार बिन, माणस पशु समान।
समझायां समझै नहीं, दादू परम गियान ।। 18 ।।
सब जीव प्राणी भूत हैं, साधु मिलैं तब देव।
ब्रह्म मिलै तब ब्रह्म हैं, दादू अलख अभेव ।। 19 ।।

करतूती कर्म

दादू बँध्या जीव है, छूटा ब्रह्म समान।
दादू दोनों देखिये, दूजा नांही आन ।। 20 ।।
कर्मों के वश जीव है, कर्म रहित सो ब्रह्म।
जहँ आत्म तहँ परमात्मा, दादू भागा भ्रम ।। 21 ।।

पारिख अपारिख

काचा उछलै ऊफणै, काया हाँडी मांहि।
दादू पाका मिल रहै, जीव ब्रह्म द्वै नांहि ।। 22 ।।
दादू बाँधे सुर नवाये बाजैं, एह्वा शोध रु लीज्यो।
राम स्नेही साधु हाथे, वेगा मोकल दीज्यो ।। 23 ।।
प्राण जौहरी पारिखु, मन खोटा ले आवै।
खोटा मन के माथे मारै, दादू दूर उड़ावै ।। 24 ।।

सांच

श्रवणां हैं, नैनां नहीं, तातैं खोटा खाहिं।
ज्ञान विचार न उपजै, साच झूठ समझाहिं ।। 25 ।।

सांच

दादू साचा लीजिये, झूठा दीजे डार।
साचा सन्मुख राखिये, झूठा नेह निवार ।। 26 ।।

साचे को साचा कहै, झूठे को झूठा।
दादू दुविधा को नहीं, ज्यों था त्यों दीठा ।। 27 ।।

पारिख अपारिख

दादू हीरे को कंकर कहैं, मूरख लोग अजान।
दादू हीरा हाथ ले, परखैं साधु सुजान ।। 28 ।।
हीरा कौड़ी ना लहै, मूरख हाथ गँवार।
पाया पारख जौहरी, दादू मोल अपार ।। 29 ।।
अंधे हीरा परखिया, किया कौडी मोल।
दादू साधू जौहरी, हीरे मोल न तोल ।। 30 ।।

सगुरा निगुरा

सगुरा निगुरा परखिये, साध कहैं सब कोइ।
सगुरा साचा, निगुरा झूठा, साहिब के दर होइ ।। 31 ।।
सगुरा सत संयम रहै, सन्मुख सिरजनहार।
निगुरा लोभी लालची, भूंचै विषय विकार ।। 32 ।।

कर्त्ता कसौटी

खोटा खरा परखिये, दादू कस-कस लेइ।
साचा है सो राखिये, झूठा रहण न देइ ।। 33 ।।

पारिख अपारिख

खोटा खरा कर देवै पारिख, तो कैसे बन आवै।
खरे खोटा का न्याय नबेरे, साहिब के मन भावै ।। 34 ।।
दादू जिन्हें ज्यों कही, तिन्हें त्यों मानी, ज्ञान विचार न कीन्हा।
खोटा खरा जीव परख न जानै, झूठ साच करि लीन्हा ।। 35 ।।

कर्त्ता कसौटी

जे निधि कहीं न पाइये, सो निधि घर-घर आहि।
दादू महँगे मोल बिन, कोई न लेवे ताहि ।। 36 ।।

खरी कसौटी कीजिये, वाणी बधती जाइ।
दादू साचा परखिये, महँगे मोल बिकाइ ॥ 37 ॥
दादू राम कसै सेवक खरा, कदे न मोड़ै अंग।
दादू जब लग राम है, तब लग सेवक संग ॥ 38 ॥
दादू कस कस लीजिये, यहु ताते परिमान।
खोटा गाँठ न बाँधिये, साहिब के दीवान ॥ 39 ॥
खरी कसौटी पीव की, कोई बिरला पहुँचनहार।
जे पहुँचे ते ऊबरे, ताइ किये तत सार ॥ 40 ॥
दुर्बल देही निर्मल वाणी, दादू पंथी ऐसा जाणी।
काहू जीव विरोधे नांही, परमेश्वर देखे सब माँही ॥ 41 ॥
दादू साहिब कसै सेवक खरा, सेवक को सुख होइ।
साहिब करै सो सब भला, बुरा न कहिये कोइ ॥ 42 ॥
दादू ठग आमेर में, साधौं सौं कहियो।
हम शरणाई राम की, तुम नीके रहियो ॥ 43 ॥

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्तियोगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
सत्ताईसवां पारिख काअंग सम्पूर्ण ॥ अंग 27 ॥ साखी 43 ॥
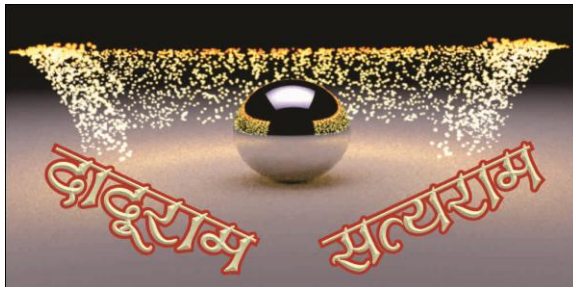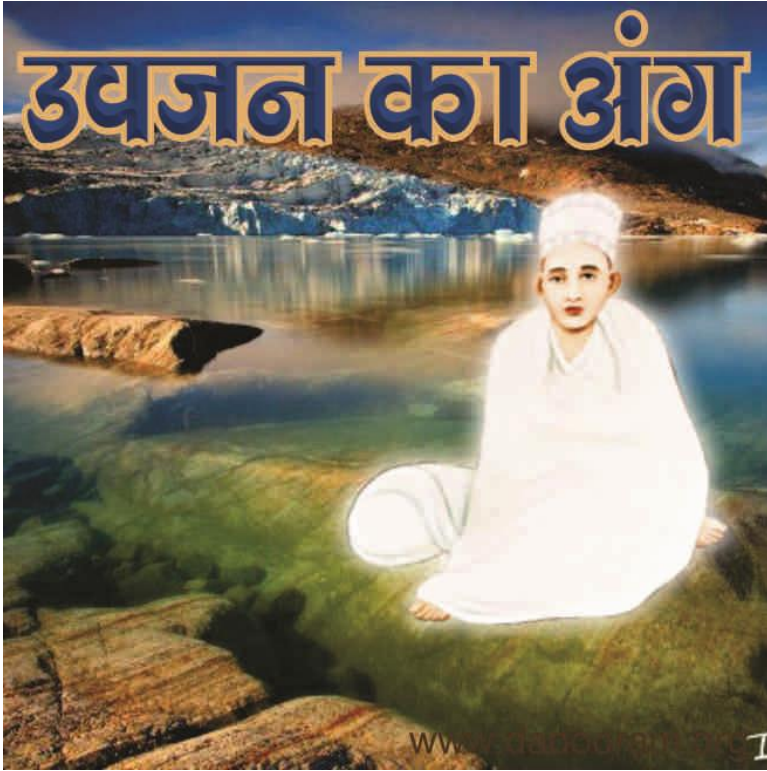
अथ उपजन का अंग २८

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

विचार

दादू माया का गुण बल करै, आपा उपजै आइ।
राजस तामस सात्विकी, मन चंचल ह्वै जाइ ॥ 2 ॥

आपा नाहीं बल मिटै, त्रिविध तिमिर नहिं कोइ।
दादू यहु गुण ब्रह्म का, शून्य समाना सोइ ॥ 3 ॥

उपजन

दादू अनुभव उपजी गुणमयी, गुण ही पै ले जाइ।
गुण ही सौं गहि बंधिया, छूटै कौन उपाइ ।। 4 ।।
द्वै पख उपजी परिहरै, निर्पख अनुभव सार।
एक राम दूजा नहीं, दादू लेहु विचार ।। 5 ।।
दादू काया ब्यावर गुणमयी, मनमुख उपजै ज्ञान।
चौरासी लख जीव को, इस माया का ध्यान ।। 6 ।।
आत्म उपज आकाश की, सुनि धरती की बाट।
दादू मारग गैब का, कोई लखै न घाट ।। 7 ।।
आत्म बोधी अनुभवी, साधु निर्पख होइ।
दादू राता राम सौं, रस पीवेगा सोइ ।। 8 ।।
प्रेम भक्ति जब ऊपजै, निश्चल सहज समाधि।
दादू पीवे राम रस, सतगुरु के प्रसाद ।। 9 ।।
प्रेम भक्ति जब ऊपजै, पंगुल ज्ञान विचार।
दादू हरि रस पाइये, छूटै सकल विकार ।। 10 ।।
दादू बंझ बियाई आत्मा, उपज्या आनन्द भाव।
सहज शील संतोष सत, प्रेम मगन मन राव ।। 11 ।।

निन्दा

जब हम ऊजड़ चालते, तब कहते मारग मांहि।
दादू पहुंचे पंथ चल, कहैं यहु मारग नांहि ।। 12 ।।

उपजन

पहले हम सब कुछ किया, भरम करम संसार।
दादू अनुभव उपजी, राते सिरजनहार ।। 13 ।।
सोई अनुभव सोई ऊपजी, सोई शब्द तव सार।
सुनतां ही साहिब मिले, मन के जाहिं विकार ।। 14 ।।

परिचय जिज्ञासा उपदेश

पारब्रह्म कह्या प्राण सौं, प्राण कह्या घट सोइ।
दादू घट सब सौं कह्या, विष अमृत गुण दोइ ।। 15 ।।
दादू मालिक कह्या अरवाह सौं, अरवाह कह्या औजूद।
औजूद आलम सौं कह्या, हुकम खबर मौजूद ।। 16 ।।
दादू जैसा ब्रह्म है, तैसी अनुभव उपजी होइ।
जैसा है तैसा कहै, दादू विरला कोइ ।। 17 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
अठ्ठाईसवां उपजन काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 28 ।। साखी 17 ।।

अथ दया निर्वैरता का अंग २९

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

सारमत

आपा मेटै हरि भजै, तन मन तजै विकार।
निर्वैरी सब जीव सौं, दादू यहु मत सार ॥ 2 ॥
दादू निर्वैरी निज आत्मा, साधन का मत सार।
दादू दूजा राम बिन, बैरी मंझ विकार ॥ 3 ॥

निर्वैरी सब जीव सौं, संतजन सोई।
दादू एकै आत्मा, बैरी नहिं कोई ॥ 4 ॥
सब हम देख्या शोध कर, दूजा नांही आन।
सब घट एकै आत्मा, क्या हिन्दू मुसलमान ॥ 5 ॥
दादू नारी पुरुष का नाम धर, इहि संशय भ्रम भुलान।
सब घट एकै आत्मा, क्या हिंदू मुसलमान ॥ 6 ॥
दादू दोनों भाई हाथ पग, दोनों भाई कान।
दोनों भाई नैन हैं, हिंदू मुसलमान ॥ 7 ॥
दादू संशय आरसी, देखत दूजा होइ।
भ्रम गया दुविधा मिटी, तब दूसर नाहिं कोइ ॥ 8 ॥
किस सौं बैरी ह्वै रह्या, दूजा कोई नांहि।
जिसके अंग तैं ऊपजै, सोई है सब मांहि ॥ 9 ॥
सब घट एकै आत्मा, जानै सो नीका।
आपा पर में चीन्ह ले, दर्शन है पीव का ॥ 10 ॥
काहे को दुख दीजिये, घट घट आत्मराम।
दादू सब संतोंषिये, यह साधु का काम ॥ 11 ॥
काहे को दुख दीजिये, साँई है सब मांहि।
दादू एकै आत्मा, दूजा कोई नांहि ॥ 12 ॥
साहिब जी की आत्मा, दीजे सुख संतोंष।
दादू दूजा को नहीं, चौदह तीनों लोक॥ 13 ॥
दादू जब प्राण पिछाणै आपको, आत्म सब भाई।
सिरजनहारा सबनि का, तासौं ल्यौ लाई ॥ 14 ॥
आत्मराम विचार कर, घट घट देव दयाल।
दादू सब संतोंषिये, सब जीवों प्रतिपाल ॥ 15 ॥
दादू पूरण ब्रह्म विचारले, द्वैत भाव कर दूर।
सब घट साहिब देखिये, राम रह्या भरपूर ॥ 16 ॥

दादू मंदिर काँच का, मर्कट सुनहाँ जाइ।
दादू एक अनेक ह्वै, आप आपको खाइ ।। 17 ।।
आत्म भाई जीव सब, एक पेट परिवार।
दादू मूल विचारिये, तो दूजा कौन गँवार ।। 18 ।।
दादू सूखा सहजैं कीजिये, नीला भानै नांहि।
काहे को दुख दीजिये, साहिब है सब मांहि ।। 19 ।।

दया निरवैरता

घट घट के उनहार सब, प्राण परस ह्वै जाइ।
दादू एक अनेक ह्वै, बरतें नाना भाइ ।। 20 ।।
आये एकंकार सब, साँई दिये पठाइ।
दादू न्यारे नांम धर, भिन्न भिन्न ह्वै जाइ ।। 21 ।।
आये एकंकार सब, साँई दिये पठाइ।
आदि अंत सब एक है, दादू सहज समाइ ।। 22 ।।
आतम देव आराधिये, विरोधिये नहिं कोइ।
आराधे सुख पाइये, विरोधे दुःख होइ ।। 23 ।।
ज्यों आपै देखै आपको, यों जे दूसर होइ।
तो दादू दूसर नहीं, दुःख न पावै कोइ ।। 24 ।।
दादू सम कर देखिये, कुंजर कीट समान।
दादू दुविधा दूर कर, तज आपा अभिमान ।। 25 ।।

अदया हिंसा

दादू अर्श खुदाय का, अजरावर का थान।
दादू सो क्यों ढाहिये, साहिब का नीशान ।। 26 ।।
दादू आप चिणावै देहुरा, तिसका करहि जतन।
प्रत्यक्ष परमेश्वर किया, सो भानै जीव रतन ।। 27 ।।
मसीत संवारी माणसाँ, तिसको करैं सलाम।
ऐन आप पैदा किया, सो ढाहैं मुसलमान ।। 28 ।।

दादू जंगल मांही जीव जे, जग तैं रहैं उदास।
भयभीत भयानक रात दिन, निश्चल नाहीं वास ॥ 29 ॥
वाचा बंधी जीव सब, भोजन पानी घास।
आत्म ज्ञान न ऊपजै, दादू करहि विनास ॥ 30 ॥
काला मुँह कर करद का, दिल तैं दूर निवार।
सब सूरत सुबहान की, मुल्लां मुग्ध न मार ॥ 31 ॥
गला गुस्से का काटिये, मियाँ मनी को मार।
पंचों बिस्मिल कीजिये, ये सब जीव उबार ॥ 32 ॥
वैर विरोधे आत्मा, दया नहीं दिल मांहि।
दादू मूरति राम की, ताको मारन जांहि ॥ 33 ॥

दया निर्वैरता

कुल आलम यके दीदम, अरवाहे इखलास।
बद अमल बदकार दुई, पाक यारां पास ॥ 34 ॥
काल झाल तैं काढ कर, आतम अंग लगाइ।
जीव दया यहु पालिये, दादू अमृत खाइ ॥ 35 ॥
दादू बुरा न बांछै जीव का, सदा सजीवन सोइ।
परलै विषय विकार सब, भाव भक्ति रत होइ ॥ 36 ॥
सतगुरु संतों की यह रीत, आत्म भाव सौं राखैं प्रीत।
ना को बैरी ना को मीत, दादू राम मिलन की चीत ॥ 37 ॥

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य

उन्तीसवां दया निर्वैरता काअंग सम्पूर्ण ॥ अंग 29 ॥ साखी 37 ॥
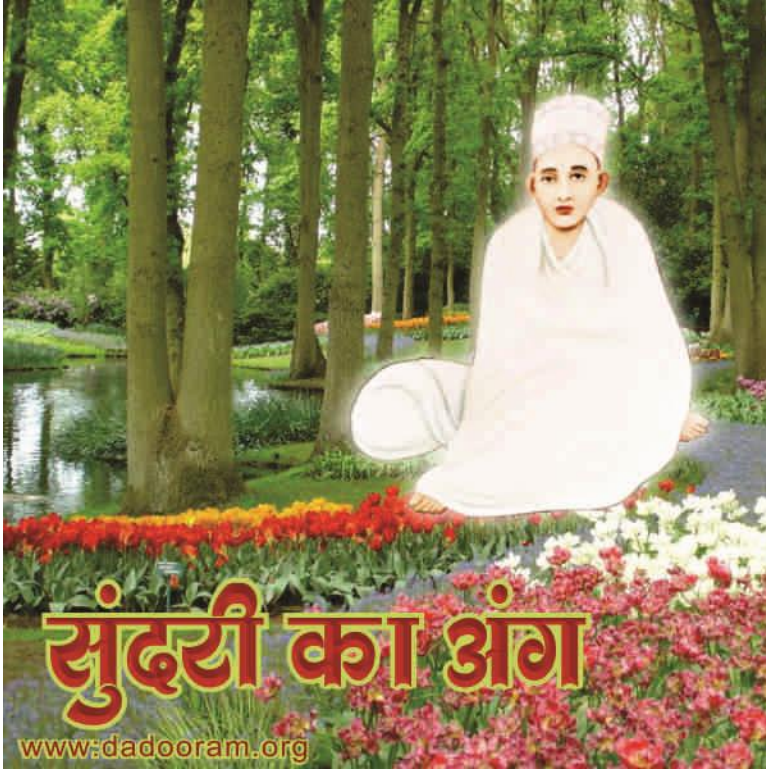
अथ सुन्दरी का अंग ३०

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ।। 1 ।।

सुन्दरी विलाप

आरतवन्ती सुन्दरी, पल पल चाहे पीव।
दादू कारण कंत के, तालाबेली जीव ।। 2 ।।

काहे न आवहु कंत घर, क्यों तुम रहे रिसाइ।
दादू सुन्दरी सेज पर, जन्म अमोलक जाइ ।। 3 ।।

आतम अंतर आव तूँ, या है तेरी ठौर।
दादू सुन्दरी पीव तूँ, दूजा नांही और ।। 4 ।।
दादू पीव न देख्या नैन भर, कंठ न लागी धाइ।
सूती नहीं गल बाँह दे, बीच हि गई बिलाइ ।। 5 ।।
सुरति पुकारै सुन्दरी, अगम अगोचर जाइ।
दादू विरहनी आत्मा, उठ उठ आतुर धाइ ।। 6 ।।
साँई कारण सेज सँवारी, सब तैं सुन्दर ठौर।
दादू नारी नाह बिन, आण बिठाये और ।। 7 ।।
कोई अवगुण मन बस्या, चित तैं धरी उतार।
दादू पति बिन सुन्दरी, हाँडै घर-घर बार ।। 8 ।।

अन्य लगन व्यभिचार

प्रेम प्रीति सनेह बिन, सब झूठे श्रृंगार।
दादू आतम रत नहीं, क्यों मानै भरतार ।। 9 ।।
दादू हौं सुख सूती नींद भर, जागै मेरा पीव।
क्यों कर मेला होइगा, जागै नांही जीव ।। 10 ।।
सखी न खेलै सुन्दरी, अपने पीव सौं जाग।
स्वाद न पाया प्रेम का, रही नहीं उर लाग ।। 11 ।।
पंच दिहाड़े पीव सौं, मिल काहे न खेले।
दादू गहली सुन्दरी, क्यों रहै अकेले ।। 12 ।।
सखी सुहागिन सब कहैं, हौं री दुहागिन आहि।
पिव का महल न पाइये, कहाँ पुकारूँ जाहि ।। 13 ।।
सखी सुहागिन सब कहैं, कंत न बूझै बात।
मनसा वाचा कर्मणा, मूर्च्छ मूर्च्छ जीव जात ।। 14 ।।
सखी सुहागिन सब कहैं, पीव सौं परस न होइ।
निशवासर दुख पाइये, यहु व्यथा न जान कोइ ।। 15 ।।

सखी सुहागिन सब कहैं, प्रकट न खेलै पीव।
सेज सुहाग न पाइये, दुखिया मेरा जीव ।। 16 ।।

अन्य लग्न व्यभिचार

पुरुष पुरातन छाड़ कर, चली आन के साथ।
सो भी संग तैं बीछुट्या, खड़ी मरोड़ै हाथ ।। 17 ।।

सुन्दरी विलाप

सुन्दरी कबहूँ कंत का, मुख सौं नाम न लेइ।
अपने पीव के कारणैं, दादू तन मन देइ ।। 18 ।।

नैन बैन कर वारणै, तन मन पिंड पराण।
दादू सुन्दरी बलि गई, तुम पर कंत सुजान ।। 19 ।।

तन भी तेरा, मन भी तेरा, तेरा पिंड पराण।
सब कुछ तेरा, तूँ है मेरा, यहु दादू का ज्ञान ।। 20 ।।

सुन्दरी मोहे पीव को, बहुत भाँति भरतार।
त्यों दादू रिझवै राम को, अनन्त कला करतार ।। 21 ।।

नदियाँ नीर उलंघ कर, दरिया पैली पार।
दादू सुन्दरी सो भली, जाइ मिले भरतार ।। 22 ।।

सुन्दरी सुहाग

प्रेम लहर गह ले गई, अपने प्रीतम पास।
आत्म सुन्दरी पीव को, विलसै दादू दास ।। 23 ।।

सुन्दरी को साँई मिल्या, पाया सेज सुहाग।
पींव सौं खेलै प्रेम रस, दादू मोटे भाग ।। 24 ।।

दादू सुन्दरी देह में, साँई को सेवै।
राती अपने पीव सौं, प्रेम रस लेवै ।। 25 ।।

दादू निर्मल सुन्दरी, निर्मल मेरा नाह।
दोन्यों निर्मल मिल रहे, निर्मल प्रेम प्रवाह ।। 26 ।।

साँई सुन्दरी सेज पर, सदा एक रस होइ।
दादू खेलै पीव सौं, ता सम और न कोइ ।। 27 ।।
इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
तीसवां सुन्दरी काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 30 ।। साखी 27 ।।
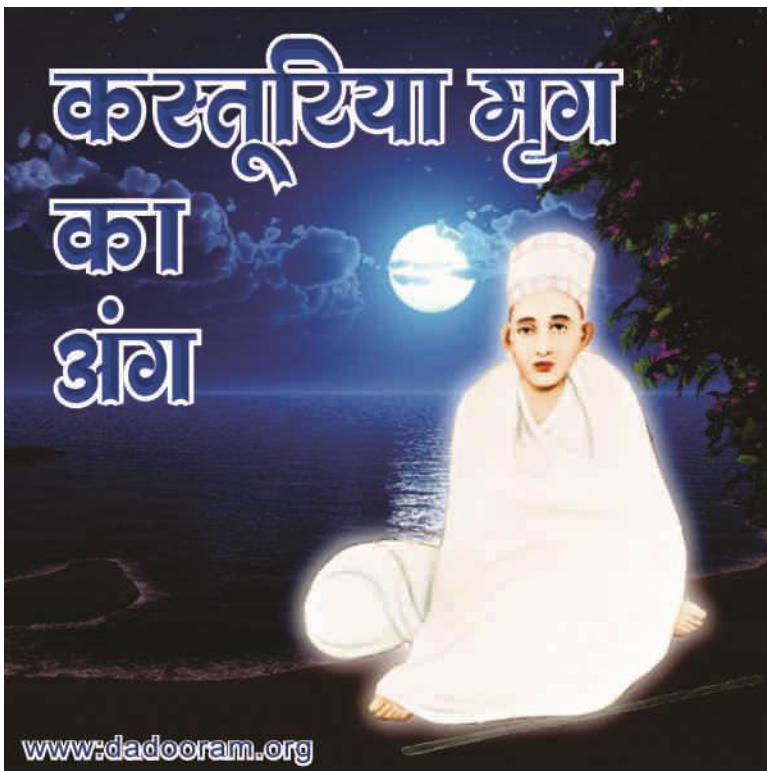
अथ कस्तूँरिया मृग का अंग ३१

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥
दादू घट कस्तूँरी मृग के, भ्रमत फिरै उदास।
अन्तरगति जाणै नहीं, तातैं सूंघै घास ॥ 2 ॥
सब घट में गोविन्द है, संग रहै हरि पास।
कस्तूँरी मृग में बसै, सूंघत डोलै घास ॥ 3 ॥
दादू जीव न जानै राम को, राम जीव के पास।
गुरु के शब्दों बाहिरा, तातैं फिरै उदास ॥ 4 ॥

दादू जा कारण जग ढूंढिया, सो तो घट ही मांहि।
मैं तैं पड़दा भरम का, तातैं जानत नांहि ॥ 5 ॥
दादू दूर कहैं ते दूर हैं, राम रह्या भरपूर।
नैनहुं बिन सूझै नहीं, तातैं रवि कत दूर ॥ 6 ॥
ओडो हूवो पाण खे, न लघाऊं मंझ।
न जाताऊं पाण में, तांई क्या ऊंपंध ॥ 7 ॥
दादू केई दौड़े द्वारिका, केई काशी जांहि।
केई मथुरा को चले, साहिब घट ही मांहि ॥ 8 ॥
दादू सब घट मांही रम रह्या, बिरला बूझै कोइ।
सोई बूझै राम को, जे राम सनेही होइ ॥ 9 ॥
दादू जड़मति जीव जाणै नहीं, परम स्वाद सुख जाइ।
चेतन समझै स्वाद सुख, पीवै प्रेम अघाइ ॥ 10 ॥
जागत जे आनन्द करै, सौ पावै सुख स्वाद।
सूते सुख ना पाइये, प्रेम गँवाया बाद ॥ 11 ॥
दादू जिसका साहिब जागणा, सेवक सदा सचेत।
सावधान सन्मुख रहै, गिर गिर पड़ै अचेत ॥ 12 ॥
दादू साँई सावधान, हम ही भये अचेत।
प्राणी राख न जानहि, तातैं निष्फल खेत ॥ 13 ॥

सगुना निगुना कृतघ्नी

दादू गोविन्द के गुण बहुत हैं, कोई न जाणै जीव।
अपणी बूझै आप गति, जे कुछ किया पीव ॥ 14 ॥

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्तियोगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
इकत्तीसवां कस्तूरिया काअंग सम्पूर्ण ॥ अंग 31 ॥ साखी 14 ॥

अथ निन्दा का अंग ३२

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

मत्सर ईर्ष्या

साधु निर्मल मल नहीं, राम रमै सम भाइ।
दादू अवगुण काढ कर, जीव रसातल जाइ ॥ 2 ॥
दादू जब ही साधु सताइये, तब ही ऊँघ पलट।
आकाश धँसै, धरती खिसै, तीनों लोक गरक ॥ 3 ॥

निन्दा

दादू जिहिं घर निंदा साधु की, सो घर गये समूल।
तिनकी नींव न पाइये, नांव न ठांव न धूल ।। 4 ।।

दादू निंदा नाम न लीजिये, स्वप्नै ही जनि होइ।
ना हम कहैं, न तुम सुनो, हमैं जनि भाषै कोइ ।। 5 ।।

दादू निन्दा किये नरक है, कीट पड़ैं मुख मांहि।
राम विमुख जामै मरै, भग-मुख आवै जाहि ।। 6 ।।

दादू निंदक बपुरा जनि मरै, पर उपकारी सोइ।
हम को करता ऊजला, आपण मैला होइ ।। 7 ।।

दादू जिहिं विधि आतम उद्धरै, परसे प्रीतम प्राण।
साधु शब्द क्यूं निंदणां, समझैं चतुर सुजाण ।। 8 ।।

मत्सर ईर्ष्या

अनदेख्या अनरथ कहैं, कलि पृथिवी का पाप।
धरती अंबर जब लगै, तब लग करैं कलाप ।। 9 ।।

अनदेख्या अनरथ कहैं, अपराधी संसार।
जद तद लेखा लेइगा, समर्थ सिरजनहार ।। 10 ।।

दादू डरिये लोक तैं, कैसी धरहिं उठाइ।
अनदेखी अजगैब की, ऐसी कहैं बनाइ ।। 11 ।।

अमिट पाप प्रचंड

दादू अमृत कूँ विष, विष को अमृत, फेरि धरैं सब नाम।
निर्मल मैला, मैला निर्मल, जाहिंगे किस ठाम ।। 12 ।।

मत्सर ईर्ष्या

दादू साचे को झूठा कहैं, झूठे को साचा।
राम दुहाई काढिये, कंठ तैं वाचा ।। 13 ।।

दादू झूठ न कहिये साच को, साच न कहिये झूठ।
दादू साहिब मानै नहीं, लागै पाप अखूट ।। 14 ।।

दादू झूठ दिखावै साच को, भयानक भयभीत।
साचा राता साच सौं, झूठ न आनै चीत ।। 15 ।।
साचे को झूठा कहैं, झूठा साच समान।
दादू अचरज देखिया, यहु लोगों का ज्ञान ।। 16 ।।

निन्दा

दादू निन्दक बुरा न कहिये, पर उपकारी अस कहाँ लहिये।
ज्यों ज्यों निन्दैं लोग विचारा, त्यों त्यों छीजै रोग हमारा ।। 17 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
बत्तीसवां निन्दा काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 32 ।। साखी 17 ।।
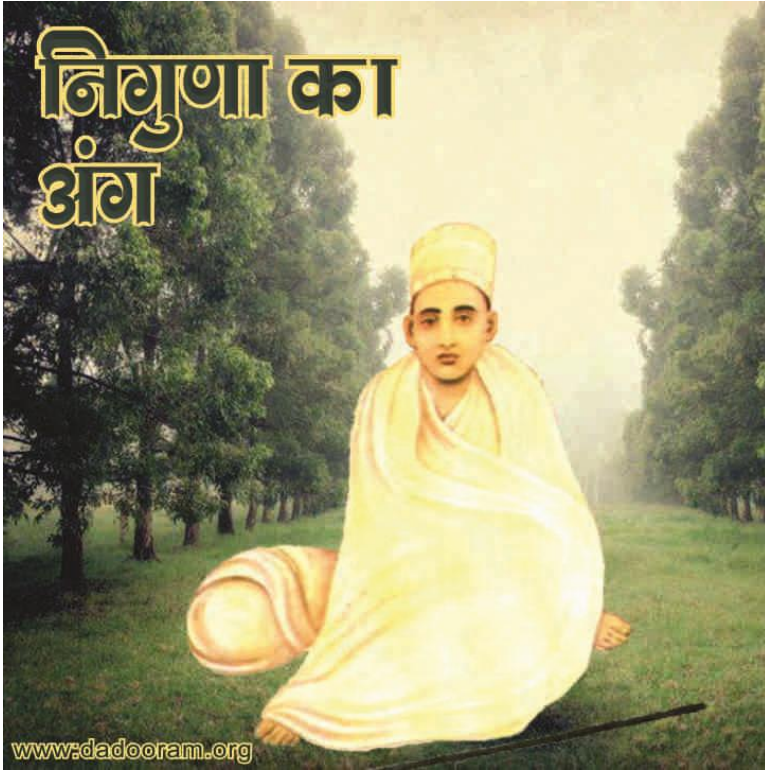
अथ निगुणा का अंग ३३

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

सगुणा निगुणा कृतघ्नी

दादू चंदन बावना, बसै बटाऊ आइ।
सुखदाई शीतल किये, तीनों ताप नसाइ ॥ 2 ॥
काल कुहाड़ा हाथ ले, काटन लागा ढाइ।
ऐसा यहु संसार है, डाल मूल ले जाइ ॥ 3 ॥

अज्ञ स्वभाव अपलट

सतगुरु चन्दन बावना, लागे रहैं भुवंग।
दादू विष छाड़ैं नहीं, कहा करै सत्संग ॥ 4 ॥
दादू कीड़ा नरक का, राख्या चंदन मांहि।
उलट अपूठा नरक में, चन्दन भावै नांहि ॥ 5 ॥
सतगुरु साधु सुजान है, शिष का गुण नहिं जाइ।
दादू अमृत छाड़ कर, विषय हलाहल खाइ ॥ 6 ॥
कोटि बर्ष लौं राखिये, बंसा चन्दन पास।
दादू गुण लिये रहै, कदे न लागै बास ॥ 7 ॥
कोटि वर्ष लौं राखिये, पत्थर पानी मांहि।
दादू आडा अंग है, भीतर भेदै नांहि ॥ 8 ॥
कोटि वर्ष लौं राखिये, लोहा पारस संग।
दादू रोम का अन्तरा, पलटै नांही अंग ॥ 9 ॥
कोटि वर्ष लौं राखिये, जीव ब्रह्म संग दोइ।
दादू मांहीं वासना, कदे न मेला होइ ॥ 10 ॥

सगुणा निगुणा कृतघ्नी

मूसा जलता देख कर, दादू हंस दयाल।
मान सरोवर ले चल्या, पंखा काटे काल ॥ 11 ॥
सब जीव भुवंगम कूप में, साधु काढैं आइ।
दादू विषहर विष भरे, फिर ताही को खाइ ॥ 12 ॥
दादू दूध पिलाइये, विषहर विष कर लेइ।
गुण का औगुण कर लिया, ताही को दुख देइ ॥ 13 ॥

अज स्वभाव अपलट

बिन ही पावक जल मुवा, जवासा जल मांहि।
दादू सूखै सींचतां, तो जल को दूषण नांहि ॥ 14 ॥

सगुणा निगुणा कृतघ्नी

सुफल वृक्ष परमार्थी, सुख देवै फल फूल।
दादू ऊपर बैस कर, निगुणा काटै मूल ।। 15 ।।
दादू सगुणा गुण करै, निगुणा मानै नांहि।
निगुणा मर निष्फल गया, सगुणा साहिब मांहि ।। 16 ।।
निगुणा गुण मानै नहीं, कोटि करै जे कोइ।
दादू सब कुछ सौंपिये, सो फिर बैरी होइ ।। 17 ।।
दादू सगुणा लीजिये, निगुणा दीजे डार।
सगुणा सन्मुख राखिये, निगुणा नेह निवार ।। 18 ।।
सगुणा गुण केते करै, निगुणा न मानै एक।
दादू साधू सब कहैं, निगुणा नरक अनेक।। 19 ।।
सगुणा गुण केते करै, निगुणा नाखै ढाहि।
दादू साधू सब कहैं, निगुणा निष्फल जाइ ।। 20 ।।
सगुणा गुण केते करै, निगुणा न मानै कोइ।
दादू साधु सब कहैं, भला कहाँ तैं होइ ।। 21 ।।
सगुणा गुण केते करै, निगुणा न मानै नीच।
दादू साधू सब कहैं, निगुणा के सिर मीच ।। 22 ।।
साहिबजी सब गुण करै, सतगुरु के घट होइ।
दादू काढे काल मुख, निगुणा न मानै कोइ ।। 23 ।।
साहिबजी सब गुण करै, सतगुरु मांही आइ।
दादू राखै जीव दे, निगुणा मेटै जाइ ।। 24 ।।
साहिबजी सब गुण करै, सतगुरु का दे संग।
दादू परलै राखिले, निगुणा न पलटै अंग ।। 25 ।।
साहिब जी सब गुण करै, सतगुरु आडा देइ।
दादू तारै देखतां, निगुणा गुण नहिं लेइ ।। 26 ।।

सतगुरु दिया राम धन, रहै सुबुद्धि बताइ।
मनसा वाचा कर्मणा, बिलसै वितड़ै खाइ ।। 27 ।।
किया कृत मेटै नहीं, गुण ही मांहि समाइ।
दादू बधै अनन्त धन, कबहूँ कदे न जाइ ।। 28 ।।
इति श्री दादूदास–विरचिते सतगुरु–प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत–सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान–सर्वशास्त्र–शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र–सत्योपदेश–ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य–श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
तैंतीसवां निगुणा काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 33 ।। साखी 28 ।।
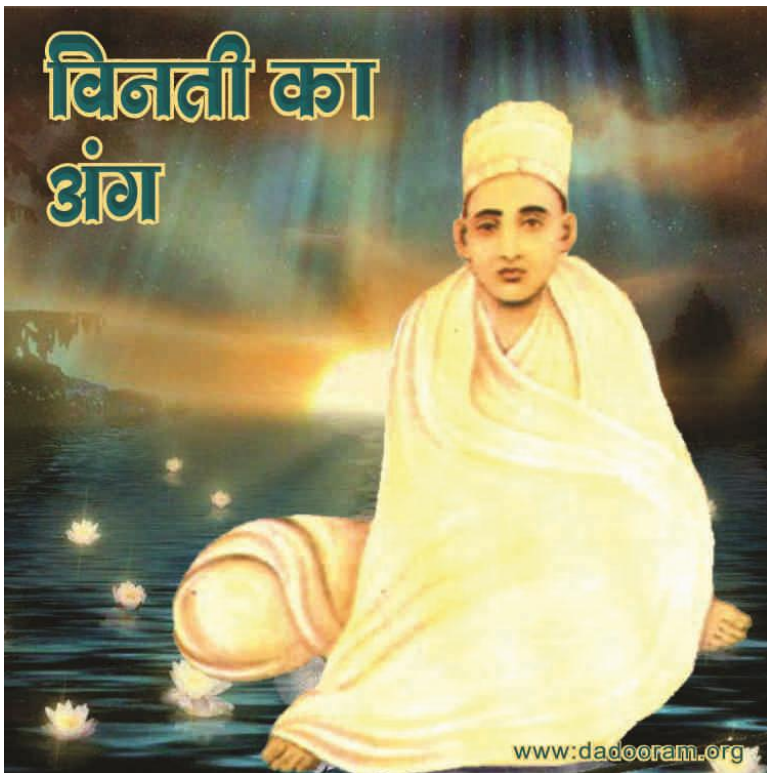
अथ विनती का अंग ३४

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

करूणा

दादू बहुत बुरा किया, तुम्हें न करना रोष।
साहिब समाई का धनी, बन्दे को सब दोष ॥ 2 ॥

दादू बुरा बुरा सब हम किया, सो मुख कह्या न जाइ।
निर्मल मेरा सांइयाँ, ताको दोष न लाइ ॥ 3 ॥

साँई सेवा चोर मैं, अपराधी बन्दा।
दादू दूजा को नहीं, मुझ सरीखा गन्दा ॥ 4 ॥

तिल तिल का अपराधी तेरा,रती रती का चोर।
पल पल का मैं गुनही तेरा, बख्शो अवगुण मोर ।। 5 ।।
महा अपराधी एक मैं, सारे इहि संसार।
अवगुण मेरे अति घणे, अन्त न आवैं पार ।। 6 ।।
बे मर्यादा मित नहीं, ऐसे किये अपार।
मैं अपराधी बापजी, मेरे तुम्हीं एक अधार ।। 7 ।।
दोष अनेक कलंक सब, बहुत बुरे मुझ मांहि।
मैं किये अपराध सब, तुम तैं छाना नांहि ।। 8 ।।
गुनहगार अपराधी तेरा, भाजि कहाँ हम जाहिं।
दादू देख्या शोध सब, तुम बिन कहीं न समाहिं ।। 9 ।।
आदि अंत लौं आय कर, सुकृत कछू न कीन्ह।
माया मोह मद मत्सरा, स्वाद सबै चित दीन्ह ।। 10 ।।

विनती

काम क्रोध संशय सदा, कबहूँ नाम न लीन।
पाखंड प्रपंच पाप में, दादू ऐसे खीन ।। 11 ।।
दादू बहु बंधन सौं बंधिया, एक बिचारा जीव।
अपने बल छूटै नहीं, छोड़नहारा पीव ।। 12 ।।
दादू बंदीवान है, तूँ बन्दी छोड़ दीवान।
अब जनि राखो बंदि में, मीरां मेहरबान ।। 13 ।।
दादू अंतर कालिमा, हिरदै बहुत विकार।
प्रकट पूरा दूर कर, दादू करै पुकार ।। 14 ।।
सब कुछ व्यापै राम जी, कुछ छूटा नांही।
तुम तैं कहाँ छिपाइये, सब देखो मांही ।। 15 ।।
सबल साल मन में रहै, राम बिसर क्यों जाइ।
यहु दुख दादू क्यों सहै, साँई करो सहाइ ।। 16 ।।

राखणहारा राख तूँ, यहु मन मेरा राखि।
तुम बिन दूजा को नहीं, साधू बोलैं साखि ।। 17 ।।
माया विषय विकार तैं, मेरा मन भागे।
सोई कीजे साँईयाँ, तूँ मीठा लागे ।। 18 ।।
साँई दीजे सो रति, तूँ मीठा लागे।
दूजा खारा होइ सब, सूता जीव जागे ।। 19 ।।
ज्यों आपै देखे आपको, सो नैना दे मुझ।
मीरां मेरा मेहर कर, दादू देखे तुझ ।। 20 ।।

विनती

दादू पछतावा रह्या, सके न ठाहर लाइ।
अर्थ न आया राम के, यहु तन योंही जाइ ।। 21 ।।
दादू कहै- दिन दिन नवतम भक्ति दे, दिन दिन नवतम नांव।
दिन दिन नवतम नेह दे, मैं बलिहारी जांव ।। 22 ।।
साँई संशय दूर कर, कर शंका का नाश।
भान भ्रम दुविध्या दुख दारूण, समता सहज प्रकाश ।। 23 ।।

दया विनती

नांही प्रकट ह्वै रह्या, है सो रह्या लुकाइ।
संइयाँ पड़दा दूर कर, तूँ ह्वै प्रकट आइ ।। 24 ।।
दादू माया प्रकट ह्वै रही, यों जे होता राम।
अरस परस मिल खेलते, सब जीव सब ही ठाम ।। 25 ।।
दया करै तब अंग लगावै, भक्ति अखंडित देवै।
दादू दर्शन आप अकेला, दूजा हरि सब लेवै ।। 26 ।।
दादू साध सिखावैं आत्मा, सेवा दिढ कर लेहु।
पारब्रह्म सौं विनती, दया कर दर्शन देहु ।। 27 ।।

साहिब साधु दयालु हैं, हम ही अपराधी।
दादू जीव अभागिया, अविद्या साधी ।। 28 ।।
सब जीव तोरैं राम सौं, पै राम न तोरे।
दादू काचे ताग ज्यों, टूटै त्यों जोरे ।। 29 ।।

सजीवन

फूटा फेरि संवार कर, ले पहुँचावे ओर।
ऐसा कोई ना मिलै, दादू गई बहोर ।। 30 ।।
ऐसा कोई ना मिलै, तन फेरि संवारै।
बूढे तैं बाला करै, खै काल निवारै ।। 31 ।।

परच करूणा विनती

गलै विलै कर बीनती, एकमेक अरदास।
अरस परस करुणा करै, तब द्रवै दादू दास ।। 32 ।।
साँई तेरे डर डरूँ, सदा रहूँ भैभीत।
अजा सिंह ज्यों भय घणा, दादू लिया जीत ।। 33 ।।

पोख प्रतिपाल रक्षक

दादू पलक मांहि प्रकटै सही, जे जन करैं पुकार।
दीन दुखी तब देखकर, अति आतुर तिहिं बार ।। 34 ।।
आगे पीछे संग रहै, आप उठाये भार।
साधु दुखी तब हरि दुखी, ऐसा सिरजनहार ।। 35 ।।
सेवक की रक्षा करै, सेवक की प्रतिपाल।
सेवग की वाहर चढै, दादू दीन दयाल ।। 36 ।।

विनती सागर तरण

दादू काया नाव समंद में, औघट बूड़े आइ।
इहि अवसर एक अगाध बिन, दादू कौन सहाइ ।। 37 ।।
यहु तन भेरा भौजला, क्यों कर लंघे तीर।
खेवट बिन कैसे तिरै, दादू गहर गंभीर ।। 38 ।।

पिंड परोहन सिन्धु जल, भव सागर संसार।
राम बिना सूझै नहीं, दादू खेवनहार ।। 39 ।।
यहु घट बोहित धार में, दरिया वार न पार।
भैभीत भयानक देखकर, दादू करी पुकार ।। 40 ।।
कलियुग घोर अंधार है, तिसका वार न पार।
दादू तुम बिन क्यों तिरै, समर्थ सिरजनहार ।। 41 ।।
काया के वश जीव है, कस कस बँध्या मांहि।
दादू आत्मराम बिन, क्यों ही छूटै नांहि ।। 42 ।।
दादू प्राणी बँध्या पंच सौं, क्योंही छूटै नांहि।
निधणी आया मारिये, यहु जीव काया मांहि ।। 43 ।।
तुम बिन धणी न धोरी जीव का, यों ही आवै जाइ।
जे तूँ साँई सत्य है, तो बेगा प्रकटहु आइ ।। 44 ।।
निधणी आया मारिये, धणी न धोरी कोइ।
दादू सो क्यूं मारिये, साहिब सिर पर होइ ।। 45 ।।

दया विनती

राम विमुख जुग जुग दुखी, लख चौरासी जीव।
जामै मरै जग आवटै, राखणहारा पीव ।। 46 ।।

पोष प्रति पाल रक्षक

समर्थ सिरजनहार है, जे कुछ करै सो होइ।
दादू सेवक राख ले, काल न लागै कोइ ।। 47 ।।

विनती

साँई साचा नाम दे, काल झाल मिट जाइ।
दादू निर्भय ह्वै रहे, कबहूँ काल न खाइ ।। 48 ।।
कोई नहिं करतार बिन, प्राण उधारणहार।
जियरा दुखिया राम बिन, दादू इहि संसार ।। 49 ।।

जिनकी रक्षा तूँ करै, ते उबरे करतार।
जे तैं छाड़ै हाथ तैं, ते डूबे संसार ।। 50 ।।
राखणहारा एक तूँ, मारणहार अनेक।
दादू के दूजा नहीं, तूँ आपै ही देख ।। 51 ।।
दादू जग ज्वाला जम रूप है, साहिब राखणहार।
तुम बिच अन्तर जनि पड़ै, तातैं करूँ पुकार ।। 52 ।।
जहँ तहँ विषय विकार तैं, तुम ही राखणहार।
तन मन तुम को सौंपिया, साचा सिरजनहार ।। 53 ।।

दया विनती

दादू कहै– गरक रसातल जात है, तुम बिन सब संसार।
कर गहि कर्त्ता काढि ले, दे अवलम्बन आधार ।। 54 ।।
दादू दौं लागी जग प्रज्वलै, घट घट सब संसार।
हम तैं कछू न होत है, तुम बरसि बुझावणहार ।। 55 ।।
दादू आत्म जीव अनाथ सब, करतार उबारै।
राम निहोरा कीजिये, जनि काहू मारै ।। 56 ।।
अर्श जमीं औजूद में, तहाँ तपै अफताब।
सब जग जलता देख कर, दादू पुकारैं साध ।। 57 ।।
सकल भुवन सब आत्मा, निर्विष कर हरि लेइ।
पड़दा है सो दूर कर, कश्मल रहण न देइ ।। 58 ।।
तन मन निर्मल आत्मा, सब काहू की होइ।
दादू विषय विकार की, बात न बूझै कोइ ।। 59 ।।

विनती

समर्थ धोरी कंध धर, रथ ले ओर निवाहि।
मार्ग मांहि न मेलिये, पीछे बिड़द लजाहि ।। 60 ।।
दादू गगन गिरै तब को धरै, धरती-धर छंडै।
जे तुम छाड़हु राम रथ, कंधा को मंडै ।। 61 ।।

ज्यों वह बरत गगन तैं टूटै, कहाँ धरणी कहाँ ठाम।
लागी सुरति अंग तैं छूटे, सो कत जीवे राम ।। 61 ।।
अन्तरयामी एक तूँ, आतम के आधार।
जे तुम छाड़हु हाथ तैं, तो कौन संभालणहार ।। 62 ।।
तेरा सेवक तुम लगै, तुम्हीं माथै भार।
दादू डूबत रामजी, बेगि उतारो पार ।। 63 ।।
सत छूटा शूरातन गया, बल पौरुष भागा जाइ।
कोई धीरज ना धरै, काल पहूँता आइ ।। 64 ।।
संगी थाके संग के, मेरा कुछ न वशाइ।
भाव भक्ति धन लूटिये, दादू दुखी खुदाइ ।। 65 ।।

परिचय करुणा विनती

दादू जियरे जक नहीं, विश्राम न पावै।
आत्म पाणी लौंण ज्यों, ऐसे होइ न आवै ।। 66 ।।

दया विनती

दादू तेरी खूबी खूब है, सब नीका लागे।
सुन्दर शोभा काढ़ ले, सब कोई भागे ।। 67 ।।

विनती

तुम हो तैसी कीजिये, तो छूटेंगे जीव।
हम हैं ऐसी जनि करो, मैं सदके जाऊँ पीव ।। 68 ।।
अनाथों का आसरा, निरधारों आधार।
निर्धन का धन राम है, दादू सिरजनहार ।। 69 ।।
साहिब दर दादू खड़ा, निशदिन करै पुकार।
मीरां मेरा मिहर कर, साहिब दे दीदार ।। 70 ।।
दादू प्यासा प्रेम का, साहिब राम पिलाइ।
प्रकट प्याला देहु भर, मृतक लेहु जिलाइ ।। 71 ।।

अल्लह आली नूर का, भर-भर प्याला देहु।
हम को प्रेम पिलाइ करि, मतवाला कर लेहु ॥ 72 ॥
तुम को हमसे बहुत हैं, हमको तुमसे नांहि।
दादू को जनि परिहरै, तूँ रहु नैंनहुँ मांहि ॥ 73 ॥
तुम तैं तब ही होइ सब, दरश परश दर हाल।
हम तैं कबहुं न होइगा, जे बीतहिं जुग काल ॥ 74 ॥
तुम्हीं तैं तुम को मिलैं, एक पलक में आइ।
हम तैं कबहुँ न होइगा, कोटि कल्प जे जाइ ॥ 75 ॥

छिन बिछोह

साहिब सौं मिल खेलते, होता प्रेम सनेह।
दादू प्रेम सनेह बिन, खरी दुहेली देह ॥ 76 ॥
साहिब सौं मिल खेलते, होता प्रेम सनेह।
प्रकट दर्शन देखते, दादू सुखिया देह ॥ 77 ॥

करुणा

तुम को भावै और कुछ, हम कुछ किया और।
मिहर करो तो छूटिये, नहीं तो नांहीं ठौर ॥ 78 ॥
मुझ भावै सो मैं किया, तुझ भावै सो नांहि।
दादू गुनहगार है, मैं देख्या मन मांहि ॥ 79 ॥
खुशी तुम्हारी त्यों करो, हम तो मानी हार।
भावै बन्दा बख्शिये, भावै गह कर मार ॥ 80 ॥
दादू जे साहिब लेखा लिया, तो शीश काट शूली दिया।
मिहर मया कर फिल किया, तो जीये जीये कर जिया ॥ 81 ॥

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य चौंतीसवां विनती काअंग सम्पूर्ण ॥ अंग 34 ॥ साखी 81 ॥
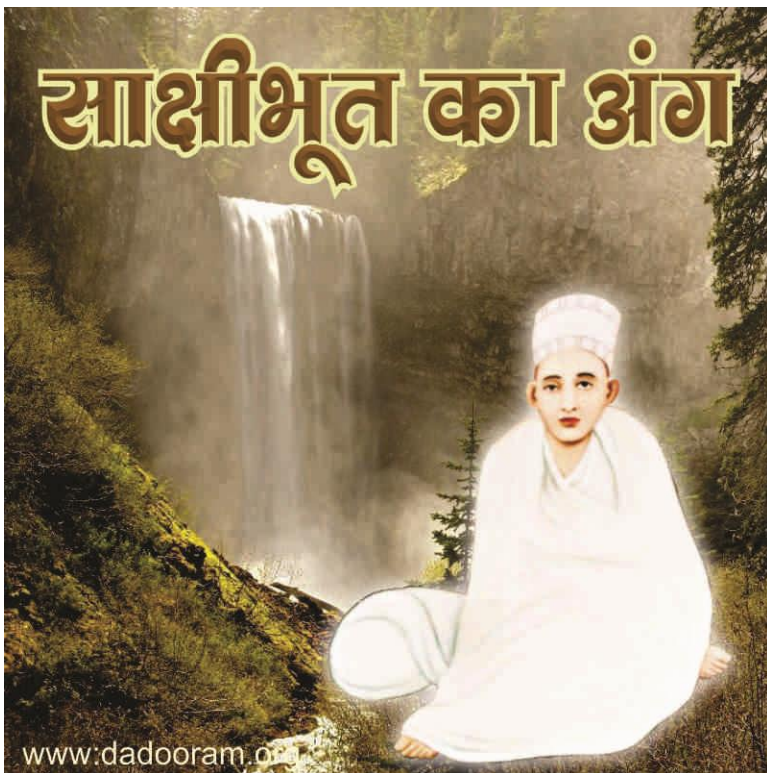
अथ साक्षीभूत का अंग ३५

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

भ्रम विध्वंसन

सब देखणहारा जगत का, अंतर पूरै साखि।
दादू साबित सो सही, दूजा और न राखि ॥ 2 ॥

मांही तैं मुझ को कहै, अन्तरजामी आप।
दादू दूजा धंध है, साचा मेरा जाप ॥ 3 ॥

कर्त्ता साक्षीभूत

करता है सो करेगा, दादू साक्षीभूत।
कौतिकहारा ह्वै रह्या, अणकर्ता अवधूत ॥ 4 ॥
दादू राजस कर उत्पत्ति करै, सात्विक कर प्रतिपाल।
तामस कर परलै करै, निर्गुण कौतिकहार ॥ 5 ॥
दादू ब्रह्म जीव हरि आत्मा, खेलैं गोपी कान्ह ।
सकल निरन्तर भर रह्या, साक्षीभूत सुजान ॥ 6 ॥

स्वकीय मित्र–शत्रुता

दादू जामण मरणा सान कर, यहु पिंड उपाया।
साँई दिया जीव को, ले जग में आया ॥ 7 ॥
दादू विष अमृत सब पावक पाणी, सतगुरु समझाया।
मनसा वाचा कर्मणा, सोई फल पाया ॥ 8 ॥
दादू जानै बूझै जीव सब, गुण औगुण कीजे।
जान बूझ पावक पड़ै, दई दोष न दीजे ॥ 9 ॥
मन ही मांहीं ह्वै मरै, जीवै मन ही मांहि।
साहिब साक्षीभूत है, दादू दूषण नांहि ॥ 10 ॥
बुरा बला सिर जीव के, होवै इस ही मांहि।
दादू कर्त्ता कर रह्या, सो सिर दीजै नांहि ॥ 11 ॥

साधु साक्षीभूत

कर्त्ता ह्वै कर कुछ करै, उस मांहि बँधावै।
दादू उसको पूछिये, उत्तर नहीं आवै ॥ 12 ॥
दादू केई उतारैं आरती, केई सेवा कर जांहि।
केई आइ पूजा करैं, केई खिलावें खांहि ॥ 13 ॥
केई सेवक ह्वै रहे, केई साधु संगति मांहि।
केई आइ दर्शन करैं, हम तैं होता नांहि ॥ 14 ॥

ना हम करैं करावैं आरती, ना हम पिवैं पिलावैं नीर।
करै करावै सांइयाँ, दादू सकल शरीर ॥ 15 ॥
करै करावै सांइयाँ, जिन दिया औजूद।
दादू बन्दा बीच में, शोभा को मौजूद ॥ 16 ॥
देवै लेवै सब करै, जिन सिरजे सब कोइ।
दादू बन्दा महल में, शोभा करैं सब कोइ ॥ 17 ॥

कर्त्ता साक्षीभूत

दादू जुवा खेले जाणराइ, ताको लखै न कोइ।
सब जग बैठा जीत कर, काहू लिप्त न होइ ॥ 18 ॥

इति श्री दादूदास–विरचिते सतगुरु–प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत–सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान–सर्वशास्त्र–शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र–सत्योपदेश–ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य–श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
पैंतीसवां साक्षीभूत काअंग सम्पूर्ण ॥ अंग 35 ॥ साखी 18 ॥
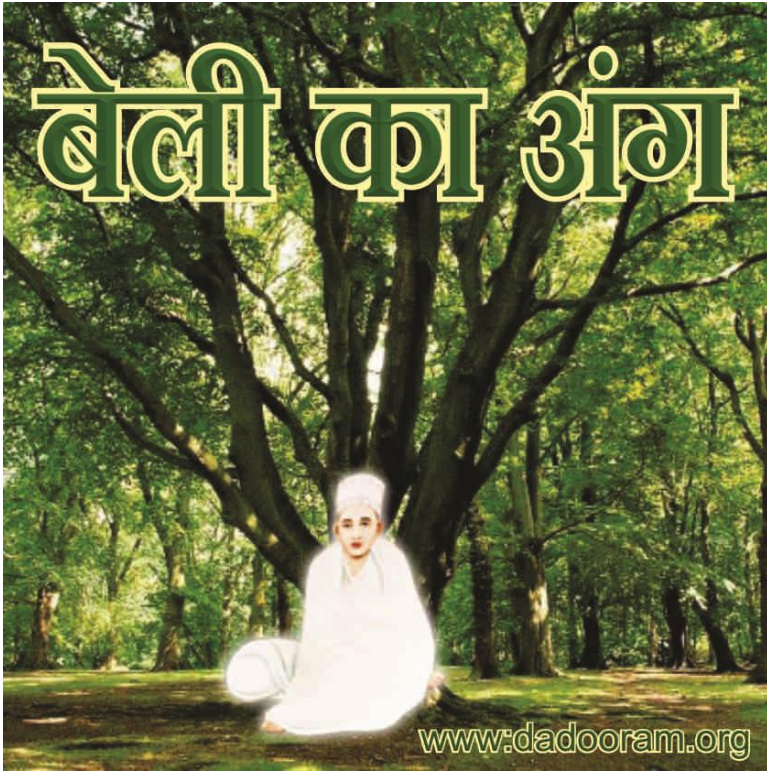
अथ बेली का अंग ३६

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥

दादू अमृत रूपी नाम ले, आत्म तत्त्वहि पोषै।
सहजैं सहज समाधि में, धरणी जल शोषै ॥ 2 ॥

पसरै तीनों लोक में, लिप्त नहीं धोखे।
सो फल लागै सहज में, सुन्दर सब लोके ॥ 3 ॥

दादू बेली आत्मा, सहज फूल फल होइ।
सहज सहज सतगुरु कहै, बूझै बिरला कोइ ॥ 4 ॥

जे साहिब सींचै नहीं, तो बेली कुम्हलाइ।
दादू सींचै सांइयाँ, तो बेली बधती जाइ ।। 5 ।।
हरि तरुवर तत आत्मा, बेली कर विस्तार।
दादू लागै अमर फल, कोइ साधू सींचनहार ।। 6 ।।
दादू सूखा रूंखड़ा, काहे न हरिया होइ।
आपै सींचै अमीरस, सुफल फलिया सोइ ।। 7 ।।
कदे न सूखै रूंखड़ा, जे अमृत सींच्या आप।
दादू हरिया सो फलै, कछू न व्यापै ताप ।। 8 ।।
जे घट रोपै राम जी, सींचै अमी अघाइ।
दादू लागै अमर फल, कबहूँ सूख न जाइ ।। 9 ।।
दादू अमर बेलि है आत्मा, खार समंदां मांहिं।
सूखे खारे नीर सौं, अमर फल लागे नांहिं ।। 10 ।।
दादू बहुगुणवंती बेलि है, ऊगी कालर मांहिं।
सींचै खारे नीर सौं, तातैं निपजै नांहिं ।। 11 ।।
बहुगुणवंती बेली है, मीठी धरती बाहि।
मीठा पानी सींचिये, दादू अमर फल खाहि ।। 12 ।।
अमृत बेली बाहिये, अमृत का फल होइ।
अमृत का फल खाइ कर, मुवा न सुणिया कोइ ।। 13 ।।
दादू विष की बेली बाहिये, विष ही का फल होइ।
विष ही का फल खाय कर, अमर नहिं कलि कोइ ।। 14 ।।
सतगुरु संगति नीपजै, साहिब सींचनहार।
प्राण वृक्ष पीवै सदा, दादू फलै अपार ।। 15 ।।
दया धर्म का रूंखड़ा, सत सौं बधता जाइ।
संतोष सौं फूलै फलै, दादू अमर फल खाइ ।। 16 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्ति योगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य

छत्तीसवां बेली काअंग सम्पूर्ण ।। अंग 36 ।। साखी 16 ।।
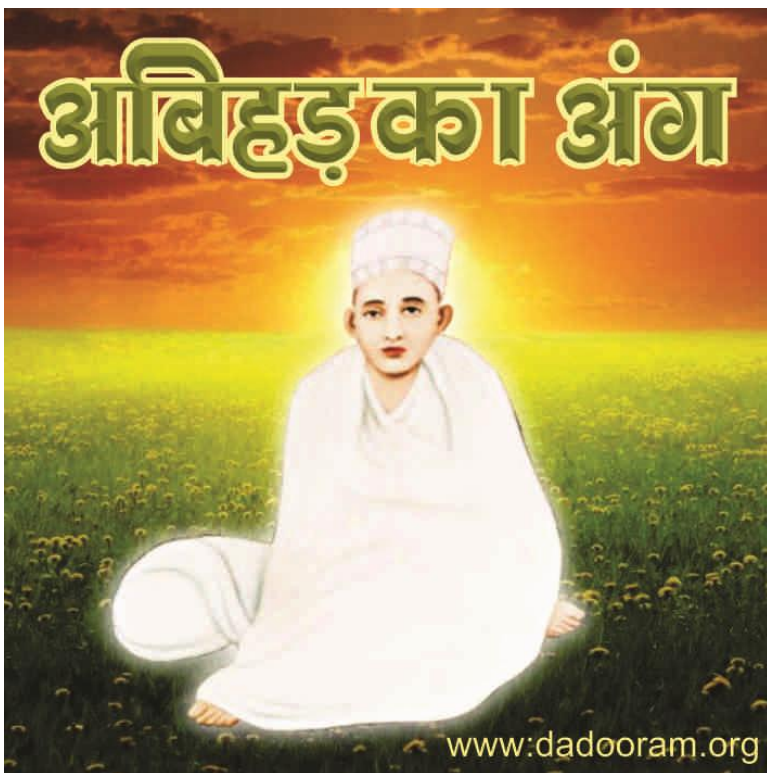
अथ अबिहड़ का अंग ३७

मंगलाचरण

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः ।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥ 1 ॥
दादू संगी सोई कीजिये, जे कलि अजरावर होइ ।
ना वह मरै, न बीछूटै, ना दुख व्यापै कोइ ॥ 2 ॥
दादू संगी सोई कीजिये, जे थिर इहि संसार ।
ना वह खिरै, न हम खपैं, ऐसा लेहु विचार ॥ 3 ॥
दादू संगी सोई कीजिये, सुख दुख का साथी ।
दादू जीवन-मरण का, सो सदा संगाती ॥ 4 ॥

दादू संगी सोई कीजिये, जे कबहूँ पलट न जाइ।
आदि अंत बिहड़ै नही, ता सन यहु मन लाइ ॥ 5 ॥
दादू अबिहड़ आप है, अमर उपावनहार।
अविनाशी आपै रहै, बिनसै सब संसार ॥ 6 ॥
दादू अबिहड़ आप है, साचा सिरजनहार।
आदि अंत बिहड़ै नहीं, बिनसै सब आकार ॥ 7 ॥
दादू अबिहड़ आप है, अविचल रह्या समाइ।
निहचल रमता राम है, जो दीसै सो जाइ ॥ 8 ॥
दादू अबिहड़ आप है, कबहूँ बिहड़े नांहि।
घटै बधै नहीं एक रस, सब उपज खपै उस मांहि ॥ 9 ॥
अबिहड़ अंग बिहड़ै नहीं, अपलट पलट न जाइ।
दादू अघट एक रस, सब में रह्या समाइ ॥ 10 ॥

अन्त समय की साखी

जेते गुण व्यापैं जीव को, तेते तैं तजे रे मन।
साहिब अपणे कारणैं,(भलो निबाह्यो प्रण) ॥ 11 ॥

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्तियोगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य
सैंतीसवां अबिहड़ काअंग सम्पूर्ण ॥ अंग 37 ॥ साखी 11 ॥
साखी स्कन्ध पूर्वार्द्ध भाग समाप्त

दादूराम ।। श्री परमात्मने नमः ।। सत्यराम

।। श्री दादूदयालवे नमः ।।

शब्द भाग (उत्तरार्ध)
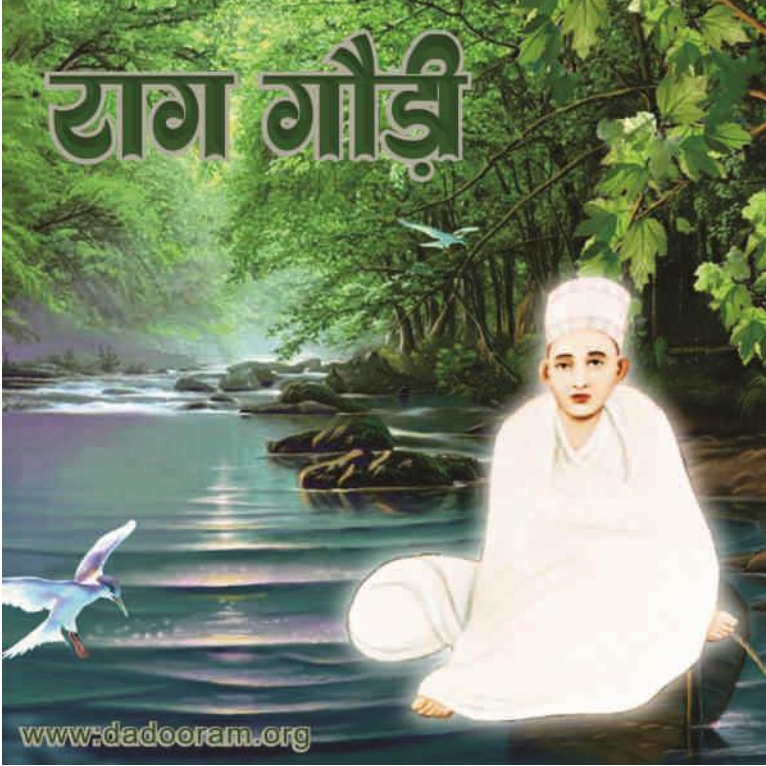
अथ राग गौड़ी १ (गायन समय दिन ३ से ६)

1. स्मरण शूरातन नाम निश्चय । त्रिताल

राम नाम नहीं छाडूं भाई, प्राण तजूं निकट जीव जाई ।। टेक।।

रती रती कर डारै मोहि, साँई संग न छाडूं तोहि ।। 1 ।।

भावै ले सिर करवत दे, जीवन मूरी न छाडूं तोहि ।। 2 ।।

पावक में ले डारै मोहि, जरै शरीर न छाडूं तोहि ।। 3 ।।

अब दादू ऐसी बन आई, मिलूं गोपाल निसान बजाई ।। 4 ।।

२. अन्य उपदेश । त्रिताल

राम नाम जनि छाड़े कोई, राम कहत जन निर्मल होई ।। टेक।।
राम कहत सुख संपति सार, राम नाम तिर लंघे पार ।। 1 ।।
राम कहत सुधि बुधि मति पाई, राम नाम जनि छाड़हु भाई ।। 2 ।।
राम कहत जन निर्मल होई, राम नाम कहि कश्मल धोई ।। 3 ।।
राम कहत को को नहिं तारे, यहु तत दादू प्राण हमारे ।। 4 ।।

३. स्मरण उपदेश । राज मृगांक ताल

मेरे मन भैया राम कहो रे।
राम नाम मोहि सहज सुनावै, उनहीं चरण मन कीन रहो रे ।। टेक।।
राम नाम ले संत सुहावै, कोई कहै सब शीश सहो रे।
वाही सौं मन जोरे राखो, नीके राशि लिये निबहो रे ।। 1 ।।
कहत सुनत तेरो कछू न जावै, पापनि छेदन सोई लहो रे।
दादू रे जन हरि गुण गावो, कालहि जालहि फेरि दहो रे ।। 2 ।।

४. विरह । एकताल

कौण विधि पाइये रे, मीत हमारा सोइ ।। टेक।।
पास पीव, परदेश है रे, जब लग प्रकटै नांहि।
बिन देखे दुख पाइये, यहु सालै मन मांहि ।। 1 ।।
जब लग नैंन न देखिये, प्रकट मिलै न आइ।
एक सेज संगहि रहै, यहु दुख सह्या न जाइ ।। 2 ।।
तब लग नेड़ै दूर है रे, जब लग मिले न मोहि।
नैन निकट नहीं देखिये, संग रहे क्या होइ ।। 3 ।।
कहा करूँ कैसे मिले रे, तलफै मेरा जीव।
दादू आतुर विरहनी, कारण अपने पीव ।। 4 ।।

५. विरह विलाप। षटताल

जियरा क्यों रहै रे, तुम्हारे दर्शन बिन बेहाल ।। टेक।।

परदा अंतर कर रहे, हम जीवैं किहिं आधार।

सदा संगाती प्रीतमा, अब के लेहु उबार ।। 1 ।।

गोप्य गुसांइ ह्वै रहे, अब काहे न प्रकट होइ।

राम सनेही संगिया, दूजा नांही कोइ ।। 2 ।।

अन्तरयामी छिप रहे, हम क्यों जीवैं दूर।

तुम बिन व्याकुल केशवा, नैन रहे जल पूर ।। 3 ।।

आप अपरछन ह्वै रहे, हम क्यों रैनि बिहाइ।

दादू दर्शन कारणै, तलफ तलफ जीव जाइ ।। 4 ।।

६. विरह हैरान । त्रिताल

अजहूँ न निकसैं प्राण कठोर।

दर्शन बिना बहुत दिन बीते, सुन्दर प्रीतम मोर ।। टेक।।

चार पहर चारों युग बीते, रैनि गँवाई भोर।

अवधि गई अजहूँ नहिं आये, कतहूँ रहे चित–चोर ।। 1 ।।

कबहूँ नैन निरख नहिं देखे, मारग चितवत तोर।

दादू ऐसे आतुर विरहनी, जैसे चंद चकोर ।। 2 ।।

७. सुन्दरी शृंगार

सो–धन पीवजी साज सँवारी,

अब वेगि मिलो तन जाइ बनवारी ।। टेक।।

साज शृंगार किया मन मांही, अजहूँ पीव पतीजै नांही ।। 1 ।।

पीव मिलन को अहिनिशि जागी, अजहूँ मेरी पलक न लागी ।। 2 ।।

जतन–जतन कर पंथ निहारूँ, पीव भावै त्यों आप सँवारूं।। 3 ।।

अब सुख दीजे जाऊँ बलिहारी, कहै दादू सुन विपति हमारी ।। 4 ।।

८. विरह चिन्ता । गजताल

सो दिन कबहूँ आवेगा, दादूड़ा पीव पावेगा ।। टेक।।
क्यूं ही अपने अंग लगावेगा, तब सब दुख मेरा जावेगा ।। 1 ।।
पीव अपने बैन सुनावेगा, तब आनंद अंग न मावेगा ।। 2 ।।
पीव मेरी प्यास मिटावेगा, तब आपहि प्रेम पिलावेगा ।। 3 ।।
दे अपना दर्श दिखावेगा, तब दादू मंगल गावेगा ।। 4 ।।

९. विरह प्रीति । पंचम ताल

तैं मन मोह्यो मोर रे, रह न सकूँ हौं राम जी ।। टेक।।
तोरे नांव चित लाइया रे, औरन भया उदास।
साँई ये समझाइया, हौं संग न छाडूं पास रे ।। 1 ।।
जाणूं तिलहि न बिछुटूं रे, जनि पछतावा होइ।
गुण तेरे रसना जपूं, सुणसी साँई सोइ रे ।। 2 ।।
भोरे जन्म गँमाइया रे, चीन्हा नहीं सो सार।
अजहूँ यह अचेत है, और नहीं आधार रे ।। 3 ।।
पीव की प्रीत तो पाइये रे, जो सिर होवे भाग।
यो तो अनत न जाइसी, रहसी चरणहुँ लाग रे ।। 4 ।।
अनतैं मन निवारिया रे, मोहि एकै सेती काज ।
अनत गये दुख ऊपजै, मोहि एकै सेती राज रे ।। 5 ।।
साँई सौं सहजैं रमूँ रे, और नहीं आन देव।
तहाँ मन विलंबिया, जहाँ अलख अभेव रे ।। 6 ।।
चरण कमल चित लाइया रे, भोरैं ही ले भाव।
दादू जन अचेत है, सहजैं ही तूँ आव रे ।। 7 ।।

१०. विरह विलाप। पंचमताल

विरहनी को श्रृंगार न भावे, है कोई ऐसा राम मिलावे ।। टेक।।
विसरे अंजन मंजन चीरा, विरह व्यथा यहु व्यापै पीरा ।। 1 ।।
नव–सत थाके सकल श्रृंगारा, है कोई पीड़ मिटावनहारा ।। 2 ।।
देह गेह नहीं सुधि शरीरा, निशदिन चितवत चातक नीरा ।। 3 ।।
दादू ताहि न भावे आन, राम बिना भई मृतक समान ।। 4 ।।

११. करुणा विनती । पंजाबी त्रिताल

अब तो मोहि लागी बाइ, उन निश्चल चित्त लियो चुराइ ।। टेक।।
आन न रुचै और नहीं भावै, अगम अगोचर तहँ मन जाइ।
रूप न रेख वर्ण कहूँ कैसा, तिन चरणों चित्त रह्या समाइ ।। 1 ।।
तिन चरणों चित्त सहज समाना, सो रस भीना तहँ मन धाइ।
अब तो ऐसी बन आई, विष तजैं अरु अमृत खाइ ।। 2 ।।
कहा करूँ, मेरा वश नांही, और न मेरे अंग सुहाइ।
पल इक दादू देखन पावै, तो जन्म जन्म की तृषा बुझाइ ।। 3 ।।

१२. करुणा विनती । पंजाबी त्रिताल

तूँ जनि छाड़ै केशवा, मेरे और निवाहनहार हो ।। टेक।।
अवगुण मेरे देखकर, तूँ ना करि मैला मन।
दीनानाथ दयाल है, अपराधी सेवक जन हो ।। 1 ।।
हम अपराधी जन्म के, नखशिख भरे विकार।
मेट हमारे अवगुणा, तूँ गरवा सिरजनहार हो ।। 2 ।।
मैं जन बहुत बिगारिया, अब तुम ही लेहु सँवार ।
समर्थ मेरा सांइयाँ, तूँ आपै आप उधार हो ।। 3 ।।
तूँ न विसारी केशवा, मैं जन भूला तोहि।
दादू को और निवाह ले, अब जनि छाड़े मोहि हो ।। 4 ।।

13. केवल विनती । गजताल

राम सँभालिये रे, विषम दुहेली बार ।। टेक।।
मंझ समंदां नावरी रे, बूडे खेवट-बाज।
काढनहारा को नहीं, एक राम बिन आज ।। 1 ।।
पार न पहुँचै राम बिन, भेरा भवजल मांहि।
तारणहारा एक तूँ, दूजा कोई नांहि ।। 2 ।।
पार परोहन तो चले, तुम खेवहु सिरजनहार।
भव सागर में डूब है, तुम्ह बिन प्राण अधार ।। 3 ।।
औघट दरिया क्यों तिरे, बोहिथ बैसणहार।
दादू खेवट राम बिन, कौण उतारे पार ।। 4 ।।

14. रंग ताल

पार नहीं पाइये रे, राम बिना को निर्वाहणहार ।। टेक।।
तुम बिन तारण को नहीं, दूभर यहु संसार।
पैरत थाके केशवा, सूझै वार न पार ।। 1 ।।
विषम भयानक भव-जला, तुम्ह बिन भारी होइ।
तूँ हरि तारण केशवा, दूजा नांही कोइ ।। 2 ।।
तुम्ह बिन खेवट को नहीं, अतिर तिरा नहिं जाइ।
औघट भेरा डूब है, नांही आन उपाइ ।। 3 ।।
यहु घट औघट विषम है, डूबत मांहि शरीर ।
दादू कायर, राम बिन, मन नहिं बाँधै धीर ।। 4 ।।

15. रंग ताल

क्यों हम जीवैं दास गुसाँई, जे तुम छाड़हु समर्थ साँई ।। टेक।।
जे तुम जन को मनहिं बिसारा, तो दूसर कौण संभालणहारा ।। 1 ।।
जे तुम परिहर रहो नियारे, तो सेवक जाइ कवन के द्वारे ।। 2 ।।

जे जन सेवक बहुत बिगारे, तो साहिब गरवा दोष निवारे ।। 3 ।।
समर्थ साँई साहिब मेरा, दादू दास दीन है तेरा ।। 4 ।।

16. करुणा । वीर विक्रम ताल

क्यों कर मिलै मोकौं राम गुसाँई, यहु बिषिया मेरे वश नांही ।। टेक ।।
यहु मन मेरा दहदिशि धावै, नियरे राम न देखन पावे ।। 1 ।।
जिह्वा स्वाद सबै रस लागे, इन्द्री भोग विषय को जागे ।। 2 ।।
श्रवणहुँ साच कदे नहिं भावे, नैन रूप तहँ देख लुभावे ।। 3 ।।
काम क्रोध कदे नहीं छीजे, लालच लाग विषय रस पीजे ।। 4 ।।
दादू देख मिले क्यों साँई, विषय विकार बसे मन मांही ।। 5 ।।

17. परिचय विनती । वीर विक्रम ताल

जो रे भाई ! राम दया नहीं करते ।
नवका नाम खेवट हरि आपै, यों बिन क्यों निस्तरते ।। टेक ।।
करणी कठिन होत नहिं मोपै, क्यों कर ये दिन भरते ।
लालच लाग परत पावक में, आपहि आपै जरते ।। 1 ।।
स्वाद हि संग विषय नहिं छूटै, मन निश्चल नहिं धरते ।
खाय हलाहल सुख के तांई, आपै ही पच मरते ।। 2 ।।
मैं कामी कपटी क्रोध काया में, कूप परत नहिं डरते ।
करवत काम शीश धर अपने, आपहि आप विहरते ।। 3 ।।
हरि अपना अंग आप नहिं छाड़ै, अपनी आप विचरते ।
पिता क्यों पूत को मारै, दादू यूं जन तिरते ।। 4 ।।

18. विरह विलाप विनती । द्वितीय ताल

तो लग जनि मारे तूँ मोहि, जो लग मैं देखूं नहिं तोहि ।। टेक ।।
अब के बिछुरे मिलन कैसे होइ, इहि विधि बहुरि न चिन्है कोइ ।। 1 ।।

दीन दयाल दया कर जोइ, सब सुख आनंद तुम्ह तैं होइ ।। 2 ।।
जन्म-जन्म के बन्धन खोइ, देखन दादू अहिनिशि रोइ ।। 3 ।।

19. स्पर्श विनती । द्वितीय ताल

संग न छाडूं मेरा पावन पीव, मैं बलि तेरे जीवन जीव ।। टेक ।।
संग तुम्हारे सब सुख होहि, चरण कमल मुख देखूं तोहि ।। 1 ।।
अनेक जतन कर पाया सोइ, देखूं नैनहुँ तो सुख होइ ।। 2 ।।
शरण तुम्हारी अंतर वास, चरण कमल तहँ देहु निवास ।। 3 ।।
अब दादू मन अनत न जाइ, अंतर वेधि रह्यो ल्यौ लाइ ।। 4 ।।

20. परिचय विनती (गुजराती भाषा) । त्रिताल

नहीं मेल्हूँ , राम ! नहीं मेल्हूँ ,
मैं शोधि लीधो नहीं मेल्हूँ, चित्त तुम्ह सूं बांधूं नहीं मेल्हूँ ।। टेक ।।
हूँ तारे काजे तालाबेली, हवे केम मने जाशे मेल्ही ।। 1 ।।
साहसि तूँ ने मनसों गाढो, चरण समानों केवी पेरे काढो ।। 2 ।।
राखिश हृदे तूँ मारो स्वामी, मैं दुहिले पाम्यों अंतरजामी ।। 3 ।।
हवे न मेल्हूँ तूँ स्वामी मारो, दादू सन्मुख सेवक तारो ।। 4 ।।

21. परिचय करुणा विनती । दादरा

राम ! सुनहु न विपति हमारी हो, तेरी मूरति की बलिहारी हो ।। टेक ।।
मैं जु चरण चित चाहना, तुम सेवक साधारना ।। 1 ।।
तेरे दिन प्रति चरण दिखावना, कर दया अंतर आवना ।। 2 ।।
जन दादू विपति सुनावना, तुम गोविन्द तपत बुझावना ।। 3 ।।

22. परिचय विनती-प्रश्न । द्रुताली

कौण भांति भल मानैं गुसाँई, तुम्ह भावे सो मैं जानत नांहीं ।। टेक ।।

कै भल मानैं नाचें गायें, कै भल मानैं लोक रिझायें ।। 1 ।।
कै भल मानैं तीरथ न्हायें, कै भल मानैं मूंड मुंडायें ।। 2 ।।
कै भल मानैं सब घर त्यागी, कै भल मानैं भये वैरागी ।। 3 ।।
कै भल मानैं जटा बधाये, कै भल मानैं भस्म लगाये ।। 4 ।।
कै भल मानैं वन वन डोलें, कै भल मानैं मुखहि न बोलें ।। 5 ।।
कै भल मानैं जप तप कीये, कै भल मानैं करवत लीये ।। 6 ।।
कै भल मानैं ब्रह्म गियानी, कै भल मानैं अधिक धियानी ।। 7 ।।
जे तुम्ह भावै सो तुम्ह पै आहि, दादू न जाणैं कहि समझाहि ।। 8 ।।
साखी से उत्तर–
दादू जे तूँ समझै तो कहूँ, साचा एक अलेख।
डाल पान तज मूल गहि, क्या दिखलावै भेष ।। 1 ।।
दादू सच बिन साँई ना मिलै, भावै भेष बनाइ।
भावै करवत उरध मुख, भावै तीरथ जाइ ।। 2 ।।

२३. परिचय विनती

अहो ! गुण तोर, अवगुण मोर, गुसाँई।
तुम कृत कीन्हा, सो मैं जानत नांहीं ।। टेक।।
तुम उपकार किये हरि केते, सो हम बिसर गये।
आप उपाइ अग्निमुख राखे, तहाँ प्रतिपाल भये, हो गुसाँई ।। 1 ।।
नख–सिख साज किये हो सजीवन, उदर आधार दिये।
अन्न–पान जहँ जाइ भस्म हो, तहाँ तैं राखि लिये, हो गुसाँई ।। 2 ।।
दिन दिन जान जतन कर पोषे, सदा समीप रहे।
अगम अपार किये गुन केते, कबहूँ नांहि कहे, हो गुसाँई ।। 3 ।।
कबहूँ नांहि न तुम तन चितवत, माया मोह परे।
दादू तुम तज जाइ गुसाँई, विषया मांहि जरे, हो गुसाँई ।। 4 ।।

२४. उपदेश चेतावनी । एकताल

कैसे जीविये रे, साँई संग न पास ?
चंचल मन निश्चल नहीं, निशिदिन फिरे उदास ।। टेक।।
नेह नहीं रे राम का, प्रीति नहीं परकाश।
साहिब का सुमिरण नहीं, करे मिलन की आश ।। 1 ।।
जिस देखे तूँ फूलिया रे, पाणी पिंड बधाणां मांस।
सो भी जल-बल जाइगा, झूठा भोग विलास ।। 2 ।।
तो जीवीजे जीवणां, सुमिरै श्वासै श्वास।
दादू प्रकट पीव मिलै, तो अंतर होइ उजास ।। 3 ।।

२५. हितोपदेश । चटताल

जियरा मेरे सुमिर सार, काम क्रोध मद तज विकार ।। टेक।।
तूँ जनि भूले मन गँवार, शिर भार न लीजे मान हार ।। 1 ।।
सुन समझायो बार-बार, अजहूँ न चेतै, हो हुसियार ।। 2 ।।
कर तैसे भव तिरिये पार, दादू अब तैं यही विचार ।। 3 ।।

२६. (क)-भय चेतावनी । त्रिताल

जियरा, चेत रे जनि जारे ।
हे जैं हरि सौं प्रीति न कीन्ही, जन्मअमोलक हारे ।। टेक।।
बेर बेर समझायो रे जियरा, अचेत न होइ गंवारे।
यहु तन है कागद की गुड़िया, कछु इक चेत विचारे ।। 1 ।।
तिल तिल तुझको हानि होत है, जे पल राम बिसारे।
भय भारी दादू के जिय में, कहु कैसे कर डारे ।। 2 ।।

२६ (ख) पंजाबी त्रिताल

जियरा काहे रे मूढ डोले?
वनवासी लाला पुकारे, तूँही तूँही कर बोले ।। टेक।।

साथ सवारी ले न गयो रे, चालण लागो बोले।
तब जाइ जियरा जाणैगो रे, बाँधे ही कोई खोले ।। 1 ।।
तिल तिल मांहैं चेत चली रे, पंथ हमारा तोले।
गहिला दादू कछू न जाणै, राख ले मेरे मोले ।। 2 ।।

२७. अबल वैराग्य। त्रिताल

ता सुख को कहो का कीजै, जातैं पल पल यहु तन छीजै ।। टेक।।
आसन कुंजर सिर छत्र धरीजै, ताथैं फिरि फिरि दुःख सहीजै ।। 1 ।।
सेज सँवार, सुन्दरी संग रमीजै, खाइ हलाहल भरम मरीजै ।। 2 ।।
बहु विधि भोजन मान रुचि लीजै, स्वाद संकट भ्रम पाश परीजै ।। 3 ।।
ये तज दादू प्राण पतीजै, सब सुख रसना राम रमीजै ।। 4 ।।

२८. उपदेश । एकेताल

मन निर्मल तन निर्मल भाई, आन उपाइ विकार न जाई ।। टेक।।
जो मन कोयला तो तन कारा, कोटि करै नहिं जाइ विकारा ।। 1 ।।
जो मन विषहर तो तन भुवंगा, करै उपाइ विषय पुनि संगा ।। 2 ।।
मन मैला तन उज्जवल नांहीं, बहु पचहारे विकार न जांहीं ।। 3 ।।
मन निर्मल तन निर्मल होई, दादू साच विचारै कोई ।। 4 ।।

२९. उपदेश चेतावनी। त्रिताल

मैं मैं करत सबै जग जावै, अजहूँ अंध न चेते रे।
यह दुनिया सब देख दिवानी, भूल गये हैं केते रे ।। टेक।।
मैं मेरे में भूल रहे रे, साजन सोइ विसारा।
आया हीरा हाथ अमोलक, जन्म जुवा ज्यों हारा ।। 1 ।।
लालच लोभैं लाग रहे रे, जानत मेरी मेरा।
आपहि आप विचारत नाहीं, तूँ का को को तेरा ।। 2 ।।

आवत हैं सब जाता दीसैं, इनमें तेरा नाहीं।
इन सौं लाग जन्म जनि खोवै, शोधि देख सचु मांहीं ॥ 3 ॥
निहचल सौं मन मानैं मेरा, साँई सौं बन आई।
दादू एक तुम्हारा साजन, जिन यहु भुरकी लाई ॥ 4 ॥

३०. उपदेश चेतावनी । त्रिताल

का जिवना का मरणा रे भाई, जो तैं राम न रमसि अघाई ॥ टेक॥
का सुख संपत्ति छत्रपति राजा, वनखंड जाइ बसे किहिं काजा ॥ 1 ॥
का विद्या गुन पाठ पुराना, का मूरख जो तैं राम न जाना ॥ 2 ॥
का आसन कर अहनिशि जागे, का फिर सोवत राम न लागे ॥ 3 ॥
का मुक्ता, का बंधे होई, दादू राम न जाना सोई ॥ 4 ॥

३१. मन प्रबोध । पंजाबी त्रिताल

मन रे राम बिना तन छीजे ।
जब यहु जाइ मिलै माटी में, तब कहु कैसे कीजै ॥ टेक॥
पारस परस कंचन कर लीजे, सहज सुरति सुखदाई।
माया बेलि विषय फल लागे, ता पर भूल न भाई ॥ 1 ॥
जब लग प्राण पिंड है नीका, तब लग ताहि जनि भूलै।
यहु संसार सेमल के सुख ज्यों, ता पर तूँ जनि फूलै ॥ 2 ॥
अवसर यह जान जगजीवन, समझ देख सचु पावै।
अंग अनेक आन मत भूलै, दादू जनि डहकावै ॥ 3 ॥

३२. मृगोक्ति उपदेश। झपताल

मोह्यो मृग देख वन अंधा, सूझत नहीं काल के फंधा ॥ टेक॥
फूल्यो फिरत सकल वन मांही, सिर साधे शर सूझत नांही ॥ 1 ॥
उदमद मातो वन के ठाट, छाड़ चल्यो सब बारह बाट ॥ 2 ॥

फंध्यो न जानै वन के चाइ, दादू स्वाद बंधानो आइ ॥ 3 ॥

३३. मन प्रति उपदेस निसारुक ताल

काहे रे मन राम विसारै, मनखा जन्म जाय जिय हारै ॥ टेक॥
मात पिता को बन्धन भाई, सब ही सुपना कहा सगाई ॥ 1 ॥
तन धन जोबन झूठा जाणी, राम हृदय धर सारंग प्राणी ॥ 2 ॥
चंचल चितवत झूठी माया, काहे न चेतै सो दिन आया ॥ 3 ॥
दादू तन मन झूठा कहिये, राम चरण गह काहे न रहिये ॥ 4 ॥

३४. मनुष्य देह महात्म्य । झपताल

अैसा जनम अमोलिक भाई, जामें आइ मिलै राम राई ॥ टेक॥
जामें प्राण प्रेम रस पीवै, सदा सुहाग सेज सुख जीवै ॥ 1 ॥
आत्मा आइ राम सौं राती, अखिल अमर धन पावै थाती ॥ 2 ॥
प्रकट दर्शन परसन पावै, परम पुरुष मिलि मांहि समावै ॥ 3 ॥
ऐसा जन्म नहीं नर आवै, सो क्यों दादू रतन गँवावै ॥ 4 ॥

३५. परिचय सत्संग । दीपचन्दी ताल

सत्संगति मगन पाइये, गुरु प्रसादैं राम गाइये ॥ टेक॥
आकाश धरणी धरीजे, धरणी आकाश कीजे, शून्य माहिं निरख लीजे ॥ 1 ॥
निरख मुक्ताहल मांहैं साइर आयो, अपने पिया हौं ध्यावत खोजत पायौ ॥ 2 ॥
सोच साइर अगोचर लहिये, देव देहुरे मांही कवन कहिये ॥ 3 ॥
हरि को हितार्थ ऐसो लखै न कोई, दादू जे पीव पावै अमर होई ॥ 4 ॥

३६. उपदेश चेतावनी । एकताल

कौण जनम कहँ जाता है, अरे भाई, राम छाड़ि कहाँ राता है ॥ टेक॥
मैं मैं मेरी इन सौं लाग, स्वाद पतंग न सूझै आग ॥ 1 ॥

विषया सौं रत गर्व गुमान, कुंजर काम बँधे अभिमान ।। 2 ।।
लोभ मोह मद माया फंध, ज्यों जल मीन न चेतै अंध ।। 3 ।।
दादू यहु तन यों ही जाइ, राम विमुख मर गये विलाइ ।। 4 ।।

३7 एकताल

मन मूरखा, तैं क्या किया ? कुछ पीव कारण वैराग न लिया,
रे तैं जप तप साधी क्या दिया ।। टेक ।।
रे तैं करवत काशी कद सह्या, रे तूँ गंगा मांहीं ना बह्या,
रे तैं विरहनी ज्यों दुख ना सह्या ।। 1 ।।
रे तैं पालै पर्वत ना गल्या, रे तैं आप ही आपा ना दह्या,
रे तैं पीव पुकारी कद कह्या ।। 2 ।।
होइ प्यासे हरि जल ना पिया, रे तूँ वज्र न फाटो रे हिया।
धिक् जीवन दादू ये जिया ।। 3 ।।

३८. यतिताल

क्या कीजै मनिखा जन्म को, राम न जपहि गँवारा रे ?
माया के मद मातो बहे, भूल रह्या संसारा रे ।। टेक ।।
हिरदै राम न आवई, आवै विषय विकारा रे।
हरि मारग सूझै नहीं, कूप परत नहीं बारा रे ।। 1 ।।
आपा अग्नि जु आप में, तातैं अहनिशि जरै शरीरा रे।
भाव भक्ति भावै नहीं, पीवै न हरि जल नीरा रे ।। 2 ।।
मैं मेरी सब सूझई, सूझै माया जालो रे।
राम नाम सूझै नहीं, अंध न सूझै कालो रे ।। 3 ।।
ऐसैं ही जन्म गमाइया, जित आया तित जाये रे।
राम रसायन ना पिया, जन दादू हेत लगाये रे ।। 4 ।।

३७. परिचय वैराग्य। दादरा

इनमें क्या लीजे क्या दीजे, जन्म अमोलक छीजे ।। टेक।।

सोवत सुपिना होई, जागे थैं नहिं कोई ।। 1 ।।

मृगतृष्णा जल जैसा, चेत देख जग ऐसा ।। 2 ।।

बाजी भरम दिखावा, बाजीगर डहकावा ।। 3 ।।

दादू संगी तेरा, कोई नहीं किस केरा ।। 4 ।।

४०. चेतावनी उपदेश । सिंह लील ताल

खालिक जागे जियरा सोवे, क्यों कर मेला होवे ।। टेक।।

सेज एक नहिं मेला, तातैं प्रेम न खेला ।। 1 ।।

साँई संग न पावा, सोवत जनम गमावा ।। 2 ।।

गाफिल नींद न कीजे, आयु घटे तन छीजे ।। 3 ।।

दादू जीव अयाना, झूठे भरम भुलानां ।। 4 ।।

अथ राग जंगली गौड़ी

41. पहरा (पंजाबी भाषा)। कहरवा ताल (बाल्यावस्था)

पहले पहरे रैणि दे, बणिजारिया, तूँ आया इहि संसार वे।

मायादा रस पीवण लग्गा, बिसार्या सिरजनहार वे।

सिरजनहार बिसारा किया पसारा, मात पिता कुल नार वे।

झूठी माया आप बँधाया, चेतै नहीं गँवार वे।

दादू दास कहै, बणिजारा, तूँ आया इहि संसार वे ।। 1 ।।

(तरुण अवस्था)

दूजे पहरै रैणि दे, बणिजारिया, तूँ रत्ता तरुणी नाल वे।

माया मोह फिरै मतवाला, राम न सक्या संभाल वे।

राम न संभाले, रत्ता नाले, अंध न सूझै काल वे।

हरि नहीं ध्याया, जन्म गँवाया, दह दिशि फूटा ताल वे।

दह दिशि फूटा, नीर निखूटा, लेखा डेवण साल वे।
दादू दास कहै, बणिजारा, तूँ रत्ता तरुणी नाल वे ।। 2 ।।
(प्रौढ अवस्था)
तीजे पहरे रैणि दे, बणिजारिया, तैं बहुत उठाया भार वे।
जो मन भाया, सो कर आया, ना कुछ किया विचार वे।
विचार न कीया नाम न लीया, क्यों कर लंघै पार वे।
पार न पावे, फिर पछितावे, डूबण लग्गा धार वे।
डूबण लग्गा, भेरा भग्गा, हाथ न आया सार वे।
दादू दास कहै, बणिजारा, तैं बहुत उठाया भार वे ।। 3 ।।
वृद्धावस्था जर्जरी भूत (वृद्धावस्था)
चौथे पहरे रैणि दे, बणिजारिया, तूँ पक्का हुआ पीर वे।
जोबन गया, जरा वियापी, नांही सुधि शरीर वे।
सुधि ना पाई, रैणि गँवाई, नैंनहुँ आया नीर वे।
भव-जल भेरा डूबण लग्गा, कोई न बंधै धीर वे।
कोई धीर न बंधे जम के फंधे, क्यों कर लंघे तीर वे।
दादू दास कहै, बणिजारा, तूँ पक्का हुआ पीर वे ।। 4 ।।

४२. काल चेतावनी राग गौड़ी । पंजाबी त्रिताल
काहे रे नर करहु डफाण, अंत काल घर गोर मसाण ।। टेक।।
पहले बलवंत गये विलाइ, ब्रह्मा आदि महेश्वर जाइ ।। 1 ।।
आगैं होते मोटे मीर, गये छाडि पैगम्बर पीर ।। 2 ।।
काची देह कहा गर्वाना, जे उपज्या सो सबै विलाना ।। 3 ।।
दादू अमर उपावनहार, आपहि आप रहै करतार ।। 4 ।।

४३. उपदेश पंजाबी । त्रिताल
इत घर चोर न मूसै कोई, अंतर है जे जानै सोई ।। टेक।।

जागहु रे जन तत्त न जाइ, जागत है सो रह्या समाइ ॥ 1 ॥
जतन जतन कर राखहु सार, तस्कर उपजै कौन विचार ॥ 2 ॥
इब कर दादू जाणैं जे, तो साहिब शरणागति ले ॥ 3 ॥

४४. उपदेश चेतावनी । पंचम ताल

मेरी मेरी करत जग खीना, देखत ही चल जावै।
काम क्रोध तृष्णा तन जालै, तातैं पार न पावै ॥ टेक॥
मूरख ममता जन्म गमावै, भूल रहे इहिं बाजी।
बाजीगर को जानत नांही, जन्म गंवावै वादी ॥ 1 ॥
प्रपंच पंच करै बहुतेरा, काल कुटुम्ब के तांई।
विषै के स्वाद सबै ये लागे, तातैं चीन्हत नांही ॥ 2 ॥
येता जिय में जानत नांहीं, आइ कहाँ चल जावै।
आगे पीछे समझै नांहीं, मूरख यूं डहकावै ॥ 3 ॥
ये सब भ्रम भान भल पावै, शोध लेहु सो साँई।
सोई एक तुम्हारा साजन, दादू दूसर नांही ॥ 4 ॥

४५. गर्व हानिकर । पंचम ताल

गर्व न कीजिये रे, गर्वै होइ विनाश।
गर्वै गोविन्द ना मिलै, गर्वै नरक निवास ॥ टेक॥
गर्वै रसातल जाइये, गर्वै घोर अन्धार।
गर्वै भौ-जल डूबिये, गर्वै वार न पार ॥ 1 ॥
गर्वै पार न पाइये, गर्वै जमपुर जाइ।
गर्वै को छूटै नहीं, गर्वै बँधे आइ ॥ 2 ॥
गर्वै भाव न ऊपजै, गर्वै भक्ति न होइ।
गर्वै पिव क्यों पाइये, गर्वै करै जनि कोइ ॥ 3 ॥
गर्वै बहुत विनाश है, गर्वै बहुत विकार।

दादू गर्व न कीजिये, सन्मुख सिरजनहार ।। 4 ।।

४६. हित उपदेश । नट ताल

हुसियार रहो, मन मारैगा, साँई सतगुरु तारैगा ।। टेक ।।

माया का सुख भावै, मूरख मन बौरावै रे ।। 1 ।।

झूठ साच कर जाना, इन्द्रिय स्वाद भुलाना रे ।। 2 ।।

दुख को सुख कर मानै, काल झाल नहीं जानै रे ।। 3 ।।

दादू कह समझावै, यहु अवसर बहुरि न पावै रे ।। 4 ।।

४७. विश्वास । नटताल

साहिबजी सत मेरा रे, लोग झखैं बहुतेरा रे ।। टेक ।।

जीव जन्म जब पाया, मस्तक लेख लिखाया रे ।। 1 ।।

घटै बधै कुछ नांही, कर्म लिख्या उस माहीं रे ।। 2 ।।

विधाता विधि कीन्हा, सिरज सबन को दीन्हा रे ।। 3 ।।

समरथ सिरजनहारा, सो तेरे निकट गँवारा रे ।। 4 ।।

सकल लोक फिर आवै, तो दादू दीया पावै रे ।। 5 ।।

४८. राज विधाधर ताल

पूर रह्या परमेश्वर मेरा, अणमांग्या देवै बहुतेरा ।। टेक ।।

सिरजनहार सहज में देइ, तो काहे धाइ माँग जन लेइ ।। 1 ।।

विश्वंभर सब जग को पूरै, उदर काज नर काहे झूरै ।। 2 ।।

पूरक पूरा है गोपाल, सबकी चिंत करै दरहाल ।। 3 ।।

समर्थ सोई है जगन्नाथ, दादू देख रहे संग साथ ।। 4 ।।

४९. नाम विश्वास । राज मृगांक ताल

राम धन खात न खूटै रे,

अपरंपार पार नहिं आवै, आथि न टूटै रे ।। टेक।।
तस्कर लेइ न पावक जालै, प्रेम न छूटै रे ।। 1 ।।
चहुंदिशि पसर्‍यो बिन रखवाले, चोर न लूटै रे ।। 2 ।।
हरि हीरा है राम रसायन, सरस न सूखै रे ।। 3 ।।
दादू और आथि बहुतेरी, तुस नर कूटै रे ।। 4 ।।

५०. तत्व उपदेश । राज मृगांक ताल

तूँ है तूँ है तूँ है तेरा, मैं नहीं मैं नहीं मैं नहीं मेरा ।। टेक।।
तूँ है तेरा जगत उपाया, मैं मैं मेरा धंधै लाया ।। 1 ।।
तूँ है तेरा खेल पसारा, मैं मैं मेरा कहै गँवारा ।। 2 ।।
तूँ है तेरा सब संसारा, मैं मैं मेरा तिन सिर भारा ।। 3 ।।
तूँ है तेरा काल न खाइ, मैं मैं मेरा मर मर जाइ ।। 4 ।।
तूँ है तेरा रह्या समाइ, मैं मैं मेरा गया विलाइ ।। 5 ।।
तूँ है तेरा तुम्हीं मांहिं, मैं मैं मेरा मैं कुछ नांहिं ।। 6 ।।
तूँ है तेरा तूँ ही होइ, मैं मैं मेरा मिल्या न कोइ ।। 7 ।।
तूँ है तेरा लंघे पार, दादू पाया ज्ञान विचार ।। 8 ।।

५१. संजीवनी । पंचम ताल

राम विमुख जग मर मर जाइ, जीवैं संत रहैं ल्यौ लाइ ।। टेक।।
लीन भये जे आतम रामा, सदा सजीवन कीये नामा ।। 1 ।।
अमृत राम रसायन पीया, तातैं अमर कबीरा कीया ।। 2 ।।
राम राम कह राम समाना, जन रैदास मिले भगवाना ।। 3 ।।
आदि अंत केते कलि जागे, अमर भये अविनासी लागे ।। 4 ।।
राम रसायन दादू माते, अविचल भये राम रंग राते ।। 5 ।।

५२. पंचम ताल

निकटि निरंजन लाग रहे, तब हम जीवित मुक्त भये ।। टेक।।

मर कर मुक्ति जहाँ जग जाइ, तहाँ न मेरा न पतियाइ ॥ 1 ॥
आगे जन्म लहैं अवतारा, तहाँ न मानै मना हमारा ॥ 2 ॥
तन छूटे गति जो पद होइ, मृतक जीव मिले सब कोइ ॥ 3 ॥
जीवित जन्म सुफल करि जाना, दादू राम मिले मन माना ॥ 4 ॥

५३. हैरान प्रश्न। वर्ण भिन्न ताल

कादिर कुदरत लखी न जाइ, कहाँ तैं उपजै कहाँ समाइ ॥ टेक॥
कहाँ तैं कीन्ह पवन अरु पानी, धरणि गगन गति जाइ न जानी ॥ 1 ॥
कहाँ तैं काया प्राण प्रकासा, कहाँ पंच मिल एक निवासा ॥ 2 ॥
कहाँ तैं एक अनेक दिखावा, कहाँ तैं सकल एक ह्वै आवा ॥ 3 ॥
दादू कुदरत बहु हैरानां, कहाँ तैं राख रहे रहमाना ॥ 4 ॥

साखी उत्तर की

रहै नियारा सब करै, काहू लिप्त न होइ।
आदि अंत भानै घड़ै, ऐसा समर्थ सोइ ॥ 1 ॥
श्रम नहीं सब कुछ करै, यों कल धरी बनाइ।
कौतिकहारा ह्वै रह्या, सब कुछ होता जाइ ॥ 2 ॥
दादू शब्दैं बँध्या सब रहै, शब्दैं ही सब जाइ।
शब्दैं ही सब ऊपजै, शब्दैं सबै समाइ ॥ 3 ॥

५४. स्वरूप गति हैरान। वर्ण भिन्न ताल

ऐसा राम हमारे आवै, वार पार कोई अन्त न पावै ॥ टेक॥
हलका भारी कह्या न जाइ, मोल माप नहीं रह्या समाइ ॥ 1 ॥
कीमत लेखा नहीं परिमाण, सब पच हारे साधु सुजाण ॥ 2 ॥
आगो पीछो परिमित नांहिं, केते पारिख आवहिं जाहिं ॥ 3 ॥
आदि अन्त मधि कहै न कोइ, दादू देखै अचरज होइ ॥ 4 ॥

55. प्रश्न । गजताल

कौण शब्द कौण परखणहार, कौण सुरति कहु कौण विचार ।। टेक।।
कौण सुज्ञाता कौण गियान, कौण उन्मनी कौण धियान ।। 1 ।।
कौण सहज कहु कौण समाध, कौण भक्ति कहु कौण आराध ।। 2 ।।
कौण जाप कहु कौण अभ्यास, कौण प्रेम कहु कौण पियास ।। 3 ।।
सेवा कौण कहो गुरुदेव, दादू पूछै अलख अभेव ।। 4 ।।

उत्तर की साखी

कौण शब्द ? दादू शब्द अनाहद हम सुन्या, नख शिख सकल शरीर।
सब घट हरि हरि होत है, सहजैं ही मन थीर ।। 1 ।।

कौण परखणहार? प्राण जौहरी पारिखू, मन खोटा ले आवे।
खोटा मन के माथे मारै, दादू दूर उड़ावै ।। 2 ।।

कौण सुरति? दादू सहजैं सुरति समाइ ले, पारब्रह्म के अंग।
अरस परस मिल एक ह्वै, सन्मुख रहिबा संग ।। 3 ।।

कौण विचार? सहज विचार सुख में रहै, दादू बड़ा विवेक।
मन इन्द्री पसरै नहीं, अंतर राखै एक।। 4 ।।

कौण सुज्ञाता? दादू सो ही पंडित ज्ञाता, राम मिलण की बूझै ।। 5 ।।

कौण गियान? हंस गियानी सो भला, अंतर राखै एक।
विष में अमृत काढ ले, दादू बड़ा विवेक।। 6 ।।

कौण उन्मनी? मन लवरू के पंख हैं, उनमनि चढ़ै आकाश।
पग रहि पूरे सांच के, रोपि रह्या हरि पास ।। 7 ।।

कौण धियान? जहँ विरहा तहँ और क्या, सुधि बुधि नाठे ज्ञान।
लोक वेद मारग तजे, दादू एकै ध्यान ।। 8 ।।

कौण सहज? सहज रूप मन का भया, जब द्वै द्वै मिटी तरंग।
ताता सीला सम भया, तब दादू एकै अंग ।। 9 ।।

कौण समाधि? सहज शून्य मन राखिये, इन दोनों के मांहि।
लै समाधि रस पीजिये, तहाँ काल भय नांहि ।। 10 ।।

कौण भक्ति? योग समाधि सुख सुरति सौं, सहजैं सहजैं आव।
मुक्ता-द्वारा महल का, इहि भक्ति का भाव ।। 11 ।।

कौण आराध? आत्मदेव आराधिये, विरोधिये नहीं कोइ।
आराधे सुख ऊपजै, विरोधे दुख होइ ।। 12 ।।

कौण जाप? सतगुरु माला मन दिया, पवन सुरति सौं पोइ।
बिना हाथों निशदिन जपै, परम जाप यों होइ ।। 13 ।।

कौण अभ्यास? दादू धरती ह्वै रहै, तजि कूड़ कपट अहंकार।
साँई कारण शिर सहै, ताकों प्रत्यक्ष सिरजनहार ।। 14 ।।

कौण प्रेम? प्रेम लहर की पालकी, आतम बैसे आइ।
दादू खेलै पीव सौं, सो सुख कह्या न जाइ ।। 15 ।।

कौण पियास? दादू कोई बांछै मुक्ति फल, कोई अमरापुरीवास।
कोई बांछै परमगति, दादू राममिलन की प्यास ।। 16 ।।

सेवा कौण? तेज पुंज को विलसना, मिल खेलैं इक ठाम।
भर-भर पीवै राम रस, सेवा इसकानाम ।। 17 ।।

आपा गर्व गुमान तज, मद मत्सर अहंकार।
गहै गरीबी बन्दगी,सेवा सिरजनहार ।। 18 ।।

सार मत कौण ? आपा मेटै हरि भजै, तन मन तजै विकार।
निर्वैरी सब जीव सौं, दादू यहु मतसार ।। 19 ।।

56. प्रश्न । पंचम ताल

मैं नहिं जानूँ सिरजनहार, ज्यों है त्योंहि कहो करतार ।। टेक।।
मस्तक कहाँ कहाँ कर पाइ, अविगत नाथ कहो समझाइ ।। 1 ।।
कहं मुख नैनाँ श्रवणां साँई, जानराइ सब कहो गुसाँई ।। 2 ।।
पेट पीठ कहाँ है काया, पड़दा खोल कहो गुरु राया ।। 3 ।।
ज्यों है त्यों कह अन्तरजामी, दादू पूछै सतगुरु स्वामी ।। 4 ।।

उत्तर की साखी

दादू सबै दिशा सो सारिखा, सबै दिशा मुख बैन।
सबै दिशा श्रवणहुँ सुनै, सबै दिशा कर नैन ।। 1 ।।
सबै दिशा पग शीश हैं, सबै दिशा मन चैन।
सबै दिशा सन्मुख रहै, सबै दिशा अंग ऐन ।। 2 ।।
ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात।
सभूमिं सर्वतः वत्वा अत्र तिष्ठ दशांगुलम् ।।

57. प्रश्न । पंजाबी त्रिताल

अलख देव गुरु ! देहु बताइ, कहाँ रहो त्रिभुवनपति राइ ।। टेक।।
धरती गगन बसहु कैलास, तिहूँ लोक में कहाँ निवास ।। 1 ।।
जल थल पावक पवनां पूर, चंद सूर निकट कै दूर ।। 2 ।।
मंदिर कौण, कौण घरबार, आसण कौण कहो करतार ।। 3 ।।
अलख देव ! गति लखी न जाइ, दादू पूछै कहि समझाइ ।। 4 ।।

उत्तर की साखी

दादू मुझ ही मांहीं मैं रहूँ, मैं मेरा घरबार।
मुझ ही मांहीं मैं बसूं, आप कहै करतार ।। 1 ।।
दादू मैं ही मेरा अर्श में,मैं ही मेरा स्थान।
मैं ही मेरी ठौर में, आप कहै रहमान ।। 2 ।।
दादू मैं ही मेरे आसरे, मैं मेरे आधार।
मेरे तकिये मैं रहूँ, कहै सिरजनहार ।। 3 ।।
दादू मैं ही मेरी जाति में, मैं ही मेरा अंग।
मैं ही मेरा जीव में, आप कहै प्रसंग ।। 4 ।।

58. रस त्रिताल

राम रस मीठा रे, कोई पीवै साधु सुजाण।
सदा रस पीवै प्रेम सौं, सो अविनाशी प्राण ।। टेक।।

इहि रस मुनि लागे सबै, ब्रह्मा विष्णु महेश।
सुर नर साधू संतजन, सो रस पीवै शेष ।। 1 ।।
सिध साधक योगी जती, सती सबै शुकदेव।
पीवत अंत न आवही, ऐसा अलख अभेव ।। 2 ।।
इहि रस राते नामदेव, पीपा अरु रैदास।
पीवत कबीरा ना थक्या, अजहूँ प्रेम पियास ।। 3 ।।
यहु रस मीठा जिन पिया, सो रस ही मांहि समाइ।
मीठे मीठा मिल रह्या, दादू अनत न जाइ ।। 4 ।।

५९. त्रिताल

मन मतवाला मधु पीवै, पीवै बारम्बारो रे।
हरि रस रातो राम के, सदा रहै इकतारो रे ।। टेक।।
भाव भक्ति भाठी भई, काया कसणी सारो रे।
पोता मेरे प्रेम का, सदा अखंडित धारो रे ।। 1 ।।
ब्रह्म अग्नि जौबन जरै, चेतन चितहि उजासो रे।
सुमति कलाली सारवै, कोई पीवै विरला दासो रे ।। 2 ।।
प्रीति पियाले पीवही, छिन-छिन बारंबारो रे।
आपा धन सब सौंपिया, तब रस पाया सारो रे ।। 3 ।।
आपा पर नहिं जाणिये, भूलो माया जालो रे।
दादू हरि रस जे पिवै, ताको कदे न लागै कालो रे ।। 4 ।।

६०. पंचम ताल

रस के रसिया लीन भये, सकल शिरोमणि तहाँ गये ।। टेक।।
राम रसायन अमृत माते, अविचल भये नरक नहीं जाते ।। 1 ।।
राम रसायन भर भर पीवै, सदा सजीवन जुग जुग जीवै ।। 2 ।।
राम रसायन त्रिभुवन सार, राम रसिक सब उतरे पार ।। 3 ।।

दादू अमली बहुरि न आये, सुख सागर ता मांहि समाये ।। 4 ।।

६१. भेष । पंचम ताल

भेष न रीझे मेरा निज भर्तार, तातैं कीजै प्रीति विचार ।। टेक।।
दुराचारिणी रच भेष बनावै, शील साच नहिं पिव को भावै ।। 1 ।।
कंत न भावे करै श्रृंगार, डिंभपणैं रीझै संसार ।। 2 ।।
जो पै पतिव्रता ह्वै है नारी, सो धन भावै पियहिं पियारी ।। 3 ।।
पीव पहचानें आन नहिं कोई, दादू सोई सुहागिनी होई ।। 4 ।।

६२. विरह । घट ताल

सब हम नारी एक भर्तार, सब कोई तन करैं श्रृंगार ।। टेक।।
घर घर अपने सेज सँवारैं, कंत पियारे पंथ निहारैं ।। 1 ।।
आरत अपने पीव को धावैं, मिलै नाह कब अंग लगावैं ।। 2 ।।
अति आतुर ये खोजत डोलैं, बान परी वियोगिनि बोलैं ।। 3 ।।
सब हम नारी दादू दीन, दे सुहाग काहू संग लीन ।। 4 ।।

६३. आत्मार्थी भेष । घट ताल

सोई सुहागिनी साच श्रृंगार, तन मन लाइ भजै भर्तार ।। टेक।।
भाव भक्ति प्रेम ल्यौ लावै, नारी सोई सार सुख पावै ।। 1 ।।
सहज संतोष शील सब आया, तब नारी नाह अमोलक पाया ।। 2 ।।
तन मन जौबन सौंप सब दीन्हा, तब कंत रिझाइ आप वश कीन्हा ।। 3 ।।
दादू बहुरि वियोग न होई, पीव सौं प्रीति सुहागिनी सोई ।। 4 ।।

६४. समता । वर्ण भिन्न ताल

तब हम एक भये रे भाई, मोहन मिलि सांची मति आई ।। टेक।।
पारस परस भये सुखदाई, तब दुतिया, दुर्मति दूर गँवाई ।। 1 ।।
मलियागिरि मरम मिल पाया, तब वंश वरण कुल भ्रम गँवाया ।। 2 ।।

हरि जल नीर निकट जब आया, तब बूँद बूँद मिल सहज समाया ।। 3 ।।
नाना भेद भ्रम सब भागा, तब दादू एक रंगै रंग लागा ।। 4 ।।

६५. वर्ण भिन्न ताल

अलह राम छूटा भ्रम मोरा ।
हिंदू तुरक भेद कछु नांही, देखूं दर्शन तोरा ।। टेक।।
सोई प्राण पिंड पुनि सोई, सोई लोही मांसा।
सोई नैन नासिका सोई, सहजैं कीन्ह तमासा ।। 1 ।।
श्रवणों शब्द बाजता सुणिये, जिह्वा मीठा लागै।
सोई भूख सबन को व्यापै, एक जुगति सोई जागै ।। 2 ।।
सोई संधि बंध पुनि सोई, सोई सुख सोई पीरा।
सोई हस्त पाँव पुनि सोई, सोई एक शरीरा ।। 3 ।।
यहु सब खेल खालिक हरि तेरा, तैं ही एक कर लीना।
दादू जुगति जान कर ऐसी, तब यहु प्राण पतीना ।। 4 ।।

६६. नटताल

भाई रे ऐसा पंथ हमारा,
द्वै पख रहित पंथ गह पूरा,अवरण एक अधारा ।। टेक।।
वाद-विवाद काहू सौं नांहीं, माहीं जगत तैं न्यारा।
सम दृष्टि स्वभाव सहज में, आप ही आप विचारा ।। 1 ।।
मैं तैं मेरी यहु मति नाहीं, निर्वैरी निरकारा।
पूरण सबै देख आपा पर, निरालंब निरधारा ।। 2 ।।
काहु के संग मोह न ममता, संगी सिरजनहारा।
मनही मन सौं समझ सयाना, आनन्द एक अपारा ।। 3 ।।
काम कल्पना कदे न कीजे, पूरण ब्रह्म पियारा।
इहि पथ पहुँच पार गह दादू, सो तत सहज सँभारा ।। 4 ।।

६७. परिचय हैरान। नटताल

ऐसो खेल बन्यो मेरी माई, कैसै कहूँ कछु जान्यो न जाई ।। टेक।।
सुर नर मुनिजन अचरज आई, राम-चरण को भेद न पाई ।। 1 ।।
मंदिर माहिं सुरति समाई, कोऊ है सो देहु दिखाई ।। 2 ।।
मनहिं विचार करहु ल्यौ लाई, दिवा समान कहाँ ज्योति छिपाई ।। 3 ।।
देह निरंतर शून्य ल्यौ लाई, तहं कौण रमे कौण सूता रे भाई ।। 4 ।।
दादू न जाणै ये चतुराई, सोइ गुरु मेरा जिन सुधि पाई ।। 5 ।।

६८. निज घर परिचय । पंचम ताल

भाई रे घर ही में घर पाया ।
सहज समाइ रह्यो ता मांही, सतगुरु खोज बताया ।। टेक।।
ता घर काज सबै फिर आया, आपै आप लखाया।
खोल कपाट महल के दीन्हें, स्थिर सुस्थान दिखाया ।। 1 ।।
भय औ भेद भरम सब भागा, साच सोई मन लाया।
पिंड परे जहाँ जिव जावै, ता में सहज समाया ।। 2 ।।
निश्चल सदा चलै नहिं कबहूँ , देख्या सब में सोई।
ताही सौं मेरा मन लागा, और न दूजा कोई ।। 3 ।।
आदि अनन्त सोई घर पाया, अब मन अनत न जाई।
दादू एक रंगै रंग लागा, तामें रह्या समाई ।। 4 ।।

६९. मानस तीर्थ । पंचम ताल

इत है नीर नहावन जोग, अनत हि भ्रम भूला रे लोग ।। टेक।।
तिहिं तट न्हाये निर्मल होइ, वस्तु अगोचर लखै रे सोइ ।। 1 ।।
सुघट घाट अरु तिरबो तीर, बैठे तहाँ जगत-गुरु पीर ।। 2 ।।
दादू न जाणै तिन का भेव, आप लखावै अंतर देव ।। 3 ।।

70. पंजाबी त्रिताल

ऐसा ज्ञान कथो मन ज्ञानी, इहि घर होइ सहज सुख जानी ।। टेक।।
गंग जमुन तहँ नीर नहाइ, सुषमन नारी रंग लगाइ ।। 1 ।।
आप तेज तन रह्यो समाइ, मैं बलि ताकी देखूँ अघाइ ।। 2 ।।
वास निरन्तर सो समझाइ, बिन नैनहुँ देखूँ तहाँ जाइ ।। 3 ।।
दादू रे यहु अगम अपार, सो धन मेरे अधर अधार ।। 4 ।।

71. परिचय सत्संग। पंजाबी त्रिताल

अब तो ऐसी बन आई, राम-चरण बिन रह्यो न जाई ।। टेक।।
साँई को मिलबे के कारण, त्रिकुटी संगम नीर नहाई।
चरण-कमल की तहँ ल्यौ लागै, जतन जतन कर प्रीति बनाई ।। 1 ।।
जे रस भीना छावर जावै, सुन्दरी सहजैं संग समाई।
अनहद बाजे बाजन लागे, जिह्वाहीणैं कीरति गाई ।। 2 ।।
कहा कहूँ कुछ वरणि न जाई, अविगति अंतर ज्योति जगाई।
दादू उनको मरम न जानै, आप सुरंगे बैन बजाई ।। 3 ।।

72. राज मृगांक ताल

नीके राम कहत है बपुरा ।
घर मांही घर निर्मल राखै, पंचों धोवै काया कपरा ।। टेक।।
सहज समर्पण सुमिरण सेवा, तिरवेणी तट संजम सपरा।
सुन्दरी सन्मुख जागण लागी, तहँ मोहन मेरा मन पकरा ।। 1 ।।
बिन रसना मोहन गुण गावै, नाना वाणी अनुभव अपरा।
दादू अनहद ऐसे कहिये, भक्ति तत्त यहु मारग सकरा ।। 2 ।।

73. मनसा गायत्री। राज मृगांक ताल

अवधू ! कामधेनु गहि राखी,
वश कीन्हीं तब अमृत स्रवै, आगै चार न नाखी ।। टेक।।

पोषंतां पहली उठ गरजै, पीछें हाथ न आवै।
भूखी भलै दूध नित दूणा, यों या धेनु दुहावै ॥ 1 ॥
ज्यों ज्यों खीण पड़ै त्यों दूझै, मुक्ता मेल्यां मारै।
घाटा रोक घेर घर आणैं, बांधी कारज सारै ॥ 2 ॥
सहजैं बांधी कदे न छूटै, कर्म बंधन छुट जाई।
काटै कर्म सहज सौं बाँधै, सहजैं रहै समाई ॥ 3 ॥
छिन छिन मांहि मनोरथ पूरै, दिन दिन होइ अनन्दा।
दादू सोई देखतां पावै, कलि अजरावर कंदा ॥ 4 ॥

७४. परिचय । कहरवा

जब घट परगट राम मिले ।
आत्म मंगलाचार चहुँ दिशि, जन्म सुफल कर जीत चले ॥ टेक॥
भक्ति मुक्ति अभय कर राखे, सकल शिरोमणि आप किये।
निर्गुण राम निरंजन आपै, अजरावर उर लाइ लिये ॥ 1 ॥
अपने अंग संग कर राखे, निर्भय नाम निशान बजावा।
अविगत नाथ अमर अविनाशी, परम पुरुष निज सो पावा ॥ 2 ॥
सोई बड़भागी सदा सुहागी, परगट प्रीतम संग भये।
दादू भाग बड़े वर वर कर, सो अजरावर जीत गये ॥ 3 ॥

७५.पराभक्ति प्रार्थना। कहरवा

रमैया ! यहु दुख सालै मोहि ।
सेज सुहाग न प्रीति प्रेम रस, दर्शन नांहीं तोहि ॥ टेक॥
अंग प्रसंग एक रस नांही, सदा समीप न पावै।
ज्यों रस में रस बहुरि न निकसै, ऐसैं होइ न आवै ॥ 1 ॥
आत्मलीन नहीं निशिवासर, भक्ति अखंडित सेवा।
सन्मुख सदा परस्पर नाहीं, तातैं दुख मोहि देवा ॥ 2 ॥

मगन गलित महारस माता, तूँ है तब लग पीजै।
दादू जब लग अंत न आवै, तब लग देखन दीजै ।। 3 ।।

76. लांबी (अधीरता अस्थिरता)। दादरा

गुरुमुख पाइये रे, ऐसा ज्ञान विचार ।
समझ समझ समझ्या नहीं, लागा रंग अपार ।। टेक।।
जांण जांण जांण्यां नहीं, ऐसी उपजै आइ।
बूझ बूझ बूझ्या नहीं, ढोरी लागा जाइ ।। 1 ।।
ले ले ले लीया नहीं, हौंस रही मन मांहि।
राख राख राख्या नहीं, मैं रस पीया नांहि ।। 2 ।।
पाय पाय पाया नहीं, तेजैं तेज समाइ।
कर कर कछु किया नहीं, आतम अंग लगाइ ।। 3 ।।
खेल खेल खेल्या नहीं, सन्मुख सिरजनहार।
देख देख देख्या नहीं, दादू सेवक सार ।। 4 ।।

77. गुरु अधीन ज्ञान । दादरा

बाबा ! गुरुमुख ज्ञाना रे, गुरुमुख ध्याना रे ।। टेक।।
गुरुमुख दाता गुरुमुख राता, गुरुमुख गवना रे।
गुरुमुख भवना, गुरुमुख छवना, गुरुमुख रवना रे ।। 1 ।।
गुरुमुख पूरा, गुरुमुख शूरा, गुरुमुख वाणी रे।
गुरुमुख देणा, गुरुमुख लेणा, गुरुमुख जाणी रे ।। 2 ।।
गुरुमुख गहबा, गुरुमुख रहबा, गुरुमुख न्यारा रे।
गुरुमुख सारा, गुरुमुख तारा, गुरुमुख पारा रे ।। 3 ।।
गुरुमुख राया, गुरुमुख पाया, गुरुमुख मेला रे।
गुरुमुख तेजं, गुरुमुख सेजं, दादू खेला रे ।। 4 ।।

78. निज स्थान निर्णय । दीपचन्दी

मैं मेरे में हेरा, मध्य मांहिं पीव नेरा ।। टेक।।
जहाँ अगम अनूप अवासा, तहँ महापुरुष का वासा।
तहँ जानेगा जन कोई, हरि मांहि समाना सोई ।। 1 ।।
अखंड ज्योति जहँ जागै, तहँ राम नाम ल्यौ लागै।
तहँ राम रहै भरपूरा, हरि संग रहै नहिं दूरा ।। 2 ।।
तिरवेणी तट तीरा, तहँ अमर अमोलक हीरा।
उस हीरे सौं मन लागा, तब भरम गया भय भागा ।। 3 ।।
दादू देख हरि पावा, हरि सहजैं संग लखावा।
पूरण परम निधाना, निज निरखत हौं भगवाना ।। 4 ।।

79. दीपचन्दी

मेरा मन लागा सकल करा, हम निशदिन हिरदै सो धरा ।। टेक।।
हम हिरदै मांही हेरा, पीव परगट पाया नेरा।
सो नेरे ही निज लीजै, तब सहजैं अमृत पीजै ।। 1 ।।
जब मन ही सौं मन लागा, तब ज्योति स्वरूपी जागा।
जब ज्योति स्वरूपी पाया, तब अन्तर मांही समाया ।। 2 ।।
जब चित्त हि चित्त समाना, हम हरि बिन और न जाना।
जाना जीवन सोई, अब हरि बिन और न कोई ।। 3 ।।
जब आतम एकै बासा, पर आतम मांहि प्रकाशा।
परकाशा पीव पियारा, सो दादू मिंत हमारा ।। 4 ।।
(इति राग गौड़ी सम्पूर्णः ।। 1 ।। पद 79 ।।)
(गावै राग गौड़ी, रोटी आवै दौड़ी।)

अथ राग माली गौड़ 2

(गायन समय संध्या ६ से रात्रि ९ बजे तक)

४०. नाम महिमा । झपताल

गोविन्द ! नाम तेरा, जीवन मेरा, तारण भवपारा।
आगे इहि नाम लागे, संतन आधारा ।। टेक।।
कर विचार तत्त्व सार, पूरण धन पाया।
अखिल नाम अगम ठाम, भाग हमारे आया ।। 1 ।।
भक्ति मूल मुक्ति मूल, भव-जल निस्तरना।
भरम कर्म भंजना भय, किल्विष सब हरना ।। 2 ।।
सकल सिद्धि नव निधि, पूरण सब कामा।
राम रूप तत्त अनूप, दादू निज नामा ।। 3 ।।

४१. करुणा । झपताल

गोविन्द ! कैसे तरिये । नाव नांही खेव नाहीं, राम विमुख मरिये ।। टेक।।

ज्ञान नांही ध्यान नांही, लै समाधि नांही।

विरहा वैराग नांही, पंचों गुण मांही ।। 1 ।।

प्रेम नांही प्रीति नांही, नांव नांही तेरा।

भाव नांही भक्ति नांही, कायर जीव मेरा ।। 2 ।।

घाट नांही बाट नांही, कैसे पग धरिये।

वार नांही पार नांही, दादू बहु डरिये ।। 3 ।।

४२. विरह । शंखताल

पीव ! आव हमारे रे, मिलि प्राण पियारे रे, बलि जाऊँ तुम्हारे रे ।। टेक।।

सुन सखी सयानी रे, मैं सेव न जानी रे, हौं भई दिवानी रे ।। 1 ।।

सुन सखी सहेली रे, क्यों रहूँ अकेली रे, हौं खरी दुहेली रे ।। 2 ।।

हौं करूँ पुकारा रे, सुन सिरजनहारा रे, दादू दास तुम्हारा रे ।। 3 ।।

४३. शंख ताल

वाल्हा सेज हमारी रे, तूँ आव हौं वारी रे, हौं दासी तुम्हारी रे ।। टेक।।

तेरा पंथ निहारूं रे, सुन्दर सेज सँवारूं रे, जियरा तुम्ह पर वारूं रे ।। 1 ।।

तेरा अंगड़ा पेखूं रे, तेरा मुखड़ा देखूं रे, तब जीवन लेखूं रे ।। 2 ।।

मिल सुखड़ा दीजे रे, यहु लाहड़ा लीजे रे, तुम देखैं जीजे रे ।। 3 ।।

तेरे प्रेम की माती रे, तेरे रंगड़े राती रे, दादू वारणैं जाती रे ।। 4 ।।

४४. फारसी । शूलताल

दरबार तुम्हारे दरदवंद, पीव पीव पुकारे।

दीदार दरूने दीजिये, सुन खसम हमारे ।। टेक।।

तनहाँ के तन पीर है, सुन तूँ ही निवारे।

करम करीमा कीजिये, मिल पीव पियारे ।। 1 ।।
शूल सुलाको सो सहूँ, तेग तन मारे ।
मिल सांई सुख दीजिये, तूँ ही तूँ संभारे ।। 2 ।।
मैं शुहदा तन सोखता, विरहा दुख जारे ।
जिय तरसै दीदार को, दादू न विसारे ।। 3 ।।

८५. शंखताल (फारसी)

संइयां तूँ है साहिब मेरा, मैं हूँ बन्दा तेरा ।। टेक ।।
बन्दा वरदा चेरा तेरा, हुकमी मैं बेचारा।
मीरां मेहरबान गुसांई, तूँ सिरताज हमारा ।। 1 ।।
गुलाम तुम्हारा मुल्ला जादा, लौंडा घर का जाया।
राजिक रिजक जीव तैं दिया, हुकम तुम्हारे आया ।। 2 ।।
शादील बै हाजिर बंदा, हुकम तुम्हारे मांही।
जब ही बुलाया तब ही आया, मैं मेवासी नांही ।। 3 ।।
खसम हमारा सिरजनहारा, साहिब समर्थ सांई।
मीरां मेरा मेहर मया कर, दादू तुम ही तांई ।। 4 ।।

८६. करुणा । शंखताल

मुझ थीं कुछ न भया रे, यहु योंही गया रे, पछतावा रह्या रे ।। टेक ।।
मै शीश न दीया रे, भर प्रेम न पीया रे, मैं क्या कीया रे ।। 1 ।।
हौं रंग न राता रे, रस प्रेम न माता रे, नहिं गलित गाता रे ।। 2 ।।
मैं पीव न पाया रे, कीया मन का भाया रे, कुछ होइ न आया रे ।। 3 ।।
हौं रहूँ उदासा रे, मुझे तेरी आशा रे, कहै दादू दासा रे ।। 4 ।।

८७. वैराग्य उपदेश । निसारुक ताल

मेरा मेरा छाड़ गँवारा, सिर पर तेरे सिरजनहारा।

अपने जीव विचारत नांहीं, क्या ले गइला वंश तुम्हारा ।। टेक ।।
तव मेरा कृत करता नांही, आवत है हंकारा।
काल चक्र सौं खरी परी रे, विसर गया घरबारा ।। 1 ।।
जाइ तहाँ का संजम कीजै, विकट पंथ गिरिधारा।
दादू रे तन अपना नांहीं, तो कैसे भया संसारा ।। 2 ।।

४४. निसारुक ताल

दादू दास पुकारे रे, सिर काल तुम्हारे रे, सर सांधे मारे रे ।। टेक ।।
जम काल निवारी रे, मन मनसा मारी रे, यहु जन्म न हारी रे ।। 1 ।।
सुख नींद न सोई रे, अपना दुख रोई रे, मन मूल न खोई रे ।। 2 ।।
सिर भार न लीजी रे, जिसका तिसको दीजी रे, अब ढ़ील न कीजी रे ।। 3 ।।
यहु औसर तेरा रे, पंथी जाग सवेरा रे, सब बाट बसेरा रे ।। 4 ।।
सब तरुवर छाया रे, धन जौबन माया रे, यहु काची काया रे ।। 5 ।।
इस भ्रम न भूली रे, बाजी देख न फूली रे, सुख सागर झूली रे ।। 6 ।।
रस अमृत पीजी रे, विष का नाम न लीजी रे, कह्या सो कीजी रे ।। 7 ।।
सब आतम जाणी रे, अपणा पीव पिछाणी रे, यहु दादू वाणी रे ।। 8 ।।

४७. भक्ति उपदेश । त्रिताल

पूजूं पहली गणपति राइ, पड़िहौं पावों चरणों धाइ।
आगै ह्वै कर तीर लगावै, सहजैं अपने बैन सुनाइ ।। टेक ।।
कहूँ कथा कुछ कही न जाई, इक तिल में ले सबै समाइ ।। 1 ।।
गुण हु गहीर धीर तन देही, ऐसा समरथ सबै सुहाइ ।। 2 ।।
जिस दिशि देखूं ओही है रे, आप रह्या गिरि तरुवर छाइ ।। 3 ।।
दादू रे आगै क्या होवै, प्रीति पिया कर जोड़ लगाइ ।। 4 ।।

९०. परिचय । पंचम ताल

नीको धन हरि कर मैं जान्यौं, मेरे अखई वोही।
आगे पीछै सोई है रे, और न दूजा कोई ।। टेक।।
कबहुँ न छाडूँ संग पिया को, हरि के दर्शन मोही।
भाग हमारे जो हौं पाऊँ, शरणैं आयो तोही ।। 1 ।।
आनन्द भयो सखी जिय मेरे, चरण कमल को जोई।
दादू हरि को बावरो, बहुरि वियोग न होई ।। 2 ।।

९१. (फारसी) हित उपदेश । पंचम ताल

बाबा मर्दे मर्दां गोइ, ये दिल पाक कर्दम धोइ ।। टेक।।
तर्क दुनियाँ दूर कर दिल, फर्ज फारिग होइ।
पैवस्त परवरदिगार सौं, आकिलां सिर सोइ ।। 1 ।।
मनी मुरदः हिर्स फानी, नफ्स रा पामाल।
बदी रा बरतरफ करदः, नाम नेकी ख्याल ।। 2 ।।
जिंदगानी मुरदः बाशद, कुंजे कादिर कार।
तालिबां रा हक, हासिल, पासबाने यार ।। 3 ।।
मर्दे मर्दां सालिकां सर, आशिकां सुलतान।
हजूरी होशियार दादू, इहै गो मैदान ।। 4 ।।

९२. ईश्वर चरित । त्रिताल

ये सब चरित तुम्हारे मोहना, मोहे सब ब्रह्मण्ड खंडा।
मोहे पवन पानी परमेश्वर, सब मुनि मोहे रवि चंदा ।। टेक।।
साइर सप्त मोहे धरणी धरा, अष्ट कुली पर्वत मेरु मोहे।
तीन लोक मोहे जगजीवन, सकल भुवन तेरी सेव सोहे ।। 1 ।।
शिव बिरंचि नारद मुनि मोहे, मोहे सुर सब सकल देवा।
मोहे इन्द्र फणीन्द्र पुनि मोहे, मुनि मोहे तेरी करत सेवा ।। 2 ।।

अगम अगोचर अपार अपरम्परा, को यहु तेरे चरित न जानैं ।
ये शोभा तुमको सोहे सुन्दर, बलि बलि जाऊँ दादू न जानैं ॥ 3 ॥

९३. गरु ज्ञान। त्रिताल

ऐसा रे गुरु ज्ञान लखाया, आवै जाइ सो दृष्टि न आया ॥ टेक॥
मन थिर करूँगा, नाद भरूँगा, राम रमूंगा, रस माता ॥ 1 ॥
अधर रहूँगा, करम दहूँगा, एक भजूंगा, भगवंता ॥ 2 ॥
अलख लखूंगा, अकथ कथूंगा, एक मथूंगा, गोविन्दा ॥ 3 ॥
अगह गहूँगा, अकह कहूँगा, अलह लहूँगा, खोजन्ता ॥ 4 ॥
अचर चरूंगा, अजर जरूंगा, अतिर तिरूंगा, आनन्दा ॥ 5 ॥
यहु तन तारूं, विषय निवारूं, आप उबारूं, साधन्ता ॥ 6 ॥
आऊँ न जाऊँ, उनमनि लाऊँ, सहज समाऊँ, गुणवंता ॥ 7 ॥
नूर पिछाणूं, तेजहि जाणूं, दादू ज्योतिहि देखन्ता ॥ 8 ॥

९४. तत्व उपदेश। पंचम ताल

बंदे हाजिरां हजूर वे, अल्लह आली नूर वे।
आशिकां रा सिदक साबित, तालिबां भरपूर वे ॥ टेक॥
वजूद में मौजूद है, पाक परवरदिगार वे।
देख ले दीदार को, गैब गोता मार वे ॥ 1 ॥
मौजूद मालिक तख्त खालिक, आशिकां रा ऐन वे।
गुदर कर दिल मग्ज भीतर, अजब है यहु सैंन वे ॥ 2 ॥
अर्श ऊपर आप बैठा, दोस्त दाना यार वे।
खोज कर दिल कब्ज कर ले, दरूने दीदार वे ॥ 3 ॥
हुशियार हाजिर चुस्त करदा, मीरां मेहरवान वे।
देख ले दर हाल दादू, आप है दीवान वे ॥ 4 ॥

९५. वस्तु निर्देश। चौताल

निर्मल तत्त निर्मल तत्त निर्मल तत्त ऐसा।
निर्गुण निज निधि निरंजन, जैसा है तैसा ॥ टेक॥
उतपत्ति आकार नांही, जीव नांही काया।
काल नांही कर्म नांही, रहिता राम राया ॥ 1 ॥
शीत नांही घाम नांही, धूप नांही छाया।
बाव नांही वर्ण नांही, मोह नांही माया ॥ 2 ॥
धरणी आकाश अगम, चंद सूर नांही।
रजनी निशि दिवस नांही, पवना नहीं जांही ॥ 3 ॥
कृत्रिम घट कला नांही, सकल रहित सोई।
दादू निज अगम निगम, दूजा नहीं कोई ॥ 4 ॥
इति राग माली गौड़ सम्पूर्ण ॥ 2 ॥ पद 26 ॥

अथ राग कल्याण ३

(गायन समय संध्या ६ से ९ रात्रि)

१६. उपदेश चेतावनी। त्रिताल

मन मेरे कछु भी चेत गँवार !

पीछे फिर पछतावेगा रे, आवे न दूजी बार ॥ टेक॥

काहे रे मन भूल्यो फिरत है, काया सोच विचार।

जिन पंथों चलना है तुझ को, सोई पंथ सँवार ॥ 1 ॥

आगै बाट बिषम जो मन रे, जिमि खांडे की धार।

दादू दास सांई सौं सूत कर, कूड़े काम निवार ॥ 2 ॥

९७. परिचय । त्रिताल

जग सौं कहा हमारा, जब देख्या नूर तुम्हारा ।। टेक।।

परम तेज घर मेरा, सुख सागर माहिं बसेरा ।। 1 ।।

झिलमिल अति आनन्दा, तहँ पाया परमानन्दा ।। 2 ।।

ज्योति अपार अनन्ता, खेलें फाग बसन्ता ।। 3 ।।

आदि अंत अस्थाना, जन दादू सो पहचाना ।। 4 ।।

इति राग कल्याण सम्पूर्णः ।। 3 ।। पद 2 ।।

अथ राग कान्हड़ा 4

(गायन समय रात्रि 12 से 3 बजे तक)

९४. विरह विनती । वर्ण भिन्नताल

दे दर्शन देखन तेरा, तो जिय जक पावै मेरा ।। टेक।।

पीव तूँ मेरी वेदन जानै, हौं कहाँ दुराऊं छानै,

मेरा तुम देखे मन मानै ।। 1 ।।

पीव करक कलेजे मांही, सो क्योंही निकसै नांही,

पीव पकर हमारी बांही ।। 2 ।।

पीव रोम रोम दुख सालै, इन पीरों पिंजर जालै,

जीव जाता क्यों ही बालै ।। 3 ।।

पीव सेज अकेली मेरी, मुझ आरति मिलणै तेरी,

धन दादू वारी फेरी ।। 4 ।।

९९. वर्ण भिन्न ताल

आव सलौने देखन दे रे, बलि बलि जाऊँ बलिहारी तेरे ।। टेक।।
आव पिया तूँ सेज हमारी, निसदिन देखूं बाट तुम्हारी ।। 1 ।।
सब गुण तेरे अवगुण मेरे, पीव हमारी आह न ले रे ।। 2 ।।
सब गुणवंता साहिब मेरा, लाड़ गहेला दादू केरा ।। 3 ।।

१००. पंचम ताल

आव पियारे मींत हमारे, निशदिन देखूं पाँव तुम्हारे ।। टेक।।
सेज हमारी पीव सँवारी, दासी तुम्हारी सो धन वारी ।। 1 ।।
जे तुझ पाऊँ अंग लगाऊँ, क्यों समझाऊँ वारणें जाऊँ।। 2 ।।
पंथ निहारूं बाट सँवारूं, दादू तारूं तन मन वारूं।। 3 ।।

१०१. (सिंधी) । पंचम ताल

आ वे सजणां आव, शिर पर धर पाँव।
जानी मैंडा जिन्द असाडे, तूँ रावैंदा राव वे, सजणां आव ।। टेक।।
इत्थां उत्थां जित्थां कित्थां, हूँ जीवां तो नाल वे।
मीयां मैंडा आव असाडे, तूँ लालों सिर लाल वे, सजणां आव ।। 1 ।।
तन भी डेवाँ, मन भी डेवाँ, डेवाँ पिंड पराण वे।
सच्चा सांई मिल इत्थांईं, जिन्द करां कुरबाण वे, सजणां आव ।। 2 ।।
तूँ पाकों शिर पाक वे, सजणां, तूँ खूबों शिर खूब।
दादू भावे सजणां आवे, तूँ मिट्ठा महबूब वे, सजणां आव ।। 3 ।।

१०२. विनती । राज विद्याधर ताल

दयाल अपनै चरणनि मेरा चित्त लगावहु, नीकैं ही करी ।। टेक।।
नखशिख सुरति सरीर, तूँ नांव रहौं भरी ।। 1 ।।
मैं अजाण मतिहीण, जम की पाश तैं रहत हूँ डरी ।। 2 ।।

सबै दोष दादू के दूर कर, तुम ही रहो हरी ।। 3 ।।

१०३. तर्क चेतावनी । राज विद्याधर ताल

मन मतिहीण धरै, मूरख मन कछु समझत नाहीं, ऐसैं जाइ जरै ।। टेक।।
नाम बिसार अवर चित राखै, कूड़े काज करै।
सेवा हरि की मनहुँ न आणै, मूरख बहुरि मरै ।। 1 ।।
नाम संगम कर लीजे प्राणी, जम तैं कहा डरै।
दादू रे जे राम संभारै, सागर तीर तिरै ।। 2 ।।

१०४. संत सहाय रक्षा। राज मृगांक ताल

पीव तैं अपने काज सँवारे। कोई दुष्ट दीन कों मारन, सोई गहि तैं मारे ।। टेक।।
मेरु समान ताप तन व्यापै, सहजैं ही सो टारे।
संतन को सुखदाई माधो, बिन पावक फँद जारे ।। 1 ।।
तुम थैं होइ सबै विधि समर्थ, आगम सबै विचारे।
संत उबार दुष्ट दुख दीन्हा, अंध कूप में डारे ।। 2 ।।
ऐसा है सिर खसम हमारे, तुम जीते खल हारे।
दादू सौं ऐसे निर्बहिये, प्रेम प्रीति पिव प्यारे ।। 3 ।।

१०५. माया। मल्लिका मोद ताल

काहू तेरा मर्म न जाना रे, सब भये दीवाना रे ।। टेक।।
माया के रस राते माते, जगत भुलाना रे।
को काहू का कह्या न मानै, भये अयाना रे ।। 1 ।।
माया मोहे मुदित मगन, खानखाना रे।
विषिया रस अरस परस, साच ठाना रे ।। 2 ।।
आदि अंत जीव जन्त, किया पयाना रे ।
दादू सब भ्रम भूले, देखि दाना रे ।। 3 ।।

१०६. अनन्य शरण। मल्लिका मोद ताल

तूँ ही तूँ गुरुदेव हमारा, सब कुछ मेरे नाम तुम्हारा ।। टेक।।
तुम हीं पूजा, तुम हीं सेवा, तुम हीं पाती, तुम हीं देवा ।। 1 ।।
योग यज्ञ तूँ साधन जापं, तुम हीं मेरे आपै आपं ।। 2 ।।
तप तीरथ तूँ व्रत स्नाना, तुम हीं ज्ञाना तुम हीं ध्याना ।। 3 ।।
वेद भेद तूँ पाठ पुराणा, दादू के तुम पिंड पराणा ।। 4 ।।

१०७. गजताल

तूँ ही तूँ आधार हमारे, सेवक सुत हम राम तुम्हारे ।। टेक।।
माई बाप तूँ साहिब मेरा, भक्ति-हीण मैं सेवक तेरा ।। 1 ।।
मात पिता तूँ बान्धव भाई, तुम ही मेरे सजन सहाई ।। 2 ।।
तुम हीं तातं तुम ही मातं, तुम ही जातं, तुम्ह ही न्यातं ।। 3 ।।
कुल कुटुम्ब तूँ सब परिवारा, दादू का तूँ तारणहारा ।। 4 ।।

१०८. परिचय विनती । भंग ताल

नूर नैन भरि देखन दीजे, अमी महारस भर भर पीजे ।। टेक।।
अमृत धारा, वार न पारा, निर्मल सारा तेज तुम्हारा ।। 1 ।।
अजर जरंता, अमी झरंता, तार अनंता बहु गुणवंता ।। 2 ।।
झिलमिल सांई, ज्योति गुसांई, दादू मांही नूर रहांई ।। 3 ।।

१०९. परिचय। भंगताल

ऐन एक सो मीठा लागै, ज्योति स्वरूपी ठाढ़ा आगे ।। टेक।।
झिलमिल करणां, अजरा जरणां, नीझर झरणां, तहँ मन धरणां ।। 1 ।।
निज निरधारं, निर्मल सारं, तेज अपारं, प्राण अधारं ।। 2 ।।
अगहा गहणां, अकहा कहणां, अलहा लहणां, तहँ मिल रहणां ।। 3 ।।
निरसंध नूरं, सब भरपूरं, सदा हजूरं, दादू सूरं ।। 4 ।।

110. निस्पृहता । प्रतिताल

तो काहे की परवाह हमारे, राते माते नाम तुम्हारे ।। टेक।।

झिलमिल झिलमिल तेज तुम्हारा, परगट खेलै प्राण हमारा ।। 1 ।।

नूर तुम्हारा नैनों मांही, तन मन लागा छूटै नांही ।। 2 ।।

सुख का सागर वार न पारा, अमी महारस पीवनहारा ।। 3 ।।

प्रेम मगन मतवाला माता, रंग तुम्हारे दादू राता ।। 4 ।।

इति राग कान्हड़ा सम्पूर्ण ।। 4 ।। पद 13 ।।

अथ राग अडाणा 5

(गायन समय मध्य रात्रि 12 से 3 बजे)

111. समर्थ गुरु महिमा । त्रिताल

भाई रे ऐसा सतगुरु कहिये, भक्ति मुक्ति फल लहिये ।। टेक।।

अविचल अमर अविनाशी, अठ सिधि नव निधि दासी ।। 1 ।।

ऐसा सतगुरु राया, चार पदारथ पाया ।। 2 ।।

अमी महारस माता, अमर अभय पद दाता ।। 3 ।।

सतगुरु त्रिभुवन तारे, दादू पार उतारे ।। 4 ।।

112. गुरुमुख कसौटी । ललित ताल

भाई रे, भानै घड़ै गुरु मेरा, मैं सेवक उस केरा ।। टेक।।

कंचन कर ले काया, घड़ घड़ घाट निपाया ।। 1 ।।

मुख दर्पण मांहि दिखावै, पीव प्रकट आन मिलावै ।। 2 ।।
सतगुरु साचा धोवै, तो बहुरि न मैला होवै ।। 3 ।।
तन मन फेरि सँवारै, दादू कर गहि तारै ।। 4 ।।

११३. गुरुमुख उपदेश (गुजराती) । ललित ताल

भाई रे, तेन्हों रूड़ो थाये, जे गुरुमुख मार्ग जाये ।। टेक।।
कुसंगति परिहरिये, सत्संगति अणसरिये ।। 1 ।।
काम क्रोध नहिं आणें, वाणी ब्रह्म बखाणें ।। 2 ।।
बिषिया तैं मन वारै, ते आपणपो तारै ।। 3 ।।
विष मूकी अमृत लीधो, दादू रूड़ो कीधो ।। 4 ।।

११४. विनती । पंचम ताल

बाबा मन अपराधी मेरा, कह्या न मानै तेरा ।। टेक।।
माया मोह मद माता, कनक कामिनी राता ।। 1 ।।
काम क्रोध अहंकारा, भावै विषय विकारा ।। 2 ।।
काल मीच नहिं सूझै, आतमराम न बूझै ।। 3 ।।
समर्थ सिरजनहारा, दादू करै पुकारा ।। 4 ।।

११५. चेतावनी । पंचम ताल

भाई रे यूं विनशै संसारा, काम क्रोध अहंकारा ।। टेक।।
लोभ मोह मैं मेरा, मद मत्सर बहुतेरा ।। 1 ।।
आपा पर अभिमाना, केता गर्व गुमाना ।। 2 ।।
तीन तिमिर नहिं जाहीं, पंचों के गुण माहीं ।। 3 ।।
आतमराम न जाना, दादू जगत दीवाना ।। 4 ।।

116. ज्ञान । रूपक ताल

भाई रे, तब क्या कथसि गियाना,

जब दूसर नाहीं आना ।। टेक।।

जब तत्त्वहिं तत्त्व समाना, जहँ का तहँ ले साना ।। 1 ।।

जहाँ का तहाँ मिलावा, ज्यों था त्यों होइ आवा ।। 2 ।।

संधे संधि मिलाई, जहाँ तहाँ थिति पाई ।। 3 ।।

सब अंग सबही ठांहीं, दादू दूसर नांहीं ।। 4 ।।

इति राग अडाणा सम्पूर्ण ।। 5 ।। पद 6 ।।

अथ राग केदार ६

(गायन समय संध्या ६ से ९ बजे)
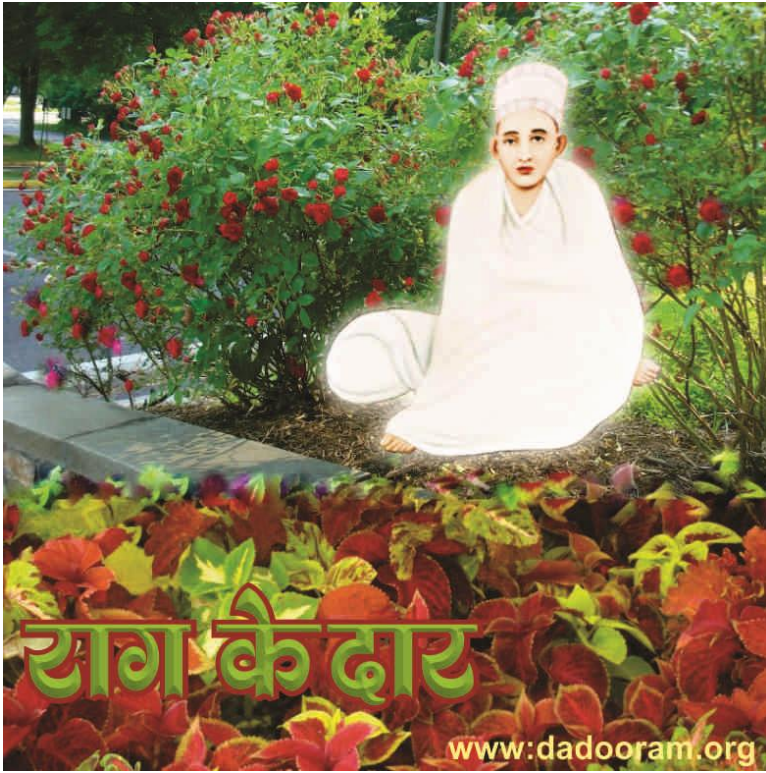
११७. विनती (गुजराती भाषा) । दीप चन्दी ताल

मारा नाथ जी, तारो नाम लेवाड़ रे। राम रतन हृदया मा राखे,

मारा वाहला जी, विषया थी वारे ।। टेक।।

वाहला वाणी ने मन मांहे मारे, चितवन तारो चित राखे।

श्रवण नेत्र आ इन्द्री ना गुण, मारा मांहेला मल ते नाखे ।। 1 ।।

वाहला जीवाड़े तो राम रमाड़े, मनें जीव्यानो फल ये आपे।

तारा नाम बिना हौं ज्यां ज्यां बंध्यो, जन दादू ना बंधन कापे ।। 2 ।।

११४. विरह विनती । उत्सव ताल

अरे मेरे सदा के संगाती रे राम! कारण तेरे ।। टेक।।

कंथा पहरूँ, भस्म लगाऊँ, वैरागिनि ह्वै ढूंढूँ, रे राम ।। 1 ।।
गिरिवर वासा, रहूँ, उदासा, चढ़ि सिर मेरु पुकारूँ, रे राम ।। 2 ।।
यहु तन जालूँ, यहु मन गालूँ, करवत शीश चढ़ाऊँ, रे राम ।। 3 ।।
शीश उतारूँ, तुम्ह पर वारूँ, दादू बलि बलि जाऊँ, रे राम ।। 4 ।।

119. विनती । गजताल

अरे मेरा अमर उपावणहार रे खालिक! आशिक तेरा ।। टेक।।
तुम सौं राता, तुम सौं माता, तुम सौं लागा रंग, रे खालिक।। 1 ।।
तुम सौं खेला, तुम सौं मेला, तुम सौं प्रेम स्नेह, रे खालिक।। 2 ।।
तुम सौं लेणा, तुम सौं देणा, तुम्हीं सौं रत होइ, रे खालिक।। 3 ।।
खालिक मेरा, आशिक तेरा, दादू अनत न जाइ, रे खालिक।। 4 ।।

120. स्तुति । गजताल

अरे मेरे समर्थ साहिब रे अल्लह! नूर तुम्हारा ।। टेक।।
सब दिशि देवै, सब दिश लेवै, सब दिशि वार न पार, रे अल्लह ।। 1 ।।
सब दिशि कर्त्ता, सब दिशि हर्ता, सब दिशि तारणहार, रे अल्लह ।। 2 ।।
सब दिशि वक्ता, सब दिशि श्रोता, सब दिशि देखणहार, रे अल्लह ।। 3 ।।
तूँ है तैसा, कहिये ऐसा, दादू आनन्द होइ, रे अल्लह ।। 4 ।।

121. (सिंधी) विरह विलाप। मल्लिका मोद ताल

हाल असां जो लालड़े, तो के सब मालूमड़े ।। टेक।।
मंझे खामा मंझि बराला, मंझे लागी भाहिड़े।
मंझे मेड़ी मुच थईला, कै दरि करियां धाहड़े ।। 1 ।।
विरह कसाई मुं गरेला, मंझे बढ़े माइहड़े।
सीखों करे कवाब जीला, इयें दादू जो ह्याहड़े ।। 2 ।।

122. विनती । मल्लिका मोद ताल

पीवजी सेती नेह नवेला, अति मीठा मोहि भावे रे।
निशदिन देखौं बाट तुम्हारी, कब मेरे घर आवे रे ।। टेक।।
आइ बनी है साहिब सेती, तिस बिन तिल क्यों जावे रे।
दासी कों दर्शन हरि दीजे, अब क्यौं आप छिपावे रे ।। 1 ।।
तिल तिल देखूं साहिब मेरा, त्यों त्यों आनन्द अंग न मावे रे।
दादू ऊपर दया मया करि, कब नैनहुँ नैन मिलावे रे ।। 2 ।।

123. (गुजराती भाषा) । राज मृगांक ताल

पीव घर आवे रे, वेदन मारी जाणी रे।
विरह संताप कौण पर कीजे, कहूँ छूं दुख नी कहाणी रे ।। टेक।।
अंतरजामी नाथ मारा, तुज बिण हूँ सीदाणी रे।
मंदिर मारे केम न आवे, रजनी जाइ बिहाणी रे ।। 1 ।।
तारी बाट हूँ जोइ थाकी, नैण निखूट्या पाणी रे।
दादू तुज बिण दीन दुखी रे, तूँ साथी रह्यो छे ताणी रे ।। 2 ।।

124. (गुजराती) विरह विनती । राज मृगांक ताल

कब मिलसी पीव गृह छाती, हौं औराँ संग मिलाती ।। टेक।।
तिसज लागी तिसही केरी, जन्म जन्म नो साथी।
मीत हमारा आव पियारा, ताहरा रंग नी राती ।। 1 ।।
पीव बिना मने नींद न आवे, गुण ताहरा ले गाती।
दादू ऊपर दया मया करि, ताहरे वारणे जाती ।। 2 ।।

125. विरह (गुजराती) । राज विद्याधर ताल

म्हारा रे वाहला ने काजे, हृदये जोवा ने हौं ध्यान धरूं।
आकुल थाये प्राण मारा, कोने कही पर करूँ ।। टेक।।
संभार्यो आवे रे वाहला, वेहला एहों जोई ठरूं।

साथीजी साथे थइ ने, पेली तीरे पार तरूं ।। 1 ।।
पीव पाखे दिन दुहेला जाये, घड़ी बरसां सौं केम भरूं।
दादू रे जन हरि गुण गाता, पूरण स्वामी ते वरूं ।। 2 ।।

126. विरह विलाप । झपताल

मरिये मीत विछोहे, जियरा जाइ अंदोहे ।। टेक।।
ज्यों जल विछुरे मीना, तलफ तलफ जिय दीन्हा, यों हरि हम सौं कीन्हा ।। 1 ।।
चातक मरै पियासा, निशदिन रहै उदासा, जीवै किहि बेसासा ।। 2 ।।
जल बिन कमल कुम्हलावै, प्यासा नीर न पावै, क्यों कर तृषा बुझावै ।। 3 ।।
मिल जनि बिछुरो कोई, बिछुरे बहु दुख होई, क्यों कर जीवै जन सोई ।। 4 ।।
मरणा मीत सुहेला, बिछुरन खरा दुहेला, दादू पीव सौं मेला ।। 5 ।।

127. त्रिताल

पीव ! हौं कहा करूँ रे, पाइ परूं के प्राण हरूं रे,
अब हौं मरणे नांहि डरूं रे ।। टेक।।
गाल मरूं कै, जालि मरूं रे, कै हौं करवत शीश धरूं रे ।। 1 ।।
खाइ मरूं कै घाइ मरूं रे, कै हौं कतहूँ जाइ मरूं रे ।। 2 ।।
तलफ मरूं कै झूरी मरूं रे, कै हौं विरही रोइ मरूं रे ।। 3 ।।
टेरि कह्या मैं मरण गह्या रे, दादू दुखिया दीन भया रे ।। 4 ।।

128. गुजराती भाषा । त्रिताल

वाहला हौं जाणूं जे रंग भर रमिये, मारो नाथ निमिष नहिं मेलूँ रे ।
अंतरजामी नाह न आवे, ते दिन आव्यो छैलो रे ।। टेक।।
वाहला सेज हमारी एकलड़ी रे, तहँ तुजने केम न पामों रे।
आ दत्त अमारो पूरबलो रे, तेतो आव्यो सामों रे ।। 1 ।।
वाहला मारा हृदया भीतर केम न आवै, मने चरण विलम्ब न दीजे रे।

दादू तो अपराधी तारो, नाथ उधारी लीजे रे ॥ 2 ॥

129. (गुजराती) । पंचम ताल

तूँ छे मारो राम गुसांई, पालवे तारे बाँधी रे।
तुज बिना हूँ आंतरे र-वल्यो, कीधी कमाई लाधी रे ॥ टेक॥
जीवूं जेटला हरि बिना रे, देहड़ी दुःखे दाधी रे।
अेणे अवतारे कांई न जाण्यूं, माथे टक्कर खाधी रे ॥ 1 ॥
छूटको मारो क्यारे थाशे, शक्यों न राम अराधी रे।
दादू ऊपर दया मया कर, हूँ तारो अपराधी रे ॥ 2 ॥

130. (गुजराती) विनती । पंचमताल

तूँ ही तूँ तनि माहरे गुसांई, तूँ बिना तूँ केने कहूँ रे।
तूँ त्यां तूँ ही थई रह्यो रे, शरण तुम्हारी जाय रहूँ रे ॥ टेक॥
तन मन मांहि जोइये त्यां तूँ, तुज दीठां हौं सुख लहूँ रे।
तूँ त्यां जेटली दूर रहूँ रे, तेम तेम त्यां हौं दुःख सहूँ रे ॥ 1 ॥
तुम बिन माहरो कोई नहीं रे, हौं तो ताहरा वैण बहूँ रे।
दादू रे जण हरि गुण गाता, मैं मेलूँ माहरो मैं हूँ रे ॥ 2 ॥

131. केवल विनती । त्रिताल

हमारे तुम ही हो रखपाल।
तुम बिन और नहीं को मेरे, भव-दुख मेटणहार ॥ टेक॥
वैरी पंच निमष नहिं न्यारे, रोक रहे जम काल।
हा जगदीश ! दास दुख पावै, स्वामी करहु सँभाल ॥ 1 ॥
तुम्ह बिन राम दहैं ये द्वन्दर, दसौं दिशा सब साल।
देखत दीन दुखी क्यों कीजे, तुम हो दीन-दयाल ॥ 2 ॥
निर्भय नाम हेत हरि दीजे, दर्शन पर्सन लाल।

दादू दीन लीन कर लीजे, मेटहु सब जंजाल ।। 3 ।।

132. विनती । त्रिताल

ये मन माधो बरजि बरजि ।
अति गति विषिया सौं रत, उठत जु गरजि गरजि ।। टेक ।।
विषय विलास अधिक अति आतुर, विलसत शंक न मानैं ।
खाइ हलाहल मगन माया में, विष अमृत कर जानैं ।। 1 ।।
पंचन के संग बहत चहूँ दिशि, उलट न क बहूँ आवै ।
जहँ जहँ काल ये जाइ तहँ तहँ, मृग जल ज्यों मन धावै ।। 2 ।।
साध कहैं गुरु ज्ञान न मानै, भाव भजन न तुम्हारा ।
दादू के तुम सजन सहाई, कछू न बसाइ हमारा ।। 3 ।।

133. मन उपदेश । पंचम ताल

हां, हमारे जियरा !
राम गुण गाइ, एही वचन विचारी मान ।। टेक ।।
केती कहूँ मन कारणैं, तूँ छाड़ि रे अभिमान ।
कह समझाऊँ बेर-बेर, तुझ अजहुँ न आवै ज्ञान ।। 1 ।।
ऐसा संग कहाँ पाइये, गुण गावत आवै तान ।
चरणों सौं चित राखिये, निसदिन हरि को ध्यान ।। 2 ।।
वे भी लेखा देहिंगे, आप कहावैं खान ।
जन दादू रे गुण गाइये, पूरण है निर्वाण ।। 3 ।।

134. काल चेतावनी । पंचम ताल

बटाऊ ! चलना आज कि काल ।
समझि न देखे कहा सुख सोवे, रे मन राम संभाल ।। टेक ।।
जैसे तरुवर वृक्ष बसेरा, पंखी बैठे आइ ।

ऐसैं यहु सब हाट पसारा, आप आपको जाइ ।। 1 ।।
कोइ नहिं तेरा सजन संगाती, जनि खोवे मन मूल।
यहु संसार देखि जनि भूलै, सब ही सैंबल फूल ।। 2 ।।
तन नहिं तेरा धन नहिं तेरा, कहा रह्यो इहि लाग।
दादू हरि बिन क्यों सुख सोवे, काहे न देखे जाग ।। 3 ।।

१३५. तर्क चेतावनी। प्रतिपाल

जात कत मद को मातो रे ।
तन धन जोबन देख गर्वानो, माया रातो रे ।। टेक।।
अपनो हि रूप नैन भर देखै, कामिनी को संग भावै रे।
बारम्बार विषय रत मानैं, मरबो चित्त न आवै रे ।। 1 ।।
मैं बड़ आगे और न आवे, करत केत अभिमाना रे।
मेरी मेरी करि करि फूल्यो, माया मोह भुलानां रे ।। 2 ।।
मैं मैं करत जन्म सब खोयो, काल सिरहाणे आयो रे।
दादू देख मूढ़ नर प्राणी, हरि बिन जन्म गँवायो रे ।। 3 ।।

१३६. हितोपदेश । त्रिताल

जागत को कदे न मूसै कोई ।
जागत जान जतन कर राखै, चोर न लागू होई ।। टेक।।
सोवत साह वस्तु नहिं पावे, चोर मूसै घर घेरा।
आस पास पहरे को नाहीं, वस्ते कीन नबेरा ।। 1 ।।
पीछे कहु क्या जागे होई, वस्तु हाथ तैं जाई।
बीती रैन बहुरि नहिं आवै, तब क्या करि है भाई ।। 2 ।।
पहले ही पहरे जे जागै, वस्तु कछू नहिं छीजे।
दादू जुगति जान कर ऐसी, करना है सो कीजे ।। 3 ।।

१३७. उपदेश । त्रिताल

सजनी ! रजनी घटती जाइ ।
पल पल छीजै अवधि दिन आवै, अपनो लाल मनाइ ।। टेक।।
अति गति नींद कहा सुख सोवै, यहु अवसर चलि जाइ।
यहु तन विछुरैं बहुरि कहँ पावै, पीछे ही पछिताइ ।। 1 ।।
प्राण-पति जागे सुन्दरि क्यों सोवे, उठ आतुर गहि पाइ।
कोमल वचन करुणा कर आगे, नख शिख रहु लपटाइ ।। 2 ।।
सखी सुहाग सेज सुख पावै, प्रीतम प्रेम बढ़ाइ।
दादू भाग बड़े पीव पावै, सकल शिरोमणि राइ ।। 3 ।।

१३८. प्रश्न उत्तर । दादरा

कोई जानै रे, मर्म माधइये केरो?
कैसे रहे? करे का? सजनी प्राण मेरो ।। टेक।।
कौन विनोद करत री सजनी, कवननि संग बसेरो?
संत साधु गम आये उनके, करत जु प्रेम घणेरो ।। 1 ।।
कहाँ निवास ? वास कहँ ? सजनी गवन तेरो।
घट घट मांहि रहै निरन्तर, ये दादू नेरो ।। 2 ।।

१३९. विरह विनती । त्रिताल

मन वैरागी राम को, संगि रहै सुख होइ हो ।। टेक।।
हरि कारण मन जोगिया, क्योंहि मिलै मुझ सोइ।
निरखण का मोहि चाव है, क्यों आप दिखावै मोहि हो ।। 1 ।।
हिरदै में हरि आव तूँ, मुख देखूं मन धोहि।
तन मन में तूँ ही बसै, दया न आवै तोहि हो ।। 2 ।।
निरखण का मोहि चाव है, ये दुख मेरा खोइ।
दादू तुम्हारा दास है, नैन देखन को रोइ हो ।। 3 ।।

140. (गुजराती) अधीर उलाहन । त्रिताल

धरणीधर बाह्या धूतो रे, अंग परस नहिं आपे रे।
कह्यो अमारो कांई न माने, मन भावे ते थापे रे ।। टेक।।
वाही वाही ने सर्वस लीधो, अबला कोइ न जाणे रे।
अलगो रहे येणी परि तेड़े, आपनड़े घर आणे रे ।। 1 ।।
रमी रमी रे राम रजावी, केन्हों अंत न दीधो रे।
गोप्य गुह्य ते कोई न जाणै, एह्वो अचरज कीधो रे ।। 2 ।।
माता बालक रुदन करंता, वाही वाही ने राखे रे।
जेवो छे तेवो आपणपो, दादू ते नहिं दाखे रे ।। 3 ।।

141. समर्थाई । राजमृगांक ताल

सिरजनहार तैं सब होइ ।
उत्पत्ति परलै करै आपै, दूसर नांहीं कोइ ।। टेक।।
आप होइ कुलाल करता, बूँद तैं सब लोइ।
आप कर अगोचर बैठा, दुनी मन को मोहि ।। 1 ।।
आप तैं उपाइ बाजी, निरखि देखै सोइ।
बाजीगर को यहु भेद आवै, सहज सौंज समोइ ।। 2 ।।
जे कुछ किया सु करै आपै, येह उपजै मोहि।
दादू रे हरि नाम सेती, मैल कश्मल धोइ ।। 3 ।।

142. परिचय । राजमृगांक ताल

देहुरे मंझे देव पायो, वस्तु अगोचर लखायो ।। टेक।।
अति अनूप ज्योति-पति, सोई अन्तर आयो।
पिंड ब्रह्माण्ड सम, तुल्य दिखायो ।। 1 ।।
सदा प्रकाश निवास निरंतर, सब घट मांहि समायो।
नैन निरख नेरो, हिरदै हेत लायो ।। 2 ।।
पूरब भाग सुहाग सेज सुख, सो हरि लैन पठायो।

देव को दादू पार न पावै, अहो पै उन्हीं चितायो ।। 3 ।।
इति राग केदार सम्पूर्ण ।। 6 ।। पद 26 ।।

अथ राग मारू 7

(गायन समय सायंकाल 6 से 9 रात्रि)
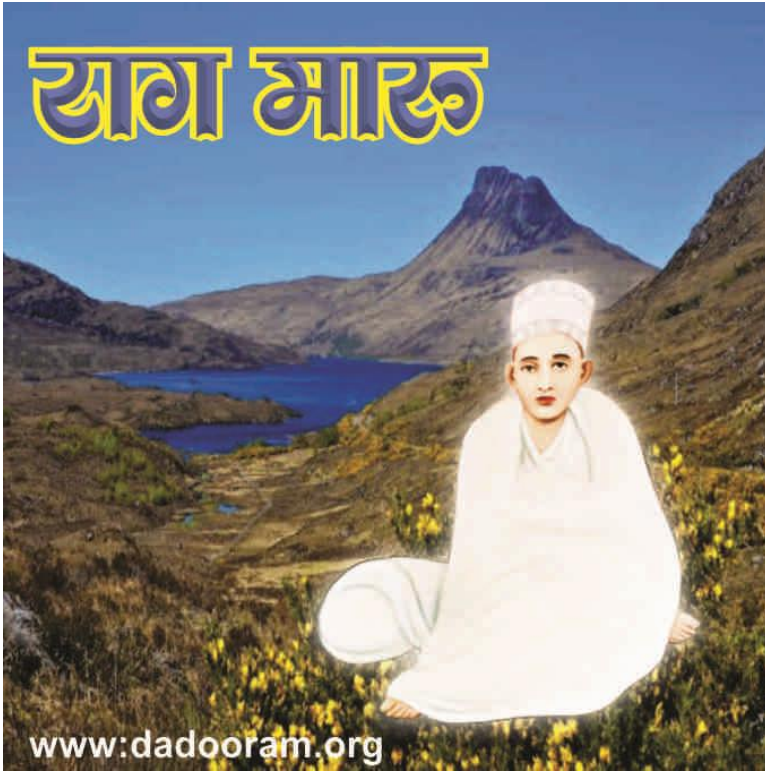
143. उपदेश । झपताल

मना ! जप राम नाम लीजे,

साधु संगति सुमिर सुमिर, रसना रस पीजै ।। टेक।।

साधू जन सुमिरन कर, केते जप जागे।

अगम निगम अमर किये, काल कोइ न लागे ।। 1 ।।

नीच ऊँच चिन्त न कर, शरणागति लीये।

भक्ति मुक्ति अपनी गति, ऐसैं जन कीये ।। 2 ।।

केते तिर तीर लागे, बन्धन भव छूटे।

कलि मल विष जुग जुग के, राम नाम खूटे ।। 3 ।।

भरम करम सब निवार, जीवन जप सोई।

दादू दुख दूर करण, दूजा नहिं कोई ।। 4 ।।

144. झपताल

मना, जप राम नाम कहिये ।

राम नाम मन विश्राम, संगी सो गहिये ।। टेक।।

जाग जाग सोवे कहा, काल कंध तेरे।

बारम्बार कर पुकार, आवत दिन नेरे ।। 1 ।।

सोवत सोवत जन्म बीते, अजहूँ न जीव जागे।

राम सँभार नींद निवार, जन्म जुरा लागे ।। 2 ।।

आस पास भरम बँध्यो, नारी गृह मेरा।

अंत काल छाड़ चल्यो, कोई नहिं तेरा ।। 3 ।।

तज काम क्रोध मोह माया, राम राम करणा।

जब लग जीव प्राण पिंड, दादू गहि शरणा ।। 4 ।।

145. विरह । अड्डुताल

क्यों विसरै मेरा पीव पियारा, जीव की जीवन प्राण हमारा ।। टेक।।

क्यों कर जीवै मीन जल बिछुरै, तुम्ह बिन प्राण सनेही।

चिन्तामणि जब कर तैं छूटै, तब दुख पावै देही ।। 1 ।।

माता बालक दूध न देवै, सो कैसे कर पीवै।

निर्धन का धन अनत भुलाना, सो कैसे कर जीवै ।। 2 ।।

बरषहु राम सदा सुख अमृत, नीझर निर्मल धारा।

प्रेम पियाला भर भर दीजे, दादू दास तुम्हारा ।। 3 ।।

146. अत्यन्त विरह (गुजराती भाषा) । अड्डूताल

कोई कहो रे मारा नाथ ने, नारी नैण निहारे बाट रे ।। टेक।।

दीन दुखिया सुन्दरी, करुणा वचन कहे रे।

तुम बिन नाह विरहणी व्याकुल, केम कर नाथ रहे रे ।। 1 ।।

भूधर बिन भावे नहिं कोई, हरि बिन और न जाणे रे।

देह गृह हूँ तेने आपूं, जे कोई गोविन्द आणे रे ।। 2 ।।
जगपति ने जोवा ने काजे, आतुर थई रही रे।
दादू ने देखाड़ो स्वामी, व्याकुल होई गई रे ।। 3 ।।

147. विरह विलाप । पंजाबी त्रिताल

कबहूँ ऐसा विरह उपावै रे, पीव बिन देखे जीव जावै रे ।। टेक।।
विपति हमारी सुनहु सहेली, पीव बिन चैन न आवै रे।
ज्यौं जल भिन्न मीन तन तलफै, पीव बिन वज्र बिहावै रे ।। 1 ।।
ऐसी प्रीति प्रेम की लागै, ज्यों पंखी पीव सुनावै रे।
त्यूं मन मेरा रहै निसवासर, कोइ पीव कूं आण मिलावै रे ।। 2 ।।
तो मन मेरा धीरजधरही, कोइ आगम आण जनावे रे।
तो सुख जीव दादू का पावै, पल पिवजी आप दिखावे रे ।। 3 ।।

148. (गुजराती भाषा) पंजाबी त्रिताल

अमे विरहणिया राम तुम्हारड़िया ।
तुम बिन नाथ अनाथ, कांइ बिसारड़िया ।। टेक।।
अपने अंग अनल परजाले, नाथ निकट नहिं आवे रे।
दर्शन कारण विरहनि व्याकुल, और न कोई भावे रे ।। 1 ।।
आप अपरछन अमने देखे, आपणपो न दिखाड़े रे।
प्राणी पिंजर लेइ रह्यो रे, आड़ा अन्तर पाड़े रे ।। 2 ।।
देव देव कर दरशन माँगे, अन्तरजामी आपे रे।
दादू विरहणी वन वन ढूँढ़े, ये दुख कांइ न कापे रे ।। 3 ।।

149. विरह प्रश्न । राज विद्याधर ताल

पंथीड़ा बूझे विरहणी, कहिनैं पीव की बात,
कब घरआवै कब मिलूँ, जोऊँ दिन अरु रात, पंथीड़ा ।। टेक।।

कहाँ मेरा प्रीतम कहाँ बसै, कहाँ रहै कर वास?
कहँ ढूँढूँ कहँ पाइये, कहाँ रहे किस पास, पंथीड़ा ।। 1 ।।
कवन देश कहँ जाइये, कीजे कौन उपाय ?
कौन अंग कैसे रहे, कहा करै, समझाइ, पंथीड़ा ।। 2 ।।
परम सनेही प्राण का, सो कत देहु दिखाइ।
जीवनि मेरे जीव की, सो मुझ आनि मिलाइ, पंथीड़ा ।। 3 ।।
नैन न आवै नींदड़ी, निशदिन तलफत जाइ।
दादू आतुर विरहणी, क्यूं करि रैन विहाइ, पंथीड़ा ।। 4 ।।

150. समुच्चय उत्तर । राज विद्याधर ताल

पंथीड़ा पंथ पिछाणी रे पीव का, गहि विरहे की बाट।
जीवत मृतकह्वै चले, लंघे औघट घाट, पंथीड़ा ।। टेक।।
सतगुरु सिर पर राखिये, निर्मल ज्ञान विचार।
प्रेम भक्ति कर प्रीत सौं, सन्मुख सिरजनहार, पंथीड़ा ।। 1 ।।
पर आतम सौं आत्मा, ज्यों जल जलहि समाइ।
मन हीं सौं मन लाइये, लै के मारग जाइ, पंथीड़ा ।। 2 ।।
तालाबेली ऊपजै, आतुर पीड़ पुकार।
सुमिर सनेही आपणा, निशदिन बारम्बार, पंथीड़ा ।। 3 ।।
देखि देखि पग राखिये, मारग खांडे धार।
मनसा वाचा कर्मणा, दादू लंघे पार, पंथीड़ा ।। 4 ।।

151. अनुक्रम से उत्तर । राज मृगांक ताल

साध कहैं उपदेश विरहणी !
तन भूले तब पाइये, निकट भया परदेश, विरहणी ।। टेक।।
तुम ही माहैं ते बसैं, तहाँ रहे कर वास।
तहँ ढूँढ़े पीव पाइये, जीवन जीव के पास, विरहणी ।। 1 ।।

परम देश तहँ जाइये, आतम लीन उपाइ।
एक अंग ऐसे रहै, ज्यों जल जलहि समाइ, विरहणी ।। 2 ।।
सदा संगाती आपणा, कबहूँ दूर न जाइ।
प्राण सनेही पाइये, तन मन लेहु लगाइ, विरहणी ।। 3 ।।
जागै जगपति देखिये, प्रकट मिल है आइ।
दादू सन्मुख ह्वै रहै, आनन्द अंग न माइ, विरहणी ।। 4 ।।

152. विरह विनती । गुजराती मकरन्द ताल

गोविन्दा ! गाइबा दे रे,
आडड़ी आन निवार, गोविन्दा गाइबा दे रे।
अनुदिन अंतर आनन्द कीजे, भक्ति प्रेम रस सार रे ।। टेक ।।
अनभै आत्म अभै एक रस, निर्भय कांइ न कीजै रे।
अमी महारस अमृत आपै, अम्हे रसिक रस पीजे रे ।। 1 ।।
अविचल अमर अखै अविनाशी, ते रस कांइ न दीजे रे।
आतम राम अधार अम्हारो, जन्म सुफल कर लीजे रे ।। 2 ।।
देव दयाल कृपाल दमोदर, प्रेम बिना क्यों रहिये रे।
दादू रंग भर राम रमाड़ो, भक्त-बछल तूँ कहिये रे ।। 3 ।।

153. (गुजराती भाषा) । मकरन्द ताल

गोविन्दा जोइबा देरे, जे बरजे ते वारी रे । गोविन्दा जोइबा दे रे।
आदि पुरुष तूँ अछय अम्हारो, कंत तुम्हारी नारी रे ।। टेक ।।
अंगै संगै रंगै रमिये, देवा दूर न कीजे रे।
रस मांही रस इम थई रहिये, ये सुख अमने दीजे रे ।। 1 ।।
सेजड़िये सुख रंग भर रमिये, प्रेम भक्ति रस लीजे रे।
एकमेक रस केलि करंतां, अम्हे अबला इम जीजे रे ।। 2 ।।
समर्थ स्वामी अन्तरजामी, बार बार कांइ बाहे रे।

आदैं अन्तैं तेज तुम्हारो, दादू देखे गाये रे ॥ 3 ॥

154. (गुजराती भाषा) । शूल ताल
तुम्ह सरसी रंग रमाड़ ।
आप अपरछन थई करी, मने मा भरमाड़ ॥ टेक॥
मन भोलवे कांइ थई वेगलो, आपणपो देखाड़।
केम जीवूं हौं एकली, बिरहणिया नार ॥ 1 ॥
मने बाहिश मा अलगो थई, आत्मा उद्धार।
दादू सूं रमिये सदा, येणे परें तार ॥ 2 ॥

155. काल चेतावनी । तुरंग लील ताल
जाग रे, किस नींदड़ी सूता,
रैण बिहाई सब गई, दिन आइ पहूँता ॥ टेक॥
सो क्यों सोवे नींदड़ी, जिस मरणा होवे रे।
जोरा वैरी जागणा, जीव तूँ क्यों सोवे रे ॥ 1 ॥
जाके सिर पर जम खड़ा, शर सांधे मारे रे।
सो क्यों सोवे नींदड़ी, कहि क्यूं न पुकारे रे ॥ 2 ॥
दिन प्रति निशि काल झंपै, जीव न जागे रे।
दादू सूता नींदड़ी, उस अंग न लागे रे ॥ 3 ॥

156. तुरंग । लील ताल
जाग रे सब रैण बिहांणी, जाइ जन्म अंजलि को पाणी ॥ टेक॥
घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावै, जे दिन जाइ सो बहुरि न आवै ॥ 1 ॥
सूरज चंद कहैं समझाइ, दिन दिन आयु घटती जाइ ॥ 2 ॥
सरवर पाणी तरवर छाया, निशिदिन काल गिरासै काया ॥ 3 ॥
हंस बटाऊ प्राण पयाना, दादू आतम राम न जाना ॥ 4 ॥

157. चौताल

आदि काल अंत काल, मध्य काल भाई।
जन्म काल जुरा काल, काल संग सदाई ।। टेक।।
जागत काल सोवत काल, काल झंपै आई।
काल चलत काल फिरत, कबहूँ ले जाई ।। 1 ।।
आवत काल जावत काल, काल कठिन खाई।
लेत काल देत काल, काल ग्रसै धाई ।। 2 ।।
कहत काल सुनत काल, करत काल सगाई।
काम काल क्रोध काल, काल जाल छाई ।। 3 ।।
काल आगै काल पीछैं, काल संग समाई।
काल रहित राम गहित, दादू ल्यौ लाई ।। 4 ।।

158. हित उपदेश । त्रिताल

तो को केता कह्या मन मेरे ।
क्षण इक मांही जाइ अनेरे, प्राण उधारी ले रे ।। टेक।।
आगे है मन खरी विमासणि, लेखा मांगै दे रे।
काहे सोवे नींद भरी रे, कृत विचारे तेरे ।। 1 ।।
ते परि कीजे मन विचारे, राखै चरणहु नेरे।
रती इक जीवन मोहि न सूझै, दादू चेत सवेरे ।। 2 ।।

159. (गुजराती) । त्रिताल

मन वाहला रे, कछू विचारी खेल, पड़सी रे गढ़ भेल ।। टेक।।
बहु भाँति दुख देइगा वाहला, ज्यों तिल माँ लीजे तेल।
करणी ताहरी सोधसी रे, होसी रे सिर हेल ।। 1 ।।
अब ही तैं कर लीजिये रे वाहला, सांई सेती मेल।
दादू संग न छाड़ि पीव का, पाई है गुण की बेल ।। 2 ।।

160. उदीक्षण । ताल

मन बावरे हो, अनत जनि जाइ,
तो तूँ जीवै अमीरस पीवै, अमर फल काहे न खाइ ।। टेक ।।
रहु चरण शरण सुख पावै, देखहु नैन अघाइ ।
भाग तेरे पीव नेरे, थीर थान बताइ ।। 1 ।।
संग तेरे रहै घेरे, सहजैं अंग समाइ ।
शरीर मांही शोध सांई, अनहद ध्यान लगाइ ।। 2 ।।
पीव पास आवै सुख पावै, तन की तप्त बुझाइ ।
दादू रे जहँ नाद ऊपजै, पीव पास दिखाइ ।। 3 ।।

161. भ्रम विध्वंसन । उदीक्षण ताल

निरंजन अंजन कीन्हा रे, सब आतम लीन्हा रे ।। टेक ।।
अंजन माया अंजन काया, अंजन छाया रे ।
अंजन राते अंजन माते, अंजन पाया रे ।। 1 ।।
अंजन मेरा अंजन तेरा, अंजन मेला रे ।
अंजन लीया अंजन दीया, अंजन खेला रे ।। 2 ।।
अंजन देवा अंजन सेवा, अंजन पूजा रे ।
अंजन ज्ञाना अंजन ध्याना, अंजन दूजा रे ।। 3 ।।
अंजन वक्ता अंजन श्रोता, अंजन भावै रे ।
अंजन राम निरंजन कीन्हा, दादू गावै रे ।। 4 ।।

162. निज वचन । महिमा चौताल ध्रुपद में

ऐन बैन चैन होवै, सुणतां सुख लागै रे ।
तीन गुण त्रिविधि तिमिर, भरम करम भागै रे ।। टेक ।।
होइ प्रकास अति उजास, परम तत्व सूझै ।
परम सार निर्विकार, विरला कोई बूझै ।। 1 ।।

परम थान सुख निधान, परम शून्य खेलै।
सहज भाइ सुख समाइ, जीव ब्रह्म मेलै ।। 2 ।।
अगम निगम होइ सुगम, दुस्तर तिर आवै।
आदि पुरुष दरस परस, दादू सो पावै ।। 3 ।।

१६३. साधु साँई हेरे त्रिताल

कोई राम का राता रे, कोई प्रेम का माता रे ।। टेक।।
कोई मन को मारे रे, कोई तन को तारे रे, कोई आप उबारे रे ।। 1 ।।
कोई जोग जुगंता रे, कोई मोक्ष मुकंता रे, कोई है भगवंता रे ।। 2 ।।
कोई सद्गति सारा रे, कोई तारणहारा रे, कोई पीव का प्यारा रे ।। 3 ।।
कोई पार को पाया रे, कोई मिलकरआया रे, कोई मन को भाया रे ।। 4 ।।
कोई है बड़भागी रे, कोई सेज सुहागी रे, कोई है अनुरागी रे ।। 5 ।।
कोई सब सुख दाता रे, कोई रूप विधाता रे, कोई अमृत खाता रे ।। 6 ।।
कोई नूर पिछाणैं रे, कोई तेज कों जाणैं रे, कोई ज्योति बखाणैं रे ।। 7 ।।
कोई साहिब जैसा रे, कोई सांई तैसा रे, कोई दादू ऐसा रे ।। 8 ।।

१६४. साधु लक्षण । दीपचन्दी

सद्गति साधवा रे, सन्मुख सिरजनहार।
भौजल आप तिरैं ते तारैं, प्राण उधारनहार ।। टेक।।
पूरण ब्रह्म राम रंग राते, निर्मल नाम अधार।
सुख संतोष सदा सत संजम, मति गति वार न पार ।। 1 ।।
जुग जुग राते, जुग जुग माते, जुग जुग संगति सार।
जुग जुग मेला, जुग जुग जीवन, जुग जुग ज्ञान विचार ।। 2 ।।
सकल शिरोमणि सब सुख दाता, दुर्लभ इहि संसार।
दादू हंस रहैं सुख सागर, आये पर उपकार ।। 3 ।।

165. परिचय उत्साह मंगल । दीपचन्दी

अम्ह घर पाहुणां ये, आव्या आतम राम ।। टेक ।।
चहुँ दिशि मंगलाचार, आनन्द अति घणा ये ।
वरत्या जै जैकार, विरुद वधावणां ये ।। 1 ।।
कनक कलश रस मांहिं, सखी भर ल्यावज्यो ये ।
आनन्द अंग न माइ, अम्हारे आवज्यो ये ।। 2 ।।
भावै भक्ति अपार, सेवा कीजिये ये ।
सन्मुख सिरजनहार, सदा सुख लीजिये ये ।। 3 ।।
धन्य अम्हारा भाग, आव्या अम्ह भणी ये ।
दादू सेज सुहाग, तूँ त्रिभुवन धणी ये ।। 4 ।।

166. फरोदस्त ताल

गावहु मंगलाचार, आज बधावणां ये ।
सुपनो देख्यो साँच, पीव घर आवणां ये ।। टेक ।।
भाव कलश जल प्रेम का, सब सखियन के शीश ।
गावत चली बधावणां, जै जै जै जगदीश ।। 1 ।।
पदम कोटि रवि झिलमिलै, अंग अंग तेज अनन्त ।
विगसि वदन विरहनी मिली, घर आये हरि कंत ।। 2 ।।
सुन्दरि सुरति सिंगार कर, सन्मुख परसे पीव ।
मो मंदिर मोहन आविया, वारूं तन मन जीव ।। 3 ।।
कवल निरन्तर नरहरी, प्रकट भये भगवंत ।
जहँ विरहनी गुण वीनवे, खेले फाग बसन्त ।। 4 ।।
वर आयो विरहनी मिली, अरस परस सब अंग ।
दादू सुन्दरी सुख भया, जुगि जुगि यहु रस रंग ।। 5 ।।
इति राग मारू सम्पूर्ण ।। 7 ।। पद 24 ।।
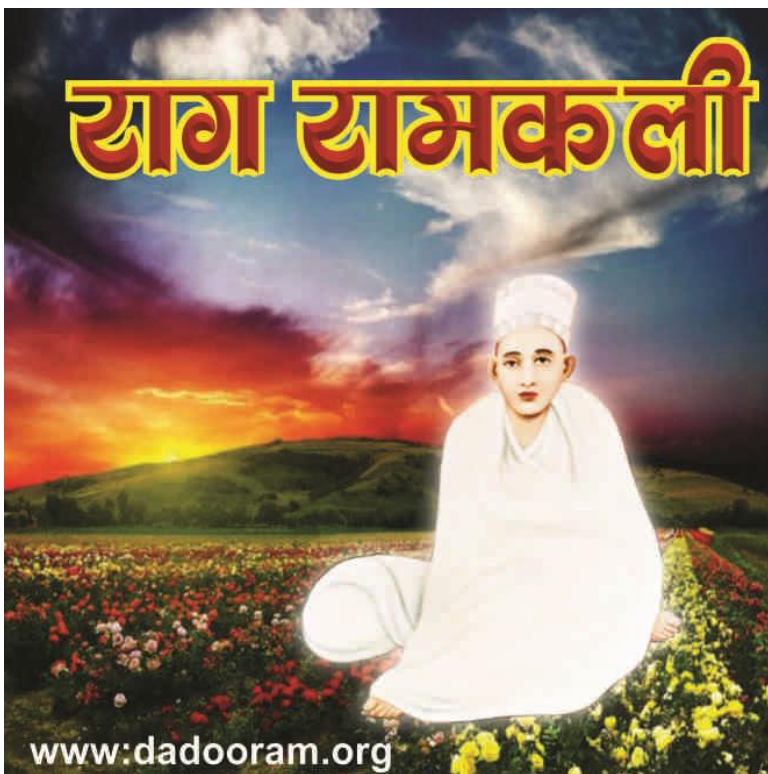
अथ राग रामकली 8

(गायन समय प्रभात ३ से ६)

167. सद्गुरु शब्द महिमा । दादरा

शब्द समाना जो रहै, गुरु बाइक बीधा।
उनही लागा एक सौं, सोई जन सीधा ।। टेक।।
ऐसी लागी मर्म की, तन मन सब भूला।
जीवत-मृतक ह्वै रहै, गह आत्म मूला ।। 1 ।।
चेतन चितहि न बीसरे, महारस मीठा।
शब्द निरंजन गह रह्या, उन साहिब दीठा ।। 2 ।।
एक शब्द जन ऊधरे, सुनि सहजैं जागे।
अंतर राते एक सौं, सर सन्मुख लागे ।। 3 ।।
शब्द समाना सन्मुख रहै, पर आतम आगे।
दादू सीझै देखतां, अविनाशी लागे ।। 4 ।।

१६८. नाम महिमा । त्रिताल

अहो नर नीका है हरि नाम।

दूजा नहीं राम बिन नीका, कहले केवल राम ॥ टेक॥

निर्मल सदा एक अविनाशी, अजर अकल रस ऐसा।

दिढ़ गहि राख मूल मन मांहीं, निरख देख निज कैसा ॥ 1 ॥

यहु रस मीठा महा अमीरस, अमर अनूपम पीवे।

राता रहै प्रेम सौं माता, ऐसे जुग-जुग जीवे ॥ 2 ॥

दूजा नहीं और को ऐसा, गुरु अंजन कर सूझे।

दादू मोटे भाग हमारे, दास विवेकी बूझे ॥ 3 ॥

१६९. अत्यन्त विरह । त्रिताल

कब आवेगा कब आवेगा?

पीव प्रकट आप दिखावेगा, मिठड़ा मुझको भावेगा ॥ टेक॥

कंठड़े लाग रहूँ रे, नैनों में बाहि धरूं रे, पीव तुझ बिन झूर मरूं रे ॥ 1 ॥

पावों मस्तक मेरा रे, तन मन पीवजी तेरा रे, हौं राखूं नैनहुं नेरा रे ॥ 2 ॥

हियड़े हेत लगाऊँ रे, अब कै जे पीव पाऊँ रे, तो बेर बेर बलि जाऊँ रे ॥ 3 ॥

सेजड़िये पीव आवे रे, तब आनन्द अंग न मावे रे, दादू दरस दिखावे रे ॥ 4 ॥

१७०. (सिन्धी भाषा) । मल्लिका मोद ताल

पिरी तूँ पाण पसाइड़े, मूं तनि लागी भाहिड़े ॥ टेक॥

पांधी वींदो निकरीला, असां साण गल्हाइड़े।

सांई सिकां सड़केला, गुझी गालि सुनाइड़े ॥ 1 ॥

पसां पाक दीदार केला, सिक असां जी लाहिड़े।

दादू मंझि कलूब मेला, तोड़े बीयां न काइड़े ॥ 2 ॥

१७१. (सिन्धी भाषा) । मल्लिका मोद ताल

को मेड़ीदो सज्जणा,

सुहारी सुरति केला, लगे डीहु घणां ।। टेक।।
पीरीयां संदी गाल्हड़ीला, पांधीड़ा पूछां।
कड़ी ईंदो मूं गरेला, डीदों बांह असां ।। 1 ।।
आहे सिक दीदार जीला, पिरी पूर पसां।
इयें दादू जे ज्यंद येला, सजण सांण रहां ।। 2 ।।

172. विनती पंजाबी । त्रिताल

हरि हाँ दिखाओ नैना,
सुन्दर मूरति मोहना, बोलि सुनाओ बैना ।। टेक।।
प्रकट पुरातन खंडना, महीमान सुख मंडना ।। 1 ।।
अविनाशी अपरम्परा, दीनदयाल गगन धरा ।। 2 ।।
पारब्रह्म परिपूरणां, दर्श देहु दुख दूरणां ।। 3 ।।
कर कृपा करुणामई, तब दादू देखे तुम दई ।। 4 ।।

173. निस्पृहता पंजाबी । त्रिताल

राम सुख सेवक जानै रे, दूजा दुख कर माने रे ।। टेक।।
और अग्नि की झाला, फंद रोपे हैं जम जाला।
सम काल कठिन शर पेखें, यह सिंह रूप सब देखें ।। 1 ।।
विष सागर लहर तरंगा, यहु ऐसा कूप भुवंगा।
भयभीत भयानक भारी, रिपु करवत मीच विचारी ।। 2 ।।
यहु ऐसा रूप छलावा, ठग पासीहारा आवा।
सब ऐसा देख विचारे, ये प्राण घात बटपारे ।। 3 ।।
ऐसा जन सेवक सोई, मन और न भावै कोई।
हरि प्रेम मगन रंग राता, दादू राम रमै रस माता ।। 4 ।।

174. साधु महिमा । जय मंगल ताल

आप निरंजन यों कहै, कीरति करतार।

मैं जन सेवक द्वै नहीं, एकै अंग सार ।। टेक।।
मम कारण सब परिहरै, आपा अभिमान।
सदा अखंडित उर धरै, बोले भगवान ।। 1 ।।
अन्तर पट जीवै नहीं, तब ही मर जाइ।
बिछुरे तलफै मीन ज्यूं, जीवै जल आइ ।। 2 ।।
क्षीर नीर ज्यूं मिल रहै, जल जलहि समान।
आतम पाणी लौंण ज्यों, दूजा नांही आन ।। 3 ।।
मैं जन सेवक द्वै नहीं, मेरा विश्राम।
मेरा जन मुझ सारिखा, दादू कहै राम ।। 4 ।।

175. परिचय विनती । जय मंगल ताल

शरण तुम्हारी केशवा, मैं अनन्त सुख पाया।
भाग बड़े तूँ भेटिया, हौं चरणौं आया ।। टेक।।
मेरी तप्त मिटी तुम्ह देखतां, शीतल भयो भारी।
भव बंधन मुक्ता भया, जब मिल्या मुरारी ।। 1 ।।
भरम भेद सब भूलिया, चेतन चित लाया।
पारस सौं परचा भया, उन सहज लखाया ।। 2 ।।
मेरा चंचल चित निश्चल भया, अब अनत न जाई।
मगन भया सर बेधिया, रस पीया अघाई ।। 3 ।।
सन्मुख ह्वै तैं सुख दिया, यहु दया तुम्हारी।
दादू दरसन पावई, पीव प्राण अधारी ।। 4 ।।

176. परस्पर गोष्ठी परिचय विनती । तिलवाड़ा ताल

गोविन्द राखो अपणी ओट ।
काम क्रोध भये बटपारे, तकि मारैं उर चोट ।। टेक।।
बैरी पंच सबल संग मेरे, मारग रोक रहे।

काल अहेडी बधिक ह्वै लागे, ज्यूं जीव बाज गहे ।। 1 ।।
ग्यान ध्यान हिरदै हरि लीना, संग ही घेर रहे।
समझि न परई बाप रमैया, तुम्ह बिन शूल सहे ।। 2 ।।
शरण तुम्हारी राखो गोविन्द, इन सौं संग न दीजे।
इनके संग बहुत दुख पाया, दादू को गहि लीजे ।। 3 ।।

177. भयमान विनती । रंगताल

राम कृपा कर होहु दयाला, दर्शन देहु करहु प्रतिपाला ।। टेक।।
बालक दूध न देइ माता, तो वह क्यों कर जीवै विधाता ।। 1 ।।
गुण औगुण हरि कुछ न विचारै, अंतर हेत प्रीति कर पालै ।। 2 ।।
अपणो जान करै प्रतिपाला, नैन निकट उर धरै गोपाला ।। 3 ।।
दादू कहै नहीं वश मेरा, तूँ माता मैं बालक तेरा ।। 4 ।।

178 (गुजराती) विनती । त्रिताल

भक्ति मांगूं बाप भक्ति मांगूं, मूने ताहरा नांऊं नों प्रेम लाग्यो।
शिवपुर ब्रह्मपुर सर्व सौं कीजिये, अमर थावा नहींलोक मांगूं ।। टेक।।
आप अवलंबन ताहरा अंगनों, भक्ति सजीवनी रंग राचूं।
देहनें गेहनों बास बैकुंठ तणौं, इन्द्र आसण नहीं मुक्ति जाचूं ।। 1 ।।
भक्ति वाहली खरी आप अविचल हरि, निर्मलो नाउं रस पान भावे।
सिद्धि नें रिद्धि नें राज रूड़ो नहीं, देव पद माहरे काज न आवे ।। 2 ।।
आत्मा अंतर सदा निरंतर, ताहरी बापजी भक्ति दीजे।
कहै दादू हिवे कौड़ी दत आपे, तुम्ह बिना ते अम्हें नहीं लीजे ।। 3 ।।

179. (गुजराती) राज विद्याधर ताल

एह्वो एक तूँ राम जी नाम रूड़ो।
ताहरा नाम बिना बीजो सबै ही कूड़ो ।। टेक।।

तुम्ह बिन अवर कोई कलि मां नहीं, सुमरतां संत नें साद आपे।
कर्म कीधा कोटि छोड़वे बाँधो, नाम लेतां खिणत ही ये कापे ।। 1 ।।
संत नें सांकड़ो दुष्ट पीड़ा करे, वाहरे वाहलो वेगि आवे।
पापनां पुंज पह्वां करी लीधो, भाजिया भै भर्म जोनि न आवे ।। 2 ।।
साधनें दुहेलो तहाँ तूँ आकुलो, माहरो माहरो करीनें धाए।
दुष्ट नें मारिबा संत नें तारिबा, प्रकट थावा तहाँ आप जाए ।। 3 ।।
नाम लेतां खिण नाथ तें एकले, कोटिनां कर्मनां छेद कीधा।
कहै दादू हिवें तुम्ह बिना को नहीं, साखी बोलें जे शरण लीधा ।। 4 ।।

१८०. परिचय विनती राज । विद्याधर ताल

हरि नाम देहु निरंजन तेरा, हरि हर्ष जपै जिय मेरा ।। टेक।।
भाव भक्ति हेत हरि दीजे, प्रेम उमंग मन आवे।
कोमल वचन दीनता दीजे, राम रसायन भावे ।। 1 ।।
विरह बैराग्य प्रीति मोहि दीजे, हृदय सांच सत भाखूं।
चित चरणों चिंतामणि दीजे, अंतर दिढ़ कर राखूं ।। 2 ।।
सहज संतोष सील सब दीजे, मन निश्चल तुम्ह लागे।
चेतन चिंतन सदा निवासी, संग तुम्हारे जागे ।। 3 ।।
ज्ञान ध्यान मोहन मोहि दीजे, सुरति सदा सँग तेरे।
दीन दयाल दादू को दीजे, परम ज्योति घट मेरे ।। 4 ।।

१८१. आशीर्वाद मंगल । झपताल

जय जय जय जगदीश तूँ, तूँ समर्थ सांई।
सकल भुवन भानैं घड़ै, दूजा को नांहीं ।। टेक।।
काल मीच करुणा करै, जम किंकर माया।
महा जोध बलवंत बली, भय कंपै राया ।। 1 ।।
जरा मरण तुम तैं डरै, मन को भय भारी।

काम दलन करुणामयी, तूँ देव मुरारी ।। 2 ।।
सब कंपैं करतार तैं, भव-बंधन पाशा।
अरि रिपु भंजन भय गता, सब विघ्न विनाशा ।। 3 ।।
सिर ऊपर सांई खड़ा, सोई हम माहीं।
दादू सेवक राम का निर्भय, न डराहीं ।। 4 ।।

182. हितोपदेश । त्रिताल

हरि के चरण पकर मन मेरा, यहु अविनाशी घर तेरा ।। टेक।।
जब चरण कमल रज पावै, तब काल व्याल बौरावै।
तब त्रिविध ताप तन नाशै, तब सुख की राशि विलासै ।। 1 ।।
जब चरण क मल चित लागै, तब माथै मीच न जागै।
तब जनम जरा सब क्षीना, तब पद पावन उर लीना ।। 2 ।।
जब चरण कमल रस पीवै, तब माया न व्यापै जीवै।
तब भरम करम भय भाजै, तब तीनों लोक विराजै ।। 3 ।।
जब चरण कमल रुचि तेरी, तब चार पदारथ चेरी।
तब दादू और न बांछै, जब मन लागै सांचै ।। 4 ।।

183. संत उपदेश । राज मृगांक ताल

संतों ! और कहो क्या कहिये ।
हम तुम्ह सीख इहै सतगुरु की, निकट राम के रहिये ।। टेक।।
हम तुम मांहि बसै सो स्वामी, सांचे सौं सचु लहिये।
दर्शन परसन जुग जुग कीजे, काहे को दुख सहिये ।। 1 ।।
हम तुम संग निकट रहैं नेरे, हरि केवल कर गहिये।
चरण कमल छाड़ि कर ऐसे, अनत काहे को बहिये ।। 2 ।।
हम तुम तारन तेज घन सुन्दर, नीके सौं निरबहिये।
दादू देख और दुख सब ही, तामें तन क्यों दहिये ।। 3 ।।

१८४. मन प्रति उपदेश । राज मृगांक ताल

मन रे, बहुरि न ऐसे होई ।
पीछै फिर पछतावेगा रे, नींद भरे जनि सोई ।। टेक।।
आगम सारे संचु करीले, तो सुख होवै तोही।
प्रीति करि पीव पाइये, चरणों राखो मोही ।। 1 ।।
संसार सागर विषम अति भारी, जनि राखै मन मोही।
दादू रे जन राम नाम सौं, कश्मल देही धोई ।। 2 ।।

१८५. काल चेतावनी । भंगताल

साथी ! सावधान ह्वै रहिये ।
पलक मांहि परमेश्वर जाणै, कहा होइ कहा कहिये ।। टेक।।
बाबा, बाट घाट कुछ समझ न आवै, दूर गवन हम जाना।
परदेशी पंथी चलै अकेला, औघट घाट पयाना ।। 1 ।।
बाबा, संग न साथी कोई नहीं तेरा, यहु सब हाट पसारा।
तरवर पंखी सबै सिधाये, तेरा कौण गँवारा ।। 2 ।।
बाबा, सबै बटाऊ पंथ सिरानैं, सुस्थिर नांहीं कोई।
अंति काल को आगे पीछे, बिछुरत बार न होई ।। 3 ।।
बाबा, काची काया कौण भरोसा, रैन गई क्या सोवे।
दादू संबल सुकृत लीजे, सावधान किन होवे ।। 4 ।।

१८६. (गुजराती) तर्क चेतावनी । शूलताल

मेरा मेरा काहे को कीजे रे, जे कुछ संग न आवे।
अनत करी नें धन धरीला रे, तेंऊ तो रीता जावे ।। टेक।।
माया बंधन अंध न चेते रे, मेर मांहिं लपटाया।
ते जाणै हूँ यह बिलासौं, अनत विरोधे खाया ।। 1 ।।
आप स्वारथ यह विलूधा रे, आगम मरम न जाणे।

जम कर माथे बाण धरीला, ते तो मन ना आणे ॥ 2 ॥
मन विचारि सारी ते लीजे, तिल मांहीं तन पड़िबा।
दादू रे तहँ तन ताड़ीजे, जेणें मारग चढ़िबा ॥ 3 ॥

१८७. हितोपदेश । शूलताल

सन्मुख भइला रे, तब दुख गइला रे, ते मेरे प्राण अधारी।
निराकार निरंजन देवा रे, लेवा तेह विचारी ॥ टेक॥
अपरम्पार परम निज सोई, अलख तोर विस्तारं।
अंकुर बीजे सहज समाना रे, ऐसा समर्थ सारं ॥ 1 ॥
जे तैं किन्हा किन्हि इक चीन्हा रे, भइला ते परिमाणं।
अविगत तोरी विगति न जाणूं, मैं मूरख अयानं ॥ 2 ॥
सहजैं तोरा ए मन मोरा, साधन सौं रंग आई।
दादू तोरी गति नहिं जानैं, निर्वाहो कर लाई ॥ 3 ॥

१८८. मन प्रति सूरातन । त्रिताल

हरि मारग मस्तक दीजिये, तब निकट परम पद लीजिये ॥ टेक॥
इस मारग मांहीं मरणा, तिल पीछे पाँव न धरणा।
अब आगे होई सो होई, पीछे सोच न करणा कोई ॥ 1 ॥
ज्यों शूरा रण झूझै, तब आपा पर नहिं बूझै।
सिर साहिब काज संवारै, घण घावां आपा डारै ॥ 2 ॥
सती सत गहि साचा बोलै, मन निश्चल कदे न डोलै।
वाके सोच पोच जिय ना आवै, जग देखत आप जलावै ॥ 3 ॥
इस सिर सौं साटा कीजे, तब अविनाशी पद लीजे।
ताका सब सिर साबित होवे, जब दादू आपा खोवे ॥ 4 ॥

१८९. कलियुगी । त्रिताल

झूठा कलियुग कह्या न जाइ, अमृत को विष कहै बनाइ ।। टेक।।
धन को निर्धन, निर्धन को धन, नीति अनीति पुकारै।
निर्मल मैला, मैला निर्मल, साध चोर कर मारै ।। 1 ।।
कंचन काच, काच को कंचन, हीरा कंकर भाखै।
माणिक मणियाँ, मणियाँ माणिक, साँच झूठ कर नाखै ।। 2 ।।
पारस पत्थर, पत्थर पारस, कामधेनु पशु गावै।
चन्दन काठ, काठ को चन्दन, ऐसी बहुत बनावै ।। 3 ।।
रस को अणरस, अणरस को रस, मीठा खारा होई।
दादू कलिजुग ऐसा बरतै, साचा बिरला कोई ।। 4 ।।

१९०. भगवंत भरोसा । ललित ताल

दादू मोहि भरोसा मोटा,
तारण तिरण सोई संग मेरे, कहा करै कलि खोटा ।। टेक।।
दौं लागी दरिया तै न्यारी, दरिया मंझ न जाई।
मच्छ कच्छ रहैं जल जेते, तिन को काल न खाई ।। 1 ।।
जब सूवै पिंजर घर पाया, बाज रह्या वन मांहीं।
जिनका समर्थ राखणहारा, तिनको को डर नांहीं ।। 2 ।।
साचे झूठ न पूजै कबहूँ, सत्य न लागै काई।
दादू साचा सहज समाना, फिर वै झूठ विलाई ।। 3 ।।

१९१. सांच झूठ निर्णय प्रतिपाल

सांई को साच पियारा ।
साचै साच सुहावै देखो, साचा सिरजनहारा ।। टेक।।
ज्यों घण घावां सार घड़ीजे, झूठ सबै झड़ जाई।
घण के घाऊँ सार रहेगा, झूठ न मांहि समाई ।। 1 ।।
कनक कसौटी अग्नि-मुख दीजे, पंक सबै जल जाई।

यों तो कसणी सांच सहेगा, झूठ सहै नहिं भाई ।। 2 ।।
ज्यों घृत को ले ताता कीजे, ताइ ताइ तत्त कीन्हा।
तत्तैं तत्त रहेगा भाई, झूठ सबै जल खीना ।। 3 ।।
यों तो कसणी साच सहेगा, साचा कस कस लेवै।
दादू दर्शन सांचा पावै, झूठे दरस न देवै ।। 4 ।।

192. करणी बिना कथनी । प्रतिपाल

बातैं बाद जाहिंगी भइये, तुम जनि जानों बातनि पइये ।। टेक।।
जब लग अपना आप न जानै, तब लग कथनी काची।
आपा जान सांई को जानै, तब कथनी सब साची ।। 1 ।।
करनी बिना कंत नहीं पावै, कहे सुने का होई।
जैसी कहै करै जे तैसी, पावैगा जन सोई ।। 2 ।।
बातनि हीं जे निर्मल होवे, तो काहे को कस लीजे ।
सोना अग्नि दहै दस बारा, तब यहु प्रान पतीजे ।। 3 ।।
यौं हम जाना मन पतियाना, करनी कठिन अपारा।
दादू तन का आपा जारे, तो तिरत न लागे बारा ।। 4 ।।

193. उपदेश । पंजाबी-त्रिताल

पंडित, राम मिलै सो कीजे ।
पढ़ पढ़ वेद पुराण बखानैं, सोई तत्त्व कह दीजे ।। टेक।।
आतम रोगी विषम बियाधी, सोई कर औषधि सारा।
परसत प्राणी होइ परम सुख, छूटै सब संसारा ।। 1 ।।
ए गुण इन्द्री अग्नि अपारा, ता सन जलै शरीरा।
तन मन शीतल होइ सदा सुख, सो जल नहाओ नीरा ।। 2 ।।
सोई मार्ग हमहिं बताओ, जेहि पंथ पहुँचे पारा।
भूलि न परै उलट नहीं आवै, सो कुछ करहु विचारा ।। 3 ।।

गुरु उपदेश देहु कर दीपक, तिमिर मिटे सब सूझे।
दादू सोई पंडित ज्ञाता, राम मिलन की बूझे ॥ 4 ॥

१९४. उपदेश । प्रतिताल

हरि राम बिना सब भर्मि गये, कोई जन तेरा साच गहै ॥ टेक॥
पीवै नीर तृषा तन भाजै, ज्ञान गुरु बिन कोइ न लहै।
प्रकट पूरा समझ न आवै, तातैं सो जन दूर रहै ॥ 1 ॥
हर्ष शोक दोउ सम कर राखै, एक एक के संग न बहै।
अनतहि जाइ तहाँदुख पावै, आपहि आपा आप दहै ॥ 2 ॥
आपा पर भरम सब छाड़ै, तोनि लोक पर ताहि धरै।
सो जन सही साच कौं परसे, अमर मिले नहिं कबहुँ मरै ॥ 3 ॥
पारब्रह्म सूं प्रीति निरन्तर, राम रसायन भर पीवै।
सदा आनन्द सुखी साचे सौं, कहै दादू सो जन जीवै ॥ 4 ॥

१९५. भ्रम विध्वंसण । प्रतिताल

जग अंधा नैन न सूझै, जिन सिरजे, ताहि न बूझै ॥ टेक॥
पाहण की पूजा करै, करै आतम घाता।
निर्मल नैन न आवई, दोजख दिशि जाता ॥ 1 ॥
पूजै देव दिहाड़ियां, महा-माई मानैं।
प्रकट देव निरंजना, ताकी सेव न जानैं ॥ 2 ॥
भैरुं भूत सब भ्रम के, पशु प्राणी ध्यावैं।
सिरजनहारा सबन का, ताको नहिं पावैं ॥ 3 ॥
आप स्वारथ मेदनी, का का नहिं करही ।
दादू सांचे राम बिन, मर मर दुख भरही ॥ 4 ॥

१९६. अन्य उपासक विस्मयवादी भ्रम । रंग ताल

साचा राम न जाणै रे, सब झूठ बखाणै रे ।। टेक।।
झूठे देवा झूठी सेवा, झूठा करे पसारा।
झूठी पूजा झूठी पाती, झूठा पूजणहारा ।। 1 ।।
झूठा पाक करै रे प्राणी, झूठा भोग लगावै।
झूठा आड़ा पड़दा देवै, झूठा थाल बजावै ।। 2 ।।
झूठे वक्ता झूठे श्रोता, झूठी कथा सुणावै।
झूठा कलियुग सब को मानै, झूठा भ्रम दिढ़ावै ।। 3 ।।
स्थावर जंगम जल थल महियल, घट घट तेज समाना।
दादू आतम राम हमारा, आदि पुरुष पहिचाना ।। 4 ।।

197. निज मार्ग निर्णय । चौताल
मैं पंथी एक अपार का, मन और न भावै।
सोई पंथ पावै पीव का, जिसे आप लखावै ।। टेक।।
को पंथी हिंदू तुरक के, को काहू राता।
को पंथी सोफी सेवड़े, को सन्यासी माता ।। 1 ।।
को पंथी जोगी जंगमा, को शक्ति पंथ ध्यावै।
को पंथी कमड़े कापड़ी, को बहुत मनावै ।। 2 ।।
को पंथी काहू के चलै, मैं और न जानूं।
दादू जिन जग सिरजिया, ताही को मानूं ।। 3 ।।

198. साधु मिलाप मंगल । चौताल
आज हमारे रामजी साधु घर आये,
मंगलाचार चहुँ दिशि भये, आनन्द बधाये ।। टेक।।
चौक पुराऊँ मोतियां, घिस चंदन लाऊँ।
पंच पदारथ पोइ के , यहु माल चढ़ाऊँ ।। 1 ।।
तन मन धन करूँ वारनैं, प्रदक्षिणा दीजे।

शीश हमारा जीव ले, नौछावर कीजे ।। 2 ।।
भाव भक्ति कर प्रीति सौं, प्रेम रस पीजे।
सेवा वंदन आरती, यहु लाहा लीजे ।। 3 ।।
भाग हमारा हे सखी, सुख सागर पाया।
दादू को दर्शन भया, मिले त्रिभुवन राया ।। 4 ।।

१९९. संत समागम प्रार्थना । दादरा

निरंजन नाम के रस माते, कोई पूरे प्राणी राते ।। टेक।।
सदा सनेही राम के, सोई जन साचे।
तुम बिन और न जानहीं, रंग तेरे ही राचे ।। 1 ।।
आन न भावै एक तूँ, सति साधु सोई।
प्रेम पियासे पीव के, ऐसा जन कोई ।। 2 ।।
तुम हीं जीवन उर रहे, आनन्द अनुरागी।
प्रेम मगन पीव प्रितड़ी, लै तुम सौं लागी ।। 3 ।।
जे जन तेरे रंग रंगे, दूजा रंग नांही।
जन्म सुफल कर लीजिये, दादू उन मांहीं ।। 4 ।।

२००. अत्यन्त निर्मल उपदेश । दादरा

चलु रे मन ! जहाँ अमृत वना, निर्मल नीके संत जना ।। टेक।।
निर्गुण नांव फल अगम अपार, संतन जीवन प्राण अधार ।। 1 ।।
सीतल छाया सुखी शरीर, चरण सरोवर निर्मल नीर ।। 2 ।।
सुफल सदा फल बारह मास, नाना वाणी धुनि प्रकाश ।। 3 ।।
तहाँ वास बसि अमर अनेक, तहँ चलि दादू इहै विवेक।। 4 ।।

२०१. चौताल

चलो मन माहरा, जहाँ मित्र अम्हारा।

तहँ जामण मरण नहिं जाणिये, नहिं जाणिये ।। टेक।।
मोह न माया, मेरा न तेरा, आवागमन नहीं जम फेरा ।। 1 ।।
पिंड पड़ै नहीं प्राण न छूटै, काल न लागै आयु न खूटै ।। 2 ।।
अमर लोक तहँ अखिल शरीरा, व्याधि विकार न व्यापै पीरा ।। 3 ।।
राम राज कोई भिड़ै न भाजै, सुस्थिर रहणा बैठा छाजै ।। 4 ।।
अलख निरंजन और न कोई, मित्र अम्हारा दादू सोई ।। 5 ।।

२०२. बेली । त्रिताल
बेली आनन्द प्रेम समाइ ।
सहजैं मगन राम रस सींचै, दिन दिन बधती जाइ ।। टेक।।
सतगुरु सहजैं बाही बेली, सहज गगन घर छाया।
सहजैं सहजैं कोंपल मेल्है, जाणै अवधू राया ।। 1 ।।
आतम बेली सहजैं फूलै, सदा फूल फल होई।
काया बाड़ी सहजैं निपजै, जानैं विरला कोई ।। 2 ।।
मन हठ बेली सूखण लागी, सहजैं जुग जुग जीवै।
दादू बेली अमर फल लागै, सहज सदा रस पीवै ।। 3 ।।

२०३. शब्द बाण । त्रिताल
संतों ! राम बाण मोहि लागे ।
मारत मृग मर्म तब पायो, सब संगी मिल जागे ।। टेक।।
चित चेतन चिंतामणि चीन्हा, उलट अपूठा आया।
मंदिर पैसि बहुरि नहिं निकसै, परम तत्त घर पाया ।। 1 ।।
आवै न जाइ, जाइ नहिं आवै, तिहिं रस मनवा माता।
पान करत परमानन्द पायो, थकित भयो चलि जाता ।। 2 ।।
भयो अपंग पंक नहि लागै, निर्मल संग सहाई।
पूर्ण ब्रह्म अखिल अविनाशी, तिहिं तज अनत न जाई ।। 3 ।।

सो शर लागि प्रेम प्रकाशा, प्रकटी प्रीतम वाणी।
दादू दीन दयाल ही जानै, सुख में सुरति समानी ।। 4 ।।

२०४. निज स्थान निर्णय । झपताल

मध्य नैन निरखूं सदा, सो सहज स्वरूप ।
देखत ही मन मोहिया, है तो तत्त्व अनूप ।। टेक।।
त्रिवेणी तट पाइया, मूरति अविनाशी।
जुग जुग मेरा भावता, सोई सुख राशी ।। 1 ।।
तारुणी तट देखि हूँ, तहाँ सुस्थाना।
सेवक स्वामी संग रहैं, बैठे भगवाना ।। 2 ।।
निर्भय थान सुहात सो, तहँ सेवक स्वामी।
अनेक जतन कर पाइया, मैं अन्तरजामी ।। 3 ।।
तेज तार परिमित नहीं, ऐसा उजियारा।
दादू पार न पाइये, सो स्वरूप सँभारा ।। 4 ।।

२०५. झपताल

निकट निरंजन देखि हौं, छिन दूर न जाई।
बाहर भीतर एक सा, सहजैं रह्या समाई ।। टेक।।
सतगुरु भेद लखाइया, तब पूरा पाया।
नैनन ही निरखूं सदा, घर सहजैं आया ।। 1 ।।
पूरे सौं परचा भया, पूरी मति जागी।
जीव जान जीवन मिल्या, ऐसे बड़ भागी ।। 2 ।।
रोम रोम में रम रह्या, सो जीवन मेरा।
जीव पीव न्यारा नहीं, सब संग बसेरा ।। 3 ।।
सुन्दर सो सहजैं रहै, घट अंतरजामी।
दादू सोई देखि हौं, सारों संग स्वामी ।। 4 ।।

२०६. परिचय उपदेश । त्रिताल

सहज सहेलड़ी हे, तूँ निर्मल नैन निहारि।
रूप अरूप निर्गुण आगुण में, त्रिभुवन देव मुरारि ।। टेक।।
बारम्बार निरख जग जीवन, इहि घर हरि अविनाशी।
सुन्दरी जाइ सेज सुख विलसे, पूरण परम निवासी ।। 1 ।।
सहजैं संग परस जगजीवन, आसण अमर अकेला।
सुन्दरी जाइ सेज सुख सोवै, जीव ब्रह्म का मेला ।। 2 ।।
मिलि आनन्द प्रीति करि पावन, अगम निगम जहँ राजा।
जाइ तहाँ परस पावन को, सुन्दरी सारे काजा ।। 3 ।।
मंगलाचार चहुँ दिशि रोपै, जब सुन्दरी पिव पावै।
परम ज्योति पूरे सौं मिल कर, दादू रंग लगावै ।। 4 ।।

२०७. वस्तु निर्देश । त्रिताल

तहँ आपै आप निरंजना, तहँ निसवासर नहि संजमा ।। टेक।।
तहँ धरती अम्बर नाहीं, तहँ धूप न दीसै छांहीं।
तहँ पवन न चालै पानी, तहँ आपै एक बिनानी ।। 1 ।।
तहँ चंद न ऊगै सूरा, मुख काल न बाजै तूरा।
तहँ सुख दुख का गम नाहीं, ओ तो अगम अगोचर माहीं ।। 2 ।।
तहँ काल काया नहिं लागै, तहँ को सोवै को जागै।
तहँ पाप पुण्य नहिं कोई, तहँ अलख निरंजन सोई ।। 3 ।।
तहँ सहज रहै सो स्वामी, सब घट अंतरजामी।
सकल निरन्तर वासा, रट दादू संगम पासा ।। 4 ।।

२०८. त्रिताल

अवधू ! बोल निरंजन बाणी, तहँ एकै अनहद जाणी ।। टेक।।
तहँ वसुधा का बल नाहीं, तहँ गगन घाम नहिं छाहीं।

तहँ चंद सूर नहिं जाई, तहँ काल काया नहिं भाई ।। 1 ।।
तहँ रैणि दिवस नहिं छाया, तहँ बाव वर्ण नहिं माया।
तहँ उदय अस्त नहिं होई, तहँ मरै न जीवै कोई ।। 2 ।।
तहँ नाहीं पाठ पुराना, तहँ आगम निगम नहिं जाना।
तहँ विद्या वाद न ज्ञाना, नहिं तहाँ जोग अरु ध्याना ।। 3 ।।
तहँ निराकार निज ऐसा, तहँ जाण्या जाइ न जैसा।
तहँ सब गुण रहिता गहिये, तहँ दादू अनहद कहिये ।। 4 ।।

२०९. प्रसिद्ध साधु प्रतिपाल

बाबा! को ऐसा जन जोगी ।
अंजन छाड़ै रहै निरंजन, सहज सदा रस भोगी ।। टेक।।
छाया माया रहै विवर्जित, पिंड ब्रह्माण्ड नियारे।
चंद सूर तैं अगम अगोचर, सो कह तत्त्व विचारे ।। 1 ।।
पाप पुण्य लिपै नहीं कबहूँ, द्वै पख रहिता सोई।
धरणि आकाश ताहि तैं ऊपरि, तहाँ जाइ रत होई ।। 2 ।।
जीवण मरण न बांछै कबहूँ, आवागमन न फेरा।
पानी पवन परस नहिं लागै, तिहिं संग करै बसेरा ।। 3 ।।
गुण आकार जहाँ गम नाहीं, आपै आप अकेला।
दादू जाइ तहाँ जन जोगी, परम पुरुष सौं मेला ।। 4 ।।

२१०. परिचय पराभक्ति । राज विद्याधर ताल

जोगी जान जान जन जीवै ।
बिन ही मनसा मन हि विचारै, बिन रसना रस पीवै ।। टेक।।
बिनही लोचन निरख नैन बिन, श्रवण रहित सुन सोई।
ऐसै आतम रहै एक रस, तो दूसर नाम न होई ।। 1 ।।
बिन ही मार्ग चलै चरण बिन, निहचल बैठा जाई।

बिन ही काया मिलै परस्पर, ज्यों जल जलहि समाई ।। 2 ।।
बिन ही ठाहर आसण पूरे, बिन कर बैन बजावै ।
बिन ही पावों नाचै निशिदिन, बिन जिभ्या गुण गावै ।। 3 ।।
सब गुण रहिता सकल बियापी, बिन इंद्री रस भोगी ।
दादू ऐसा गुरु हमारा, आप निरंजन जोगी ।। 4 ।।

211. रूपक ताल
इहै परम गरु योगं, अमी महारस भोगं ।। टेक ।।
मन पवना स्थिर साधं, अविगत नाथ अराधं, तहँ शब्द अनाहद नादं ।। 1 ।।
पंच सखी परमोधं, अगम ज्ञान गुरु बोधं, तहँ नाथ निरंजन शोधं ।। 2 ।।
सद्गुरु मांहि बतावा, निराधार घर छावा, तहँ ज्योति स्वरूपी पावा ।। 3 ।।
सहजैं सदा प्रकाशं, पूरण ब्रह्म विलासं, तहँ सेवग दादू दासं ।। 4 ।।

212. (गुजराती) अनभई । त्रिताल
मूने येह अचंभो थाये । कीड़ीये हस्ती विडाऱ्यो, तेन्नें बैठी खाये ।। टेक ।।
जाण हु तो ते बैठो हारे, अजाण तेन्नें ता वाहे ।
पांगुलोउ जाबा लाग्यो, तेन्नें कर को साहे ।। 1 ।।
नान्हो हुतो ते मोटो थायो, गगन मण्डल नहिं माये ।
मोटे रो विस्तार भणीजे, ते तो केन्नें जाये ।। 2 ।।
ते जाणे जे निरखी जोवे, खोजी नें वलीमांहे ।
दादू तेन्नों मर्म न जाणें, जे जिह्वा विहूणों गाये ।। 3 ।।
इति राग रामकली सम्पूर्ण ।। 8 ।। पद 46 ।।
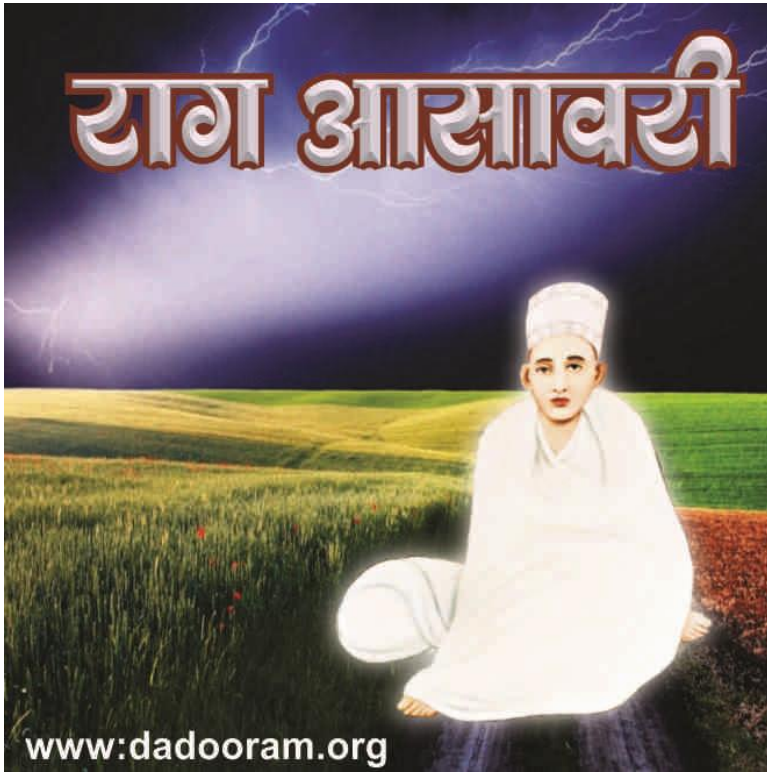
अथ राग आसावरी ९

(गायन समय प्रातः ६ से ९)

२१३. उत्तम स्मरण । ब्रह्म ताल

तूँ ही मेरे रसना, तूँ ही मेरे बैना,

तूँ ही मेरे श्रवना, तूँ ही मेरे नैना ।। टेक ।।

तूँ ही मेरे आतम कँवल मंझारी,

तूँ ही मेरी मनसा, तुम पर वारी ।। 1 ।।

तूँ ही मेरे मन ही, तूँ ही मेरे श्वासा,

तूँ ही मेरे सुरतैं प्राण निवासा ।। 2 ।।

तूँ ही मेरे नखशिख सकल शरीरा,

तूँ ही मेरे जियरे ज्यों जल नीरा ।। 3 ।।

तुम बिन मेरे अवर को नांही,

तूँ ही मेरी जीवनि दादू मांही ।। 4 ।।

214. अनन्य शरण । झूमरा

तुम्हारे नाम लाग हरि ! जीवन मेरा ।
मेरे साधन सकल नाम निज तेरा ।। टेक ।।
दान पुन्य तप तीरथ मेरे, केवल नाम तुम्हारा।
यह सब मेरे सेवा पूजा, ऐसा बरत हमारा ।। 1 ।।
यह सब मेरे वेद पुराणा, सुचि संयम है सोई।
ज्ञान ध्यान येही सब मेरे, और न दूजा कोई ।। 2 ।।
काम क्रोध काया वश करना, ये सब मेरे नामा।
मुक्ता गुप्ता परगट कहिये, मेरे केवल रामा ।। 3 ।।
तारण तिरण नांव निज तेरा, तुमही एक आधारा।
दादू अंग एक रस लागा, नांव गहै भव पारा ।। 4 ।।

215. चतुस्ताल

हरि केवल एक अधारा, सोई तारण तिरण हमारा ।। टेक ।।
ना मैं पंडित पढ़ि गुणि जानूं , ना कुछ ज्ञान विचारा।
ना मैं अगमी ज्योतिग जानूं, ना मुझ रूप सिंगारा ।। 1 ।।
ना तप मेरे इन्द्रिय निग्रह, ना कुछ तीरथ फिरणां।
देवल पूजा मेरे नाहीं, ध्यान कछू नहिं धरणां ।। 2 ।।
योग युक्ति कछु नाहीं मेरे, ना मैं साधन जानूं।
औषधि मूली मेरे नाहीं, ना मैं देश बखानूं ।। 3 ।।
मैं तो और कछू नाहिं जानूं, कहो और क्या कीजे।
दादू एक गलित गोविन्द सौं, इहि विधि प्राण पतीजे ।। 4 ।।

216. परिचय चतुस्ताल

पीव घर आवनो ए, अहो ! मोहि भावनो ते ।। टेक।।
मोहन नीको री हरी, देखूंगी अँखियाँ भरी।
राखूं हौं उर धरी प्रीति करी खरी, मोहन मेरो री माई।
रहूँ हौं चरणौं धाई, आनन्द बधाई, हरि के गुण गाई ।। 1 ।।
दादू रे चरण गहिये, जाइने तिहाँतो रहिये।
तन मन सुख लहिये, विनती गहिये ।। 2 ।।

217. त्रिताल
हाँ माई ! मेरो राम बैरागी, तजि जनि जाइ ।। टेक।।
राम विनोद करत उर अंतर, मिलिहौं बैरागिनि धाइ ।। 1 ।।
जोगिन ह्वै कर फिरूँगी विदेशा, राम नाम ल्यौ लाइ ।। 2 ।।
दादू को स्वामी है रे उदासी, रहिहौं नैन दोइ लाइ ।। 3 ।।

218. उपदेश चेतावनी । राज मृगांक ताल
रे मन ! गोविन्द गाइ रे गाइ, जन्म अविरथा जाइ रे जाइ ।। टेक।।
ऐसा जनम न बारम्बारा, तातैं जप ले राम पियारा ।। 1 ।।
यहु तन ऐसा बहुरि न पावै, तातैं गोविन्द काहे न गावै ।। 2 ।।
बहुरि न पावै मानुष देही, तातैं कर ले राम सनेही ।। 3 ।।
अब के दादू किया निहाला, गाइ निरंजन दीनदयाला ।। 4 ।।

219. काल चेतावनी । राज मृगांक ताल
मन रे ! सोवत रैन बिहानी, तैं अजहूँ जात न जानी ।। टेक।।
बीती रैन बहुरि नहीं आवे, जीव जाग जनि सोवे ।
चारों दिशा चोर घर लागे, जाग देख क्या होवे ।। 1 ।।
भोर भयो पछतावन लागे, मांहीं महल कुछ नांहीं ।
जब जाइ काल काया कर लागे,तब सोधे घर मांहीं ।। 2 ।।

जाग जतन कर राखो सोई, तब तन तत्त न जाई।
चेतन पहरे चेतत नांहीं, कहि दादू समझाईं ॥ 3 ॥

220. राज विद्याधर ताल

देखत ही दिन आइ गये, पलट केश सब श्वेत भये ॥ टेक॥
आई जुरा मीच अरु मरणा, आया काल अबै क्या करणा।
श्रवणों सुरति गई नैन न सूझै, सुधि बुधि नाठी कह्या न बूझै ॥ 1 ॥
मुख तैं शब्द विकल भई वाणी, जन्म गया सब रैन बिहाणी।
प्राण पुरुष पछतावण लागा, दादू अवसर काहे न जागा ॥ 2 ॥

221. उपदेश । राज विद्याधर ताल

हरि बिन हां, हो कहूँ सचु नांहीं, देखत जाई विषय फल खाहीं ॥ टेक॥
रस रसना के मीन मन भीरा, जल तैं जाइ यों दहै शरीरा ॥ 1 ॥
गज के ज्ञान मगन मद माता, अंकुँए डोरि गहै फँद गाता ॥ 2 ॥
मर्कट मूठी मांहिं मन लागा, दुख की राशि भ्रमै भ्रम भागा ॥ 3 ॥
दादू देखु हरि सुखदाता, ताको छाड़ि कहाँ मन राता ॥ 4 ॥

222. उदीक्षण ताल

सांई बिना संतोष न पावै, भावै घर तजि वन वन धावै ॥ टेक॥
भावै पढ़ि गुनि वेद उचारै, आगम निगम सबै विचारै ॥ 1 ॥
भावै नव खंड सब फिर आवै, अजहूँ आगै काहे न जावै ॥ 2 ॥
भावै सब तजि रहै अकेला, भाई बन्धु न काहू मेला ॥ 3 ॥
दादू देखै सांई सोई, साच बिना संतोष न होई ॥ 4 ॥

223. मनोपदेश चेतावनी । उदीक्षण ताल

मन माया रातो भूले ।
मेरी मेरी कर कर बौरे, कहा मुग्ध नर फूले ॥ टेक॥

माया कारण मूल गँवावै, समझ देख मन मेरा।
अंत काल जब आइ पहूँता, कोई नहीं तब तेरा ॥ 1 ॥
मेरी मेरी कर नर जाणै, मन मेरी कर रहिया।
तब यहु मेरी काम न आवै, प्राण पुरुष जब गहिया ॥ 2 ॥
राव रंक सब राजा राणा, सबहिन को बोरावै।
छत्रपति भूपति तिन के संग, चलती बेर न आवै ॥ 3 ॥
चेत विचार जान जिय अपने, माया संग न जाई।
दादू हरि भज समझ सयाना, रहो राम ल्यौ लाई ॥ 4 ॥

२२४. काल चेतावनी । ललित ताल

रहसी एक उपावनहारा, और चलसी सब संसारा ॥ टेक॥
चलसी गगन धरणि सब चलसी, चलसी पवन अरु पानी।
चलसी चंद सूर पुनि चलसी, चलसी सबै उपानी ॥ 1 ॥
चलसी दिवस रैण भी चलसी, चलसी जुग जम वारा।
चलसी काल व्याल पुनि चलसी, चलसी सबै पसारा ॥ 2 ॥
चलसी स्वर्ग नरक भी चलसी, चलसी भूचणहारा।
चलसी सुख दुःख भी चलसी, चलसी कर्म विचारा ॥ 3 ॥
चलसी चंचल निहचल रहसी, चलसी जे कुछ कीन्हा।
दादू देख रहै अविनाशी, और सबै घट खीना ॥ 4 ॥

२२५. त्रिताल

इहि कलि हम मरणे को आये, मरण मीत उन संग पठाये ॥ टेक॥
जब तैं यहु हम मरण विचारा, तब तैं आगम पंथ सँवारा ॥ 1 ॥
मरण देख हम गर्व न कीन्हा, मरण पठाये सो हम लीन्हा ॥ 2 ॥
मरणा मीठा लागे मोहि, इहि मरणे मीठा सुख होहि ॥ 3 ॥
मरणे पहली मरे जो कोई, दादू सो अजरावर होई ॥ 4 ॥

२२६. त्रिताल

रे मन मरणे कहा डराई, आगे पीछे मरणा रे भाई ।। टेक।।
जे कुछ आवै थिर न रहाई, देखत सबै चल्या जग जाई ।। 1 ।।
पीर पैगम्बर किया पयाना, सेख मुसायक सबै समाना ।। 2 ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश महाबलि, मोटे मुनि जन गये सबै चलि ।। 3 ।।
निहचल सदा सोई मन लाइ, दादू हर्ष राम गुण गाइ ।। 4 ।।

२२७. वस्तु निर्देश निर्णय । मल्लिका मोद ताल

ऐसा तत्त्व अनुपम भाई, मरै न जीवै, काल न खाई ।। टेक।।
पावक जरै न मार्‌यो मरई, काट्‌यो कटै न टार्‌यो टरई ।। 1 ।।
आखिर खिरै न लागै काई, सीत घाम जल डूब न जाई ।। 2 ।।
माटी मिलै न गगन विलाई, अघट एक रस रह्या समाई ।। 3 ।।
ऐसा तत्त्व अनुपम कहिये, सो गहि दादू काहे न रहिये ।। 4 ।।

२२८. मनोपदेश । मल्लिका मोद ताल

मन रे सेव निरंजन राई, ताको सेवो रे चित लाई ।। टेक।।
आदि अन्तै सोई उपावै, परलै लेहि छिपाई।
बिन थँभा जिन गगन रहाया, सो रह्या सबन में समाई ।। 1 ।।
पाताल मांही जे आराधै, वासुकि रे गुण गाई।
सहस्र मुख जिह्वा द्वै ताके, सो भी पार न पाई ।। 2 ।।
सुर नर जाको पार न पावैं, कोटि मुनि जन ध्याई।
दादू रे तन ताको है रे, जाको सकल लोक आराही ।। 3 ।।

२२९. जीव-उपदेश । भंग ताल

निरंजन जोगी जान ले चेला, सकल वियापी रहै अकेला ।। टेक।।
खपर न झोली डंड अधारी, मढ़ी न माया लेहु विचारी ।। 1 ।।

सींगी मुद्रा विभूति न कंथा, जटा जाप आसन नहिं पंथा ।। 2 ।।
तीरथ व्रत न वनखंड वासा, मांग न खाइ नहीं जग आसा ।। 3 ।।
अमर गुरु अविनाशी जोगी, दादू चेला महारस भोगी ।। 4 ।।

२३०. उपदेश । भंग ताल

जोगिया बैरागी बाबा, रहै अकेला उनमनि लागा ।। टेक ।।
आतम जोगी धीरज कंथा, निश्चल आसण आगम पंथा ।। 1 ।।
सहजैं मुद्रा अलख अधारी, अनहद सींगी रहणि हमारी ।। 2 ।।
काया वन-खंड पांचों चेला, ज्ञान गुफा में रहै अकेला ।। 3 ।।
दादू दर्शन कारण जागे, निरंजन नगरी भिक्षा मांगे ।। 4 ।।

२३१. समता ज्ञान । ललित ताल

बाबा, कहु दूजा क्यों कहिये, तातैं इहि संशय दुख सहिये ।। टेक ।।
यहु मति ऐसी पशुवां जैसी, काहे चेतत नांहीं।
अपना अंग आप नहिं जानै, देखै दर्पण मांही ।। 1 ।।
इहि मति मीच मरण के तांई, कूप सिंह तहँ आया।
डूब मुवा मन मरम न जाना, देखि आपनी छाया ।। 2 ।।
मद के माते समझत नांहीं, मैगल की मति आई।
आपै आप आप दुख दीया, देखी आपनी झांई ।। 3 ।।
मन समझे तो दूजा नांहीं, बिन समझे दुख पावै।
दादू ज्ञान गुरु का नांहीं, समझ कहाँ तैं आवै ।। 4 ।।

२३२. ललित ताल

बाबा, नांहीं दूजा कोई ।
एक अनेक नाम तुम्हारे, मोपै और न होई ।। टेक ।।
अलख इलाही एक तूँ, तूँ ही राम रहीम।

तूँ ही मालिक मोहना, केशव नाम करीम ।। 1 ।।
सांई सिरजनहार तूँ, तूँ पावन तूँ पाक।
तूँ कायम करतार तूँ, तूँ हरि हाजिर आप ।। 2 ।।
रमता राजिक एक तूँ, तूँ सारंग सुबहान।
कादिर करता एक तूँ, तूँ साहिब सुलतान ।। 3 ।।
अविगत अल्लह एक तूँ, गनी गुसांई एक।
अजब अनुपम आप है, दादू नाम अनेक।। 4 ।।

२३३. समर्थाई । रंग ताल

जीवत मारे मुये जिलाये, बोलत गूंगे गूंग बुलाये ।। टेक।।
जागत निशि भर सोई सुलाये, सोवत रैनि सोई जगाये ।। 1 ।।
सूझत नैनहुँ लोइन लीये, अंध विचारे ता मुख दीये ।। 2 ।।
चलते भारी ते बिठलाये, अपंग विचारे सोई चलाये ।। 3 ।।
अैसा अद्‌भुत हम कुछ पाया, दादू सतगुरु कहि समझाया ।। 4 ।।

२३४. प्रश्न । रंग ताल

क्यों कर यह जग रच्यो, गुसांई ?
तेरे कौन विनोद बन्यो मन मांहीं? टेक।।
कै तुम आपा प्रकट करना, कै यहु रचले जीव उधरना ।। 1 ।।
कै यहु तुम को सेवक जानैं, कै यहु रचले मन के मानैं ।। 2 ।।
कै यहु तुम को सेवक भावै, कै यहु रचले खेल दिखावै ।। 3 ।।
कै यहु तुम को खेल पियारा, कै यहु भावै कीन्ह पसारा ।। 4 ।।
यहु सब दादू अकथ कहानी, कहि समझावो सारंग-पाणी ।। 5 ।।

उत्तर की साखी

दादू परमारथ को सब किया, आप स्वारथ नांहिं।(15-50)
परमेश्वर परमारथी, कै साधू कलि मांहिं ।। 1 ।।

खालिक खेलै खेल कर, बूझै विरला कोइ। (21-37)
लेकर सुखिया ना भया, देकर सुखिया होइ ।। 2 ।।

२३५. समर्थाई । झपताल

हरे ! हरे !! सकल भुवन भरे, जुग जुग सब करे।
जुग जुग सब धरे, अकल सकल जरे, हरे हरे ।। टेक।।
सकल भुवन छाजे, सकल भुवन राजे, सकल कहै।
धरती अम्बर गहै, चंद सूर सुधि लहै, पवन प्रकट बहै ।। 1 ।।
घट घट आप देवै, घट घट आप लेवै, मंडित माया।
जहाँ तहाँ आप राया, जहाँ तहाँ आप छाया, अगम निगम पाया ।। 2 ।।
रस मांही रस राता, रस मांहीं रस माता, अमृत पीया।
नूर मांही नूर लीया, तेज मांही तेज कीया, दादू दर्श दीया ।। 3 ।।

२३६. परिचय उपदेश । चौताल

पीव पीव, आदि अंत पीव ।
परसि परसि अंग संग, पीव तहाँ जीव ।। टेक।।
मन पवन भवन गवन, प्राण कँवल मांहि।
निधि निवास विधि विलास, रात दिवस नांहि ।। 1 ।।
सास वास आस पास, आत्म अंग लगाइ।
ऐन बैन निरख नैन, गाइ गाइ रिझाइ ।। 2 ।।
आदि तेज अंत तेज, सहजैं सहज आइ।
आदि नूर अंत नूर, दादू बलि बलि जाइ ।। 3 ।।

२३७. (फारसी) चौताल

नूर नूर अव्वल आखिर नूर ।
दायम कायम कायम दायम, हाजिर है भरपूर ।। टेक।।

आसमान नूर, जमीं नूर, पाक परवरदिगार।
आब नूर, बाद नूर, खूब खूबां यार ।। 1 ।।
जाहिर बातिन, हाजिर नाजिर, दाना तूँ दीवान।
अजब अजाइब, नूर दीदम, दादू है हैरान ।। 2 ।।

२३८. रस । त्रिताल

मैं अमली मतवाला माता, प्रेम मगन मेरा मन राता ।। टेक।।
अमी महारस भर भर पीवै, मन मतवाला जोगी जीवै ।। 1 ।।
रहै निरन्तर गगन मंझारी, प्रेम पियाला सहज खुमारी ।। 2 ।।
आसण अवधू अमृतधारा, जुग जुग जीवै पीवणहारा ।। 3 ।।
दादू अमली इहि रस माते, राम रसायन पीवत छाके।। 4 ।।

२३९. निज उपदेश । त्रिताल

सुख दुख संशय दूर किया, तब हम केवल राम लिया ।। टेक।।
सुख दुख दोऊ भ्रम बिचारा, इन सौं बंध्या है जग सारा ।। 1 ।।
मेरी मेरा सुख के तांईं, जाइ जन्म नर चेतै नांहीं ।। 2 ।।
सुख के तांई झूठा बोलै, बांधे बंधन कबहूँ न खोलै ।। 3 ।।
दादू सुख दुख संग न जाई, प्रेम प्रीति पीव सौं ल्यौ लाई ।। 4 ।।

२४०. हैरान । वर्णभिन्न ताल

कासौं कहूँ हो अगम हरि बाताँ,
गगन धरणी दिवस नहिं राता ।। टेक।।
संग न साथी, गुरु नहिं चेला, आसन पास यों रहै अकेला ।। 1 ।।
वेद न भेद, न करत विचारा, अवरण वरण सबन तैं न्यारा ।। 2 ।।
प्राण न पिंड, रूप नहिं रेखा, सोइ तत्त सार नैन बिन देखा ।। 3 ।।
जोग न भोग, मोह नहिं माया, दादू देख काल नहिं काया ।। 4 ।।

241. गुरु ज्ञान । वर्ण भिन्न ताल

मेरा गुरु ऐसा ज्ञान बतावै ।
काल न लागै, संशय भागै, ज्यों है त्यों समझावै ।। टेक।।
अमर गुरु के आसन रहिये, परम ज्योति तहँ लहिये।
परम तेज सो दृढ़ कर गहिये, गहिये लहिये रहिये ।। 1 ।।
मन पवना गहि आतम खेला, सहज शून्य घर मेला।
अगम अगोचर आप अकेला, अकेला मेला खेला ।। 2 ।।
धरती अम्बर चंद न सूरा, सकल निरंतर पूरा।
शब्द अनाहद बाजहिं तूरा, तूरा पूरा सूरा ।। 3 ।।
अविचल अमर अभय पद दाता, तहाँ निरंजन राता।
ज्ञान गुरु ले दादू माता, माता राता दाता ।। 4 ।।

242. राज विद्याधर ताल

मेरा गुरु आप अकेला खेलै ।
आपै देवै आपै लेवै, आपै द्वै कर मेलै ।। टेक।।
आपै आप उपावै माया, पंच तत्त्व कर काया।
जीव जन्म ले जग में आया, आया काया माया ।। 1 ।।
धरती अंबर महल उपाया, सब जग धंधै लाया।
आपै अलख निरंजन राया, राया लाया पाया ।। 2 ।।
चन्द सूर दोइ दीपक कीन्हा, रात दिवस कर लीन्हा।
राजिक रिजक सबन को दीन्हा, दीन्हा लीन्हा कीन्हा ।। 3 ।।
परम गुरु सो प्राण हमारा, सब सुख देवै सारा।
दादू खेलै अनन्त अपारा, अपारा सारा हमारा ।। 4 ।।

243. हैरान । राज विद्याधर ताल

थकित भयो मन कह्यो न जाई, सहज समाधि रह्यो ल्यौ लाई ।। टेक।।

जे कुछ कहिये सोच विचारा, ज्ञान अगोचर अगम अपारा ।। 1 ।।
साइर बूँद कैसे कर तोलै, आप अबोल कहा कहि बोलै ।। 2 ।।
अनल पंखि परै पर दूर, ऐसे राम रह्या भरपूर ।। 3 ।।
अब मन मेरा ऐसे रे भाई, दादू कहबा कहण न जाई ।। 4 ।।

२४४. मल्लिका मोद ताल

अविगत की गति कोइ न लहै, सब अपना उनमान कहै ।। टेक।।
केते ब्रह्मा वेद विचारैं, केते पंडित पाठ पढ़ैं।
केते अनुभव आतम खोजैं, केते सुर नर नाम रटैं ।। 1 ।।
केते ईश्वर आसन बैठे, केते जोगी ध्यान धरैं।
केते मुनिवर मन को मारैं, केते ज्ञानी ज्ञान करैं ।। 2 ।।
केते पीर केते पैगम्बर, केते पढ़ैं कुराना।
केते काजी केते मुल्लां, केते शेख शयाना ।। 3 ।।
केते पारिख अन्त न पावैं, वार पार कछु नांहीं।
दादू कीमत कोई न जानैं, केते आवैं जांहीं ।। 4 ।।

२४५. मल्लिका मोद ताल

ए हौं बूझि रही पीव जैसा है, तैसा कोइ न कहै रे।
अगम अगाध अपार अगोचर, सुधि बुधि कोइ न लहै रे ।। टेक।।
वार पार कोइ अन्त न पावै, आदि अन्त मधि नांही रे।
खरे सयाने भये दिवाने, कैसा कहाँ रहै रे ।। 1 ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर बूझै, केता कोई बतावै रे।
शेख मुशायक पीर पैगम्बर, है कोइ अगह गहै रे ।। 2 ।।
अम्बर धरती सूर ससि बूझै, बाव वर्ण सब सोधै रे।
दादू चक्रित है हैराना, को है कर्म दहै रे ।। 3 ।।
इति राग आसावरी सम्पूर्ण ।। 9 ।। पद 32 ।।

अथ राग सिन्दूरा 10

(गायन समय रात्रि 12 से 3)

246. परिचय । झपताल

हंस सरोवर तहाँ रमैं, सुभर हरि जल नीर।
प्राणी आप पखालिये, निर्मल सदा होइ शरीर ।। टेक।।
मुक्ताहल मन मानिया, चुगैं हंस सुजान।
मध्य निरंतर झूलिये, मधुर विमल रस पान ।। 1 ।।
भँवर कमल रस वासना, रातो राम पीवंत।
अरस परस आनन्द करैं, तहँ मन सदा होइ जीवंत ।। 2 ।।
मीन मगन मांहीं रहैं, मुदित सरोवर मांहिं।
सुख सागर क्रीड़ा करैं, पूरण परिमित नांहिं ।। 3 ।।
निर्भय तहाँ भय को नहीं, विलसैं बारम्बार।
दादू दर्शन कीजिये, सन्मुख सिरजनहार ।। 4 ।।

२४७. झपताल

सुख सागर में झूलबो, कश्मल झड़ै हो अपार।
निर्मल प्राणी होइबो, मिलिबो सिरजनहार ।। टेक।।
तिहिं संजम पावन सदा, पंक न लागै प्राण।
कँवल बिगासे तिहि तणों, उपजे ब्रह्म गियान ।। 1 ।।
आगम निगम तहँ गम करै, तत्त्वैं तत्त्व मिलान।
आसन गुरु के आइबो, मुक्तें महल समान ।। 2 ।।
प्राणी परि पूजा करै, पूरै प्रेम विलास।
सहजैं सुन्दर सेविये, लागी लै कविलास ।। 3 ।।
रैण दिवस दीसै नहीं, सहजैं पुंज प्रकास।
दादू दर्शन देखिये, इहि रस रातो हो दास ।। 4 ।।

२४८. शूल ताल

अविनाशी संग आत्मा, रमे हो रैण दिन राम।
एक निरंतर ते भजे, हरि हरि प्राणी नाम ।। टेक।।
सदा अखंडित उर बसै, सो मन जाणी ले।
सकल निरंतर पूरि सब, आतम रातो ते ।। 1 ।।
निराधार निज बैसणों, जिहिं तत आसन पूर।
गुरु सिख आनन्द ऊपजै, सन्मुख सदा हजूर ।। 2 ।।
निश्चल ते चालै नहीं, प्राणी ते परिमाण।
साथी साथैं ते रहैं, जाणैं जाण सुजाण ।। 3 ।।
ते निर्गुण आगुण धरी, मांहैं कौतुकहार।
देह अछत अलगो रहै, दादू सेव अपार ।। 4 ।।

२४९. शूल ताल

पारब्रह्म भज प्राणिया, अविगत एक अपार।

अविनाशी गुरु सेविये, सहजैं प्राण अधार ।। टेक।।
ते पुर प्राणी तेहनो, अविचल सदा रहंत।
आदि पुरुष ते आपणों, पूरण परम अनंत ।। 1 ।।
अविगत आसण कीजिये, आपैं आप निधान।
निरालम्ब भजि तेहनों, आनंद आत्मराम ।। 2 ।।
निर्गुण निश्चल थिर रहै, निराकार निज सोइ।
ते सति प्राणी सेविये, लै समाधि रत होइ ।। 3 ।।
अमर आप रमता रमै, घट घट सिरजनहार।
गुणातीत भज प्राणिया, दादू येह विचार ।। 4 ।।

250. शूरतान झपताल
क्यूं भाजै सेवक तेरा, ऐसा सिर साहिब मेरा ।। टेक।।
जाके धरती गगन आकाशा, जाके चंद सूर कविलाशा।
जाके तेज पवन जल साजा, जाके पंच तत्त्व के बाजा ।। 1 ।।
जाके अठारह भार वनमाला, गिरि पर्वत दीनदयाला।
जाके सायर अनन्त तरंगा, जाके चौरासी लख संगा ।। 2 ।।
जाके ऐसे लोक अनन्ता, रचि राखै विधि बहु भंता।
जाके ऐसा खेल पसारा, सब देखै कौतुकहारा ।। 3 ।।
जाके काल मीच डर नांहीं, सो बरत रह्या सब मांहीं।
मन भावै खैले खेला, ऐसा है आप अकेला ।। 4 ।।
जाके ब्रह्मा ईश्वर बंदा, सब मुनिजन लागे अंगा।
जाके साध सिद्ध सब मांहीं, परिपूरण परिमित नांहीं ।। 5 ।।
सोई भानै घड़ै संवारै, जुग केते कबहुँ न हारै।
ऐसा हरि साहिब पूरा, सब जीवनि आतम मूरा ।। 6 ।।
सो सबहिन की सुधि जानै, जो जैसा तैसी बानै।
सर्वंगी राम सयाना, हरि करै सो होइ निदाना ।। 7 ।।

जे हरि जन सेवक भाजै, तो अैसा साहिब लाजै।
अब मरण माँड हरि आगे, तो दादू बाण न लागे ॥ 8 ॥

२५१. झपताल
हरि भजतां किमि भाजिये, भाजे भल नांहीं।
भाजे भल क्यूं पाइये, पछतावै मांहीं ॥ टेक॥
सूरा सो सहजैं भिड़ै, सार उर झेलै।
रण रोकै भाजै नहीं, ते बाण न मेलै ॥ 1 ॥
सती सत साचा गहै, मरणे न डराई।
प्राण तजै जग देखतां, पियड़ो उर लाई ॥ 2 ॥
प्राण पतंगा यों तजै, वो अंग न मोड़ै।
जौवन जारै ज्योति सूं, नैना भल जोड़ै ॥ 3 ॥
सेवक सो स्वामी भजै, तन मन तजि आसा।
दादू दर्शन ते लहैं, सुख संगम पासा ॥ 4 ॥

२५२. चेतावनी । रुद्र ताल
सुन तूँ मना रे, मूरख मूढ़ विचार,
आवै लहरि बिहावणी, दमै देह अपार ॥ टेक॥
करिबो है तिमि कीजिये रे, सुमिर सो आधार ॥ 1 ॥
चरण बिहूणो चालबो रे, संभारी ले सार ॥ 2 ॥
दादू तेहज लीजिये रे, सांचो सिरजनहार ॥ 3 ॥

२५३. (गुजराती) रुद्र। ताल
रे मन साथी माहरा, तूनें समझायो कै बारो रे।
रातो रंग कसुंभ के, तैं बिसार्‌यो आधारो रे ॥ टेक॥
स्वप्ना सुख के कारणे, फिर पीछे दुख होई रे।

दीपक दृष्टि पतंग ज्यों, यों भ्रमि जले जनि कोई रे ।। 1 ।।
जिह्वा स्वारथ आपणे, ज्यूं मीन मरे तज नीरो रे।
मांहैं जाल न जाणियो, तातैं उपनों दुःख शरीरो रे ।। 2 ।।
स्वादैं ही संकट पर्‌यो देखत ही नर अंधो रे।
मूरख मूठी छाड़ि दे, होइ रह्यो निर्बंधो रे ।। 3 ।।
मान सिखावणि माहरी, तू हरि भज मूल न हारी रे।
सुख सागर सोई सेविये, जन दादू राम सँभारी रे ।। 4 ।।
इति राग सिन्दूरा सम्पूर्ण ।। 10 ।। पद 8 ।।
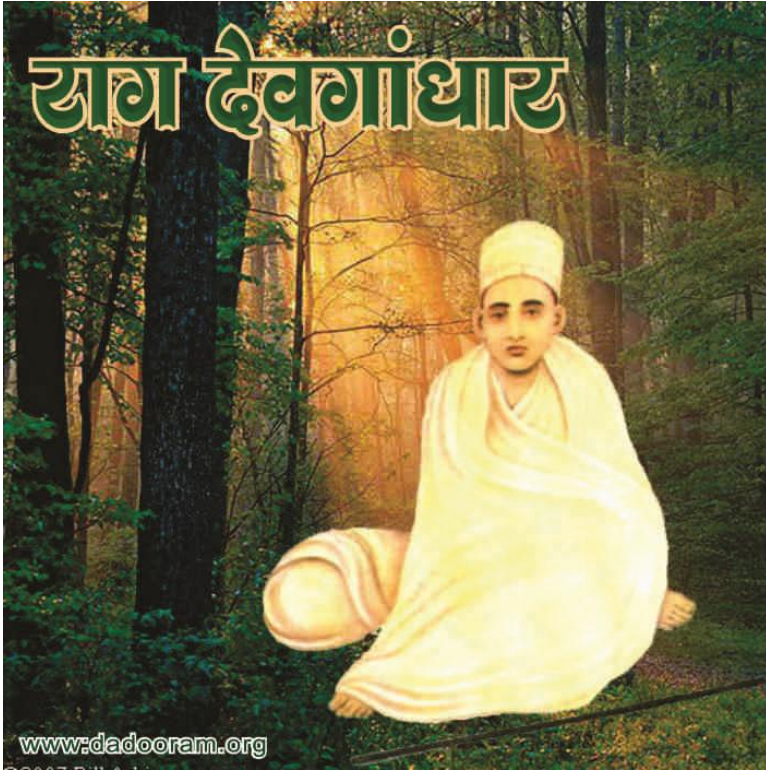
अथ राग देवगांधार 11

(गायन समय प्रातः 6 से 9)

254. विनती अनन्य शरण । त्रिताल

शरण तुम्हारी आइ परे ।

जहाँ तहाँ हम सब फिर आये, राखि राखि हम दुखित खरे ।। टेक।।

कस कस काया तप व्रत कर कर, भ्रमत भ्रमत हम भूल परे।

कहुँ शीतल कहुँ तप्त दहे तन, कहुँ हम करवत सीस धरे ।। 1 ।।

कहुँ वन तीरथ फिर फिर थाके, कहुँ गिरि पर्वत जाइ चढ़े।

कहुँ शिखर चढ़ परे धरणि पर, कहुँ हत आपा प्राण हरे ।। 2 ।।

अंध भये हम, निकट न सूझै, ताथैं तुम्ह तज जाइ जरे।

हा हा ! हरि अब दीन लीन कर, दादू बहु अपराध भरे ।। 3 ।।

२५५. पतिव्रत उपदेश । त्रिताल

बौरी ! तूँ बार बार बौरानी।
सखी ! सुहाग न पावै ऐसे, कैसे भरमि भुलानी ॥ टेक॥
चरणों चेरी चित नहिं राख्यो, पतिव्रत नांहि न जान्यो।
सुन्दरि सेज संग नहिं जानै, पीव सौं मन नहिं मान्यो ॥ 1 ॥
तन मन सबै शरीर न सौंप्यो, शीश नाइ नहिं ठाढ़ी।
इकरस प्रीति रही नहिं कबहूँ, प्रेम उमंग न बाढ़ी ॥ 2 ॥
प्रीतम अपनो परम सनेही, नैन निरख न अघानी।
निशि-वास आनिउर अंतर, परम पूज्य नहिं जानी ॥ 3 ॥
पतिव्रत आगै जिन जिन पाल्यो, सुन्दरी तिन सब छाजै।
दादू पीव बिन और न जानै, ताहि सुहाग विराजै ॥ 4 ॥

२५६. उपदेश चेतावनी । रंग ताल

मन मूरखा ! तैं योंही जन्म गँवायो,
सांई केरी सेवा न कीन्हीं, इहि कलि काहे को आयो ॥ टेक॥
जिन बातन तेरो छूटिक नाँहीं, सोइ मन तेरे भायो।
कामी ह्वै विषया संग लागो, रोम रोम लपटायो ॥ 1 ॥
कुछ इक चेति विचारि देखो, कहा पाप जीय लायो।
दादू दास भजन करलीजे, स्वप्नै जगडहकायो ॥ 2 ॥
इति राग गूजरी (देवगांधार) सम्पूर्णः ॥ 11 ॥ पद 3 ॥
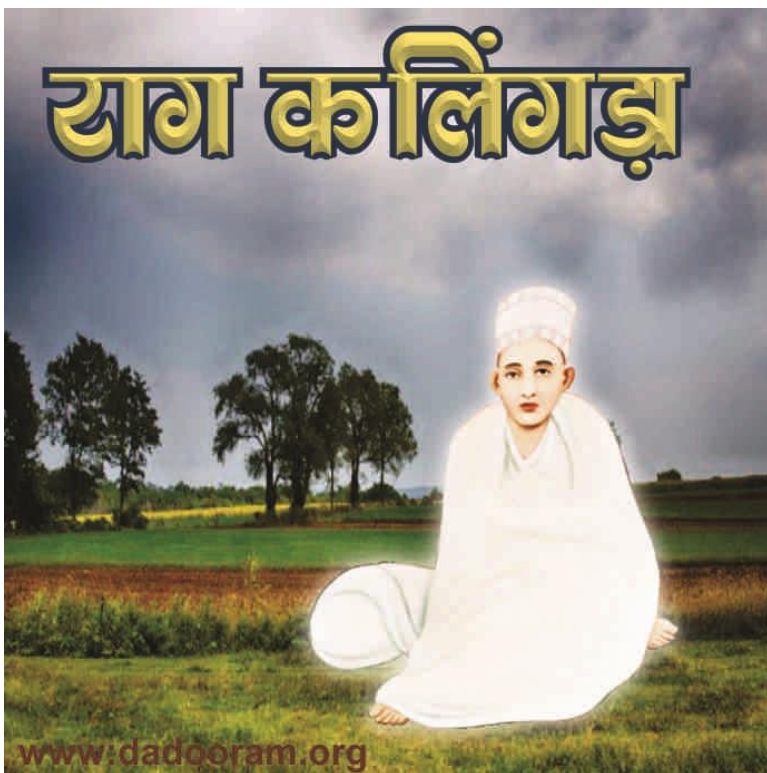
अथ राग (कल्हेरौ) कालिंगड़ा 12

(गायन समय प्रभात ३ से ६)

२५७. (गुजराती) विनती। रंग ताल

वाल्हा, हूँ ताहरी, तूँ माहरो नाथ ।

तुम सौं पहली प्रीतड़ी, पूरबलो साथ ।। टेक।।

वाल्हा मैं तूँ म्हारो ओलखियो रे, राखिस तूँनें हृदा मंझारि।

हूँ पामूं पीव आपणों रे, त्रिभुवन दाता देव मुरारि ।। 1 ।।

वाल्हा मन माहरो मन मांही राखिस, आत्म एक निरंजन देव।

चित मांहैं चित सदा निरंतर, येणी पेरे तुम्हारी सेव ।। 2 ।।

वाल्हा भाव भक्ति हरि भजन तुम्हारो, प्रेमें पूरि कँवल विगास।

अभि-अंतर आनन्द अविनाशी, दादू नी एह्वैं पूरवी आस ।। 3 ।।

२५४. (गुजराती) उपदेश चेतावनी। वर्ण भिन्नताल

वारीवार कहूँ रे गहिला, राम राम कांइ विसाऱ्यो रे।
जनम अमोलक पामियो, एह्वो रतन कांई हाऱ्यो रे ।। टेक।।
विषया बाह्यो नें तहँ धायो, कीधो नहिं मारो वाऱ्यो रे।
माया धन जोई नें भूल्यो, सर्वस येणें हाऱ्यो रे ।। 1 ।।
गर्भवास देह दमतो प्राणी, आश्रम तेह संभाऱ्यो रे।
दादू रे जन राम भणीजे, नहिं तो जथा विधि हाऱ्यो रे ।। 2 ।।
इति राग कालिंगडा सम्पूर्णः ।। 12 ।। 2 पद ।।
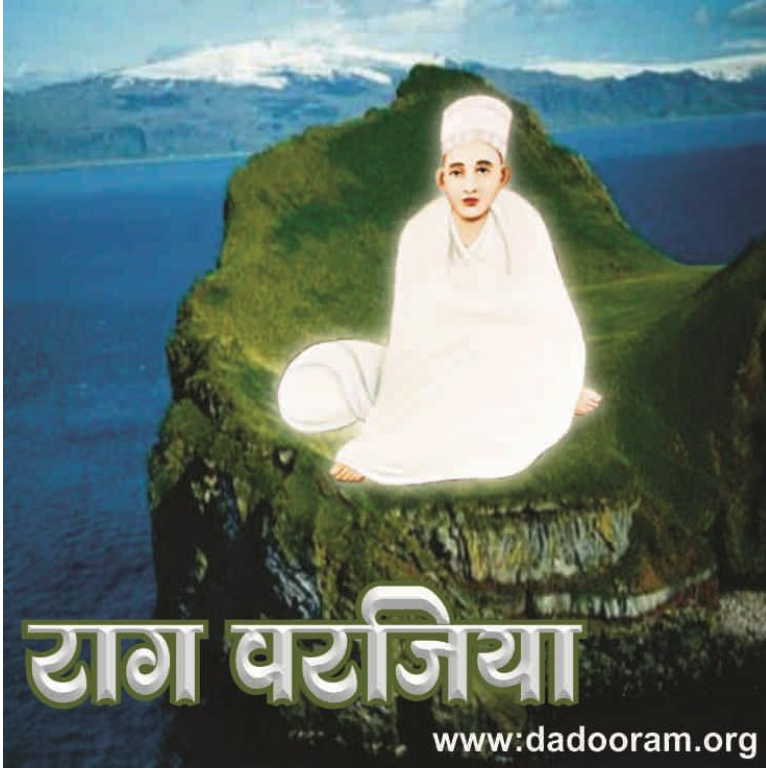
अथ राग परजिया (परज) 13

(गायन समय रात्रि ३ से ६)

२५९. परिचय । खेमटा ताल

नूर रह्या भरपूर, अमी रस पीजिये,
रस मांही रस होइ, लाहा लीजिये ।। टेक।।
प्रकट तेज अनन्त, पार नहिं पाइये।
झिलमिल झिलमिल होइ, तहाँ मन लाइये ।। 1 ।।
सहजैं सदा प्रकाश, ज्योति जल पूरिया।
तहाँ रहैं निज दास, सेवक सूरिया ।। 2 ।।
सुख सागर वार न पार, हमारा वास है।
हंस रहैं ता मांहिं, दादू दास है ।। 3 ।।
इति राग परजिया सम्पूर्णः ।। 13 ।। पद 1 ।।
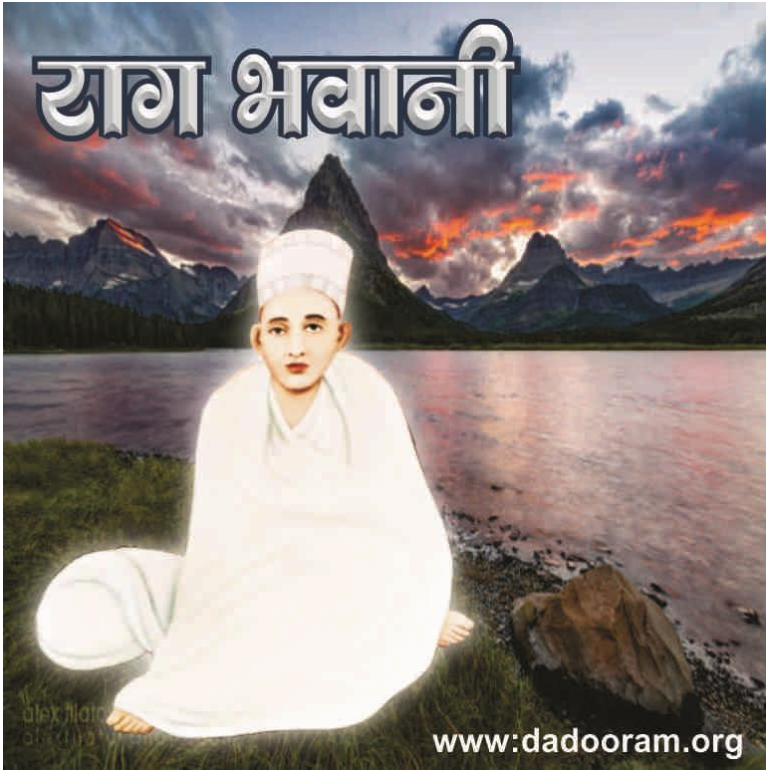
अथ राग भांणमली (भवानी) 14

(गायन समय मध्यरात्रि, राग मंजरी मतानुसार)

260. (गुजराती) विनती । कौव्वाली ताल

मारा वाल्हा रे ! तारे शरणि रहेश ।

बीनतड़ी वाल्हा नें कहतां, अनंत सुख लहेश ।। टेक।।

स्वामी तणों हूँ संग न मेलूं, बिनतड़ी कहेश।

हूँ अबला तूँ बलवंत राजा, तारा बना वहेश ।। 1 ।।

संग रहूँ तां सब सुख पामूं, अंतर थैं दहेश।

दादू ऊपर दया करीनें, आवो एणढ़ वेश ।। 2 ।।

२६१. (गुजराती) जलद त्रिताल

चरण देखाड़ तो प्रमाण ।
स्वामी माहरे नैणें निरखूं, मांगू येज मान ।। टेक ।।
जोवूं तुझनें आशा मुझनें, लागूं येज ध्यान ।
वाहलो मारो मलो रे सहिये, आवे केवल ज्ञान ।। 1 ।।
जेणी पेरें हूँ देखूं तुझने, मुझनें आलो जाण ।
पीव तणी हूँ पर नहिं जाणूं, दादू रे अजाण ।। 2 ।।

२६२. (गुजराती) जलद त्रिताल

ते हरि मलूं मारो नाथ !
जोवा ने मारो तन तपे, केवी पेरें पामूं साथ ।। टेक ।।
ते कारण हूँ आकुल व्याकुल, ऊभी करूं विलाप ।
स्वामी मारो नैणें निरखूं, ते तणों मनें ताप ।। 1 ।।
एक वार घर आवे वाहला, नव मेलूं कर हाथ ।
ये वीनती सांभल स्वामी, दादू तारो दास ।। 2 ।।

२६३. रंगताल

ते केम पामिये रे, दुर्लभ जे आधार ।
ते बिना तारण को नहीं, केम उतरिये पार ।। टेक ।।
केवी पेरें कीजे आपणो रे, तत्व ते छे सार ।
मन मनोरथ पूरे मारा, तन नो ताप निवार ।। 1 ।।
संभाऱ्यो आवे रे वाहला, वेला ये अवार ।
विरहणी विलाप करे, तेम दादू मन विचार ।। 2 ।।
इति राग भांणमली सम्पूर्णः ।। 14 ।। पद 4 ।।
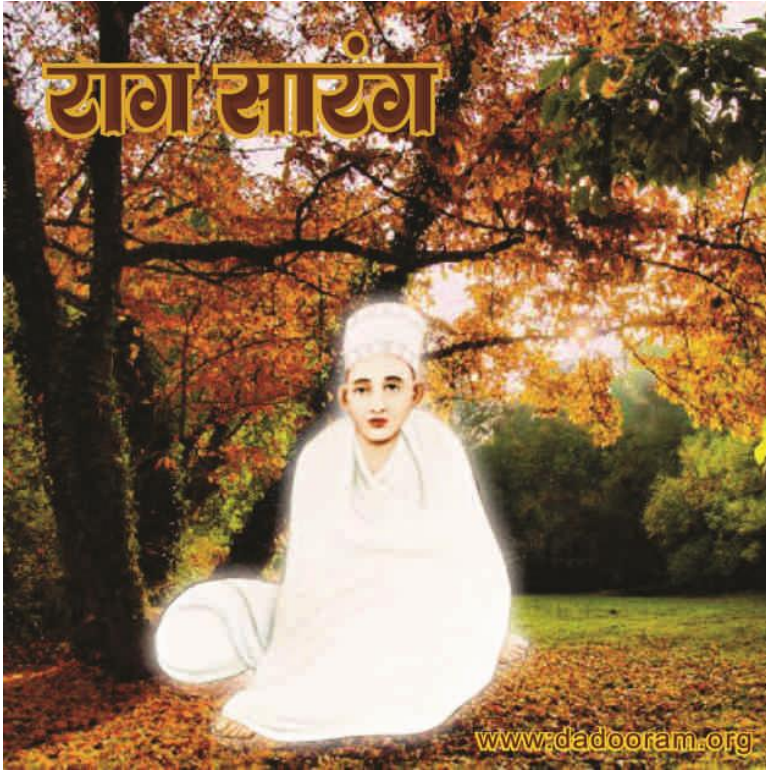
अथ राग सारंग 15

(गायन समय मध्य दिन)

264. गुरु ज्ञान सूर। फरवता ताल

हो ऐसा ज्ञान ध्यान, गुरु बिना क्यों पावै।

वार पार, पार वार, दुस्तर तिर आवै हो ॥ टेक॥

भवन गवन, गवन भवन, मन ही मन लावै।

रवन छवन, छवन रवन, सतगुरु समझावै हो ॥ 1 ॥

क्षीर नीर, नीर क्षीर, प्रेम भक्ति भावै।

प्राण कँवल विकस विकस, गोविन्द गुण गावै हो ॥ 2 ॥

ज्योति जुगति बाट घाट, लै समाधि ध्यावै।

परम नूर परम तेज, दादू दिखलावै हो ॥ 3 ॥

265. केवल विनती । पंजाबी त्रिताल

तो निबहै जन सेवक तेरा, ऐसे दया कर साहिब मेरा ।। टेक।।
जो हम तोरैं, तो तूँ जोरै, हम तोरैं, पै तूँ नहिं तोरै ।। 1 ।।
हम विसरैं, पै तूँ न विसारै, हम बिगरैं, पै तूँ न बिगारै ।। 2 ।।
हम भूलैं, तूँ आन मिलावै, हम बिछुरैं, तूँ अंग लगावै ।। 3 ।।
तुम्ह भावै सो हम पै नाँहीं, दादू दर्शन देहु गुसांईं ।। 4 ।।

266. काल चेतावनी । पंजाबी त्रिताल

माया संसार की सब झूठी ।
मात पिता सब ऊभे भाई, तिनहिं देखतां लूटी ।। टेक।।
जब लग जीव काया में थारे, खिण बैठी खिण ऊठी।
हंस जु था सो खेल गया रे, तब तैं संगति छूटी ।। 1 ।।
ए दिन पूगे आयु घटानी, तब निचिन्त होइ सूती।
दादू दास कहै ऐसी काया, जैसी गगरिया फूटी ।। 2 ।।

267. माया मध्य मुक्ति । त्रिताल

ऐसे गृह में क्यों न रहै, मनसा वाचा राम कहै ।। टेक।।
संपति विपति नहीं मैं मेरा, हर्ष शोक दोउ नांही।
राग द्वेष रहित सुख दुःख तैं, बैठा हरि पद मांही ।। 1 ।।
तन धन माया मोह न बांधे, वैरी मीत न कोई।
आपा पर सम रहै निरन्तर, निज जन सेवग सोई ।। 2 ।।
सरवर कमल रहै जल जैसे, दधि मथ घृत कर लीन्हा।
जैसे वन में रहे बटाऊ, काहू हेत न कीन्हा ।। 3 ।।
भाव भक्ति रहै रस माता, प्रेम मगन गुण गावै।
जीवत मुक्त होइ जन दादू, अमर अभय पद पावै ।। 4 ।।

२६४. परिचय उपदेश । त्रिताल

चल-चल रे मन तहाँ जाइये । चरण बिन चालिबो,
श्रवण बिन सुनिबो, बिन कर बैन बजाइये ।। टेक।।
तन नाहीं जहँ, मन नाहीं तहँ, प्राण नहीं तहँ आइये।
शब्द नहीं जहँ, जीव नहीं तहँ, बिन रसना मुख गाइये ।। 1 ।।
पवन पावक नहीं, धरणी अंबर नहीं, उभय नहीं तहँ लाइये।
चन्द नहीं जहँ, सूर नहीं तहँ, परम ज्योति सुख पाइये ।। 2 ।।
तेज पुंज सो सुख का सागर, झिलमिल नूर नहाइये।
तहँ चल दादू अगम अगोचर, तामैं सहज समाइये ।। 3 ।।
इति राग सारंग सम्पूर्णः ।। 15 ।। पद 5 ।।
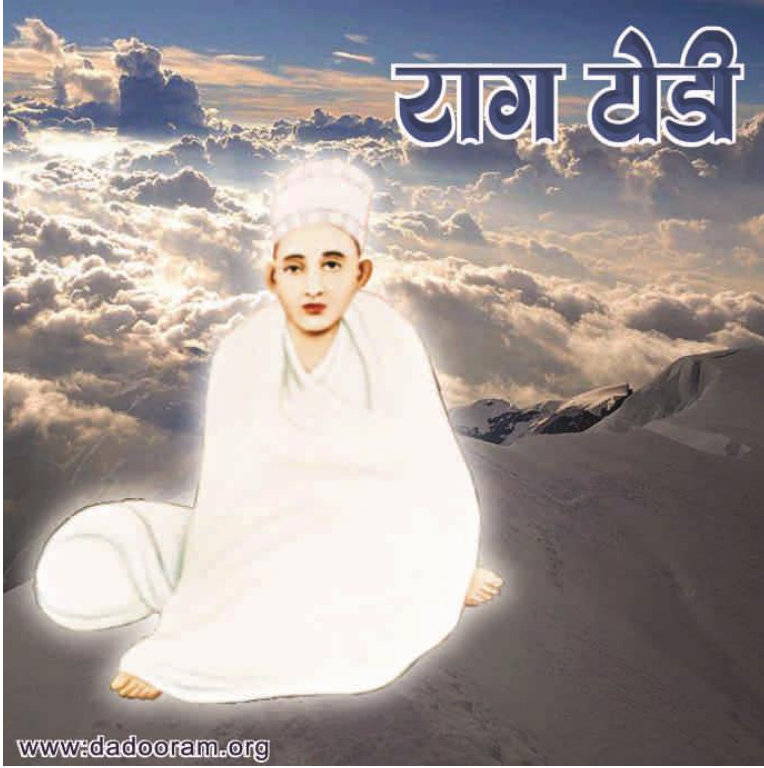
अथ राग टोडी (तोडी) 16

(गायन समय दिन 6 से 12)

269. स्मरण उपदेश । राज मृगांक ताल

सो तत सहजैं सुषमन कहणा,

साँच पकड़ मन जुग जुग रहणा ।। टेक।।

प्रेम प्रीति कर नीका राखै, बारम्बार सहज नर भाषै ।। 1 ।।

मुख हिरदै सो सहज संभारै, तिहि तत रहणा कदे न विसारै ।। 2 ।।

अन्तर सोई नीका जाणै, निमिष न बिसरै ब्रह्म बखाणै ।। 3 ।।

सोई सुजाण सुधा रस पीवै, दादू देखि जुग जुग जीवै ।। 4 ।।

270. नाम महिमा । राज मृंगाक ताल

नाँव रे नाँव रे, नाँव रे नाँव रे,

सकल शिरोमणि नाँव रे, मै बलिहारी जाँव रे ।। टेक।।
दुस्तर तारै, पार उतारै, नरक निवारै नाँव रे ।। 1 ।।
तारणहारा, भवजल पारा, निरमल सारा नाँव रे ।। 2 ।।
नूर दिखावै, तेज मिलावै, ज्योति जगावै नाँव रे ।। 3 ।।
सब कुछ दाता, अमृत राता, दादू माता नाँव रे ।। 4 ।।

271. केवल विनती । राज विद्याधर ताल
राइ रे राइ रे, सकल भुवनपति राइ रे,
अमृत देहु अघाइ रे राइ ।। टेक।।
प्रगट राता, प्रगट माता, प्रगट नूर दिखाइ रेराइ ।। 1 ।।
सुस्थिर ज्ञाना, सुस्थिर ध्याना, सुस्थिर तेज मिलाइ रेराइ ।। 2 ।।
अविचल मेला, अविचल खेला, अविचल ज्योति समाइ रे राइ ।। 3 ।।
निहचल बैना, निहचल नैना, दादू बलि बलि जाइ रे राइ ।। 4 ।।

272. रसिक अवस्था । सवारी ताल
हरि रस माते मगन भये ।
सुमिर सुमिर भये मतवाले, जामण मरण सब भूल गये ।। टेक।।
निर्मल भक्ति प्रेम रस पीवैं, आन न दूजा भाव धरैं।
सहजैं सदा राम रंग राते, मुक्ति वैकुंठैं कहा करैं ।। 1 ।।
गाइ गाइ रस लीन भये हैं, कछू न मांगैं संत जना।
और अनेक देहु दत्त आगै, आन न भावै राम बिना ।। 2 ।।
इक टग ध्यान रहैं ल्यौ लागे, छाकि परे हरि रस पीवैं।
दादू मगन रहैं रस माते, ऐसे हरि के जन जीवैं ।। 3 ।।

273. (गुजराती) केवल विनती । सवारी ताल
ते मैं कीधेला राम ! जे तैं वाऱ्या ते।

मारग मेल्हि, अमारग अणसरि, अकरम, करम हरे ।। टेक।।
साधू को संग छाड़ी नें, असंगति अणसरियो।
सुकृत मूकी, अविद्या साधी, बिषिया विस्तरियो ।। 1 ।।
आन कह्युं आन सांभल्युं, नैणें आन दीठो।
अमृत कड़वो, विष अमी लागो, खातां अति मीठो ।। 2 ।।
राम हृदाथी विसारी नें, माया मन दीधो।
पाँचे प्राण गुरुमुख वरज्या, ते दादू कीधो ।। 3 ।।

274. विरह विनती । त्रिताल
कहो, क्यों जन जीवै सांइयां? दे चरण-कँवल आधार हो।
डूबत है भव-सागरा, कारी करो करतार हो ।। टेक।।
मीन मरै बिन पाणियां, तुम बिन येह विचार हो।
जल बिन कैसे जीवहीं, इब तो किती इक बार हो ।। 1 ।।
ज्यों परै पतंगा जोति में, देख देख निज सार हो।
प्यासा बूँद न पावई, तब वन-वन करै पुकार हो ।। 2 ।।
निसदिन पीर पुकार ही, तन की ताप निवार हो।
दादू विपति सुनावही, कर लोचन सन्मुख चार हो ।। 3 ।।

275. केवल विनती । त्रिताल
तूँ साचा साहिब मेरा ।
कर्म करीम कृपालु निहारो, मैं जन बंदा तेरा ।। टेक।।
तुम्ह दीवान सबहिन की जानो, दीनानाथ दयाला।
दिखाइ दीदार मौज बंदे को, कायम करो निहाला ।। 1 ।।
मालिक सबै मुलिक के सांई, समर्थ सिरजनहारा।
खैर खुदाइ खलक में खेलत, दे दीदार तुम्हारा ।। 2 ।।
मैं शिकस्तः दरगह तेरी, हरि हजूर तूँ कहिये।

दादू द्वारे दीन पुकारे, काहे न दर्शन लहिये ।। 3 ।।

276. उपदेश चेतावनी । मकरंद ताल

कुछ चेति रे कहि क्या आया ।
इन में बैठा फूल कर, तैं देखी माया ।। टेक।।
तूँ जनि जानैं तन धन मेरा, मूरख देख भुलाया।
आज काल चल जावै देही, ऐसी सुन्दर काया ।। 1 ।।
राम नाम निज लीजिये, मैं कहि समझाया।
दादू हरि की सेवा कीजे, सुन्दर साज मिलाया ।। 2 ।।

277. मकरंद ताल

नेटि रे माटी में मिलना, मोड़ मोड़ देह काहे को चलना ।। टेक।।
काहे को अपना मन डुलावै, यहु तन अपना नीका धरना।
कोटि वर्ष तूँ काहे न जीवै, विचार देख आगै है मरना ।। 1 ।।
काहे न अपनी बाट सँवारै, संजम रहना, सुमिरण करणा।
गहिला ! दादू गर्व न कीजे, यहु संसार पँच दिन भरणा ।। 2 ।।

278. ब्रह्मयोग ताल

जाइ रे तन जाइ रे ।
जन्म सुफल कर लेहु राम रमि, सुमिर सुमिर गुण गाइ रे ।। टेक।।
नर नारायण सकल शिरोमणि, जनम अमोलक आइ रे।
सो तन जाइ जगत नहिं जानै, सकै तो ठाहर लाइ रे ।। 1 ।।
जरा काल दिन जाइ गरासै, तासौं कुछ न बसाइ रे।
छिन छिन छीजत जाइ मुग्ध नर, अंत काल दिन आइ रे ।। 2 ।।
प्रेम भगति, साधु की संगति, नाम निरंतर गाइ रे।
जे सिर भाग तो सौंज सुफल कर, दादू विलम्ब न लाइ रे ।। 3 ।।

२७९. त्रिताल

काहे रे बक मूल गँवावै, राम के नाम भलें सचु पावै ।। टेक।।
वाद विवाद न कीजे लोई, वाद विवाद न हरि रस होई।
मैं मैं तेरी मांनै नाँहीं, मैं तैं मेट मिलै हरि मांहीं ।। 1 ।।
हार जीत सौं हरि रस जाई, समझि देख मेरे मन भाई!
मूल न छाड़ी दादू बौरे, जनि भूलै तूँ बकबे औरे ।। 2 ।।

२८०. (फारसी) त्रिताल

हुशियार हाकिम न्याव है, सांई के दीवान।
कुल का हिसाब होगा, समझ मुसलमान ।। टेक।।
नीयत नेकी सालिकां, रास्ता ईमान।
इखलास अंदर आपणे, रखणां सुबहान ।। 1 ।।
हुक्म हाजिर होइ बाबा, मुसल्लम महरबान।
अक्ल सेती आपमां, शोध लेहु सुजान ।। 2 ।।
हक सौं हजूरी हूँणां, देखणां कर ज्ञान।
दोस्त दाना दीन का, मनणां फरमान ।। 3 ।।
गुस्सा हैवानी दूर कर, छाड़ दे अभिमान।
दुई दरोगां नांहिं खुशियाँ, दादू लेहु पिछान ।। 4 ।।

२८१. साधु प्रति उपदेश (गुजराती) । ललित ताल

निर्पख रहणा, राम राम कहणा,
काम क्रोध में देह न दहणा ।। टेक।।
जेणें मारग संसार जाइला, तेणें प्राणी आप बहाइला ।। 1 ।।
जे जे करणी जगत करीला, सो करणी संत दूर धरीला ।। 2 ।।
जेणें पंथैं लोक राता, तेणैं पंथैं साधु न जाता ।। 3 ।।
राम नाम दादू ऐसें कहिये, राम रमत रामहि मिल रहिये ।। 4 ।।

२८२. भेष बिडंबन । ललित ताल

हम पाया, हम पाया रे भाई । भेष बनाय ऐसी मन आई ।। टेक।।
भीतर का यहु भेद न जानै, कहै सुहागिनी क्यों मन मानै ।। 1 ।।
अंतर पीव सौं परिचय नाँहीं, भई सुहागिनी लोगन मांहीं ।। 2 ।।
सांई स्वप्नै कबहुँ न आवै, कहबा ऐसे महल बुलावै ।। 3 ।।
इन बातन मोहि अचरज आवै, पटम किये कैसे पीव पावै ।। 4 ।।
दादू सुहागिनी ऐसे कोई, आपा मेट राम रत होई ।। 5 ।।

२८३. आत्म समता । उत्सव ताल

ऐसे बाबा राम रमीजे, आतम सौं अंतर नहीं कीजे ।। टेक।।
जैसे आतम आपा लेखै, जीव जंतु ऐसे कर पेखै ।। 1 ।।
एक राम ऐसे कर जानै, आपा पर अंतर नहिं आनै ।। 2 ।।
सब घट आतम एक विचारे, राम सनेही प्राण हमारे ।। 3 ।।
दादू साची राम सगाई, ऐसा भाव हमारे भाई ।। 4 ।।

२८४. नाम समता । उत्सव ताल

माधइयो-माधइयो मीठो री माइ, माहवो-माहवो भेटियो आइ ।। टेक।।
कान्हइयो-कान्हइयो करता जाइ, केशवो केशवो केशवो धाइ ।। 1 ।।
भूधरो भूधरो भूधरो भाइ, रमैयो रमैयो रह्यो समाइ ।। 2 ।।
नरहरि नरहरि नरहरि राइ, गोविन्दो गोविन्दो दादू गाइ ।। 3 ।।

२८५. समता । बसंत ताल

एकही एकै भया आनंद, एकही एकै भागे द्वन्द ।। टेक।।
एकही एकै एक समान, एकही एकै पद निर्वान ।। 1 ।।
एकही एकै त्रिभुवन सार, एकही एकै अगम अपार ।। 2 ।।
एकही एकै निर्भय होइ, एकही एकै काल न कोइ ।। 3 ।।
एकही एकै घट प्रकास, एकही एकै निरंजन वास ।। 4 ।।

एकही एकै आपहि आप, एकही एकै माइ न बाप ।। 5 ।।
एकही एकै सहज स्वरूप, एकही एकै भये अनूप ।। 6 ।।
एकही एकै अनत न जाइ, एकही एकै रह्या समाइ ।। 7 ।।
एकही एकै भये लै लीन, एकही एकै दादू दीन ।। 8 ।।

२८६. विनती । वसंत ताल
आदि है आदि अनादि मेरा, संसार सागर भक्ति भेरा।
आदि है अंत है, अंत है आदि है, बिड़द तेरा ।। टेक।।
काल है झाल है, झाल है काल है, राखिले राखिले प्राण घेरा।
जीव का जन्म का, जन्म का जीव का, आपही आपले भांन झेरा ।। 1 ।।
मर्म का कर्म का, कर्म का मर्म का, आइबा जाइबा मेट फेरा।
तार ले पार ले, पार ले तार ले, जीव सौं शिव है निकट नेरा ।। 2 ।।
आत्मा राम है, राम है आत्मा, ज्योति है युक्ति सौं करो मेला।
तेज है सेज है, सेज है तेज है, एक रस दादू खेल खेला ।। 3 ।।

२८७. परिचय । कोकिल ताल
सुन्दर राम राया ।
परम ज्ञान परम ध्यान, परम प्राण आया ।। टेक।।
अकल सकल अति अनूप, छाया नहिं माया।
निराकार निराधार, वार पार न पाया ।। 1 ।।
गंभीर धीर निधि शरीर, निर्गुण निरकारा।
अखिल अमर परम पुरुष, निर्मल निज सारा ।। 2 ।।
परम नूर परम तेज, परम ज्योति प्रकाशा।
परम पुंज परापरं, दादू निज दासा ।। 3 ।।

२४४. परिचय पराभक्ति । कोकिल ताल

अखिल भाव अखिल भक्ति, अखिल नाम देवा।
अखिल प्रेम अखिल प्रीति,अखिल सुरति सेवा ।। टेक।।
अखिल अंग अखिल संग, अखिल रंग रामा।
अखिला रत अखिला मत, अखिला निज नामा ।। 1 ।।
अखिल ज्ञान अखिल ध्यान, अखिल आनन्द कीजे।
अखिला लय अखिला में, अखिला रस पीजे ।। 2 ।।
अखिल मगन अखिल मुदित, अखिल गलित सांई।
अखिल दर्श अखिल पर्श, दादू तुम मांहीं ।। 3 ।।
इति राग टोडी सम्पूर्णः ।। 16 ।। पद 20 ।।
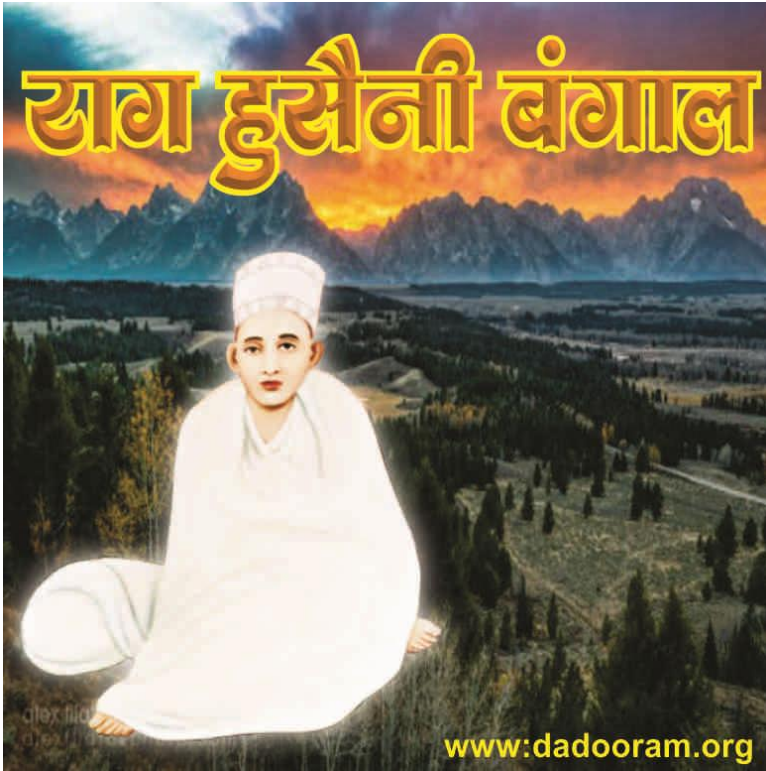
अथ राग हुसेनी बंगाल 17

(गायन समय पहर दिन चढ़े, चंद्रोदय ग्रन्थ के मतानुसार)

२४७. (फारसी) अनन्यता । त्रिताल

है दाना है दाना, दिलदार मेरे कान्हा।

तूँ ही मेरे जान जिगर, यार मेरे खाना ।। टेक।।

तूँ ही मेरे मादर पिदर, आलम बेगाना।

साहिब शिरताज मेरे, तूँ ही सुलताना ।। 1 ।।

दोस्त दिल तूँ ही मेरे, किसका खिल खाना।

नूर चश्म जिंद मेरे, तूँ ही रहमाना ।। 2 ।।

एकै असनाव मेरे, तूँ ही हम जाना।

जानिबा अजीज मेरे, खूब खजाना ।। 3 ।।

नेक नजर मेहर मीरां, बंदा मैं तेरा।

दादू दरबार तेरे, खूब साहिब मेरा ।। 4 ।।

२७०. विनय । त्रिताल

तूँ घर आव सुलक्षण पीव ।
हिक तिल मुख दिखलावहु तेरा, क्या तरसावै जीव ।। टेक।।
निशदिन तेरा पंथ निहारूं, तूँ घर मेरे आव।
हिरदा भीतर हेत सौं रे वाल्हा, तेरा मुख दिखलाव ।। 1 ।।
वारी फेरी बलि गई रे, शोभित सोइ कपोल।
दादू ऊपरि दया करीनें, सुनाइ सुहावे बोल ।। 2 ।।
इति राग हुसेनी बंगाल सम्पूर्णः ।। 17 ।। पद 2 ।।
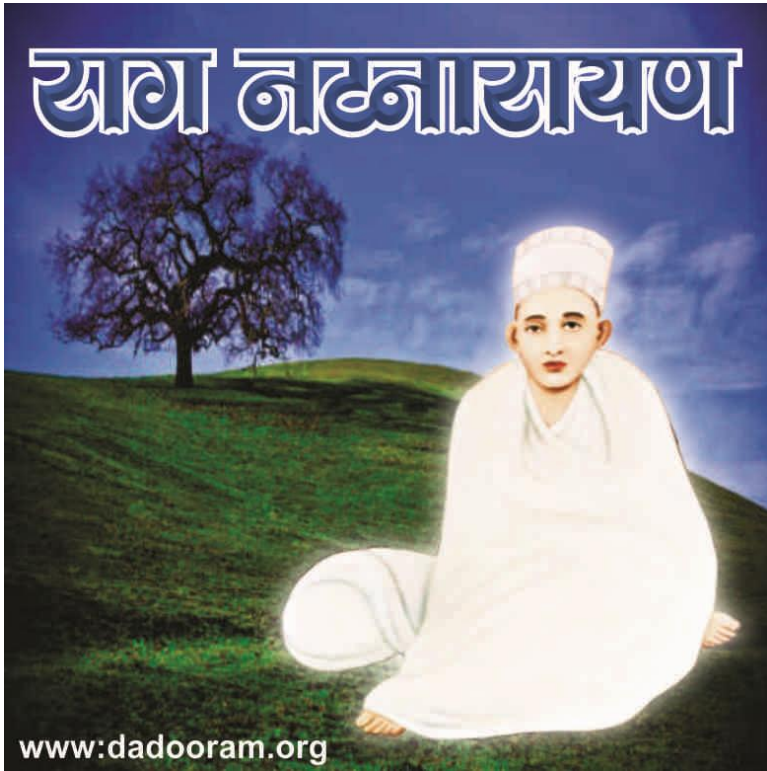
अथ राग नट नारायण 18

(गायन समय रात्रि 9 से 12) 291. हित उपदेश । गज ताल

ताको काहे न प्राण संभालै।
कोटि अपराध कल्प के लागे, मांहि महूरत टालै ।। टेक।।
अनेक जन्म के बन्धन बाढ़े, बिन पावक फँध जालै।
ऐसो है मन नाम हरी को, कबहूँ दुःख न सालै ।।
चिंतामणि जुगति सौं राखै, ज्यूं जननी सुत पालै।
दादू देखु दया करै ऐसी, जन को जाल न रालै ।।

292. विरह । जय मंगल ताल

गोविन्द कबहुँ मिलै पीव मेरा ।
चरण-कमल क्योंहीं कर देखूं, राखूं नैनहुँ नेरा ।। टेक।।
निरखण का मोहि चाव घणेरा, कब मुख देखूं तेरा।

प्राण मिलन को भई उदासी, मिल तूँ मीत सवेरा ।। 1 ।।
व्याकुल तातैं भई तन देही, सिर पर जम का हेरा।
दादू रे जन राम मिलन को, तपहि तन बहुतेरा ।। 2 ।।

२९३. राज मृगांक ताल
कब देखूं नैनहुँ रेख रति, प्राण मिलन को भई मति।
हरि सौं खेलूं हरि गति,कब मिल हैं मोहि प्राणपति ।। टेक।।
बल कीती क्यों देखूंगी रे, मुझ मांही अति बात अनेरी।
सुन साहिब इक विनती मेरी, जनम-जनम हूँ दासी तेरी ।। 1 ।।
कहै दादू सो सुनसी सांई, हौं अबला बल मुझ में नांही।
करम करी घर मेरे आई, तो शोभा पीव तेरे तांई ।। 2 ।।

२९४. राज मृगांक ताल (बसंत में)
नीके मोहन सौं प्रीति लाई।
तन मन प्राण देत बजाई, रंग रस के बनाई ।। टेक।।
ये ही जीयरे वे ही पीवरे, छोड्यो न जाई, माई।
बाण भेद के देत लगाई, देखत ही मुरझाई ।। 1 ।।
निर्मल नेह पिया सौं लागो, रती न राखी काई।
दादू रे तिल में तन जावे, संग न छाडूं , माई ।। 2 ।।

२९५. परमेश्वर महिमा । राज विद्याधर ताल
तुम बिन ऐसैं कौन करै !
गरीब निवाज गुसांई मेरो,माथै मुकुट धरै ।। टेक।।
नीच ऊँच ले करै गुसांई, टार्‌यो हूँ न टरै।
हस्त कमल की छाया राखै, काहू तैं न डरै ।। 1 ।।
जाकी छोत जगत को लागै, तापर तूँ हीं ढ़रै।
अमर आप ले करे गुसांई, मार्‌यो हूँ न मरै ।। 2 ।।

नामदेव कबीर जुलाहो, जन रैदास तिरै।
दादू बेगि बार नहीं लागै, हरि सौं सबै सरै ।। 3 ।।

२९६. मंगलाचरण । राज विद्याधर ताल

नमो नमो हरि ! नमो नमो।
ताहि गुसाँई नमो नमो, अकल निरंजन नमो नमो।
सकल वियापी जिहिं जग कीन्हा, नारायण निज नमो नमो ।। टेक।।
जिन सिरजे जल शीश चरण कर, अविगत जीव दियो।
श्रवण सँवारि नैन रसना मुख, ऐसो चित्र कियो ।। 1 ।।
आप उपाइ किये जगजीवन, सुर नर शंकर साजे।
पीर पैगम्बर सिद्ध अरु साधक, अपने नाम निवाजे ।। 2 ।।
धरती अम्बर चंद सूर जिन, पाणी पवन किये।
भानण घड़न पलक में केते, सकल सँवार लिये ।। 3 ।।
आप अखंडित खंडित नाहीं, सब सम पूर रहे।
दादू दीन ताहि नइ वंदित, अगम अगाध कहे ।। 4 ।।

२९७. हैरान । उत्सव ताल

हम तैं दूर रही गति तेरी ।
तुम हो तैसे तुम हीं जानो, कहा बपुरी मति मेरी ।। टेक।।
मन तैं अगम दृष्टि अगोचर, मनसा की गम नाँहीं।
सुरति समाइ बुद्धि बल थाके, वचन न पहुँचैं तांहीं ।। 1 ।।
जोग न ध्यान ज्ञान गम नांही, समझ समझ सब हारे।
उनमनी रहत प्राण घट साधे, पार न गहत तुम्हारे ।। 2 ।।
खोज परे गति जाइ न जानी, अगह गहन कैसे आवे।
दादू अविगत देहु दया कर, भाग बड़े सो पावे ।। 3 ।।
इति राग नट नारायण सम्पूर्णः ।। 18 ।। पद 7 ।।
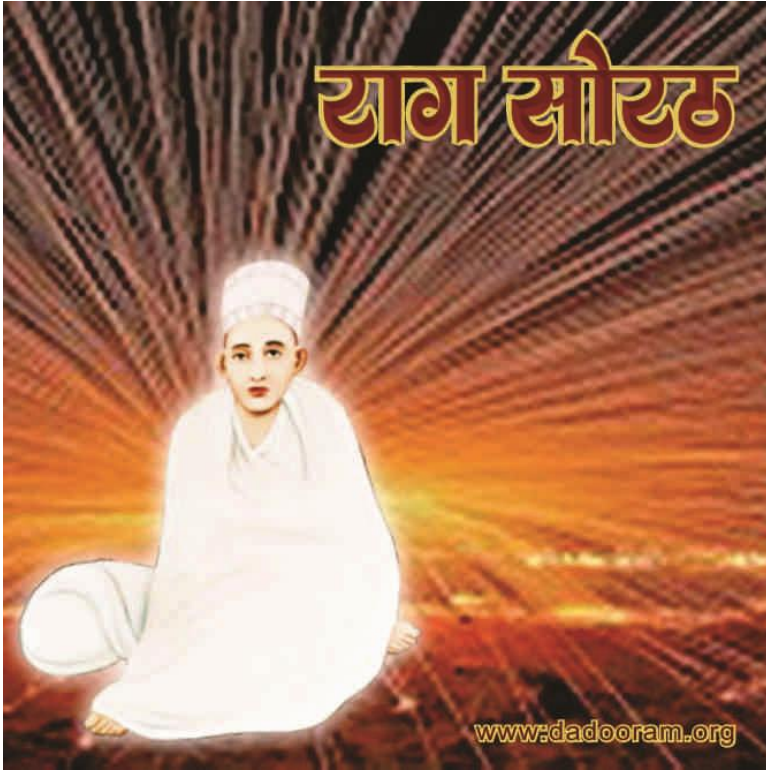
अथ राग सोरठ 19

(गायन समय रात्रि ९ से 12)

२९४. स्मरण । उत्सव ताल

कोली साल न छाड़ै रे, सब घावर काढ़ै रे ।। टेक।।

प्रेम पाण लगाई धागै, तत्त्व तेल निज दीया।

एक मना इस आरंभ लागा, ज्ञान राछ भर लीया ।। 1 ।।

नाँव नली भर बुणकर लागा, अंतरगति रंग राता।

ताणैं बाणें जीव जुलाहा, परम तत्व सौं माता ।। 2 ।।

सकल शिरोमणि बुनै विचारा, सान्हाँ सूत न तोड़ै।

सदा सचेत रहै ल्यौ लागा, ज्यौं टूटै त्यौं जोड़ै ।। 3 ।।

ऐसे तनि बुनि गहर गजीना, सांई के मन भावै।

दादू कोली करता के संग, बहुरि न इहि जग आवै ।। 4 ।।

२९९. विरही । ललित ताल

विरहणी वपु न सँभारै ।
निशदिन तलफै राम के कारण, अंतर एक विचारै ।। टेक।।
आतुर भई मिलन के कारण, कहि कहि राम पुकारै।
सास उसास निमिष नहिं विसरै, जित तित पंथ निहारै ।। 1 ।।
फिरै उदास चहुँ दिशि चितवत, नैन नीर भर आवै।
राम वियोग विरह की जारी, और न कोई भावै ।। 2 ।।
व्याकुल भई शरीर न समझै, विषम बाण हरि मारे।
दादू दर्शन बिन क्यों जीवै, राम सनेही हमारे ।। 3 ।।

३००. मन उपदेश चेतावनी । धीमा ताल

मन रे, राम रटत क्यों रहिये !
यहु तत बार बार क्यों न कहिये ।। टेक।।
जब लग जिह्वा वाणी, तो लौं जपिले सारंगपाणी।
जब पवना चल जावे, तब प्राणी पछतावे ।। 1 ।।
जब लग श्रवण सुणीजे, तो लौं साध शब्द सुण लीजे।
श्रवणों सुरति जब जाई, ए तब का सुणि है भाई ।। 2 ।।
जब लग नैंन हुँ पेखे, तो लौं चरण-कमल क्यों न देखे।
जब नैनहुं कछु न सूझे, ये सब मूरख क्या बूझे ।। 3 ।।
जब लग तन मन नीका, तो लौं जपिले जीवन जीका।
जब दादू जीव आवै, तब हरि के मन भावै ।। 4 ।।

३०१. धीमा ताल

मन रे, तेरा कौन गँवारा, जपि जीवन प्राण आधारा ।। टेक।।
रे मात पिता कुल जाती, धन जौबन सजन सगाती।
रे गृह दारा सुत भाई, हरि बिन सब झूठा ह्वै जाई ।। 1 ।।
रे तूँ अंत अकेला जावै, काहू के संग न आवै।

रे तूँ ना कर मेरी मेरा, हरि राम बिना को तेरा ।। 2 ।।
रे तूँ चेत न देखे अंधा, यहु माया मोह सब धंधा।
रे काल मीच सिर जागे, हरि सुमिरण काहे न लागे ।। 3 ।।
यहु औसर बहुरि न आवै, फिर मनिषा जन्म न पावै।
अब दादू ढ़ील न कीजे, हरि राम भजन कर लीजे ।। 4 ।।

३०२. प्रतिपाल

मन रे, देखत जन्म गयो, तातैं काज न कोई भयो रे ।। टेक।।
मन इंद्रिय ज्ञान विचारा, तातैं जन्म जुआ ज्यों हारा।
मन झूठ साँच कर जानै, हरि साध कहैं, नहिं मानै ।। 1 ।।
मन रे बादि गहे चतुराई, तातैं मनमुख बात बनाइ।
मन आप आपको थापै, करता होइ बैठा आपै ।। 2 ।।
मन स्वादी बहुत बनावै, मैं जान्या विषय बतावै।
मन मांगै सोई दीजै, हमहिं राम दुखी क्यों कीजै ।। 3 ।।
मन सबही छाड़ विकारा, प्राणी होइ गुणन तैं न्यारा।
निर्गुण निज गहि रहिये, दादू साध कहैं, ते कहिये ।। 4 ।।

३०३. प्रतिपाल

मन रे, अंतकाल दिन आया, तातैं यहु सब भया पराया ।। टेक।।
श्रवनों सुनै न नैनहुँ सूझै, रसना कह्या न जाई।
शीश चरण कर कंपन लागे, सो दिन पहुँच्या आई ।। 1 ।।
काले धोले वरण पलटिया, तन मन का बल भागा।
जौबन गया जरा चल आई, तब पछतावन लागा ।। 2 ।।
आयु घटै घट छीजै काया, यहु तन भया पुराना।
पाँचों थाके कह्या न मानैं, ताका मर्म न जाना ।। 3 ।।
हंस बटाऊ प्राण पयाना, समझि देख मन मांहीं।

दिन दिन काल ग्रासै जियरा, दादू चेतै नाँहीं ।। 4 ।।

३०४. राज विद्याधर ताल

मन रे, तूँ देखै सो नाँहीं, है सो अगम अगोचर मांहीं ।। टेक।।
निशि अँधियारी कछू न सूझै, संशय सर्प दिखावा।
ऐसे अंध जगत नहिं जानै, जीव जेवड़ी खावा ।। 1 ।।
मृग जल देख तहाँ मन धावै, दिन दिन झूठी आशा।
जहँ जहँ जाइ तहाँ जल नाँहीं, निश्चय मरै पियासा ।। 2 ।।
भ्रम विलास बहुत विधि कीन्हा, ज्यों स्वप्नै सुख पावै।
जागत झूठ तहाँ कुछ नाँहीं, फिर पीछे पछितावै ।। 3 ।।
जब लग सूता तब लग देखै, जागत भ्रम विलाना।
दादू अंत इहाँ कुछ नाँहीं, है सो सोध सयाना ।। 4 ।।

३०५. उपदेश । त्रिताल

भाई रे, बाजीगर नट खेला, ऐसे आपै रहै अकेला ।। टेक।।
यहु बाजी खेल पसारा, सब मोहे कौतुकहारा।
यहु बाजी खेलदिखावा, बाजीगर किनहुँ न पावा ।। 1 ।।
इहि बाजी जगत भुलाना, बाजीगर किनहुँ न जाना।
कुछ नांही सो पेखा, है सो किनहुँ न देखा ।। 2 ।।
कुछ ऐसा चेटक कीन्हा, तन मन सब हर लीन्हा।
बाजीगर भुरकी बाही, काहू पै लखी न जाही ।। 3 ।।
बाजीगर परकासा, यहु बाजी झूठ तमासा।
दादू पावा सोई, जो इहि बाजी लिप्त न होई ।। 4 ।।

३०६. ज्ञान उपदेश । त्रिताल

भाई रे, ऐसा एक विचारा, यूं हरि गुरु कहै हमारा ।। टेक।।

जागत सूते, सोवत सूते, जब लग राम न जाना।
जागत जागे, सोवत जागे, जब राम नाम मन माना ।। 1 ।।
देखत अंधे, अंध भी अंधे, जब लग सत्य न सूझै।
देखत देखे, अंध भी देखे, जब राम सनेही बूझै ।। 2 ।।
बोलत गूंगे, गूंगे भी गूंगे, जब लग सत्य न चीन्हा।
बोलत बोले, गूंगे भी बोले, जब राम नाम कह दीन्हा ।। 3 ।।
जीवत मूये, मूये भी मूये, जब लग नहीं प्रकासा।
जीवत जीये, मुये भी जीये, दादू राम निवासा ।। 4 ।।

३०७. नाम महिमा । एक ताल

रामजी ! नाम बिना दुख भारी, तेरे साधुन कही विचारी ।। टेक ।।
केई जोग ध्यान गह रहिया, केई कुल के मारग बहिया।
केई सकल देव को ध्यावैं, केई रिधि सिधि चाहैं पावैं ।। 1 ।।
केई वेद पुराणों माते, केई माया के संग राते।
केई देश दिशंतर डोलैं, केई ज्ञानी ह्वै बहु बोलैं ।। 2 ।।
केई काया कसैं अपारा, केई मरैं खड्ग की धारा।
केई अनंत जीवन की आशा, केई करैं गुफा में वासा ।। 3 ।।
आदि अंत जे जागे, सो तो राम नाम ल्यौ लागे।
इब दादू इहै विचारा, हरि लागा प्राण हमारा ।। 4 ।।

३०८. भ्रम विध्वंसन । एक ताल

साधो ! हरि सौं हेत हमारा, जिन यहु कीन्ह पसारा ।। टेक ।।
जा कारणि व्रत कीजे, तिल तिल यहु तन छीजे।
सहजैं ही सो जाना, हरि जानत ही मन माना ।। 1 ।।
जा कारणि तप जइये, धूप सीत सिर सहिये।
सहजैं ही सो आवा, हरि आवत ही सचु पावा ।। 2 ।।

जा कारण बहु फिरिये, कर तीरथ भ्रमि भ्रमि मरिये।
सहजैं ही सो चीन्हा, हरि चीन्ह सबै सुख लीन्हा ।। 3 ।।
प्रेम भक्ति जिन जानी, सो काहे भरमै प्राणी।
हरि सहजैं ही भल मानैं, तातैं दादू और न जानैं ।। 4 ।।

३०९. परिचय विनती । वर्ण भिन्न ताल

राम जी जनि भरमावो हम को, तातैं करूं विनती तुमको ।। टेक।।
चरण तुम्हारे सब ही देखूं, तप तीरथ व्रत दाना।
गंग जमुन पास पाइन के, तहाँ देहु अस्नाना ।। 1 ।।
संग तुम्हारे सब ही लागे, योग यज्ञ जे कीजे।
साधन सकल येही सब मेरे, संग आपनो दीजैं ।। 2 ।।
पूजा पाती देवी देवल, सब देखूं तुम मांहीं।
मोको ओट आपणी दीजे, चरण कवल की छांहीं ।। 3 ।।
ये अरदास दास की सुनिये, दूर करो भ्रम मेरा।
दादू तुम बिन और न जानै, राखो चरणों नेरा ।। 4 ।।

३१०. उपास्य परिचय । वर्ण भिन्न ताल

सोई देव पूजूं, जे टांची नहिं घड़िया, गर्भवास नहीं औतरिया ।। टेक।।
बिन जल संजम सदा सोइ देवा, भाव भक्ति करूं हरि सेवा ।। 1 ।।
पाती प्राण हरि देव चढ़ाऊँ, सहज समाधि प्रेम ल्यौ लाऊँ।। 2 ।।
इहि विधि सेवा सदा तहँ होई, अलख निरंजन लखै न कोई ।। 3 ।।
ये पूजा मेरे मन मानै, जिहि विधि होइ सु दादू न जानै ।। 4 ।।

३११. परिचय हैरान । खेमटा ताल

राम राइ ! मोको अचरज आवै, तेरा पार न कोई पावै ।। टेक।।
ब्रह्मादिक सनकादिक नारद, नेति नेति जे गावै।

शरण तुम्हारी रहै निशवासर, तिनको तूँ न लखावै ॥ 1 ॥
शंकर शेष सबै सुर मुनिजन, तिनको तूँ न जनावै।
तीन लोक रटैं रसना भर, तिनको तूँ न दिखावै ॥ 2 ॥
दीन लीन राम रंग राते, तिनको तूँ संग लावै।
अपने अंग की युक्ति न जानै, सो मन तेरे भावै ॥ 3 ॥
सेवा संजम करें जप पूजा, शब्द न तिनको सुनावै।
मैं अछोप हीन मति मेरी, दादू को दिखलावै ॥ 4 ॥
इति राग सोरठ सम्पूर्णः ॥ 19 ॥ पद 14 ॥
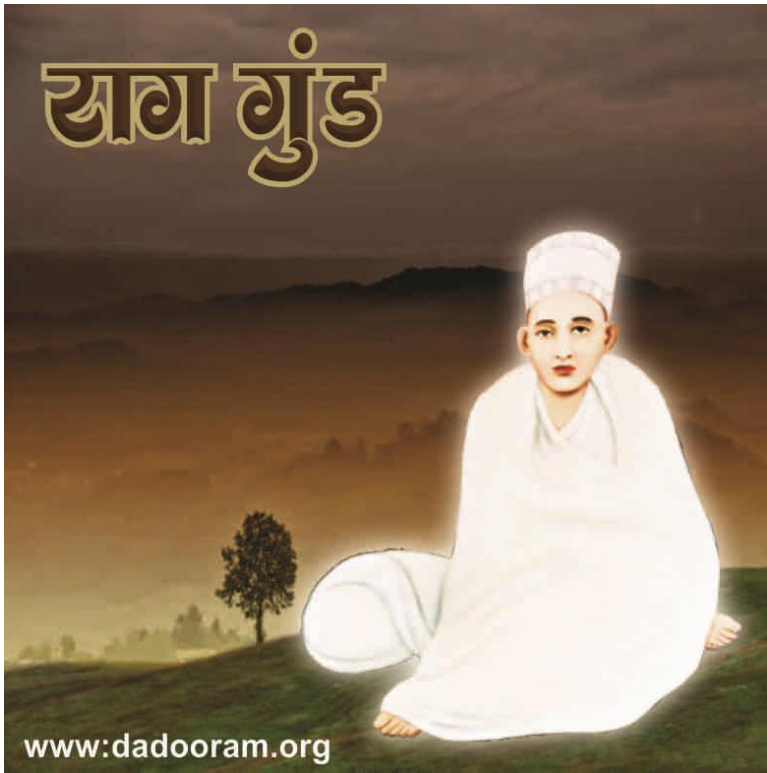
अथ राग गुंड (गौंड) 20

(गायन समय वर्षा ऋतु में सब समय, संगीत प्रकाश के मतानुसार)

३१२. भक्ति निष्काम । सुरफाख्ता ताल

दर्शन दे राम ! दर्शन दे, हौं तो तेरी मुक्ति न माँगूं रे ।। टेक।।

सिद्धि न माँगूं, रिद्धि न माँगूं, तुम्ह ही माँगूं, गोविन्दा ।। 1 ।।

जोग न माँगूं, भोग न माँगूं, तुम्ह ही माँगूं, रामजी ।। 2 ।।

घर नहीं माँगूं, वन नहीं माँगूं, तुम्ह ही माँगूं, देवजी ।। 3 ।।

दादू तुम बिन और न माँगूं, दर्शन माँगूं देहुजी ।। 4 ।।

३१३. विरह विनती । सुरफाख्ता ताल

तूँ आपैं ही विचार, तुझ बिन क्यों रहूँ ?

मेरे और न दूजा कोइ, दुःख किसको कहूँ ।। टेक।।

मीत हमारा सोइ, आदैं जे पीया।
मुझे मिलावै कोइ, वै जीवन जीया ।। 1 ।।
तेरे नैन दिखाइ, जीऊँ जिस आस रे।
सो धन जीवै क्यों, नहीं जिस पास रे ।। 2 ।।
पिंजर मांहैं प्राण, तुझ बिन जाइसी।
जन दादू माँगै मान, कब घर आइसी ।। 3 ।।

३१४. (गुजराती) सुरफाख्ता ताल

हौं जोइ रही रे बाट, तूँ घर आवनें।
तारा दर्शन थी सुख होइ, ते तूँ ल्यावनें ।। टेक।।
चरण जोवा नें खांत, ते तूँ देखाड़नें।
तुझ बिना जीव देइ, दुहेली कामिनी ।। 1 ।।
नैणें निहारूं बाट, ऊभी चावनी।
तूँ अंतर थी ऊरो आव, देही जावनी ।। 2 ।।
तूँ दया करी घर आव, दासी गाँवनी।
जन दादू राम संभाल, बैन सुहाँवनी ।। 3 ।।

३१५. झपताल

पीव देखे बिन क्यों रहूँ, जिय तलफै मेरा।
सब सुख आनन्द पाइये, मुख देखूं तेरा ।। टेक।।
पीव बिन कैसा जीवना, मोहि चैन न आवै।
निर्धन ज्यों धन पाइये, जब दरस दिखावै ।। 1 ।।
तुम बिन क्यों धीरज धरूं, जो लौं तोहि न पाऊँ ।
सन्मुख ह्वै सुख दीजिये, बलिहारी जाऊँ ।। 2 ।।
विरह वियोग न सह सकूँ, कायर घट काचा।
पावन परस न पाइये, सुनि साहिब साँचा ।। 3 ।।

सुनिये मेरी विनती, इब दर्शन दीजे।
दादू देखन पावही, तैसें कुछ कीजे ।। 4 ।।

३१६. प्रीति अखंडित । दादरा

इहि विधि वेध्यो मोर मना, ज्यों लै भृंगी कीट तना ।। टेक।।
चातक रटतैं रैन बिहाई, पिंड परे पै बान न जाई ।। 1 ।।
मरै मीन बिसरै नहि पानी, प्राण तजे उन और न जानी ।। 2 ।।
जलै शरीर न मोड़ै अंगा, ज्योति न छाड़ै पड़ै पतंगा ।। 3 ।।
दादू अब तै ऐसें होहि, पिंड परे, नहीं छाडूं तोहि ।। 4 ।।

३१७. विरह । त्रिताल

आओ राम दया कर मेरे, बार बार बलिहारी तेरे ।। टेक।।
विरहनी आतुर पंथ निहारै, राम नाम कह पीव पुकारै ।। 1 ।।
पंथी बूझै मारग जोवै, नैन नीर जल भर भर रोवै ।। 2 ।।
निशदिन तलफै रहै उदास, आतम राम तुम्हारे पास ।। 3 ।।
वपु विसरे तन की सुधि नांही, दादू विरहनी मृतक मांही ।। 4 ।।

३१८. केवल विनती । रूपक ताल

निरंजन क्यों रहै, मौन गहे वैराग, केते जुग गये ।। टेक।।
जागै जगपति राइ, हँस बोलै नहीं।
परगट घूंघट मांहि, पट खोलै नहीं ।। 1 ।।
सदके करूं संसार, सब जग वारणै।
छाडूं सब परिवार, तेरे कारणै ।। 2 ।।
वारूं पिंड पराण, पावों सिर धरूं।
ज्यों ज्यों भावै राम, सो सेवा करूं।। 3 ।।
दीनानाथ दयाल ! विलंब न कीजिये।

दादू बलि बलि जाय, सेज सुख दीजिये ।। 4 ।।

३१९. निरंजन स्वरूप। त्रिताल

निरंजन यूं रहै, काहू लिप्त न होइ ।
जल थल थावर जंगमा, गुण नहीं लागै कोइ ।। टेक।।
धर अंबर लागै नहिं, नहिं लागै शशिहर सूर।
पाणी पवन लागै नहीं, जहाँ तहाँ भरपूर ।। 1 ।।
निश वासर लागै नहीं, नहिं लागै शीतल घाम।
क्षुधा तृषा लागै नहीं, घट-घट आतम राम ।। 2 ।।
माया मोह लागै नहीं, नहिं लागै काया जीव।
काल कर्म लागै नहीं, प्रगट मेरा पीव ।। 3 ।।
इकलस एकै नूर है, इकलस एकै तेज।
इकलस एकै ज्योति है, दादू खेलै सेज ।। 4 ।।

३२०. विनय । त्रिताल

जग जीवन प्राण आधार, वाचा पालना।
हौं कहाँ पुकारूं जाइ, मेरे लालना ।। टेक।।
मेरे वेदन अंग अपार, सो दुख टालना।
सागर यह निस्तार, गहरा अति घणा ।। 1 ।।
अंतर है सो टाल, कीजै आपणा।
मेरे तुम बिन और न कोइ, इहै विचारणा ।। 2 ।।
तातैं करूं पुकार, यहु तन चालणा।
दादू को दर्शन देहु, जाय दुख सालणा ।। 3 ।।

३२१. मन की नीकी विनती । मल्लिका मोद ताल

मेरे तुम ही राखणहार, दूजा को नहीं।

ये चंचल चहुँ दिशि जाय, काल तहीं तहीं ॥ टेक॥
मैं केते किये उपाय, निश्चल ना रहै।
जहँ बरजूं तहँ जाय, मद मातो बहै ॥ 1 ॥
जहँ जाणा तहँ जाय, तुम्ह तैं ना डरै।
तासौं कहा बसाइ, भावै त्यों करै ॥ 2 ॥
सकल पुकारैं साध, मैं केता कह्या।
गुरु अंकुश मानै नाहिं, निर्भय ह्वै रह्या ॥ 3 ॥
तुम बिन और न कोइ, इस मन को गहै।
तूँ राखै राखणहार, दादू तो रहै ॥ 4 ॥

322. संसार की नीकी विनती । दीपचन्दी ताल

निरंजन, कायर कंपै प्राणिया, देखि यहु दरिया।
वार पार सूझै नहीं, मन मेरा डरिया ॥ टेक॥
अति अथाह यह भौजला, आसंघ नहिं आवै।
देख देख डरपै घणा, प्राणी दुख पावै ॥ 1 ॥
विष जल भरिया सागरा, सब थके सयाना।
तुम बिन कहु कैसे तिरूं, मैं मूढ़ अयाना ॥ 2 ॥
आगै ही डरपै घणा, मेरी का कहिये।
कर गहि काढ़ो केशवा, पार तो लहिये ॥ 3 ॥
एक भरोसा तोर है, जे तुम होहु दयाला।
दादू कहु कैसे तिरै ! तूँ तार गोपाला ॥ 4 ॥

323. समर्थ उपदेश । दादरा ताल

समर्थ मेरा सांइयां, सकल अघ जारै,
सुख दाता मेरे प्राण का, संकोच निवारै ॥ टेक॥
त्रिविध ताप तन की हरै, चौथे जन राखै।

आप समागम सेवका, साधू यूं भाखै ।। 1 ।।
आप करै प्रतिपालना, दारुण दुख टारै।
इच्छा जन की पूरवै, सब कारज सारै ।। 2 ।।
कर्म कोटि भय भंजना, सुख मंडन सोई।
मन मनोरथ पूरणा, ऐसा और न कोई ।। 3 ।।
ऐसा और न देखिहौं, सब पूरण कामा।
दादू साधु संगी किये, उन आतम रामा ।। 4 ।।

३२४. (गुजराती) मन स्थिरार्थ विनती । त्रिताल
तुम बिन राम कवन कलि मांही, विषिया थैं कोइ वारे रे।
मुनियर मोटा मनवैं बाह्या, येन्हा कौन मनोरथ मारे रे ।। टेक।।
छिन एकैं मनवो मर्कट माहरो, घर घरबार नचावे रे।
छिन एकैं मनवो चंचल माहरो, छिन एकैं घरमां आवे रे ।। 1 ।।
छिन एकैं मनवो मीन अम्हारो, सचराचर मां धाये रे।
छिन एकैं मनवो उदमद मातो, स्वादैं लागो खाये रे ।। 2 ।।
छिन एकैं मनवो ज्योति पतंगा, भ्रम भ्रम स्वादैं दाझे रे।
छिन एकैं मनवो लोभैं लागो, आपा पर में बाझे रे ।। 3 ।।
छिन एकैं मनवो कुंजर माहरो, वन वन मांहिं भ्रमाड़े रे।
छिन एकैं मनवो कामी माहरो, विषिया रंग रमाड़े रे ।। 4 ।।
छिन एकैं मनवो मिरग अम्हारो, नादैं मोह्यो जाये रे।
छिन एकैं मनवो माया रातो, छिन एकैं हमनें बाहे रे ।। 5 ।।
छिन एकैं मनवो भँवर अम्हारो, बासैं कंवल बँधाणें रे।
छिन एकैं मनवो चहुँ दिशि जाये, मनवा नें कोई आणें रे ।। 6 ।।
तुम बिन राखै कौन विधाता, मुनिवर साखी आणें रे।
दादू मृतक छिन में जीवे, मनवा चरित न जाणें रे ।। 7 ।।

३२५. बेखर्च व्यसनी। ब्रह्म ताल

करणी पोच, सोच सुख करई, लौह की नाव कैसे भौजल तिरई ।। टेक।।
दक्षिण जात पश्छिम कैसे आवै, नैन बिन भूल बाट कित पावै ।। 1 ।।
विष वन बेलि, अमृत फल चाहै, खाइ हलाहल, अमर उमाहै ।। 2 ।।
अग्नि गृह पैसि कर सुख क्यों सोवै, जलन लागी घणी, सीत क्यों होवै ।। 3 ।।
पाप पाखंड कीये, पुण्य क्यों पाइये, कूप खन पड़िबा, गगन क्यों जाइये ।। 4 ।।
कहै दादू मोहि अचरज भारी, हिरदै कपट क्यों मिलै मुरारी ।। 5 ।।

३२६. परिचय प्राप्ति । खेमटा ताल

मेरा मन के मन सौं मन लागा, शब्द के शब्द सौं नाद बागा ।। टेक।।
श्रवण के श्रवण सुन सुख पाया, नैन के नैन सौं निरख राया ।। 1 ।।
प्राण के प्राण सौं खेल प्राणी, मुख के मुख सौं बोल वाणी ।। 2 ।।
जीव के जीव सौं रंग राता, चित्त के चित्त सौं प्रेम माता ।। 3 ।।
शीश के शीश सौं शीश मेरा, देखि रे दादू वा भाग तेरा ।। 4 ।।

३२७. मन को उपदेश । त्रिताल मल्हार में

मेरे शिखर चढ़ बोल मन मोरा, राम जल वर्षे शब्द सुण तोरा ।। टेक।।
आरत आतुर पीव पुकारै, सोवत जागत पंथ निहारै ।। 1 ।।
निशवासर कह अमृत वाणी, राम नाम ल्यौ लाइ ले प्राणी ।। 2 ।।
टेर मन भाई, जब लग जीवे, प्रीति कर गाढ़ी प्रेम रस पीवे ।। 3 ।।
दादू अवसर जे जन जागे, राम घटा-जल वरषण लागे ।। 4 ।।

३२८. वैराग्य उपदेश त्रिताल

नारी नेह न कीजिये, जे तुझ राम पियारा,
माया मोह न बंधिये, तजिये संसारा ।। टेक।।
विषिया रंग राचै नहीं, नहीं करै पसारा।

देह गेह परिवार में, सब तैं रहै नियारा ।। 1 ।।
आपा पर उरझै नहीं, नाहीं मैं मेरा।
मनसा वाचा कर्मना, सांई सब तेरा ।। 2 ।।
मन इन्द्रिय स्थिर करे, कतहुं नहिं डोले।
जग विकार सब परिहरे, मिथ्या नहिं बोले ।। 3 ।।
रहे निरंतर राम सौं, अंतरगति राता।
गावे गुण गोविन्द का, दादू रस माता ।। 4 ।।

३२९. आज्ञाकारी । झपताल
तूँ राखै त्यों ही रहैं, तेई जन तेरा।
तुम्ह बिन और न जानहीं, सो सेवक नेरा ।। टेक।।
अम्बर आपै ही धर्‍या, अजहूँ उपकारी।
धरती धारी आप तैं, सबही सुखकारी ।। 1 ।।
पवन पास सब के चलै, जैसे तुम कीन्हा।
पानी परकट देखिहूँ, सब सौं रहै भीना ।। 2 ।।
चंद चिराकी चहुँ दिशा, सब शीतल जानै।
सूरज भी सेवा करै, जैसे भल मानै ।। 3 ।।
ये निज सेवक तेरड़े, सब आज्ञाकारी।
मोको ऐसे कीजिये, दादू बलिहारी ।। 4 ।।

३३०. निन्दक । झपताल
निदंक बाबा बीर हमारा, बिनही कौड़े बहै बिचारा ।। टेक।।
कर्म कोटि के कश्मल काटे, काज सँवारै बिन ही साटे ।। 1 ।।
आपण डूबे और को तारे, ऐसा प्रीतम पार उतारे ।। 2 ।।
जुग जुग जीवो निन्दक मोरा, राम देव तुम करो निहोरा ।। 3 ।।
निदंक बपुरा पर उपकारी, दादू निंदा करै हमारी ।। 4 ।।

३३1. विरह विनती । शूलताल

देहुजी, देहुजी, प्रेम पियाला देहुजी, देकर बहुरि न लेहुजी ।। टेक।।

ज्यों-ज्यों नूर न देखूं तेरा, त्यों-त्यों जियरा तलफै मेरा ।। 1 ।।

अमी महारस नाम न आवै, त्यों-त्यों प्राण बहुत दुख पावै ।। 2 ।।

प्रेम भक्ति रस पावै नाँहीं, त्यों-त्यों सालै मन ही मांहीं ।। 3 ।।

सेज सुहाग सदा सुख दीजे, दादू दुखिया विलम्ब न कीजे ।। 4 ।।

३३२. परिचय विनती । त्रिताल

वर्षहु राम अमृतधारा, झिलमिल झिलमिल सींचनहारा ।। टेक।।

प्राण बेलि निज नीर न पावै, जलहर बिना कमल कुम्हलावै ।। 1 ।।

सूखे बेली सकल बनराय, राम देव जल वर्षहु आय ।। 2 ।।

आतम बेली मरै पियास, नीर न पावै दादूदास ।। 3 ।।

इति राग गुंड सम्पूर्णः ।। 20 ।। पद 20 ।।
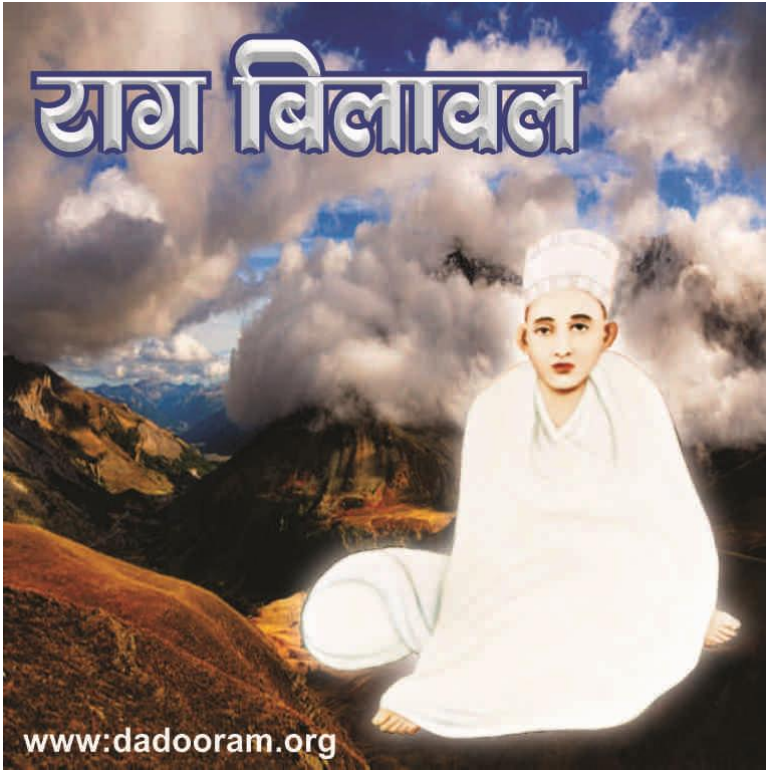
अथ राग विलावल 21

(गायन समय प्रातः ६ से ९)

३३३. परिचय विनती । त्रिताल

दया तुम्हारी दर्शन पइये ।

जानत हो तुम अंतरजामी, जानराय तुम सौं कहा कहिये ।। टेक।।

तुम सौं कहा चतुराई कीजै, कौण कर्म कर तुम पाये।

को नहीं मिले प्राण बल अपने, दया तुम्हारी तुम आये ।। 1 ।।

कहा हमारो आन तुम आगे, कौन कला कर वश किये।

जीते कौन बुद्धि बल पौरुष, रुचि अपनी तैं सरण लिये ।। 2 ।।

तुम ही आदि अंत पुनि तुम ही, तुम कर्ता त्रय लोक मंझार।

कुछ नांही तैं कहा होत है, दादू बलि पावे दीदार ।। 3 ।।

३३४. (फारसी) विनती । उदीक्षण ताल

मालिक महरबान करीम ।
गुनहगार हररोज हरदम, पनह राख रहीम ।। टेक।।
अव्वल आखिर बंदा गुनही, अमल बद विसियार।
गरक दुनिया सत्तार साहिब, दरदवंद पुकार ।। 1 ।।
फरामोश नेकी बदी करद, बुराई बद फैल।
बखशिन्दः तूँ अजीब आखिर, हुक्म हाजिर सैल ।। 2 ।।
नाम नेक रहीम राजिक, पाक परवरदिगार।
गुनह फिल कर देहु दादू, तलब दर दीदार ।। 3 ।।

३३५. उदीक्षण ताल

कौण आदमी कमीण विचारा, किसको पूजे गरीब पियारा ।। टेक।।
मैं जन एक, अनेक पसारा, भौजल भरिया अधिक अपारा ।। 1 ।।
एक होइ तो कहि समझाऊँ, अनेक अरूझे क्यों सुरझाऊँ ।। 2 ।।
मैं हौं निबल, सबल ये सारे, क्यों कर पूजूं बहुत पसारे ।। 3 ।।
पीव पुकारूं समझत नाहीं, दादू देखु दशों दिशि जाहीं ।। 4 ।।

३३६. उपदेश चेतावनी । भंगताल

जागहु जियरा काहे सोवे, सेव करीमा तो सुख होवै ।। टेक।।
जातैं जीवन सो तैं विसारा, पच्छिम जाना पथ न संवारा।
मैं मेरी कर बहुत भुलाना, अजहुँ न चेतै दूर पयाना ।। 1 ।।
सांई केरी सेवा नाँहीं, फिर फिर डूबै दरिया मांहीं।
ओर न आवा, पार न पावा, झूठा जीवन बहुत भुलावा ।। 2 ।।
मूल न राख्या लाह न लीया, कौड़ी बदले हीरा दीया।
फिर पछताना संबल नाहीं, हार चल्या क्यों पावै सांई ।। 3 ।।
इब सुख कारण फिर दुख पावै, अजहुँ न चेतै क्यों डहकावै।

दादू कहै सीख सुन मेरी, कहु करीम संभाल सवेरी ।। 4 ।।

३३७. भंगताल

बार बार तन नहीं वावरे, काहे को बाद गँवावे रे ।
बिनसत बार कछू नहिं लागै, बहुरि कहाँ को पावे रे ।। टेक ।।
तेरे भाग बड़े भाव धर कीन्हाँ, क्यों कर चित्र बनावै रे ।
सो तूँ लेइ विषय में डारे, कंचन छार मिलावै रे ।। 1 ।।
तूँ मत जानै बहुरि पाइये, अब कै जनि डहिकावै रे ।
तीनि लोक की पूँजी तेरे, बनिज बेगि सो आवै रे ।। 2 ।।
जब लग घट मैं श्वास वास है, तब लग काहे न ध्यावै रे ।
दादू तन धर नाम न लीन्हा, सो प्राणी पछतावै रे ।। 3 ।।

३३८. ललित ताल

राम विसार्‍यो रे जगनाथ ।
हीरा हार्‍यो देखत ही रे, कौड़ी कीन्ही हाथ ।। टेक ।।
काचहुता कंचन कर जानै, भूल्यो रे भ्रम पास ।
साचे सौं पल परिचय नाहीं, कर काचे की आस ।। 1 ।।
विष ताको अमृत कर जानै, सो संग न आवै साथ ।
सेमल के फूलन पर फूल्यो, चूक्यो अब की घात ।। 2 ।।
हरि भज रे मन सहज पिछानै, ये सुन साची बात ।
दादू रे अब तैं कर लीजै, आयु घटै दिन जात ।। 3 ।।

३३९. मन । ललित ताल

मन चंचल मेरो कह्यो न मानै, दसों दिशा दौरावै रे ।
आवत जात बार नहि लागै, बहुत भाँति बौरावै रे ।। टेक ।।
बेर बेर बरजत या मन को, किंचित सीख न मानै रे ।

ऐसे निकस जाइ या तन तैं, जैसे जीव न जानै रे ।। 1 ।।
कोटिक जतन करत या मन को, निश्चल निमष न होई रे।
चंचल चपल चहुँ दिशि भरमै, कहा करै जन कोई रे ।। 2 ।।
सदा सोच रहत घट भीतर, मन थिर कैसे कीजे रे।
सहजैं सहज साधु की संगति, दादू हरि भजि लीजे रे ।। 3 ।।

३४०. माया । उत्सव ताल

इन कामिनी घर घाले रे ।
प्रीति लगाइ प्राण सब सोषै, बिन पावक जिय जाले रे ।। टेक।।
अंग लगाइ सार सब लेवै, इनतैं कोई न बाचै रे।
यहु संसार जीत सब लीया, मिलन न देई साचै रे ।। 1 ।।
हेत लगाइ सबै धन लेवै, बाकी कछु न राखै रे।
माखन मांहि सोध सब लेवै, छाछ छिया कर नाखै रे ।। 2 ।।
जे जन जानि जुगति सौं त्यागैं, तिन को निज पद परसै रे।
काल न खाइ, मरै नहिं कबहूँ, दादू तिनको दरशै रे ।। 3 ।।

३४१. विश्वास । उत्सव ताल

जनि सत छाड़ै बावरे, पूरक है पूरा।
सिरजे की सब चिन्त है, देबे को सूरा ।। टेक।।
गर्भवास जिन राखिया, पावक तैं न्यारा।
युक्ति यत्न कर सींचिया, दे प्राण अधारा ।। 1 ।।
कुंज कहाँ धर संचरै, तहाँ को रखवारा।
हिमहर तैं जिन राखिया, सो खसम हमारा ।। 2 ।।
जल थल जीव जिते रहैं, सो सब को पूरै।
संपट सिला में देत है, काहे नर झूरै ।। 3 ।।
जिन यहु भार उठाइया, निर्वाहै सोई।

दादू छिन न बिसारिये, तातैं जीवन होई ।। 4 ।।

३४२. गजताल

सोई राम सँभाल जियरा, प्राण पिंड जिन दीन्हा रे।
अम्बर आप उपावनहारा, मांहि चित्र जिन कीन्हा रे ।। टेक।।
चंद सूर जिन किये चिराका, चरणों बिना चलावै रे।
इक शीतल इक तारा डोलै, अनन्त कला दिखलावै रे ।। 1 ।।
धरती धरनि वरन बहु वाणी, रचिले सप्त समंदा रे।
जल थल जीव सँभालनहारा, पूर रह्या सब संगा रे ।। 2 ।।
प्रकट पवन पानी जिन कीन्हा, वरषावै बहु धारा रे।
अठारह भार वृक्ष बहु विधि के, सबका सींचनहारा रे ।। 3 ।।
पँच तत्त्व जिन किये पसारा, सब करि देखन लागा रे।
निश्चल राम जपो मेरे जियरा, दादू तातैं जागा रे ।। 4 ।।

३४३. परिचय। गज ताल

जब मैं रहते की रह जानी ।
क ाल काया के निकट न आवै, पावत है सुख प्राणी ।। टेक।।
शोक संताप नैन नहिं देखूं, राग द्वेष नहिं आवै।
जागत है जासौं रुचि मेरी, स्वप्नै सोइ दिखावै ।। 1 ।।
भरम कर्म मोह नहिं ममता, वाद विवाद न जानूं।
मोहन सौं मेरी बन आई, रसना सोई बखानूं ।। 2 ।।
निशिवासर मोहन तन मेरे, चरण कँवल मन जानै।
निधि निरख देख सचु पाऊँ, दादू और न जानै ।। 3 ।।

३४४. राज मृगांक ताल

जब मैं साँचे की सुधि पाई ।

तब तैं अंग और नहीं आवै, देखत हूँ सुखदाई ॥ टेक॥
ता दिन तैं तन ताप न व्यापै, सुख दुख संग न जाऊँ ।
पावन पीव परस पद लीन्हा, आनंद भर गुन गाऊँ॥ 1 ॥
सब सौं संग नहीं पुनि मेरे, अरस परस कुछ नाँहीं।
एक अनंत सोई संग मेरे, निरखत हूँ निज मांहीं ॥ 2 ॥
तन मन मांहिं शोध सो लीन्हा, निरखत हूँ निज सारा।
सोई संग सबै सुखदाई, दादू भाग्य हमारा ॥ 3 ॥

३४५. साच निदान । राज मृगांक ताल

हरि बिन निहचल कहीं न देखूं, तीन लोक फिरि सोधा रे।
जे दीसै सो विनश जायगा, ऐसा गुरु परमोधा रे ॥ टेक॥
धरती गगन पवन अरु पानी, चंद सूर थिर नाँहीं रे।
रैनि दिवस रहत नहिं दीसै, एक रहै कलि मांहीं रे ॥ 1 ॥
पीर पैगम्बर शेख मुशायख, शिव विरंचि सब देवा रे।
कलि आया सो कोई न रहसी, रहसी अलख अभेवा रे ॥ 2 ॥
सवा लाख मेरु गिरि पर्वत, समंद न रहसी थीरा रे।
नदी निवान कछू नहिं दीसै, रहसी अकल शरीरा रे ॥ 3 ॥
अविनाशी वह एक रहेगा, जिन यहु सब कुछ कीन्हा रे।
दादू जाता सब जग देखूं, एक रहत सो चीन्हा रे ॥ 4 ॥

३४६. पतिव्रत । राज विद्याधर ताल

मूल सींच बधै ज्यों बेला, सो तत तरुवर रहै अकेला ॥ टेक॥
देवी देखत फिरै ज्यों भूलै, खाइ हलाहल विष को फूलै।
सुख को चाहे पड़ै गल फाँसी, देखत हीरा हाथ तैं जासी ॥ 1 ॥
केई पूजा रच ध्यान लगावैं, देवल देखैं खबर न पावैं।
तोरैं पाती जुगति न जानी, इहि भ्रम भूल रहै अभिमानी ॥ 2 ॥

तीर्थ व्रत न पूजै आसा, वन खंड जाहिं रहैं उदासा।
यूं तप कर-कर देह जलावैं, भरमत डोलैं जन्म गवावैं ।। 3 ।।
सतगुरु मिलै न संशय जाई, ये बँधन सब देइ छुड़ाई।
तब दादू परम गति पावै, सो निज मूरति मांहि लखावै ।। 4 ।।

३४७. साधु परीक्षा । दादरा
सोई साधु शिरोमणि, गोविंद गुण गावै।
राम भजै विषिया तजै, आपा न जनावै ।। टेक।।
मिथ्या मुख बोलै नहीं, पर निंदा नाँहीं।
औगुण छाड़ै गुण गहै, मन हरि पद मांहीं ।। 1 ।।
निर्वैरी सब आतमा, पर आतम जानै।
सुखदाई समता गहै, आपा नहीं आनै ।। 2 ।।
आपा पर अंतर नहीं, निर्मल निज सारा।
सतवादी साचा कहै, लै लीन विचारा ।। 3 ।।
निर्भय भज न्यारा रहै, काहू लिप्त न होई।
दादू सब संसार में, ऐसा जन कोई ।। 4 ।।

३४८. परिचय परीक्षा । पतिताल
राम मिल्या यूँ जानिये, जाको काल न व्यापै।
जरा मरण ताको नहीं, अरु मेटै आपै ।। टेक ।।
सुख दुख कबहुँ न ऊपजै, अरु सब जग सूझै।
क रम को बाँधै नहीं, सब आगम बूझै ।। 1 ।।
जागत है सो जन रहै, अरु जुग जुग जागै।
अंतरजामी सौं रहै, कछु काई न लागै ।। 2 ।।
काम दहै सहजैं रहै, अरु शून्य विचारै।
दादू सो सब की लहै, अरु कबहुं न हारै ।। 3 ।।

३४९. समता ज्ञान । त्रिताल

इन बातनि मेरा मन मानै ।

दुतिया दोइ नहीं उर अंतर, एक एक कर पीव कौं जानै ।। टेक।।

पूर्ण ब्रह्म देखै सबहिन में, भ्रम न जीव काहू तैं आनै।

होइ दयालु दीनता सब सौं, अरि पाँचनि को करै किसानै ।। 1 ।।

आपा पर सम सब तत चीन्हैं, हरि भजै केवल जस गानै।

दादू सोई सहज घर आनै, संकट सबै जीव के भानै ।। 2 ।।

३५०. परिचय । एक ताल

ये मन मेरा पीव सौं, औरनि सौं नाँहीं।

पीव बिन पलहि न जीव सौं, यह उपजै मांहीं ।। टेक।।

देख देख सुख जीव सौं, तहँ धूप न छाहीं।

अजरावर मन बंधिया, तातैं अनत न जाहीं ।। 1 ।।

तेज पुंज फल पाइया, तहाँ रस खाहीं।

अमर बेलि अमृत झरै, पीव पीव अघाहीं ।। 2 ।।

प्राणपति तहँ पाइया, जहँ उलट समाई।

दादू पीव परचा भया, हियरे हित लाई ।। 3 ।।

३५१. त्रिताल

आज प्रभात मिले हरि लाल ।

दिल की व्यथा पीड़ सब भागी, मिट्यो जीव को साल ।। टेक।।

देखत नैन संतोष भयो है, इहै तुम्हारो ख्याल ।। 1 ।।

दादू जन सौं हिल-मिल रहिबो, तुम हो दीन दयाल ।। 2 ।।

३५२. (सिंधी) निज स्थान निर्णय । उपदेश एकताल

अर्श इलाही रब्बदा, इथांई रहमान वे।

मक्का बीचि मुसाफरीला, मदीना मुलतान वे ।। टेक।।
नबी नाल पैगम्बरे, पीरों हंदा थान वे।
जन तहुँ ले हिकसा ला, इथां बहिश्त मुकाम वे ।। 1 ।।
इथां आब जमजमा, इथांई सुबहान वे।
तख्त रबानी कंगुरेला, इथांई सुलतान वे ।। 2 ।।
सब इथां अंदर आव वे, इथांई ईमान वे।
दादू आप वंजाइ बेला, इथांई आसान वे ।। 3 ।।

३५३. (पंजाबी) क्रीड़ा ताल खंडनि
आसण रमदा रामदा, हरि इथां अविगत आप वे।
काया काशी वंजणां, हरि इथैं पूजा जाप वे ।। टेक।।
महादेव मुनि देवते, सिद्धैंदा विश्राम वे।
स्वर्ग सुखासण हुलणैं, हरि इथैं आत्मराम वे ।। 1 ।।
अमी सरोवर आतमा, इथांई आधार वे।
अमर थान अविगत रहै, हरि इथैं सिरजनहार वे ।। 2 ।।
सब कुछ इथैं आव वे, इथां परमानन्द वे।
दादू आपा दूर कर, इथांई आनंद वे ।। 3 ।।
इति राग विलावल सम्पूणः ।। 21 ।। पद 20 ।।
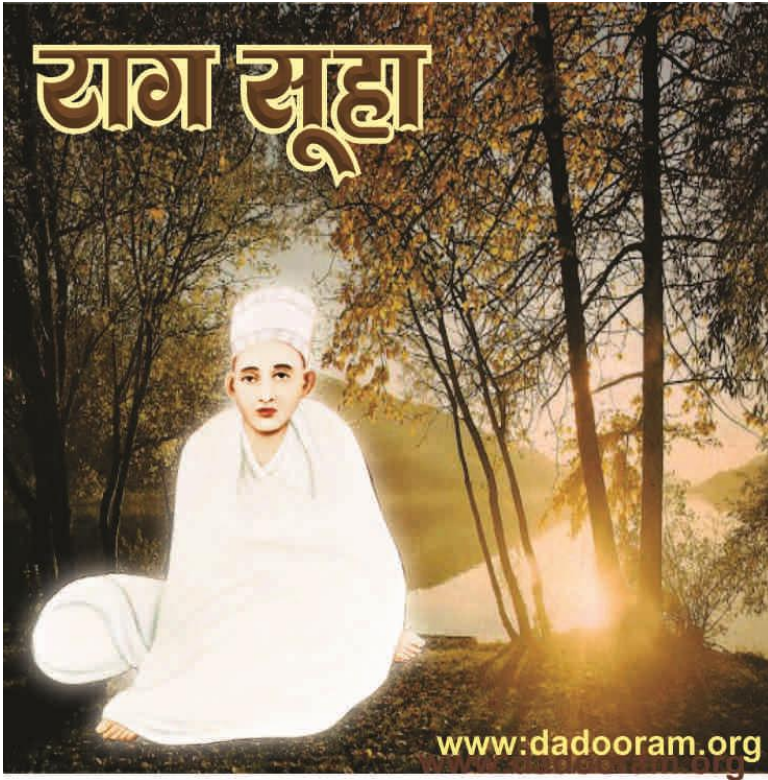
अथ राग सूहा 22

(गायन समय दिन 9 से 12)354. विनती । एक ताल

तुम बिच अंतर जनि परै, माधव ! भावै तन धन लेहु।

भावै स्वर्ग नरक रसातल, भावै करवत देहु ।। टेक।।

भावै विपति देहु दुख संकट, भावै संपति सुख शरीर।

भावै घर वन राव रंक कर, भावै सागर तीर, माधव ।। 1 ।।

भावै बँध मुक्त कर, माधव ! भावै त्रिभुवन सार।

भावै सकल दोष धर माधव, भावै सकल निवार,माधव ।। 2 ।।

भावै धरणि गगन धर, माधव ! भावै शीतल सूर।

दादू निकटि सदा संग, माधव ! तूँ जनि होवै दूर, माधव ।। 3 ।।

३५५. परिचय । पंजाबी त्रिताल

अब हम राम सनेही पाया, अगम अनहद सौं चित लाया ।। टेक।।
तन मन आतम ताकों दीन्हा, तब हरि हम अपना कर लीन्हा।
वाणी विमल पँच परानां, पहिली शीश मिले भगवानां ।। 1 ।।
जीवत जन्म सुफल कर लीन्हा, पहली चेते तिन भल कीन्हा।
अवसर आपा ठौर लगावा, दादू जीवित ले पहुँचावा ।। 2 ।।
इति राग सूहा सम्पूर्णः ।। 22 ।। पद 2 ।।
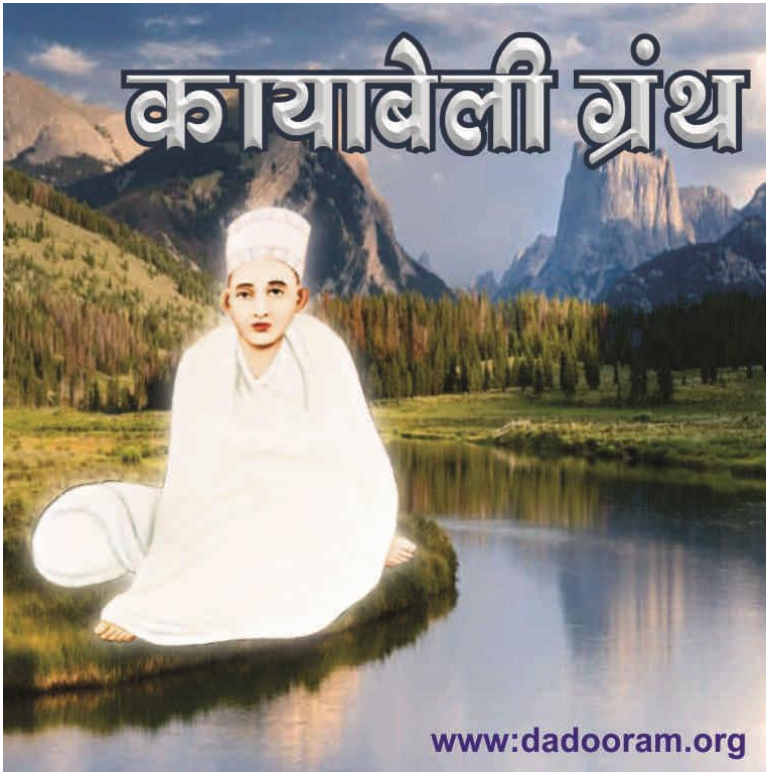
अथ काया बेली ग्रन्थ 23

३५८. पिंड ब्रह्माण्ड शोधन । पंजाबी त्रिताल

साचा सतगुरु राम मिलावे, सब कुछ काया मांहि दिखावे ।। टेक।।

काया माँही सिरजनहार, काया माँही ओंकार।

काया माँही है आकाश, काया माँही धरती पास ।। 1 ।।

काया माँही पवन प्रकाश, काया माँही नीर निवास।

काया माँही शशिहर सूर, काया माँही बाजे तूर ।। 2 ।।

काया माँही तीनों देव, काया माँही अलख अभेव।

काया माँही चारों वेद, काया माँही पाया भेद ।। 3 ।।

काया माँही चारों खानी, काया माँही चारों वाणी।

काया माँही उपजै आइ, काया माँही मर मर जाइ ।। 4 ।।

काया माँही जामै मरै, काया माँही चौरासी फिरै।

काया माँही ले अवतार, काया माँही बारम्बार ।। 5 ।।

काया माँही रात दिन, उदय अस्त इकतार।
दादू पाया परम गुरु, कीया एकंकार ।। 6 ।।

३५७. त्रिताल
काया माँही खेल पसारा, काया माँही प्राण अधारा।
काया माँही अठारह भारा, काया माँही उपावनहारा ।। 1 ।।
काया माँही सब वन राइ, काया माँही रहे घर छाइ।
काया माँही कंदलि वास, काया माँही है कैलास ।। 2 ।।
काया माँही तरुवर छाया, काया माँही पंखी माया।
काया माँही आदि अनंत, काया माँही है भगवन्त ।। 3 ।।
काया माँही त्रिभुवन राइ, काया माँही रहे समाइ।
काया माँही चौदह भुवन, काया माँही आवागवन ।। 4 ।।
काया माँही सब ब्रह्मंड, काया माँही हैं नव खण्ड।
काया माँही स्वर्ग पयाल, काया माँही आप दयाल ।। 5 ।।
काया माँही लोक सब, दादू दिये दिखाइ।
मनसा वाचा कर्मणा, गुरु बिन लख्या न जाइ ।। 6 ।।

३५८.रंगताल
काया माँही सागर सात, काया माँही अविगत नाथ।
काया माँही नदिया नीर, काया माँही गहर गंभीर ।। 1 ।।
काया माँही सरवर पाणी, काया माँही बसै बिनाणी।
काया माँही नीर निवान, काया माँही हंस सुजान ।। 2 ।।
काया माँही गंग तरंग, काया माँही जमुना संग।
काया माँही है सरस्वती, काया माँही द्वारावती ।। 3 ।।
काया माँही काशी स्थान, काया माँही करै स्नान।
काया माँही पूजा पाती, काया माँही तीर्थ जाती ।। 4 ।।

काया माँही मुनिवर मेला, काया माँही आप अकेला।
काया माँही जपिये जाप, काया माँही आपै आप ।। 5 ।।
काया नगर निधान है, माँही कौतिक होइ।
दादू सद्गुरु संग ले, भूल पड़े जनि कोइ ।। 6 ।।

३५९. रंगताल

काया माँही विषमी बाट, काया माँही औघट घाट।
काया माँही पट्टण गाँव, काया माँही उत्तम ठाँव ।। 1 ।।
काया माँही मण्डप छाजै, काया माँही आप विराजै।
काया माँही महल आवास, काया माँही निश्चल बास ।। 2 ।।
काया माँही राजद्वार, काया माँही बोलणहार।
काया माँही भरे भण्डार, काया माँही वस्तु अपार ।। 3 ।।
काया माँही नौ निधि होइ, काया माँही अठ सिधि सोइ।
काया माँही हीरा साल, काया माँही निपजैं लाल ।। 4 ।।
काया माँही माणिक भरे, काया माँही ले ले धरे।
काया माँही रत्न अमोल, काया माँही मोल न तोल ।। 5 ।।
काया माँही कर्तार है, सो निधि जानै नाँहि।
दादू गुरुमुख पाइये, सब कुछ काया मांहि ।। 6 ।।

३६०. वर्णभिन्न ताल

काया माँही सब कुछ जाण, काया मांहै लेहु पिछाण।
काया माँही बहु विस्तार, काया माँही अनन्त अपार ।। 1 ।।
काया माँही अगम अगाध, काया माँही निपजे साध।
काया माँही कह्या न जाइ, काया माँही रहे ल्यौ लाइ ।। 2 ।।
काया माँही साधन सार, काया माँही करे विचार।
काया माँही अमृत वाणी, काया माँही सारंग प्राणी ।। 3 ।।

काया माँही खेलै प्राण, काया माँही पद निर्वाण।
काया माँही मूल गह रहै, काया मांही सब कुछ लहै ।। 4 ।।
काया माँही निज निरधार, काया माँही अपरम्पार।
काया माँही सेवा करै, काया माँही नीझर झरै ।। 5 ।।
काया माँही वास कर, रहै निरंतर छाइ।
दादू पाया आदि घर, सद्‌गुरु दिया दिखाइ ।। 6 ।।

३६१. वर्ण भिन्न ताल

काया माँही अनुभै सार, काया माँही करै विचार।
काया माँही उपजै ज्ञान, काया माँही लागै ध्यान ।। 1 ।।
काया माँही अमर स्थान, काया माँही आतमराम।
काया माँही कला अनेक, काया माँही कर्ता एक।। 2 ।।
काया माँही लागै रंग, काया माँही सांई संग।
काया माँही सरवर तीर, काया माँही कोकिल कीर ।। 3 ।।
काया माँही कच्छप नैन, काया माँही कूँजी बैन।
काया माँही कमल प्रकाश, काया माँही मधुकर वास ।। 4 ।।
काया माँही नाद कुरंग, काया माँही ज्योति पतंग।
काया माँही चातक मोर, काया माँही चंद चकोर ।। 5 ।।
काया माँही प्रीति कर, काया माँही सनेह।
काया माँही प्रेम रस, दादू गुरुमुख येह ।। 6 ।।

३६२. राज विद्याधर ताल

काया माँही तारणहार, काया माँही उतरे पार।
काया माँही दुस्तर तारे, काया माँही आप उबारे ।। 1 ।।
काया माँही दुस्तर तिरे, काया माँही होइ उद्धरे।
काया माँही निपजै आइ, काया माँही रहै समाइ ।। 2 ।।

काया माँही खुले कपाट, काया माँही निरंजन हाट।
काया माँही है दीदार, काया माँही देखणहार ॥ 3 ॥
काया माँही राम रंग राते, काया माँही प्रेम रस माते।
काया माँही अविचल भये, काया माँही निहचल रहे ॥ 4 ॥
काया माँही जीवै जीव, काया माँही पाया पीव।
काया माँही सदा आनंद, काया माँही परमानन्द ॥ 5 ॥
काया माँही कुशल है, सो हम देख्या आइ।
दादू गुरुमुख पाइये, साधु कहैं समझाइ ॥ 6 ॥

३६३. राज विद्याधर ताल
काया माँही देख्या नूर, काया माँही रह्या भरपूर।
काया माँही पाया तेज, काया माँही सुन्दर सेज ॥ 1 ॥
काया माँही पुंज प्रकाश, काया माँही सदा उजास।
काया माँही झिलमिल सारा, काया माँही सब तैं न्यारा ॥ 2 ॥
काया माँही ज्योति अनन्त, काया माँही सदा बसन्त।
काया माँही खेलें फाग, काया माँही सब वन बाग ॥ 3 ॥
काया माँही खेलें रास, काया माँही विविध विलास।
काया माँही बाजैं बाजे, काया माँही नाद धुनि साजे ॥ 4 ॥
काया माँही सेज सुहाग, काया माँही मोटे भाग।
काया माँही मंगलाचार, काया माँही जै जैकार ॥ 5 ॥
काया अगम अगाध है, माँही तूर बजाइ।
दादू प्रकट पीव मिल्या, गुरुमुख रहे समाइ ॥ 6 ॥
इति कायाबेली ग्रन्थ सम्पूर्ण: ॥ 23 ॥ पद 10 ॥

अथ राग बसंत 24

(गायन समय प्रभात ३ से ६ तथा बसंत ऋतु)

३६४. भजन भेद । मल्लिका मोद ताल

निर्मल ना मन लीयो जाइ, जाके भाग बड़े सोई फल खाइ ।। टेक।।

मन माया मोह मद माते, कर्म कठिन ता मांहि परे।

विषय विकार मान मन मांही, सकल मनोरथ स्वाद खरे ।। 1 ।।

काम क्रोध ये काल कल्पना, मैं मैं मेरी अति अहंकार।

तृष्णा तृप्ति न मानै कबहूँ, सदा कुसंगी पँच विकार ।। 2 ।।

अनेक जोध रहैं रखवाले, दुर्लभ दूर फल अगम अपार।

जाके भाग बड़े सोई फल पावै, दादू दाता सिरजनहार ।। 3 ।।

३६५. (गुजराती) विरह । धीमी ताल

तूँ घर आवने माहरे रे, हूँ जाऊँ वारणे ताहरे रे ।। टेक।।
रैन दिवस मूनै निरखतां जाये।
वेलो थई घर आवे रे, वाहला आकुल थाये ।। 1 ।।
तिल तिल हौं तो तारी वाटड़ी जोऊँ ।
एने रे आँसूड़े वाहला, मुखड़ो धोऊँ।। 2 ।।
ताहरी दया करि घर आवे रे वाहला।
दादू तो ताहरो छे रे, मा कर टाला ।। 3 ।।

३६६. करूणा विनती । तेवरा ताल
मोहन दुख दीरघ तूँ निवार, मोहि सतावै बारम्बार ।। टेक।।
काम कठिन घट रहै मांहि, तातैं ज्ञान ध्यान दोउ उदै नांहि।
गति मति मोहन विकल मोर, तातैं चित्त न आवै नाम तोर ।। 1 ।।
पाँचों द्वन्दर देह पूरि, तातैं सहज शील सत रहैं दूरि।
सुधि बुधि मेरी गई भाज, तातैं तुम विसरे महाराज ।। 2 ।।
क्रोध न कबहूँ तजै संग, तातैं भाव भजन का होइ भंग।
समझि न काई मन मंझारि, तातैं चरण विमुख भये श्री मुरारि ।। 3 ।।
अन्तरजामी कर सहाइ, तेरो दीन दुखित भयो जन्म जाइ।
त्राहि त्राहि प्रभु तूँ दयाल, कहै दादू हरि कर संभाल ।। 4 ।।

३६७. मन स्थिरार्थ विनती । एक ताल
मेरे मोहन मूरति राखि मोहि, निसवासर गुण रमूं तोहि ।। टेक।।
मन मीन होइ ज्यों स्वाद खाइ, लालच लागो जल तैं जाइ।
मन हस्ती मातो अपार, काम अंध गज लहै न सार ।। 1 ।।
मन पतंग पावक परै, अग्नि न देखै ज्यों जरै।
मन मृगा ज्यों सुनै नाद, प्राण तजै यूं जाइ बाद ।। 2 ।।
मन मधुकर जैसे लुब्धि वास, कँवल बँधावै होइ नास।

मनसा वाचा शरण तोर, दादू को राखो गोविन्द मोर ।। 3 ।।

३६८. उपदेश । एक ताल

बहुरि न कीजे कपट कांम, हिरदै जपिये राम नांम ।। टेक।।
हरि पाखैं नहिं कहूँ ठांम, पीव बिन खड़भड़ गांम गांम।
तुम राखो जियरा अपनी मांम, अनत जनि जाय रहो विश्रांम ।। 1 ।।
कपट कांम नहीं कीजे हाँम, रहु चरण कमल कहु राम नांम।
जब अंतरयामी रहै जांम, तब अक्षय पद जन दादू प्रांम ।। 2 ।।

३६९. परिचय प्राप्ति। कड्डुक ताल

तहँ खेलूं पीव सूं नित ही फाग, देख सखी री मेरे भाग ।। टेक।।
तहँ दिन दिन अति आनन्द होइ, प्रेम पिलावै आप सोइ।
संगियन सेती रमूं रास, तहँ पूजा अर्चा चरण पास ।। 1 ।।
तहँ वचन अमोलक सब ही सार, तहँ बरतै लीला अति अपार।
उमंग देइ तब मेरे भाग, तिहि तरुवर फल अमर लाग ।। 2 ।।
अलख देव कोइ जाणैं भेव, तहँ अलख देव की कीजै सेव।
दादू बलि बलि बारंबार, तहँ आप निरंजन निराधार ।। 3 ।।

३७०. परिचय सुख वर्णन। षड्ताल

मोहन माली सहज समाना, कोई जाणैं साध सुजाना ।। टेक।।
काया बाड़ी मांही माली, तहाँ रास बनाया।
सेवग सौं स्वामी खेलन को, आप दया कर आया ।। 1 ।।
बाहर भीतर सर्व निरंतर, सब में रह्या समाई।
परगट गुप्त, गुप्त पुनि परगट, अविगत लख्या न जाई ।। 2 ।।
ता माली की अकथ कहानी, कहत कही नहिं आवै।
अगम अगोचर करत अनन्दा, दादू ये जस गावै ।। 3 ।।

३७१. परिचय । षड्ताल

मन मोहन मेरे मन ही मांहिं, कीजै सेवा अति तहाँ ।। टेक।।
तहँ पायो देव निरंजना, परगट भयो हरि यह तना।
नैनन ही देखूं अघाइ, प्रगट्यो है हरि मेरे भाइ ।। 1 ।।
मोहि कर नैनन की सैन देइ, प्राण मूंसि हरि मोर लेइ।
तब उपजै मोकौं इहै बानि, निज निरखत हूँ सारंगपानि ।। 2 ।।
अंकुर आदैं प्रगट्यो सोइ, बैन बाण तातैं लागे मोहि।
शरणै दादू रह्यो जाइ, हरि चरण दिखावै आप आइ ।। 3 ।।

३७२. थकित निश्चल। मदन ताल

मतवाले पँचूं प्रेम पूर, निमष न इत उत जाहिं दूर ।। टेक।।
हरि रस माते दया दीन, राम रमत ह्वै रहे लीन।
उलट अपूठे भये थीर, अमृत धारा पीवहिं नीर ।। 1 ।।
सहज समाधि तज विकार, अविनाशी रस पीवहिं सार।
थकित भये मिल महल मांहिं, मनसा वाचा आन नांहिं ।। 2 ।।
मन मतवाला राम रंग, मिल आसण बैठे एक संग।
सुस्थिर दादू एकै अंग, प्राणनाथ तहँ परमानन्द ।। 3 ।।
इति राग बसंत सम्पूर्णः ।। 24 ।। पद 9 ।।
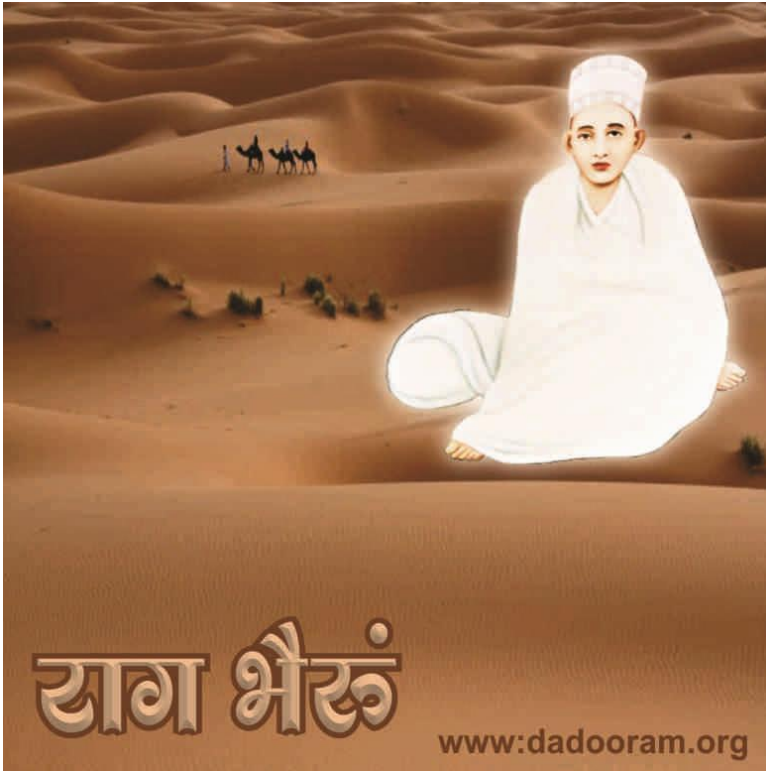
अथ राग भैरूं 25

(गायन समय प्रातः काल)

३७३. सतगुरु तथा नाम महिमा । त्रिताल

सतगुरु चरणां मस्तक धरणां, राम नाम कहि दुस्तर तिरणां ।। टेक ।।

अठ सिधि नव निधि सहजैं पावै, अमर अभै पद सुख में आवै ।। 1 ।।

भक्ति मुक्ति बैकुंठा जाइ, अमर लोक फल लेवै आइ ।। 2 ।।

परम पदारथ मंगल चार, साहिब के सब भरे भंडार ।। 3 ।।

नूर तेज है ज्योति अपार, दादू राता सिरजनहार ।। 4 ।।

३७४. उत्तम ज्ञान स्मरण । चौताल

तन ही राम मन ही राम, राम हृदय रमि राखि ले ।

मनसा राम सकल परिपूरण, सहज सदा रस चाखि ले ।। टेक ।।

नैनां राम बैनां राम, रसनां राम सँभारि ले।
श्रवणां राम सन्मुख राम, रमता राम विचारि ले ।। 1 ।।
श्वासैं राम सुरतैं राम, शब्दैं राम समाइ ले।
अंतर राम निरंतर राम, आत्मराम ध्याइ ले ।। 2 ।।
सर्वैं राम संगैं राम, राम नाम ल्यौ लाइ ले।
बाहर राम भीतर राम, दादू गोविन्द गाइ ले ।। 3 ।।

375. उत्तम स्मरण। मदन ताल

ऐसी सुरति राम ल्यौ लाइ, हरि हृदय जनि बिसरि जाइ ।। टेक।।
छिन छिन मात संभारै पूत, बिंद राखै जोगी अवधूत।
त्रिया कुरूप रूप कों रटै, नटणी निरख बांस बरत चढ़ै ।। 1 ।।
कच्छप दृष्टि धरै धियांन, चातक नीर प्रेम की बान।
कुंजी कुरलि संभालै सोइ, भृंगी ध्यान कीट को होइ ।। 2 ।।
श्रवणों शब्द ज्यूं सुनै कुरंग, ज्योति पतंग न मोड़ै अंग।
जल बिन मीन तलफि ज्यों मरै, दादू सेवक ऐसै करै ।। 3 ।।

376. स्मरण फल। एक ताल

निर्गुण राम रहै ल्यौ लाइ, सहजैं सहज मिलै हरि जाइ ।। टेक।।
भौजल व्याधि लिपै नही कबहूँ, करम न कोई लागै आइ।
तीनों ताप जरै नहिं जियरा, सो पद परसै सहज सुभाइ ।। 1 ।।
जन्म जरा जोनी नहिं आवै, माया मोह न लागै ताहि।
पाँचों पीड़ प्राण नहीं व्यापै, सकल सोधि सब इहै उपाइ ।। 2 ।।
संकट संशय नरक न नैनहूँ, ताको कबहूँ काल न खाइ।
कंप न काई भय भ्रम भागै, सब विधि ऐसी एक लगाइ ।। 3 ।।
सहज समाधि गहो जे दिढ़ करि, जासौं लागै सोइ आइ।
भृंगी होइ कीट की न्यांई, हरि जन दादू एक दिखाइ ।। 4 ।।

३७७. आशीर्वाद । षड़ताल

धन्य धन्य तूँ धन्य धणी, तुम्ह सौं मेरी आइ बणी ।। टेक।।
धन्य धन्य तूँ तारे जगदीश, सुर नर मुनिजन सेवैं ईश।
धन्य धन्य तूँ केवल राम, शेष सहस्र मुख ले हरि नाम ।। 1 ।।
धन्य धन्य तूँ सिरजनहार, तेरा कोई न पावै पार।
धन्य धन्य तूँ निरंजन देव, दादू तेरा लखै न भेव ।। 2 ।।

३७८. भयभीत भयानक । दादरा

का जानों मोहि का ले करसी?
तनहिं ताप मोहि छिन न विसरसी ।। टेक।।
आगम मोपै जान्यूं न जाहि, इहै विमासण जियरे मांहि ।। 1 ।।
मैं नहिं जानों क्या सिर होइ, तातैं जियरा डरपै रोइ ।। 2 ।।
काहू तैं ले कछू करै, तातैं मइया जीव डरै ।। 3 ।।
दादू न जानैं कैसे कहै, तुम शरणागति आइ रहै ।। 4 ।।

३७९. क्रीड़ा तालश्वण्डनि

का जानों राम ! को गति मेरी? मैं विषयी मनसा नहीं फेरी ।। टेक।।
जे मन मांगै सोई दीन्हा, जाता देख फेरि नहिं लीन्हा ।। 1 ।।
देवा द्वन्द्वर अधिक पसारे, पाँचों पकर पटक नहिं मारे ।। 2 ।।
इन बातन घट भरे विकारा, तृष्णा तेज मोह नहिं हारा ।। 3 ।।
इनहिं लाग मैं सेव न जानी, कहै दादू सुन कर्म कहानी ।। 4 ।।

३८०. क्रीड़ा तालश्वण्डनि

डरिये रे डरिये, तातैं राम नाम चित धरिये ।। टेक।।
जिन ये पँच पसारे रे, मारे रे ते मारे रे ।। 1 ।।
जिन ये पँच समेटे रे, भेटे रे ते भेटे रे ।। 2 ।।

कच्छप ज्यों कर लीये रे, जीये रे ते जीये रे ॥ 3 ॥
भृंगी कीट समाना रे, ध्याना रे यहु ध्याना रे ॥ 4 ॥
अजा सिंह ज्यों रहिये रे, दादू दर्शन लहिये रे ॥ 5 ॥

३८१. हरि प्राप्ति दुर्लभ। त्रिताल
तहँ मुझ कमीन की कौन चलावै,
जाको अजहुँ मुनिजन महल न पावै ॥ टेक॥
शिव विरंचि नारद यश गावैं, कौन भांति कर निकट बुलावैं ॥ 1 ॥
देवा सकल तेतीसौं क्रोरि, रहे दरबार ठाड़े कर जोरि ॥ 2 ॥
सिध साधक रहे ल्यौ लाइ, अजहूँ मोटे महल न पाइ ॥ 3 ॥
सब तैं नीच मैं नाम न जाना, कहै दादू क्यों मिलै सयाना ॥ 4 ॥

३८२. करूणा विनती। त्रिताल
तुम बिन कहु क्यों जीवन मेरा, अजहूँ न देख्या दर्शन तेरा ॥ टेक॥
होहु दयाल दीन के दाता, तुम पति पूरण सब विधि साचा ॥ 1 ॥
जो तुम करो सोई तुम छाजे, अपने जन को काहे न निवाजे ॥ 2 ॥
अकरन करन ऐसैं अब कीजे, अपनो जान कर दर्शन दीजे ॥ 3 ॥
दादू कहै सुनहु हरि सांई, दर्शन दीजे मिलो गुसांई ॥ 4 ॥

३८३. उपदेश चेतावनी। पंजाबी त्रिताल
कागा रे करंक पर बोलै, खाइ माँस अरु लग ही डोलै ॥ टेक॥
जा तन को रचि अधिक सँवारा, तो तन ले माटी में डारा ॥ 1 ॥
जा तन देख अधिक नर फूले, सो तन छाड़ि चल्या रे भूले ॥ 2 ॥
जा तन देख मन में गर्वाना, मिल गया माटी तज अभिमाना ॥ 3 ॥
दादू तन की कहा बड़ाई, निमष माँहि माटी मिल जाई ॥ 4 ॥

३८४. उपदेश । त्रिताल

जप गोविन्द, विसर जनि जाइ, जनम सुफल करिये लै लाइ ।। टेक।।
हरि सुमिरण सौं हेत लगाइ, भजन प्रेम यश गोविन्द गाइ।
मानुष देह मुक्ति का द्वारा, राम सुमिर जग सिरजनहारा ।। 1 ।।
जब लग विषम व्याधि नहिं आई, जब लग काल काया नहिं खाई।
जब लग शब्द पलट नहीं जाई, तब लग सेवा कर राम राई ।। 2 ।।
अवसर राम कहसि नहीं लोई, जनम गया तब कहै न कोई।
जब लग जीवै तब लग सोई, पीछै फिर पछतावा होई ।। 3 ।।
सांई सेवा सेवक लागे, सोई पावे जे कोइ जागे।
गुरुमुख भरम तिमर सब भागे, बहुरि न उलटे मारग लागे ।। 4 ।।
ऐसा अवसर बहुरि न तेरा, देख विचार समझ जिय मेरा।
दादू हार जीत जग आया, बहुत भांति कह-कह समझाया ।। 5 ।।

३८५. प्रतिताल

राम नाम तत काहे न बोलै, रे मन मूढ़ अनत जनि डोलै ।। टेक।।
भूला भरमत जन्म गमावे, यहु रस रसना काहै न गावे ।। 1 ।।
क्या झक औरै परत जंजालै, वाणी विमल हरि काहे न सँभालै ।। 2 ।।
राम विसार जन्म जनि खोवै, जपले जीवन साफल होवै ।। 3 ।।
सार सुधा सदा रस पीजे, दादू तन धर लाहा लीजे ।। 4 ।।

386. तत्व उपदेश। प्रतिताल

आप आपण में खोजो रे भाई, वस्तु अगोचर गुरु लखाई ।। टेक।।
ज्यों मही बिलोये माखण आवै, त्यों मन मथियां तैं तत पावै ।। 1 ।।
काष्ठ हुताशन रह्या समाई, त्यूं मन माँही निरंजन राई ।। 2 ।।
ज्यों अवनी में नीर समाना, त्यों मन माँही साच सयाना ।। 3 ।।
ज्यों दर्पण के नहिं लागै काई, त्यों मूरति माँही निरख लखाई ।। 4 ।।

सहजैं मन मथिया तत पाया, दादू उन तो आप लखाया ।। 5 ।।

३८७. उपदेश । धीमा ताल

मन मैला मन ही सौं धोइ, उनमनि लागै निर्मल होइ ।। टेक।।
मन ही उपजै विषय विकार, मन ही निर्मल त्रिभुवन सार ।। 1 ।।
मन ही दुविधा नाना भेद, मन ही समझै द्वै पख छेद ।। 2 ।।
मन ही चंचल चहुँ दिशि जाइ, मन ही निश्चल रह्या समाइ ।। 3 ।।
मन ही उपजै अग्नि शरीर, मन ही शीतल निर्मल नीर ।। 4 ।।
मन उपदेश मनही समझाइ, दादू यहु मन उनमनि लाइ ।। 5 ।।

३८८. मन प्रति शूरातन । धीमा ताल

रहु रे रहु मन मारूंगा, रती रती कर डारूंगा ।। टेक।।
खंड खंड कर नाखूंगा, जहाँ राम तहाँ राखूंगा ।। 1 ।।
कह्या न मानै मेरा, सिर भानूंगा तेरा ।। 2 ।।
घर में कदे न आवै, बाहर को उठि धावै ।। 3 ।।
आतम राम न जानै, मेरा कह्या न मानै ।। 4 ।।
दादू गुरुमुखि पूरा, मन सौं झूझै शूरा ।। 5 ।।

३८९. नाम शूरातन । मकरन्द ताल

निर्भय नाम निरंजन लीजे, इन लोगन का भय नहिं कीजे ।। टेक।।
सेवक शूर शंक नही मानै, राणा राव रंक कर जानै ।। 1 ।।
नाम निशंक मगन मतवाला, राम रसायन पीवै पियाला ।। 2 ।।
सहजैं सदा राम रंग राता, पूरण ब्रह्म प्रेम रस माता ।। 3 ।।
हरि बलवंत सकल सिर गाजै, दादू सेवक कैसे भाजै ।। 4 ।।

३९०. समर्थाई । प्रतिपाल

ऐसो अलख अनंत अपारा, तीन लोक जाको विस्तारा ।। टेक।।
निर्मल सदा सहज घर रहै, ताको पार न कोई लहै।
निर्गुण निकट सब रह्यो समाइ, निश्चल सदा न आवै जाइ ।। 1 ।।
अविनाशी है अपरंपार, आदि अनंत रहै निरधार।
पावन सदा निरंतर आप, कला अतीत लिप्त नहिं पाप ।। 2 ।।
समर्थ सोई सकल भरपूर, बाहर भीतर नेडा न दूर।
अकल आप कलै नहीं कोई, सब घट रह्यो निरंजन होई ।। 3 ।।
अवरण आपै अजर अलेख, अगम अगाध रूप नहिं रेख।
अविगत की गति लखी न जाइ, दादू दीन ताहि चित्त लाइ ।। 4 ।।

३९१. समर्थ लीला । तिलवाड़ा
ऐसो राजा सेऊँ ताहि, और अनेक सब लागे जाहि ।। टेक।।
तीन लोक ग्रह धरे रचाइ, चंद सूर दोऊ दीपक लाइ।
पवन बुहारे गृह आँगणां, छपन कोटि जल जाके घरां ।। 1 ।।
राते सेवा शंकर देव, ब्रह्म कुलाल न जानै भेव।
कीरति करणा चारों वेद, नेति नेति न विजाणै भेद ।। 2 ।।
सकल देवपति सेवा करैं, मुनि अनेक एक चित्त धरैं।
चित्र विचित्र लिखैं दरबार, धर्मराइ ठाढ़े गुण सार ।। 3 ।।
रिधि सिधि दासी आगे रहैं, चार पदारथ जी जी कहैं।
सकल सिद्ध रहैं ल्यौ लाइ, सब परिपूरण ऐसो राइ ।। 4 ।।
खलक खजीना भरे भंडार, ता घर बरतै सब संसार।
पूरि दीवान सहज सब दे, सदा निरंजन ऐसो है ।। 5 ।।
नारद गावें गुण गोविन्द, करैं शारदा सब ही छंद।
नटवर नाचै कला अनेक, आपन देखै चरित अलेख ।। 6 ।।
सकल साध बाजैं नीशान, जै जैकार न मेटै आन।
मालिनी पुहुप अठारह भार, आपण दाता सिरजनहार ।। 7 ।।

ऐसो राजा सोई आहि, चौदह भुवन में रह्यो समाहि।
दादू ताकी सेवा करै, जिन यहु रचिले अधर धरै ।। 8 ।।

३९२. जीवित मृतक। एकताल
जब यहु मैं मैं मेरी जाइ, तब देखत वेग मिलै राम राइ ।। टेक।।
मैं मैं मेरी तब लग दूर, मैं मैं मेटि मिलै भरपूर ।। 1 ।।
मैं मैं मेरी तब लग नांहि, मैं मैं मेटि मिलै मन माँहि ।। 2 ।।
मैं मैं मेरी न पावै कोइ, मैं मैं मेटि मिलै जन सोइ ।। 3 ।।
दादू मैं मैं मेरी मेटि, तब तूँ जान राम सौं भेटि ।। 4 ।।

३९३. ज्ञान प्रलय। मदन ताल
नाँहीं रे हम नाँहीं रे, सत्यराम सब माँहीं रे ।। टेक।।
नाँहीं धरणि अकाशा रे, नाँहीं पवन प्रकाशा रे।
नाँहीं रवि शशि तारा रे, नहीं पावक प्रजारा रे ।। 1 ।।
नाँहीं पँच पसारा रे, नाँहीं सब संसारा रे।
नहीं काया जीव हमारा रे, नहीं बाजी कौतिकहारा रे ।। 2 ।।
नाँहीं तरवर छाया रे, नहीं पंखी नहीं माया रे।
नाँहीं गिरिवर वासा रे, नाँहीं समंद निवासा रे ।। 3 ।।
नाँहीं जल थल खंडा रे, नाँहीं सब ब्रह्मंडा रे।
नाँहीं आदि अनंता रे, दादू राम रहंता रे ।। 4 ।।

३९४. मध्य मार्ग निष्पक्ष । षट्ताल
अलह कहो भावै राम कहो, डाल तजो सब मूल गहो ।। टेक।।
अलह राम कहि कर्म दहो, झूठे मारग कहा बहो ।। 1 ।।
साधू संगति तो निबहो, आइ परै सो शीश सहो ।। 2 ।।
काया कमल दिल लाइ रहो, अलख अलह दीदार लहो ।। 3 ।।

सतगुरु की सुन सीख अहो, दादू पहुँचे पार पहो ।। 4 ।।

३९५. दादरा
हिंदू तुरक न जानूं दोइ।
सांई सबन का सोई है रे, और न दूजा देखूं कोइ ।। टेक।।
कीट पतंग सबै योनिन में, जल थल संग समाना सोइ।
पीर पैगम्बर देवा दानव, मीर मलिक मुनिजन को मोहि ।। 1 ।।
कर्ता है रे सोई चीन्हौं, जनि वै क्रोध करे रे कोइ।
जैसे आरसी मंजन कीजे, राम रहीम देही तन धोइ ।। 2 ।।
सांई केरी सेवा कीजे, पायो धन काहे को खोइ।
दादू रे जन हरि जप लीजे,जन्म जन्म जे सुरिजन होइ ।। 3 ।।

३९६. मदन ताल
को स्वामी को शेख कहै, इस दुनियां का मर्म न कोई लहै ।। टेक।।
कोई राम कोई अलह सुनावै, पुनि अलह राम का भेद न पावै ।। 1 ।।
कोई हिन्दू कोई तुर्क कर मानै, पुनि हिन्दू तुर्क की खबर न जानै ।। 2 ।।
यहु सब करणी दोनों वेद, समझ परी तब पाया भेद ।। 3 ।।
दादू देखै आत्म एक, कहबा सुनबा अनन्त अनेक।। 4 ।।

३९७. निन्दा। त्रिताल
निन्दत है सब लोक विचारा, हमको भावै राम पियारा ।। टेक।।
निस्संशय निर्दोष लगावै, तातैं मोको अचरज आवै ।। 1 ।।
दुविधा द्वै पख रहिता जे, तासन कहत गये रे ये ।। 2 ।।
निर्बैरी निहकामी साध, ता सिर देत बहुत अपराध ।। 3 ।।
लोहा कंचन एक समान, तासन कहत करत अभिमान ।। 4 ।।
निन्दा औ स्तुति एकै तोलै, तासन कहैं अपवाद हि बोलै ।। 5 ।।

दादू निन्दा ताको भावै, जाकै हिरदै राम न आवै ।। 6 ।।

३९८. (गुजराती) अनन्य शरण। उदीक्षण ताल

महारूं सूं जेहूँ आपूं, ताहरूं छै तूनें थापूं ।। टेक।।
सर्व जीव नें तूँ दातार, तैं सिरज्या नें तूँ प्रतिपाल ।। 1 ।।
तन धन ताहरो तैं दीधो, हूँ ताहरो नें तैं कीधो ।। 2 ।।
सहुवे ताहरो सांचो ये, मैं मैं माहरो झूठो ते ।। 3 ।।
दादू नें मन और न आवे, तूँ कर्ता ने तूँ हि जु भावे ।। 4 ।।

३९९. निष्काम । उदीक्षण ताल

ऐसा अवधू राम पियारा, प्राण पिंड तैं रहै नियारा ।। टेक।।
जल लग काया तब लग माया, रहै निरन्तर अवधू राया ।। 1 ।।
अठ सिधि भाई नो निधि आई, निकट न जाई राम दुहाई ।। 2 ।।
अमर अभय पद बैकुंठ बासा, छाया माया रहै उदासा ।। 3 ।।
सांई सेवक सब दिखलावै, दादू दूजा दृष्टि न आवै ।। 4 ।।

४००. शूरातन कसौटी । भंगताल

तूँ साहिब मैं सेवक तेरा, भावै सिर दे सूली मेरा ।। टेक।।
भावै करवत सिर पर सार, भावै लेकर गरदन मार ।। 1 ।।
भावै चहुँ दिशि अग्नि लगाइ, भावै काल दशों दिशि खाइ ।। 2 ।।
भावै गिरिवर गगन गिराइ, भावै दरिया माँहि बहाइ ।। 3 ।।
भावै कनक कसौटी देहु, दादू सेवक कस कस लेहु ।। 4 ।।

४०१. साधु । भंगताल

काम क्रोध नहिं आवै मेरे, तातैं गोविन्द पाया नेरे ।। टेक।।
भरम कर्म जाल सब दीन्हा, रमता राम सबन में चीन्हा ।। 1 ।।

दुविधा दुर्मति दूरि गँवाई, राम रमत सांची मन आई ।। 2 ।।
नीच ऊँच मध्यम को नांही, देखूं राम सबन के मांही ।। 3 ।।
दादू सांच सबन में सोई, पैंड पकर जन निर्भय होई ।। 4 ।।

४०२. हित उपदेश। खेमटा ताल
हाजिरां हजूर सांई, है हरि नेड़ा दूर नांही ।। टेक।।
मनी मेट महल में पावै, काहे खोजन दूरि जावै ।। 1 ।।
हिर्स न होइ, गुस्सा सब खाइ, तातैं संइयां दूर न जाइ ।। 2 ।।
दुई दूर दरोग न होइ, मालिक मन में देखै सोइ ।। 3 ।।
अरि ये पँच शोध सब मारै, तब दादू देखै निकटि विचारै ।। 4 ।।

४०३. खेमटा ताल
राम रमत है देखे न कोइ, जो देखे सो पावन होइ ।। टेक।।
बाहिर भीतर नेड़ा न दूर, स्वामी सकल रह्या भरपूर ।। 1 ।।
जहं देखूं तहँ दूसर नांहि, सब घट राम समाना मांहि ।। 2 ।।
जहाँ जाऊँ तहँ सोई साथ, पूर रह्या हरि त्रिभुवन नाथ ।। 3 ।।
दादू हरि देखे सुख होहि, निशदिन निरखन दीजे मोहि ।। 4 ।।

४०४. अध्यात्म। एकताल
मन पवन ले उनमन रहै, अगम निगम मूल सो लहै ।। टेक।।
पँच वायु जे सहज समावै, शशिहर के घर आंणै सूर।
शीतल सदा मिलै सुखदाई, अनहद शब्द बजावै तूर ।। 1 ।।
बंकनालि सदा रस पीवै, तब यहु मनवा कहीं न जाइ।
विकसै कमल प्रेम जब उपजै, ब्रह्म जीव की करै सहाइ ।। 2 ।।
बैस गुफा में ज्योति विचारै, तब तेहिं सूझै त्रिभुवन राइ।
अंतर आप मिलै अविनाशी, पद आनन्द काल नहिं खाइ ।। 3 ।।

जामण मरण जाइ, भव भाजै, अवरण के घर वरण समाइ।
दादू जाय मिलै जगजीवन, तब यहु आवागमन विलाइ ।। 4 ।।

४०५. एक ताल

जीवन मूरी मेरे आतम राम, भाग बड़े पायो निज ठाम ।। टेक।।
शब्द अनाहद उपजै जहाँ, सुषमन रंग लगावै तहाँ।
तहँ रंग लागे निर्मल होइ, ये तत उपजे जानै सोइ ।। 1 ।।
सरवर तहाँ हंसा रहे, कर स्नान सबै सुख लहै।
सुखदाई को नैनहुं जोइ, त्यों त्यों मन अति आनन्द होइ ।। 2 ।।
सो हंसा शरणागति जाइ, सुन्दरि तहाँ पखाले पाइ।
पीवै अमृत नीझर नीर, बैठे तहाँ जगत गुरु पीर ।। 3 ।।
तहँ भाव प्रेम की पूजा होइ, जा पर किरपा जानै सोइ।
कृपा करि हरि देइ उमंग, तहँ जन पायो निर्भय संग ।। 4 ।।
तब हंसा मन आनंद होइ, वस्तु अगोचर लखै रे सोइ।
जा को हरि लखावै आप, ताहि न लिपैं पुन्य न पाप ।। 5 ।।
तहँ अनहद बाजै अद्‌भुत खेल, दीपक जलै बाती बिन तेल।
अखंड ज्योति तहँ भयो प्रकास, फाग बसंत ज्यों बारह मास ।। 6 ।।
त्रय स्थान निरंतर निरधार, तहँ प्रभु बैठे समर्थ सार।
नैनहुं निरखूं तो सुख होइ, ताहि पुरुष को लखै न कोइ ।। 7 ।।
ऐसा है हरि दीनदयाल, सेवक की जानैं प्रतिपाल।
चलु हंसा तहँ चरण समान, तहँ दादू पहुँचे परिवान ।। 8 ।।

४०६. आत्म परमात्म रास । एकताल

घट घट गोपी घट घट कान्ह, घट घट राम अमर अस्थान ।। टेक।।
गंगा जमना अंतर–वेद, सरस्वती नीर बहै प्रस्वेद ।। 1 ।।
कुंज केलि तहं परम विसाल, सब संगी मिल खेलैं रास ।। 2 ।।

तहँ बिन बैना बाजैं तूर, विकसै कँवल चंद अरु सूर ।। 3 ।।
पूरण ब्रह्म परम प्रकाश, तहँ निज देखै दादू दास ।। 4 ।।
इति राग भैरूं सम्पूर्णम् ।। 25 ।। पद 34 ।।
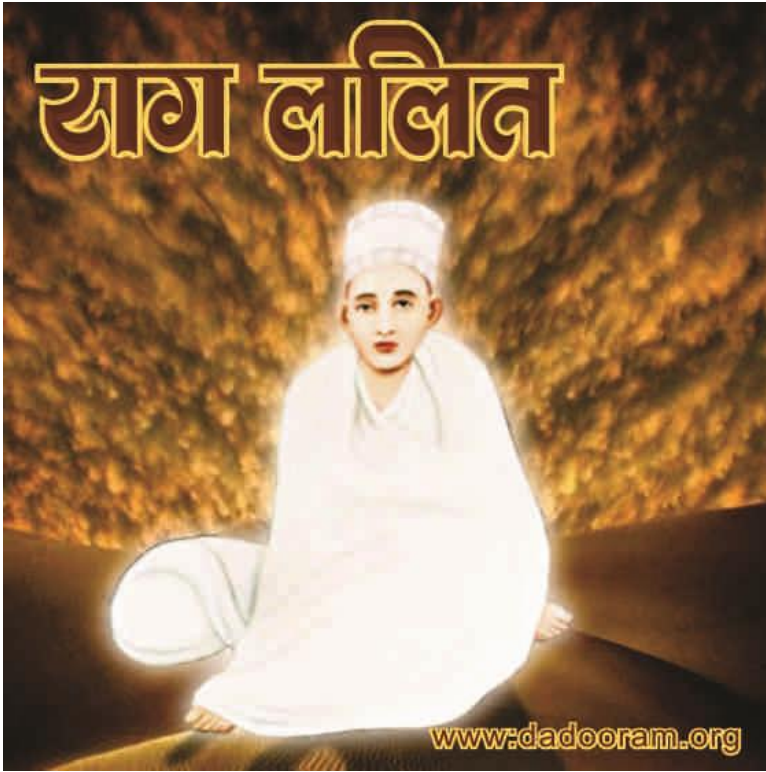
अथ राग ललित 26

(गायन समय प्रातः ३ से ६)

४०७. पराभक्ति। त्रिताल

राम तूँ मोरा हौं तोरा, पाइन परत निहोरा ।। टेक ।।

एकै संगैं वासा, तुम ठाकुर हम दासा ।। 1 ।।

तन मन तुम कौं देबा, तेज पुंज हम लेबा ।। 2 ।।

रस माँही रस होइबा, ज्योति स्वरूपी जोइबा ।। 3 ।।

ब्रह्म जीव का मेला, दादू नूर अकेला ।। 4 ।।

४०८. (मराठी) अनन्य शरण। त्रिताल

मेरे गृह आव हो गुरु मेरा, मैं बालक सेवक तेरा ।। टेक ।।

मात पिता तूँ अम्हचा स्वामी, देव हमारे अंतरजामी ।। 1 ।।

अम्हचा सज्जन अम्हचा बँधू, प्राण हमारे अम्हचा जिन्दू ।। 2 ।।
अम्हचा प्रीतम अम्हचा मेला, अम्हची जीवन आप अकेला ।। 3 ।।
अम्हचा साथी संग सनेही, राम बिना दुख दादू देही ।। 4 ।।

४०९. (गुजराती) हितोपदेश । गजताल

वाहला माहरा ! प्रेम भक्ति रस पीजिये,
रमिये रमता राम, माहरा वाहला रे।
हिरदा कमल में राखिये, उत्तम एहज ठाम, माहरा वाहला रे ।। टेक।।
वाहला माहरा ! सतगुरु शरणे अणसरे,
साधु समागम थाइ, माहरा वाहला रे।
वाणी ब्रह्म बखानिये, आनन्द में दिन जाइ, माहरा वाहला रे ।। 1 ।।
वाहला माहरा ! आतम अनुभव ऊपजे,
ऊपजे ब्रह्म गियान, माहरा वाहला रे।
सुख सागर में झूलिये, साचो येह स्नान, माहरा वाहला रे ।। 2 ।।
वाहला माहरा ! भव बन्धन सब छूटिये,
कर्म न लागे कोइ, माहरा वाहला रे।
जीवन मुक्ति फल पामिये, अमर अभय पद होइ, माहरा वाहला रे ।। 3 ।।
वाहला माहरा ! अठ सिधि नौ निधि आँगणें,
परम पदारथ चार, माहरा वाहला रे।
दादू जन देखे नहीं, रातो सिरजनहार, माहरा वाहला रे ।। 4 ।।

४१०. अखंड प्रीति । गजताल

हमारो मन माई ! राम नाम रंग रातो।
पिव पिव करै पीव को जानै, मगन रहै रस मातो ।। टेक।।
सदा सील संतोष सुहावत, चरण कँवल मन बाँधो।
हिरदा माँही जतन कर राखूँ, मानों रंक धन लाधो ।। 1 ।।

प्रेम भक्ति प्रीति हरि जानूं, हरि सेवा सुखदाई।
ज्ञान ध्यान मोहन को मेरे, कंप न लागे काई ॥ 2 ॥
संगि सदा हेत हरि लागो, अंगि और नहिं आवे।
दादू दीन दयाल दमोदर, सार सुधा रस भावे ॥ 3 ॥

411. (फारसी) साहिब सिफत। राज मृगांक ताल

महरवान, महरवान!
आब बाद खाक आतिश, आदम नीशान ॥ टेक ॥
शीश पाँव हाथ कीये, नैन कीये कान।
मुख कीया जीव दीया, राजिक रहमान ॥ 1 ॥
मादर पिदर परदः पोश, सांई सुबहान।
संग रहै दस्त गहै, साहिब सुलतान ॥ 2 ॥
या करीम या रहीम, दाना तूँ दीवान।
पाक नूर है हजूर, दादू है हैरान ॥ 3 ॥
इति राग ललित सम्पूर्ण ॥ 26 ॥ पद 5 ॥
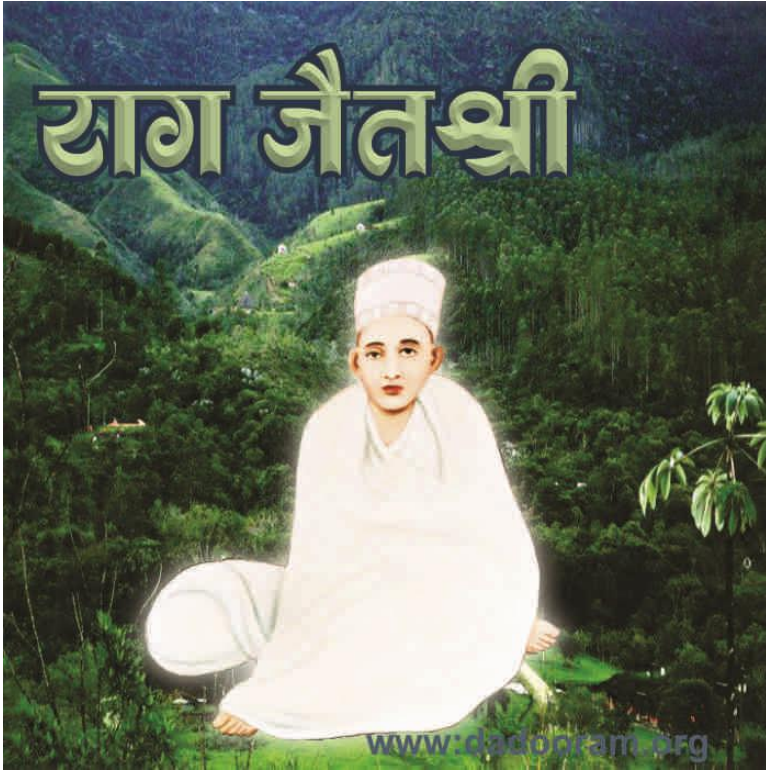
अथ राग जैत श्री 27

(गायन समय दिन 3 से 6)

412. अमिट नाम विनती । पंजाबी त्रिताल

तेरे नाम की बलि जाऊँ, जहाँ रहूँ जिस ठाऊँ ।। टेक ।।

तेरे बैनों की बलिहारी, तेरे नैनहुँ ऊपरि वारी ।

तेरी मूरति की बलि कीती, वारि-वारि हौं दीती ।। 1 ।।

शोभित नूर तुम्हारा, सुन्दर ज्योति उजारा ।

मीठा प्राण पियारा, तूँ है पीव हमारा ।। 2 ।।

तेज तुम्हारा कहिये, निर्मल काहे न लहिये ।

दादू बलि बलि तेरे, आव पिया तूँ मेरे ।। 3 ।।

४१३. विरह विनती । पंजाबी त्रिताल

मेरे जीव की जानै जानराइ, तुमतैं सेवक कहा दुराइ ।। टेक।।
जल बिन जैसे जाइ जिय तलफत, तुम्ह बिन तैसे हमहु विहाइ ।। 1 ।।
तन मन व्याकुल होइ विरहनी, दरश पियासी प्राण जाइ ।। 2 ।।
जैसे चित्त चकोर चंद मन, ऐसे मोहन हमहि आहि ।। 3 ।।
विरह अगनि दहत दादू को, दर्शन परसन तनहि सिराइ ।। 4 ।।
इति राग जैत श्री सम्पूर्ण ।। 27 ।। पद 2 ।।

अथ राग धना श्री 28

(गायन समय दिन 3 से 6)

414. अमिट अविनाशी रंग। धीमा ताल

रंग लागो रे राम को, सो रंग कदे न जाई रे।
हरि रंग मेरो मन रंग्यो, और न रंग सुहाई रे ।। टेक।।
अविनाशी रंग ऊपनो, रच मच लागो चोलो रे।
सो रंग सदा सुहावनो, ऐसो रंग अमोलो रे ।। 1 ।।
हरि रंग कदे न ऊतरै, दिन दिन होइ सुरंगो रे।
नित नवो निरवाण है, कदे न ह्वैला भंगो रे ।। 2 ।।
सांचो रंग सहजैं मिल्यो, सुन्दर रंग अपारो रे।
भाग बिना क्यों पाइये, सब रंग मांहीं सारो रे ।। 3 ।।
अवरण को का वरणिये, सो रंग सहज स्वरूपो रे।

बलिहारी उस रंग की, जन दादू देख अनूपो रे ।। 4 ।।

415. धीमा ताल

लाग रह्यो मन राम सौं, अब अनतैं नहिं जाये रे।
अचला सौं थिर ह्वै रह्यो, सकै न चित्त डुलाये रे ।। टेक।।
ज्यों फुनिंग चंदन रहै, परिमल रहै लुभाये रे।
त्यूँ मन मेरा राम सौं, अब की बेर अघाये रे ।। 1 ।।
भँवर न छाड़ै बास को, कँवल हि रह्यो बँधाये रे।
त्यूं मन मेरा राम सौं, वेध रह्यो चित्त लाये रे ।। 2 ।।
जल बिन मीन न जीवई, विछुरत ही मर जाये रे।
त्यों मन मेरा राम सौं, ऐसी प्रीति बनाये रे ।। 3 ।।
ज्यूं चातक जल को रटै, पीव पीव करत बिहाये रे।
त्यों मन मेरा राम सौं, जन दादू हेत लगाये रे ।। 4 ।।

416. विनती । वीर विक्रम ताल

मनमोहन हो !
कठिन विरह की पीर, सुन्दर दरस दिखाइये ।। टेक।।
सुनहु न दीन दयाल, तव मुख बैन सुनाइये ।। 1 ।।
करुणामय कृपाल, सकल शिरोमणि आइये ।। 2 ।।
मम जीवन प्राण अधार, अविनाशी उर लाइये ।। 3 ।।
इब हरि दरसन देहु, दादू प्रेम बढ़ाइये ।। 4 ।।

417. वीर विक्रम ताल

कतहूँ रहे हो विदेश, हरि नहिं आये हो।
जन्म सिरानों जाइ, पीव नहिं पाये हो ।। टेक।।
विपति हमारी जाइ, हरि सौं को कहे हो।

तुम्ह बिन नाथ अनाथ, विरहनि क्यों रहे हो ।। 1 ।।
पीव के विरह वियोग, तन की सुधि नहीं हो।
तलफि तलफि जीव जाइ, मृतक ह्वै रही हो ।। 2 ।।
दुखित भई हम नारि, कब हरि आवे हो।
तुम्ह बिन प्राण अधार, जीव दुख पावे हो ।। 3 ।।
प्रगटहु दीनदयाल, विलम्ब न कीजिये हो।
दादू दुखी बेहाल, दरसन दीजिये हो ।। 4 ।।

४१८. रंग ताल
सुरजन मेरा वे ! कीहैं पार लहाऊँ।
जे सुरजन घर आवै वे, हिक कहाण कहाऊँ।। टेक।।
तो बाझें मेकौं चैन न आवै, ये दुख कींह कहाऊँ।
तो बाझें मेकौं नींद न आवै, अँखियाँ नीर भराऊँ।। 1 ।।
जे तूँ मेकौं सुरजन डेवै, सो हौं शीश सहाऊँ।
ये जन दादू सुरजन आवै, दरगह सेव कराऊँ।। 2 ।।

४१९. रंग ताल
मोहन माधव कब मिलै, सकल शिरोमणि राइ।
तन मन व्याकुल होत है, दरस दिखाओ आइ ।। टेक।।
नैन रहे पथ जोवताँ, रोवत रैनि बिहाइ।
बाल सनेही कब मिलै, मोपै रह्या न जाइ ।। 1 ।।
छिन-छिन अंग अनल दहै, हरिजी कब मिलि हैं आइ।
अंतरजामी जान कर, मेरे तन की तप्त बुझाइ ।। 2 ।।
तुम दाता सुख देत हो, हाँ हो सुन दीनदयाल।
चाहैं नैन उतावले, हाँ हो कब देखूं लाल ।। 3 ।।
चरन कमल कब देख हौं, हाँ हो सन्मुख सिरजनहार।

सांई संग सदा रहौं, हाँ हो तब भाग हमार ।। 4 ।।
जीवनि मेरी जब मिलै, हाँ हो तब ही सुख होइ।
तन मन में तूँ ही बसै, हाँ हो कब देखूं सोइ ।। 5 ।।
तन मन की तूँ ही लखै, हाँ हो सुन चतुर सुजान।
तुम देखे बिन क्यों रहौं, हाँ हो मोहि लागे बान ।। 6 ।।
बिन देखे दुख पाइये, हाँ हो इब विलम्ब न लाइ।
दादू दरशन कारणैं, हाँ हो सुख दीजे आइ ।। 7 ।।

420. (सिंधी) वैराग्य । वर्ण भिन्न ताल

ये खूहि पयें सब भोग विलासन,
तैसेहु वाझौं छत्र सिंहासन ।। टेक।।
जन तिहुंरा बहिश्त नहिं भावे, लाल पलिंग क्या कीजे।
भाहि लगे इह सेज सुखासन, मेकौं देखण दीजे ।। 1 ।।
बैकुंठ मुक्ति स्वर्ग क्या कीजे, सकल भुवन नहिं भावे।
भठी पयें सब मंडप छाजे, जे घर कंत न आवे ।। 2 ।।
लोक अनंत अभै क्या कीजे, मैं विरहीजन तेरा।
दादू दरशन देखण दीजे, ये सुन साहिब मेरा ।। 3 ।।

421. (फारसी) ईमान साबित । (राग काफी) राज मृगांक ताल

अल्लह आशिकाँ ईमान, बहिश्त दोजख दीन दुनियां, चे कारे रहमान ।। टेक।।
मीर मीरी पीर पीरी, फरिश्तः फरमान।
आब आतिश अर्श कुर्सी, दीदनी दीवान ।। 1 ।।
हरदो आलम खलक खाना, मोमिना इसलाम।
हजां हाजी क़ज़ा क़ाज़ी, खान तूँ सुलतान ।। 2 ।।
इल्म आलम मुल्क मालुम, हाजते हैरान।
अजब यारां खबरदारां, सूरते सुबहान ।। 3 ।।

अव्वल आखिर एक तूँ ही, जिन्द है कुरबान।
आशिकां दीदार दादू, नूर का नीशान ।। 4 ।।

422. (फारसी) विरह विनती। (राग काफी) वर्ण भिन्न ताल

अल्लह तेरा ज़िकर फ़िकर करते हैं,
आशिकां मुश्ताक तेरे, तर्स तर्स मरते हैं ।। टेक।।
खलक खेश दिगर नेस्त, बैठे दिन भरते हैं।
दायम दरबार तेरे, गैर महल डरते हैं ।। 1 ।।
तन शहीद मन शहीद, रात दिवस लड़ते हैं।
ज्ञान तेरा ध्यान तेरा, इश्क आग जलते हैं ।। 2 ।।
जान तेरा जिन्द तेरा, पाँवों सिर धरते हैं।
दादू दीवान तेरा, जर खरीद घर के हैं ।। 3 ।।

423. गज ताल

मुख बोल स्वामी तूँ अन्तर्यामी, तेरा शब्द सुहावै राम जी ।। टेक।।
धेनु चरावन बेनु बजावन, दर्श दिखावन कामिनी ।। 1 ।।
विरह उपावन तप्त बुझावन, अंगि लगावन भामिनी ।। 2 ।।
संग खिलावन रास बनावन, गोपी भावन भूधरा ।। 3 ।।
दादू तारन दुरित निवारण, संत सुधारण राम जी ।। 4 ।।

424. केवल विनती। गज ताल

हाथ दे हो रामा, तुम सब पूरण कामा, हौं तो उरझ रह्यो संसार ।। टेक।।
अंध कूप गृह में पर्‍यो, मेरी करहु सँभाल।
तुम बिन दूजा को नहीं, मेरे दीनानाथ दयाल ।। 1 ।।
मारग को सूझै नहीं, दह दिशि माया जाल।
काल पाश कसि बाँधियो, मेरे कोई न छुड़ावनहार ।। 2 ।।

राम बिना छूटै नहीं, कीजै बहुत उपाइ।
कोटि किया सुलझै नहीं, अधिक अलूझत जाइ ।। 3 ।।
दीन दुखी तुम देखताँ, भौ दुख भंजन राम।
दादू कहै कर हाथ दे हो, तुम सब पूरण काम ।। 4 ।।

425. करुणा विनती। त्रिताल

जनि छाड़ै राम जनि छाड़ै, हमहिं विसार जनि छाड़े।
जीव जात न लागै बार, जनि छाड़ै ।। टेक।।
माता क्यों बालक तजै, सुत अपराधी होइ।
कबहुँ न छाड़े जीव तैं, जनि दुःख पावै सोइ ।। 1 ।।
ठाकुर दीनदयाल है, सेवक सदा अचेत।
गुण औगुण हरि ना गिणै, अंतर तासौं हेत ।। 2 ।।
अपराधी सुत सेवका, तुम हो दीन दयाल।
हमतैं औगुण होत हैं, तुम पूरण प्रतिपाल ।। 3 ।।
जब मोहन प्राणहि चलै, तब देही किहि काम।
तुम जानत दादू का कहै, अब जनि छाड़ै राम ।। 4 ।।

426. चौताल

विषम बार हरि अधार, करुणा बहु नामी।
भक्ति भाव बेग आइ, भीड़ भंजन स्वामी ।। टेक।।
अंत अधार संत सुधार, सुन्दर सुखदाई।
काम क्रोध काल ग्रसत,प्रकटो हरि आई ।। 1 ।।
पूरण प्रतिपाल कहिये, सुमिर्‍यां तैं आवै।
भरम कर्म मोह लागे, काहे न छुड़ावै ।। 2 ।।
दीनदयालु होहु कृपालु, अंतरयामी कहिये।
एक जीव अनेक लागे, कैसे दुख सहिये ।। 3 ।।

पावन पीव चरण शरण,युग युग तैं तारे।
अनाथ नाथ दादू के, हरि जी हमारे ।। 4 ।।

427. विनती त्रिताल

साजनियां ! नेह न तोरी रे,
जे हम तोरैं महा अपराधी, तो तूँ जोरी रे ।। टेक।।
प्रेम बिना रस फीका लागै, मीठा मधुर न होई।
सकल शिरोमणि सब तैं नीका, कड़वा लागै सोई ।। 1 ।।
जब लग प्रीति प्रेम रस नाँहीं, तृषा बिना जल ऐसा।
सब तैं सुन्दर एक अमीरस, होइ हलाहल जैसा ।। 2 ।।
सुन्दरि सांई खरा पियारा, नेह नवा नित होवै।
दादू मेरा तब मन मानै, सेज सदा सुख सोवै ।। 3 ।।

428. कर्ता कीर्ति । त्रिताल

काइमां कीर्ति करूंली रे, तूँ मोटो दातार।
सब तैं सिरजीला साहिबजी, तूँ मोटो कर्तार ।। टेक।।
चौदह भुवन भानै घड़ै, घड़त न लागै बार।
थापै उथपै तूँ धणी, धनि धनि सिरजनहार ।। 1 ।।
धरती अंबर तैं धर्‍या, पाणी पवन अपार।
चंद सूर दीपक रच्या, रैणि दिवस विस्तार ।। 2 ।।
ब्रह्मा शंकर तैं किया, विष्णु दिया अवतार।
सुर नर साधू सिरजिया, कर ले जीव विचार ।। 3 ।।
आप निरंजन ह्वै रह्या, काइमां कौतिकहार।
दादू निर्गुण गुण कहै, जाऊँली हौं बलिहार ।। 4 ।।

429. उपदेश चेतावनी। प्रति ताल

जियरा! राम भजन कर लीजे ।

साहिब लेखा माँगेगा रे, उत्तर कैसे दीजे ।। टेक।।
आगे जाइ पछतावन लागो, पल पल यहु तन छीजे।
तातैं जिय समझाइ कहूँ रे, सुकृत अब तैं कीजे ।। 1 ।।
राम जपत जम काल न लागे, संग रहै जन जीजे।
दादू दास भजन कर लीजे, हरि जी की रास रमीजे ।। 2 ।।

४३०. (गुजराती) काल चेतावनी। प्रति ताल
काल काया गढ़ भेलसी, छीजे दशों दुवारो रे।
देखतड़ां ते लूटिये, होसी हाहाकारो रे ।। टेक।।
नाइक नगर नें मेल्हसी, एकलड़ो ते जाये रे।
संग न साथी कोइ न आसी, तहँ को जाणे किम थाये रे ।। 1 ।।
सत जत साधो माहरा भाईड़ा, कांई सुकृत लीजे सारो रे।
मारग विषम चालिबो, कांई लीजे प्राण अधारो रे ।। 2 ।।
जिमि नीर निवाणा ठाहरे, तिमि साजी बांधो पालो रे।
समर्थ सोई सेविये, तो काया न लागे कालो रे ।। 3 ।।
दादू मन घर आणिये, तो निहचल थिर थाये रे।
प्राणी नें पूरो मिलै, तो काया न मेल्ही जाये रे ।। 4 ।।

४३१. भयभीत भयानक । दीपचन्दी
डरिये रे डरिये, परमेश्वर तैं डरिये रे।
लेखा लेवै, भर भर देवै, ताथैं बुरा न करिये रे, डरिये ।। टेक।।
सांचा लीजी, सांचा दीजी, सांचा सौदा कीजी रे।
सांचा राखी, झूठा नाखी, विष ना पीजी रे ।। 1 ।।
निर्मल गहिये, निर्मल रहिये, निर्मल कहिये रे।
निर्मल लीजी, निर्मल दीजी, अनत न बहिये रे ।। 2 ।।
साहि पठाया, बनिजन आया, जनि डहकावै रे।

झूठ न भावै, फेरि पठावै, कीया पावै रे ।। 3 ।।
पंथ दुहेला, जाइ अकेला, भार न लीजी रे।
दादू मेला, होइ सुहेला, सो कुछ कीजी रे ।। 4 ।।

432. दीप चन्दी
डरिये रे डरिये, देख देख पग धरिये।
तारे तरिये, मारे मरिये, तातैं गर्व न करिये रे, डरिये ।। टेक।।
देवै लेवै, समर्थ दाता, सब कुछ छाजै रे।
तारै मारै, गर्व निवारै, बैठा गाजै रे ।। 1 ।।
राखैं रहिये, बाहैं बहिये, अनत न लहिये रे।
भानै घड़ै, संवारै आपै, ऐसा कहिये रे ।। 2 ।।
निकट बुलावै, दूर पठावै, सब बन आवै रे।
पाके काचे, काचे पाके, ज्यूं मन भावै रे ।। 3 ।।
पावक पाणी, पाणी पावक, कर दिखलावै रे।
लोहा कंचन, कंचन लोहा, कहि समझावै रे ।। 4 ।।
शशिहर सूर, सूर तैं शशिहर, परगट खेलै रे।
धरती अंबर, अंबर धरती, दादू मेलै रे ।। 5 ।।

433. हित उपदेश। चौताल
मनसा मन शब्द सुरति, पाँचों थिर कीजे।
एक अंग सदा संग, सहजैं रस पीजे ।। टेक।।
सकल रहित मूल गहित, आपा नहिं जानैं।
अन्तर गति निर्मल रति, एकै मन मानैं ।। 1 ।।
हिरदै सुधि विमल बुधि, पूरण परकासै।
रसना निज नाम निरख, अन्तर गति वासै ।। 2 ।।
आत्म मति पूरण गति, प्रेम भगति राता।

मगन गलित अरस परस, दादू रस माता ।। 3 ।।

४३४. विनती । त्रिताल

गोविन्द के चरणों ही ल्यौ लाऊँ।
जैसे चातक बन में बोलै, पीव पीव कर ध्याऊँ।। टेक।।
सुरजन मेरी सुनहु वीनती, मैं बलि तेरे जाऊँ।
विपति हमारी तोहि सुनाऊँ, दे दर्शन क्यों हि पाऊँ।। 1 ।।
जात दुख, सुख उपजत तन को, तुम शरणागति आऊँ।
दादू को दया कर दीजे, नाँव तुम्हारो गाऊँ।। 2 ।।

४३५. त्रिताल

ए ! प्रेम भक्ति बिन रह्यो न जाई, परगट दरसन देहु अघाई ।। टेक।।
तालाबेली तलफै माँही, तुम बिन राम जियरे जक नांही।
निशिवासर मन रहै उदासा, मैं जन व्याकुल श्वासों श्वासा ।। 1 ।।
एकमेक रस होइ न आवै, तातैं प्राण बहुत दुख पावै।
अंग संग मिल यहु सुख दीजे, दादू राम रसायन पीजे ।। 2 ।।

४३६. परिचय उपदेश । पंजाबी त्रिताल

तिस घरि जाना वे, जहाँ वे अकल स्वरूप,
सोइ इब ध्याइये रे, सब देवन का भूप ।। टेक।।
अकल स्वरूप पीव का, बान बरन न पाइये।
अखंड मंडल माँहि रहै, सोई प्रीतम गाइये ।।
गावहु मन विचारा वे, मन विचारा सोई सारा, प्रकट पीव ते पाइये।
सांई सेती संग साचा, जीवित तिस घर जाइये ।। 1 ।।
अकल स्वरूप पीव का, कैसे करि आलेखिये।
शून्य मंडल माँहि साचा, नैन भर सो देखिये ।।

देखो लोचन सार वे, देखो लोचन सार,
सोई प्रकट होई, यह अचम्भा पेखिये।
दयावंत दयालु ऐसो, बरण अति विशेखिये ।। 2 ।।
अकल स्वरूप पीव का, प्राण जीव का, सोई जन जे पावही।
दयावंत दयालु ऐसो, सहजैं आप लखावही ।।
लखै सु लखणहार वे, लखै सोई संग होई, अगम बैन सुनावही।
सब दुःख भागा रंग लागा, काहे न मंगल गावही ।। 3 ।।
अकल स्वरूप पीव का, कर कैसे करि आणिये।
निरन्तर निर्धार आपै, अन्तर सोई जाणिये ।।
जाणहु मन विचारा वे, मन विचारा सोई सारा, सुमिर सोई बखानिये।
श्री रंग सेती रंग लागा, दादू तो सुख मानिये ।। 4 ।।

४३७. दीपचन्दी
राम तहाँ प्रगट रहे भरपूर, आत्मा कमल जहाँ,
परम पुरुष तहाँ, झिलमिल झिलमिल नूर ।। टेक।।
चन्द सूर मध्य भाइ, तहाँ बसै राम राइ, गंग जमुन के तीर।
त्रिवेणी संगम जहाँ, निर्मल विमल तहाँ, निरख निरख निज नीर ।। 1 ।।
आत्मा उलटि जहाँ, तेज पुंज रहै तहाँ, सहज समाइ।
अगम निगम अति, जहाँ बसै प्राणपति, परसि परसि निज आइ ।। 2 ।।
कोमल कुसम दल, निराकार ज्योति जल, वार न पार।
शून्य सरोवर जहाँ, दादू हंसा रहै तहाँ, विलसि-विलसि निज सार ।। 3 ।।

४३८. फरोदस्त ताल
गोविन्द पाया मन भाया, अमर कीये संग लीये।
अक्षय अभय दान दीये, छाया नहीं माया ।। टेक।।
अगम गगन अगम तूर, अगम चन्द अगम सूर।

काल झाल रहे दूर, जीव नहीं काया ।। 1 ।।
आदि अंत नहीं कोइ, रात दिवस नहीं होइ।
उदय अस्त नहीं दोइ, मन ही मन लाया ।। 2 ।।
अमर गुरु अमर ज्ञान, अमर पुरुष अमर ध्यान।
अमर ब्रह्म अमर थान, सहज शून्य आया ।। 3 ।।
अमर नूर अमर वास, अमर तेज सुख निवास।
अमर ज्योति दादू दास, सकल भुवन राया ।। 4 ।।

४३९. फरोदस्त ताल

राम की राती भई माती, लोक वेद विधि निषेध।
भागे सब भ्रम भेद, अमृत रस पीवै ।। टेक।।
भागे सब काल झाल, छूटे सब जग जंजाल।
विसरे सब हाल चाल, हरि की सुधि पाई ।। 1 ।।
प्राण पवन जहाँ जाइ, अगम निगम मिले आइ।
प्रेम मगन रहे समाइ, विलसै वपु नाँहीं ।। 2 ।।
परम नूर परम तेज, परम पुंज परम सेज।
परम ज्योति परम हेज, सुन्दरि सुख पावै ।। 3 ।।
परम पुरुष परम रास, परम लाल सुख विलास।
परम मंगल दादू दास, पीव सौं मिल खेलै ।। 4 ।।

४४० आरती। त्रिताल

इहि विधि आरती राम की कीजे, आत्मा अंतर वारणा लीजे ।। टेक।।
तन मन चन्दन प्रेम की माला, अनहद घंटा दीन दयाला।
ज्ञान का दीपक पवन की बाती, देव निरंजन पाँचों पाती।
आनन्द मंगल भाव की सेवा, मनसा मन्दिर आतम देवा।
भक्ति निरन्तर मैं बलिहारी, दादू न जानै सेव तुम्हारी।

441. उदीक्षण ताल

आरती जगजीवन तेरी, तेरे चरण कँवल पर वारी फेरी ।। टेक।।
चित चाँवर हेत हरि ढ़ारे, दीपक ज्ञान हरि ज्योति विचारे ।। 1 ।।
घंटा शब्द अनाहद बाजे, आनन्द आरती गगन गाजे ।। 2 ।।
धूप ध्यान हरि सेती कीजे, पुहुप प्रीति हरि भाँवरि लीजे ।। 3 ।।
सेवा सार आत्मा पूजा, देव निरंजन और न दूजा ।। 4 ।।
भाव भक्ति सौं आरती कीजे, इहि विधि दादू जुग जुग जीजे ।। 4 ।।

442. उदीक्षण ताल

अविचल आरती देव तुम्हारी, जुग जुग जीवन राम हमारी ।। टेक।।
मरण मीच जम काल न लागे, आवागमन सकल भ्रम भागे ।। 1 ।।
जोनी जीव जनम नहिं आवे, निर्भय नाँव अमर पद पावे ।। 2 ।।
कलिविष कसमल बँधन कापे, पार पहुँचे थिर कर थापे ।। 3 ।।
अनेक उधारे तैं जन तारे, दादू आरती नरक निवारे ।। 4 ।।

443. भंगताल

निराकार तेरी आरती,
बलि जाऊँ, अनन्त भवन के राइ ।। टेक।।
सुर नर सब सेवा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश।
देव तुम्हारा भेव न जानैं, पार न पावै शेष ।। 1 ।।
चन्द सूर आरती करैं, नमो निरंजन देव।
धरणि पवन आकाश आराधैं, सबै तुम्हारी सेव ।। 2 ।।
सकल भवन सेवा करैं, मुनियर सिद्ध समाधि।
दीन लीन ह्वै रहे संतजन, अविगत के आराधि ।। 3 ।।
जै जै जीवनि राम हमारी, भक्ति करैं ल्यौ लाइ।
निराकार की आरती कीजै, दादू बलि बलि जाइ ।। 4 ।।

४४४. दीपचन्दी

तेरी आरती ए, जुग जुग जै जै कार ।। टेक।।

जुग जुग आत्म राम, जुग जुग सेवा कीजिये ।। 1 ।।

जुग जुग लंघे पार, जुग जुग जगपति को मिले ।। 2 ।।

जुग जुग तारणहार, जुग जुग दरसन देखिये ।। 3 ।।

जुग जुग मंगलचार, जुग जुग दादू गाइये ।। 4 ।।

इति श्री दादूदास-विरचिते सतगुरु-प्रसादेन प्रोक्तं भक्तियोगनाम तत्वसारमत-सर्वसाधुर्बुद्धिज्ञान-सर्वशास्त्र-शोधितं रामनाम सतगुरुशिक्षा धर्मशास्त्र-सत्योपदेश-ब्रह्मविद्यायां मनुष्य जीवनाम् नित्य-श्रवणं पठनं मोक्षदायकम् श्री दादूवाणीनाम् माहात्म्य सम्पूर्ण

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः
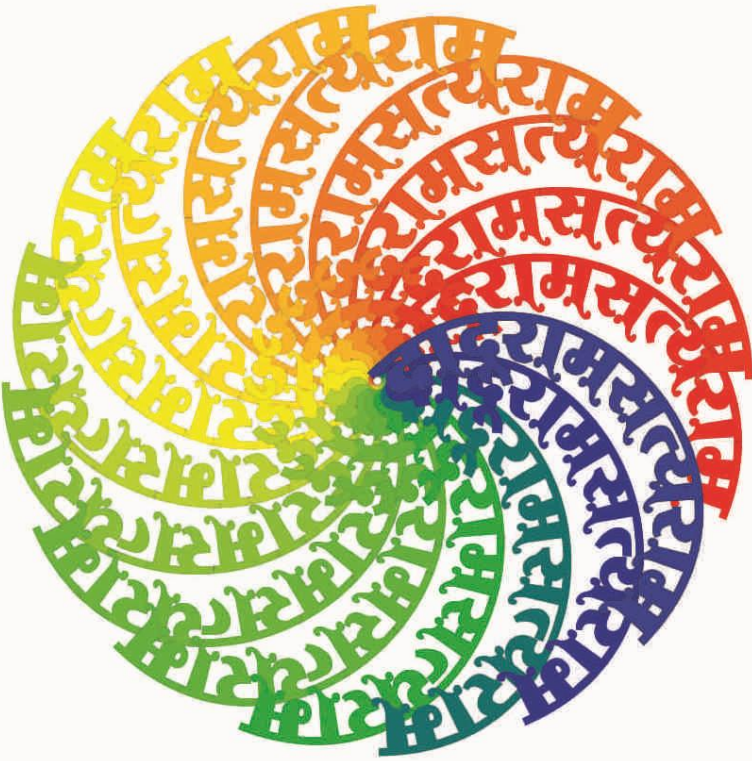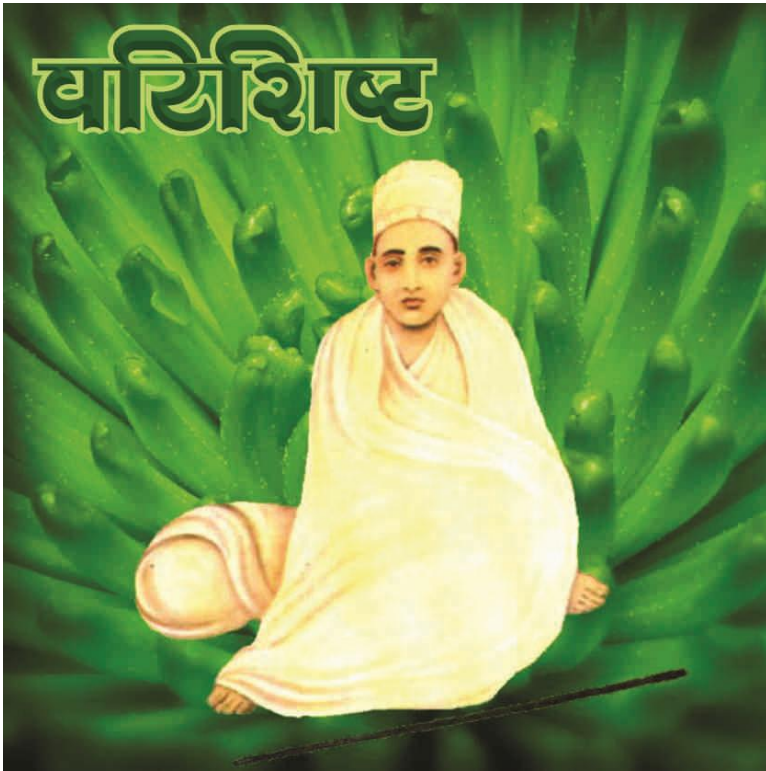
श्री दादूवाणी जी की आरती

ॐ जय दादूदयालु गिरा, मां जय दादूदयालु गिरा ।
माधव के मन भावनी, भव भय सतत: हरा ।। 1 ।।
जो गावे, सुख पावे, क्लेश मिटै हिय का ।
शम दमादि मन आवे, क्षौभ मिटे जिय का ।। 2 ।।
काम क्रोध मद भंजनि, लोभ मोह हननी ।
साधक जन मन रंजनी, शांति क्षमा जननी ।। 3 ।।
संशय शोक नशावनी, कहती हरि गाथा ।
श्रुति सिद्धांत सुनावति,तारति भव पाथा ।। 4 ।।
भेद विवाद मिटावनि, समता सुखकारी ।
पक्ष विपक्ष नशावनि, विषयाशाहारी ।। 5 ।।

अखिल विकार विभंजति, मंजति मन नीका ।
निगमागम नवनीत सौं, गिर प्राकृत टीका ।। 6 ।।
बमह्म विचार प्रदायिनी, पर वैराग्य प्रदा ।
सफल करत नर तन को, सोचत सरति सदा ।। 7 ।।
धारण करत बुद्धि को, बमह्मनिष्ठ करती ।
नारायण निश्चिय ही, मुक्ति महल धरती ।। 8 ।।

उपदेश अष्टक

दादू सद्गुरु शीश पर, उरमें जिनको नांव ।
सुन्दर आये शरण तकि, जिन पायो निज धाम ।।
बहे जात संसार में, सद्गुरु पकरें केश ।
सुन्दर काढें डूबते, दे अद्भुत उपदेश ।।
उपदेश श्रवण सुनाय अद्भुत, हृदय ज्ञान प्रकाशियो ।
चिरकाल को अज्ञान पूरण, सकल भ्रम तम नाशियो ।।
आनन्ददायक पुनि सहायक, करत जन निष्काम हैं ।
दादूदयालु प्रसिद्ध सद्गुरु, ताहि मोर प्रणाम हैं ।। 1 ।।
सुन्दर सद्गुरु हाथ में, करडी लई कमान ।
मार्यो खैंच कसीस कर, बचन लगाया बाण ।।
जिनि बचन बाण लगाय उर में, मृतक फेर जिवाइया ।
मुख द्वार होय उचार कर, निज सार अमृत पाइया ।।
अत्यन्त कर आनन्द में, हम रहत आठों याम हैं ।
दादूदयालु प्रसिद्ध सद्गुरु, ताहि मोर प्रणाम हैं ।। 2 ।।
सुन्दर सद्गुरु जगत में, पर उपकारी होय ।
नीच ऊंच सब ऊबरैं, शरणे आवै कोय ।।

जो आय शरण होय प्रापति, ताप तिन तन के हरें ।
पुनि फेरि बदले घाट उनको, जीव थैं ब्रह्म ही करें ।।
कछू ऊंच नीच न द्रिष्टि जिनके, सकल को विश्राम हैं ।
दादूदयालु प्रसिद्ध सद्गुरु, ताहि मोर प्रणाम हैं ।। 3 ।।
सुन्दर सद्गुरु सहज में, कीये पैली पार ।
और उपाय न तिर सके, भव सागर संसार ।।
संसार सागर महा दूस्तर, ताहि कहि अब को तिरे ।
जे कोटि साधन करे कोउ, वृथा ही पच पच मरें ।।
जिनि बिना परिश्रम पार कीये, प्रकट सुख के धाम हैं ।
दादूदयालु प्रसिद्ध सद्गुरु, ताहि मोर प्रणाम हैं ।। 4 ।।
सुन्दर सद्गुरु यों कहैं, याही निश्चय आनि ।
जो कुछ सुनिये देखिये, सर्व स्वप्न कर जानि ।।
जिनि स्वप्न तुल्य दिखाय दीयो, स्वर्ग नर्क उभय कहैं ।
सुख दुख हर्ष विषाद पुनि, मान अपमान सम गहैं ।।
जिनि जाति कुल अरु वर्ण आश्रम, कहत मिथ्या नाम हैं ।
दादूदयालु प्रसिद्ध सद्गुरु, ताहि मोर प्रणाम हैं ।। 5 ।।
सुन्दर सद्गुरु यों कहें, सत्य कछु नहिं रंच ।
मिथ्या माया विस्तरी, जे कछु सकल प्रपंच ।।
उपज्यो प्रपंच अनादिको, यह महामाया विस्तरी ।
नानात्व ह्वै करि जगत भास्यो, बुद्धि सबहिन की हरी ।।
जिनि भ्रम मिटाय दिखाय दीयो, सर्व व्यापक राम हैं ।
दादूदयालु प्रसिद्ध सद्गुरु, ताहि मोर प्रणाम हैं ।। 6 ।।
सुन्दर सद्गुरु यों कहें, भ्रम ते भासे और ।
सीपि मांहि रूपौ द्रसे, सर्प रज्जु की ठौर ।।

रज्जु मांहि जैसे सर्प भासे,सीपि में रूपौ यथा ।
मृग तृष्णा का जल बुद्धि देखे, विश्व मिथ्या है तथा ।।
जिनि लह्यो ब्रह्म अखंड पद, अद्वैत सब ही ठाम हैं ।
दादूदयालु प्रसिद्ध सद्गुरु, ताहि मोर प्रणाम हैं ।। 7 ।।
सुन्दर सद्गुरु यों कहें, मुक्त सहज ही होय ।
या अष्टक तैं भ्रम मिटे, नित्य पढे जे कोय ।।
जो पढे नित्य प्रति ज्ञान अष्टक, मुक्त होय सु सहज ही ।
संशय न कोउ रहे ताके, दास सुन्दर यों कही ।।
जिनि ह्वै कृपालु अनेक तारे, सकल विधि उद्दाम हैं ।
दादूदयालु प्रसिद्ध सद्गुरु, ताहि मोर प्रणाम हैं ।। 8 ।।
सुन्दर अष्टक सब सरस, तुम जिनि जानऊ आन ।
अष्टक याही कहे सुने, ताके उपजे ज्ञान ।।
परमेश्वटर और परम गुरु, दोऊ एक समान ।
सुन्दर क हत विशेष यह, गुरु थैं पावे ज्ञान ।।
दादू सद्गुरु के चरण, वंदत सुन्दरदास ।
जिनकी महिमा कहत हैं, जिनते ज्ञान प्रकाश ।।

श्री जैमल जी का रामरक्षा-मंत्र

ॐ राम बिना इस जीव को, कोइ न राखणहार ।
जैमल सतगुरु आपणा, राखे बारम्बार ।। 1 ।।
ॐ आकाशे-रक्षा करै, पातालै -प्रतिपाल ।
घट माँही रक्षा करै, जैमल दीनदयाल ।। 2 ।।
शीश रक्षा-सांई करै, श्रवणों सिरजनहार ।
नैन-रक्षा नरहरि करै, नासा अपरम्पार ।। 3 ।।

मुख रक्षा माधो करे, कंठ रक्षा करतार ।
हृदय रक्षा हरि करे, भुज रक्षा भव तार ।। 4 ।।
पेट रक्षा पुरषोत्तमा, नाभी त्रिभुवन सार ।
जंघ रक्षा जगदीशजी, पिण्डी परम उदार ।। 5 ।।
गिर रक्षा गोविन्द करै, पगथली प्राणअधार ।
जहां-तहां रक्षा करैं, सांचा सिरजनहार ।। 6 ।।
आगै राखै रामजी, पीछे राखणहार ।
बायें दाहिन राखिले, कर गहि तूं करतार ।। 7 ।।
जम डंका लागे नहीं, विघ्न-काल भय दूर ।
राम रक्षा जिन की करैं, बाजें अनहद तूर ।। 8 ।।
भेजी राखै भूधरा, जिह्वा को जगदीश ।
कलेजा राखैं केशवा, अस्थि राखै सब ईश ।। 9 ।।
मींजी राखै माधवा, मन को मोहन राय ।
मनसा की रक्षा करै, कबहूँ दूरि न जाय ।। 10 ।।
आत्मा को अकला राखे, जीव को जोति सरूप ।
सुरति को राखै साइयां, चित को अमर अनूप ।। 11 ।।
दिन को राखै रामजी, सूतां राम सहाय ।
सुपनां ही में संग रहै, जैमल एकैं भाय ।। 12 ।।
सर्प सिंह व्यापैं नहीं, डायन नजर मशाण ।
अंत काल रक्षा करै, काल न झंपै प्राण ।। 13 ।।
राख राख शरणागता, हमको अबकी बार ।
जैमल की रक्षा करो, साचा सिरजनहार ।। 14 ।।
हरिजी तुम बिन को नहीं, हमको राखणहार ।
यह जैमल की बीनती, सुनियो बारंबार ।। 15 ।।

जीव हमारा एक है, बैरी लाख अनंत ।
इनसे हमको राखिये, श्रीजयमल गुरु भगवन्त ।। 16 ।।
बस्ती में रक्षा करें, अरु बन में प्रतिपाल ।
घट मांहि रक्षा करें, श्री स्वामी दीनदयाल ।। 17 ।।
दिन को राखे चन्द्रमाँ, रात को राखे सूर ।
पूर्णब्रह्म रक्षा करे, बाजे अनहद तूर ।। 18 ।।

बोलो श्री स्वामी दादूदयालजी महाराज की जय
निरंजन देव की जय